PRAKRIT TEXT SERIES No.31

SVAYAMBHŪDEVA'S

RIṬṬHAṆEMICARIYA

(HARIVAṀSAPURĀṆA)

PART III (2)

JUJJHA-KAMḌA

EDITED

BY

RAM SINH TOMAR

PRAKRIT TEXT SOCIETY

AHMEDABAD

1997

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

PRAKRIT TEXT SERIES No.31

: General Editors :

D. D. Malvania   H. C. Bhayani

SVAYAMBHŪDEVA'S

RIṬṬHAṆEMICARIYA

(HARIVAṂSAPURĀṆA)

PART III (2)

JUJJHA-KAṂḌA

EDITED
BY
RAM SINH TOMAR

PRAKRIT TEXT SOCIETY
AHMEDABAD
1997

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

Published by :
Dalsukh Malvania
Secretary,
Prakrit Text Society
Ahmedabad-380 009.

(c) Ram Sinh Tomar

First Edition 1997

Price : Rs. 200/-

Printed by :
Ramaniya Graphics
44/451, Greenpark Appartments,
Sola Road, Naranpura,
Ahmedabad-380 063.
Ph. 7451603.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्राकृत ग्रन्थ परिषद् : ३१

कइराय-सयंभूदेव-किउ

रिट्ठणेमिचरिउ
(हरिवंसपुराणु)

तृतीय खण्ड (द्वितीय भाग)

जुज्झ-कंडु

: संपादक :

राम सिंह तोमर

प्राकृत ग्रन्थ परिषद्

अहमदाबाद

१९९७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विषयानुक्रम

संधि	पृष्ठांक
चउसट्ठिमो	१
पंचसट्ठिमो	११
छासट्ठिमो	२२
सत्तसट्ठिमो	३५
अट्ठसट्ठिमो	४२
ऊणहत्तरिइमो	५०
सत्तरिमो	६०
एक्कहत्तरिमो	७१
बाहत्तरिमो	८२
तेहत्तरिमो	९२
चउहत्तरिमो	९९
पंचहत्तरिमो	१०८
छहत्तरिमो	११७
सत्तहत्तरिमो	१२६
अट्ठहत्तरिमो	१३४
ऊणासीइमो	१४३
असीइमो	१५२
इक्कासीइमो	१६१
बयासीइमो	१६९
तेयासीइमो	१७७
चउरासीइमो	१८३
पंचासीइमो	१९४
छायासीइमो	२०२
सत्तासीइमो	२१३
अट्ठासीइमो	२२२
णवासीइमो	२३३
णवइमो	२४४
इक्काणवइमो	२५४
दो-उत्तर-णवइमो	२६१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

GENERAL EDITORS' FOREWARD

The Prakrit Text Society has great pleasure in publishing herewith one further part of Svayambhūdeva's Ritthaṇemicariya also called Harivaṁsapurāṇa, viz., the remaining portion of the Jujjha-kaṁḍa(Sandhis 64-92), edited by Professor Ram Sinh Tomar. Due to several difficulties, personal and others, we had almost decided to stop the publication of the remaining part of the work, but fortunately we got Dr. Ramanik Shah's sincere cooperation in the printing and related matters and we are able to bring out the text up to the end of the Jujjha-kaṁḍa. The last part of the Ritthaṇemicariya, viz. sandhis 93-112 we hope to take up for publication shortly. We have also planned in its introduction to deal with, among other matters, Svayambhū's dependence upon Vyāsa's Mahābhārata, about which we have referred to in our Introduction to part III (1). In this part also Svayambhū's use of the Droṇa, Karṇa and Śalya Parvans of the Mahābhārata is quite evident. As an important link in the long and illustrious tradition of the Mahābhārata narrative and for its eminent qualities of language, style and narrative power, Svayambhū's place in the first rank of Indian Classical poets is unquestionable.

It is a very rare case in the Indian Classical tradition that the poets have left for us any information regarding their personal life, mode of writing etc. In this matter also Svayambhū is uniquely original. He has recorded meticulously at the close of the Yuddha-Kāṇḍa (end of sandhi 92) that it took him six years, three months

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

and eleven days to write 92 sandhis, adding further on what day exactly he began to compose the remaining Uttara-Kāṇḍa. It so happened that we have followed Svayambhū in this matter. We sent the Riṭṭhaṇemicariya to the press sometime in 1991. It is an interesting coincidence (although rather not earning any credit for us) that the printing of the portion up to Yuddha-Kāṇḍa(and publishing it in 1997) took almost the same period as taken by Svayambhū to write it !

V. S. 2054, Kārtik Śukla Pratipadā H. C. Bhayani
1-11-1997, Ahmedabad

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रिट्ठणेमिचरिउ

(हरिवंसपुराणु)

जुज्झ-कंडु

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चउसट्ठिमो संधि

कइचिंधु ण दीसइ सद्द-सर   सुव्वइ महुमह-जलयरहो ।
सच्चइ पट्ठविउ जुहिट्ठिलेण   वत्त-गवेसउ भायरहो ॥ १

[१]

णरवइ दुम्मण-दुम्मणउ   वाह-जलोल्लिय-लोयणउ ।
वंधव-सोय-समाउलउ   पभणइ चित्तुत्तावलउ ॥ १

सच्चइ समर-सएहिं समत्थहो   एक्क-वि वत्त ण णावइ पत्थहो
पइं मुएवि कहो पेसणु सीसइ   वड्डु-वार कइ-चिंधु ण दीसइ
वड्डु-वार हरि जलयरु पूरइ   वड्डु-वार महु हियउ विसूरइ ४
कउरव-कंस-वंस-विणिवायण   जाहि गवेसहि णर-णारायण
तुहुं सुहि सूरु सुरिंद-परकम्मु   चित्त-जोहि लहु-करु लहु-विकम्मु
तो विहसेप्पिणु पभणइ जायउ   णिय-तणु-तेय-तविय-तवणायउ
भुय-परिहविय-पुरंदर-करि-करु   वयण-पहोहामिय-छण-ससहरु ८
जामि सुट्ठु पर आएं थक्कमि   पइं एक्कल्लउ मुएवि ण सक्कमि

घत्ता

अच्छइ फुरंतु दोणायरिउ   णवर करेवए चप्पणउं ।
हउं जामि जुहिट्ठिल-पट्ठविउ   छुडु जसु रक्खहि अप्पणउं ॥

[२]

णर-णारायणेहिं चविउ   पइ-मि णराहिव पट्ठविउ ।
अग्गए दोणु परिट्ठियउ   जइ ण जामि तो संकियउ ॥ १

जइयहुं इंदपत्थे णिवसंतउ   णरवइ-अद्ध-रज्जु भुंजंतउ
तइयहुं जे जियंत मुहु जोएवि   एवहिं आइय ते अरि होएवि
थिय सण्णहेवि मेच्छ वहु-वारण   रुप्प-महारह-गय-धणु-पहरण ४

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

अवरइं सत्त सयाइं गइंदहं   अग्गिम-खंधे थियाइं णरिंदहं
जे चिरु वस विहेय रवि-जायहो   जे वट्टंति भिच्च जुयरायहो
आजाणेय-विलास धणुद्धर   मक्खि-अग्गि-गोजाणि-भयंकर
आयस-कंस-कवय-धूमप्पह   दंतुर-पट्टिस-उग्ग-कुविग्गह ८
वूह-वारि सण्णहेवि परिट्ठिय   मइं समाणु जुज्झणहं समुट्ठिय

घत्ता

भंजेवा दोण-कलिंग-किव   हउं एक्कल्लउ एक्क-रहु ।
रक्खेवउ तुहुं सव्वायरेण   जाणेवि मइं पट्ठवहि पहु ॥ १०

[३]

दोणें पीडिउ हउं-वि रणे   जइ अलियउ तो तुहुं जे भणे ।
तो-वि णाह वुत्तउं करमि   पहु-मित्तत्थेण सिरु धरमि ॥ १

पभणइ पहु परिवड्ढिय-णेहउ   तुहुं अम्हहं महुसूयणु जेहउ
एक्कसि करहि महारउं वुत्तउं   णरेण मरंतें मरमि णिरुत्तउं
सो एक्कलउ कुरुहुं विरुज्झइ   पासत्थु-वि गोविंदु ण जुज्झइ ४
अणलिउ पाण विसज्जिय पत्थें   चलणेहिं लग्गु जाहि परमत्थें
सच्चइ चवइ जाव तव-णंदण   वट्टइ कवण तुज्झु आकंदण
धीरउ होहि काइं किर चिंतए   ण मरइ णरु णारायणे संतए
दोमइ-लंभे सयंवर-मंडवे   सुरहं भंडु जुज्झंतए खंडवे ८
तालुय-वम्म-वहणे वंदि-ग्गहे   जइयहुं जुज्झिउ उत्तर-गोग्गहे
तइयहुं किण्ण होंतु एक्कलउ   एवहिं वट्टइ काइं नवल्लउं

घत्ता

मइं पट्ठवंतु कुढे अज्जुणहो   अप्पउ महु उवलक्खवहि ।
एत्तियहं मज्झे पइं समर-मुहे   जो रक्खइ सो दक्खवहि ॥ ११

[४]

सामिय-विहुर धुरंधरउ   समर-भरोड्डिय-खंधरउ ।
जाउहाण-जम-गोयरउ   झत्ति पलित्तु विओयरउ ॥ १

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कोव-जलण-जालोलि-भयंकरु कीयाकुल-कयंतु कुरु-डामरु
बग-किम्मीर-हिडिंव-खयंकरु पय-भर-भग्ग-भुवंग-मडप्फरु
पभणइ भीमु भीम-भड-भंजणु तुहुं वोल्लहि महुसूयण-सज्जणु ४
अज्जुण-सीसु णरिंद-सुहंकरु अण्णहो वयणु णेमि सय-सक्करु
हत्थें छिवइ दोणु जइ राणउ तो हउं दहणे डहमि अप्पाणउं
जायव जाहि काइं किर वुच्चइ एक्कु भीमु पयरक्खु पहुच्चइ
एम चवंतु णिवारिउ राएं कउ रक्खिज्जइ पइं अ-सहाएं ८
महु जसु अज्जुणेण पालिज्जइ धट्ठज्जुणेण दोणु पीडिज्जइ

घत्ता

विहसेविणु ताम विओयरेण सिणि-णंदणु एम मरिसावियउ।
तुहुं पंचहिं पंकयणाह-समु खेड्डें मइं रोसावियउ॥

[५]

तो ण्हायाणुविलित्त-तणु आउच्छिय-वंधव-सयणु।
णर-मग्गेण समुच्चलिउ मंगल-सद्दु समुच्छलिउ॥ १

वुच्चइ णंद वद्ध जय राएं अम्मणुअंचिउ भड-संघाएं
गोमुह-डंवर-पडहप्फालिय मागह सूय वंदि वेयालिय
लग्ग पढेवए तेत्थु पगामइं इच्छिय जाइं किया-गुण-णामइं ४
दाणइं देवि केवि सुणिमित्तइं दहि दुव्वक्खय फलइं विचित्तइं
संदणु वद्धु वम्मु ओणद्धउं उब्भिय-कंचण-सीह-महाधउ
घोडा किय विसल्ल जुए जोत्तिय भीम-पमुह सुहि सव्व णियत्तिय
चडिउ महारह-वीढे सुवित्थए णं पंचाणणु महिहर-मत्थए ८
तोणालिद्ध-पुट्ठि धणु-करयलु भग्गालाण-खंभु णं मयगलु

घत्ता

णिउ रहु जोत्तार-तुरंगमेहिं अहिमुहु गुरु-थाणंतरहो।
लक्खिज्जइ देवेहिं ढोइयउ मंदरु णं रयणायरहो॥ १०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[६]

सच्चइ चोइय-रहवरउ धणु-परिवेस-भयंकरउ।
सरवर-किरण-करालियउ वइरिहिं रवि-व णिहालियउ॥ १

ताम सत्त सुट्ठुण्णय-माणा गय-साहणेण पधाइय राणा
वाहिय-रहेहिं अखंचिय-वग्गेहिं गंधवहुद्धुय-धवल-धयग्गेहिं
सुर-वेयंड-सुंड-भुय-दंडेहिं इंदाउह-पयंड-कोयंडेहिं ४
विसहर-देह-दीह-णाराएहिं मेह-मइंद-समुद्द-णिणाएहिं
तो सिणि-णंदणेण अविओलें जयसिरि-रामालिंगण-लोलें
छाइय सत्त-वि सरवर-जालें णं विंझइरि महाधण-जालें
स-धय स-सारहि चूरिय रहवर णं वासवेण णिसूडिय महिहर ८
णिहय तुरंगम छिण्णइं छत्तइं खुडियइं सिरइं णाइं सयवत्तइं

घत्ता

सिणि-तणएं सत्त-वि पवर भड णिविसें वइवस-णयरु णिय।
णं कालें कवलु करंतएण पढमु जे आपोसाणु किय॥ १०

[७]

तहिं अवसरे मच्छर-भरिउ अंतरे थिउ दोणायरिउ।
वाणासण-अक्खय-णिहिय-करु णाइं स-सुर-धणु अंवुहरु॥ १
ओसरु ताय ताय णिय-थामहो रहु पइसरइ मज्झे संगामहो
कण्हाऊरिय-संख-णिणाएं हउं पट्ठविउ जुहिट्ठिल-राएं
रण-मुहे वत्त-गवेसउ पत्थहो करि पसाउ गुरु ओसरु पंथहो ४
अज्जुणु तुम्ह पुत्तु हउं पोत्तउ भद्दिय-भायरु णिम्मल-गोत्तउ
भणइ दोणु वोल्लिउं चंगारउं पेक्खहु धणु-विण्णाणु तुहारउं
दिट्ठि-मुट्ठि-संधाणु सरुग्गमु सिक्खिउ कवणु एत्थु पइं आगमु
सच्चइ चवइ पवेस-णिवारा दरिसावमि लइ पहरु भडारा ८
जइ पइं मइं समाणु खणु जुज्झिउ तो विण्णाणु असेसु-वि वुज्झिउ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घत्ता

जइ रएवि थाणु संधाणु किउ वाणु-वि सज्जिउ धणु-गुणहो।
कुरु-कालहो खंडव-डामरहो तो हउं सीसु ण अज्जुणहो॥ १०

[८]

पज्जलिय कोव-हुवासणउ कड्डिय-ससर-सरासणउ।
णं गउ गयहो समावडिउ सच्चइ दोणहो अब्भिडिउ॥ १

जाउ महाहउ विहि-मि भयंकरु चरणुच्चालण-चलिय-वसुंधरु
रहवर-भग्गु भुवंगम-सेहरु हय-खुर-खय-खम-रय-चय-धूसरु
दिट्ठि-मुट्ठि-संधाण-णिरंतरु धणु-टंकार-भरिय-भुवणंतरु ४
हुंकाराणिल-चालिय-महिहरु सरवर-णियर-णिवारिय-रवियरु
इसु-णिहसग्गि-तिडिक्किय-णहयलु वार-वार-परिवड्डिय-कलयलु
वार-वार-अप्फालिय-तूरउ वार-वार-पडिवक्ख-विसूरउ
वार-वार-आमेल्लिय-मग्गणु वार-वार-तोसविय-सुरंगणु ८
वार-वार-विरइय-सर-मंडवु वार-वार-वण्णिय-कुरु-पंडवु

घत्ता

पहरंतु ण भज्जए आहयणे एक्क-वि एक्कहो माण-सिह।
वण-वेयण-चेयण-मुच्छणेहिं रणु परिवड्डिउ सुरउ जिह॥ १०

[९]

सीसायरिय रणंगणेण रहसाऊरिय-सुरयणेण।
तालुय-वम्म-णिणासयरु पोमाइउ गंडीव-धरु॥ १

तो संजमिया णिज्जिय-तोणें सिणि-णंदणु पच्चारिउ दोणें
कहिं महु जाहि अज्जु गलगज्जेवि पत्थु-वि गउ काउरिसु व भज्जेवि
एम भणेवि वहु-मच्छर-भरिएं पंचहिं सरेहिं विद्धु आइरिएं ४
पुणु छहिं पुणु पडिवारिउ सत्तहिं दसहिं थणंतरम्मि पुणु अट्ठहिं
तो सच्चइ सहस त्ति पलित्तउ णं दवग्गि दुप्पवणें छित्तउ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कलस-महद्धउ पंचहिं वाणेहिं   विज्झइ दुज्जण-वयण-समाणेहिं
पुणु वीसद्ध-सरेहिं उरे ताडिउ   एक्कें फरहरंतु धउ पाडिउ
एक्कें रहवर सारहि एक्कें   मोडिउ आयवत्तु अवरेक्कें

घत्ता

चउ-सरेहिं चयारि तुरंग हय   कह-कह-वि ण दोणायरिउ।
णिल्लक्खणु णिद्धणु रामु जिह   रणे एक्कल्लउ उव्वरिउ॥

[१०]

अण्णहिं रहवरे ठंताहो   दोणहो पडिपहरंताहो।
धणु पडिवारउ ताडियउ   सुरगिरि-सिंगु व पाडियउ॥

वीयउं सुर-धणु-अणुहरमाणउं   तइयउं वंक-मयंक-समाणउं
छिण्णु चउत्थउं जम-भू-भंगुरु   पंचमु वइवस-महिस-सिंगु व गुरु
छट्ठउं खगवइ-पेहुण-सच्छहु   सत्तमु सुरकरि-दंत-सम-प्पहु
अट्ठमु दोण-महादुम-सूलु व   णवमउं णारसीह-लंगूलु व
दसमउं रिउ-णयरु व विद्धंसिउ   एयारहमउं जिह कुल-णासिउ
जं जं दोणहो धणु करे पावइ   तं तं हरइ मंडु विहि णावइ
जं जं लेइ तं जि ण वलग्गइ   णिग्गुणे कहि-मि धम्मु कहिं लग्गइ
किउ णिरत्थु दरिसाविय-भंगउ   वंक-संगु किं कासु-वि चंगउ

घत्ता

णिच्चेट्ठु परव्वसु पत्थ-गुरु   दुक्क पमाणु भग्ग-सिहउ।
णिद्धणउ जुण्णउ जज्जरउ   णं थिर-दोणु जे सच्च-मउ॥

[११]

तहिं अवसरे तोसिय-मणेहिं   सइं हरि-हर-कमलासणेहिं।
लेवि लेवि सुर-पायवहो   कुसुमइं घित्त सिरि जायवहो॥

विंधइ दूरु दोणु एत्तिय-गुणु   कण्णु दिढ-प्पहारि वलि अज्जुणु
तिण्णि-वि गुण सच्चइहे रणंगणे   एम देव बोल्लंति णहंगणे

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

स-धणु स-तोणु ताम सिणि-णंदणु दारुअ-अणुव-पचोइय-संदणु
वासव-सुयहो सीसु जस-लुद्धउ कंचण-केसर-सीह-महद्धउ
सयड-वूहु फेडंतु अगायरु मच्छु जेम गउ भिंदेवि सायरु
पेक्खंतहं किव-कण्ण-विगण्णहं रहवरु वाहिउ उप्परि अण्णहं
जो जो दारुणु रणु विण्णासइ सो सो सर-भरियंगु पणासइ
हय-गय-णर-णरिंद संघारेवि सच्चइ-वाण जंति महि दारेवि

घत्ता

दुम्मुह सलोह वण्णुज्जला विंधण-सीला पाणहर ।
गुण-मुक्का धम्म-विवज्जिया तो-वि मोक्खु पावंति सर ॥

[१२]

सच्चइ सच्चाहिट्ठियउ रणे पहरंतु अणिट्ठियउ ।
एम महारहु संचरइ जमु जिह वाल-कील करइ ॥

गेज्जुज्जले सारंग-पसाहणे भिडिउ कलिंग-महागय-साहणे
हय-ढक्का-रव-वहिरिय-णहयले पायवीढ-पीडिय-पिहिवीयले
दंति-दंत-दंतुरिय-दियंतरे मय-सरि-सित्त-सोत्त-गत्तंतरे
कर-मंडव-परिपिहिय-दिवायरे मय-णइ-पूराऊरिय-सायरे
कण्ण-पवण-कंपाविय-महिहरे मय-परिमल-मेलाविय-महुयरे
लइय णिरंतरं जायव-वाणेहिं आयए णाय-काय-परिमाणेहिं
छिण्ण हत्थ पाडियइं विसाणइं विसहर-वेणु-करीर-समाणइं
सिरइं स-देहइं भिंदेवि घाएं णीसरंति सर पच्छिम-भाएं

घत्ता

सच्चइ-णाराय ण वीसमिय दारेवि करि-कुंभत्थलइं ।
णव-पाहुडु अज्जुण-केसरिहिं णिंति णाइं मुत्ताहलइं ॥

[१३]

दलिय-कुंभि-कुंभत्थलइं कड्ढिय-सिय-मुत्ताहलइं ।
केसरि जिह परिसक्कियउ तिह पहरिउ जिह परिसक्कियउ ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तहिं अवसरे धाइउ सइणेयहो खय-दिणयर-कर-दूसह-तेयहो
चंड-कंड-कोयंड-भयंकरु हय-विवक्ख-पडिवक्ख-सुहंकरु
वाहिय-रहु पवणुद्धुय-धयवडु रणसिरि-रामालिंगण-लेहडु
आसत्थाम-मामु सिय-माणणु णं केसरि रव-वहिरिय-काणणु
तो सिणि-सुएण सरेहिं पच्छाइउ चक्क-रक्ख-हय-सारहि घाइउ
वणिय तुरंगम किउ विणिवारिउ पुट्ठि देंतु गउ कह-वि ण मारिउ
भग्गइं रह-गय-तुरयाणीयइं णरवर-विंदइं कियइं अजीयइं
छिण्णइं सिरइं कमल-संकासइं णच्चावियइं कवंध-सहासइं

घत्ता

भंजंतु असेस णराहिवइ सच्चइ वूहे पइट्ठु किह ।
मसि-कुच्चउ देविणु दूहवइ सुहय विलासिणि हियइं जिह ॥

[१४]

सिणि-णंदण वइसाणरेण सर-जालोलि-भयंकरेण ।
दड्ढइं रिउ-साहण-वणइं रह-गिरि-धय-तरुवर-घणइं ॥

भग्गइं दारुण-पहरण-वीयइं दाहिणत्त-कंवोयाणीयइं
अंगराय-वल्हिक्क-वलाइ-मि भिण्णइं दूसहइं गिरि अचलाइ-मि
तहिं अवसरे विप्फारिय-धम्में सिणिवइ हक्कारिउ कियवम्में
जायव थाहि थाहि कहिं गम्मइ जिवं विहिं हणइ एक्कु जिह हम्मइ
भुंजउ अज्जु रज्जु हरसिय-मणु धम्म-पुत्तु जिम जिम दुज्जोहणु
तं णिसुणेविणु रोसिउ माहउ पुणु किउ घोरुग्गारु महाहउ
छहिं सोलहहिं णिहउ सिणि-तोएं एक्कवीस सर लाइय भोएं
उरे माहवेण समाहउ सत्तिए पडिवउ पूरिउ सरवर-पंतिए

घत्ता

हयवर-सारहि-सिरु खुडिउ लहु अण्णहिं रहवरे संचडिउ ।
कियवम्मउ पंडव-वलहो गउ सच्चइ कंवोयहं भिडिउ ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[१५]

गंधवाह-धूवंत-धउ भड्डिउ दोणहो पासु गउ।
वूह-वारे एक्क-रहु थिउ दारुणु समरारंभु किउ॥

ताम तुरंगम-रह-गय-वाहणु धाइउ सरहसु पंडव-साहणु
हय-पडु-पडह-पवड्ढिय-कलयलु णं पसरिउ मयरहर-महाजलु
भद्दिय-थाणंतरु पेल्लंतउ कुरु-गुरु वूह-वारे भेल्लंतउ
रहवरु देवि अमाणुस-गम्में तव-सुय-वइणि(?)धरिय कियवम्में
जमल-सिहंडि-राय-धड्डज्जुण पंचहिं पंचहिं सरेहिं कियारुण
विद्धु भीमु सत्तरिहिं पिसक्केहिं पुणु आसीविसहर-लल्लक्केहिं
कंपिउ भूमि-कंपेण व महिहरु णिवडिउ मुच्छा-विहलु विओयरु
चेयण पावेवि कोंतिहे तोएं मुक्क सत्ति विहिं खंडिय भोएं

घत्ता

तिहिं मारुइ तिहिं अवर हय छिण्ण सिंहडिहे तणउ धणु।
धाइउ फर-करवाल-करु णं स-पयंगु स-विज्जु धणु॥

[१६]

कियवम्महो गुण-मंडियउं धणु करवालें खंडियउं।
तो विरइय-सर-मंडवेहिं विद्धु अणंतरु पंडवेहिं॥

अवरइं चावइं लेवि भयंकर भिडिय जुहिट्ठिल-कुरुवइ-किंकर
हउ असीहि मग्गणेहिं थणंतरे मुच्छा-विहलु पडिउ णिय-रहवरे
ओसारिउ सिहंडि-जुत्तारें कलयलु किउ कुरु-खंधावारें
पंडव दसहिं दसहिं विणिवारिय ओणय-मुह अमरेहिं धिक्कारिय
तहिं अवसरे हरि-वल-कुल-दीवउ सच्चइ जंतु णियंतु पडीवउ
सारहि वाहि वाहि रहु तेत्तहे धम्म-पुत्तु परिपीडिउ जेत्तहे
वट्टइ गमणु ताम परिसेसहु पच्छइ पत्थहो कुढे लग्गेसहु

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घत्ता

णिउ रहवरु दारुय-भायरेण वेण्णि-वि सरेहिं समावडिय।
आमिस-लालस सद्दूल जिह णहेहिं परोप्परु अब्भिडिय॥ ९

[१७]

तो कियवम्में हियए हउ तेण-वि धय-धणु-छेउ कउ।
वि-रहु अ-सारहि णित्तुरउ कह-वि ण वइवस-णयरु गउ॥ १

पाडेवि चक्क-रक्ख गउ सच्चइ सरहसेण विहसेप्पिणु वुच्चइ
सारहि जाहि जाहि वीसत्थउ को महु रण-मुहे भिडेवि समत्थउ
एहु जे दोणहो अवरेहिं पासेहिं भणमि अणीउ पिसक्क-सहासेहिं ४
वाहि वाहि रह-तुरय-वरेण्णइं जहिं तिगत्त-संसत्तग-सेण्णइं
दिणमणि-वण्ण-महाहय-जोडा वाहिय चंद-समप्पह घोडा
वेढिउ हत्थि-हडेहिं पडिवारउ मघ-गउ घणेहिं णाइं अंगारउ
विंधइ आयस-सिरेहिं कियायरु गिरिहिं व उप्परि तवइ दिवायरु ८
छिण्णइं स-गयइं गय-उवगरणइं कंवल-पक्खर-सय-आवरणइं

घत्ता

अण्णहिं कर अण्णहिं देह गय अण्णहिं करि-कुंभत्थलइं।
सइं भूमिहे णाइं परिट्ठियइं अहि-वम्मीय-सिलायलइं॥ १०

इय रिट्ठणेमिचरिए धवलइयासिय-सयंभुएव-कए
चउसट्ठिमो सग्गो॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पंचसट्ठिमो संधि

गय-साहणु चूरिय समर-मुहे णं पंचाणणु णिव्वडिउ।
वाणासण-वीयउ एक्क-रहु सच्चइ जलसंधहो भिडिउ॥ १

[१]

भिडिय वे-वि णं मत्त महा-गय रुप्पिय-कवय सुवण्ण-मयंगय
तावणीय-माला-मंडिय-सिर जलहर-रव-गंभीर-महग्गिर
चित्त-जोहि केसरि लहु-विक्कम वसह-खंध देविंद-परक्कम
सुरधणु-अणुहरमाण-धणुद्धर कुंडल-पह-जिय-चंद-दिवायर ४
तो सिणि-णंदणेण अपमाणेहिं भिण्ण कुंभि-कुंभ-त्थल वाणेहिं
णिय-कुल-विक्कम-राय-मयंधें धणु सच्चइहे भिण्णु जलसंधे
पुणु पंचहिं पडिविद्धु थणंतरे अवरु सरासणु लेवि खणंतरे
तिक्ख-खुरुप्पें मुट्ठिहे ताडिउ सट्ठिहिं कह-व कह-व उप्पाडिउ ८

घत्ता

जलसंधें आयस-तोमरेण भिण्णु महा-भुउ जायवहो।
लक्खिजइ पवरु भुवंगु जिवं डाले वइट्ठउ पायवहो॥ ९

[२]

तीसहिं जायवेण धणु छिज्जइ तेण-वि स-फरु किवाणु लइज्जइ
धाइउ दुद्दम-देह-वियारउ धणु सच्चइहे छिण्णु वे-वारउ
अवरु लेवि जमदूय-समाणेहिं पाडिय वाहु वे-वि विहिं वाणेहिं
सिरु तइएण खुरुप्पें तोडिउ हंसें सहसवत्तु णं मोडिउ ४
तो रुप्प-रह णिसायर धाइय विहिं मग्गणेहिं वे-वि विणिवाइय
पच्छए लग्गु दोणु तहिं अवसरे णाइं कयंतु चडेप्पिणु रहवरे
तेहत्तरिहिं विद्धु पुणु सत्तहिं दूसासणेण समाहउ अट्ठहिं
दुम्मरिसणेण चउवीसद्धेहिं दूसासणे चालीसद्धद्धेहिं ८
दुम्मुहेण तेत्तिएहिं जे वाणेहिं दुज्जोहणेण अणेय-पमाणेहिं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घत्ता

ते सयल-वि एक्कें जायवेण सरवर-लक्ख परज्जिय।
गय गरुडहो पवर-भुवंग जिह कहि-मि मडप्फर-वज्जिय॥ १०

[३]

तो सिणि-णंदणेण ते सव्व-वि आयामिय परिवड्डिय-गव्व-वि
विद्धु विगण्णु पंचवीसहिं खणे दुम्मरिसणु वारहेहिं रणंगणे
णवहिं सरेहिं लिहिउ सच्चव्वउ +++++++++++++
दूसहु दसहिं दोणु तिहिं ताडिउ अट्ठहिं चित्तसेणु णिद्धाडिउ ४
अट्ठहिं विजउ विविंझइ वीसेहिं दुम्महु विहिं दूसासणु तीसेहिं
दुज्जोहणहो सरासणु खंडिउ अवरु लयउ चामीयर-मंडिउ
छाइउ सर-सएण सिणि-णंदणु कुरुव-भडेहि-मि वेढिउ संदणु
तेण-वि जो जो तहिं पारक्कउ तच्छिउ दसहिं दसहिं एक्केक्कउ ८

घत्ता

रहु सारहि धउ धणुवरु तुरय पाडेवि अट्ठहिं सरेहिं हउ।
दुज्जोहणु भंजिउ सच्चइहे चित्तसेण-रहवरे गउ॥ ९

[४]

पच्छए लग्गु ताम कियवम्मउ वाहिय-रहु अप्फालिय-धम्मउ
करि णिएवि पंचाणण-पोएं णिय-जुत्तारु वुत्तु सिणि-तोएं
सारहि वाहि वाहि रहु भोयहो हम्मउं पेक्खंतहो कुरु-लोयहो
वाहिउ रवि-ससिहर-लल्लक्केहिं रहु चिक्कार-करंतेहिं चक्केहिं ४
विण्णि-वि भिडिय विविह-विण्णाणेहिं विण्णि-वि पोमाइय गिव्वाणेहिं
एक्कमेक्क पहरंति समच्छरु किउ कडवंदणु विहि-मि भयंकरु
भीम-भुअंग-भोय-भय-भीसेहिं सच्चइ विद्धु सरेहिं छवीसेहिं
तेण-वि हउ असीहिं तेसट्ठिहिं धुरि सत्तरिहिं सिलीमुह-लट्ठिहिं ८

घत्ता

अवरेक्कु देहु देहावरणु भिंदेवि महिहे पइट्ठु सरु।
आसीविसु पवर-भुयंगु जिह भक्खेवि गउ अप्पणउं घरु॥ ९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[५]

पाडेवि कियवम्माणु पवञ्चिउ पडिवउ दोणायरिएं खंचिउ
ताडेवि तिहि-मि तिविक्कम-भायरु णाइं ति-सिंगु परिट्ठिउ महिहरु
अवर-वि जे पिसक्क परिपेसिय ते विउणेहिं सव्व णीसेसिय
वीसहिं पंचासहिं सोणासेहिं पुणु पडिवउ परिपिहिउ सहासेहिं ४
तेण-वि तेत्तिएहिं गुरु छाइउ विहि-मि परोप्परु कह-वि ण घाइउ
दियवइ पडिवउ णवहिं णिवारिउ णवहिं महद्धउ दंडु वियारिउ
सारहि रहवरु सएण विहट्टिउ सोण-तुरंग-वेगु ओहट्टिउ
थिउ सु-परिट्ठिउ दोणु महाहवे सत्तरि मग्गण लाइय माहवे ८

घत्ता

तिहिं तिहिं तुरंग एक्केण धउ अवरें धणु दोहाइयउं ।
को ण मुयइ दुट्ठु कलत्तु जिह जं ण-वि मुट्ठिहे माइयउं ॥ ९

[६]

मुक्क गयासणि सिणि-दायाएं वारिय आसत्थामहो ताएं
अवरु सरासणु लेवि किया-वरु विंधइ जाम जणद्दण-भायरु
सारहि ताम समाहउ सत्तिए पुणु पडिवारउ सरवर-पंतिए
विहलंघल-सरीरु मुच्छाविउ कह-व कह-व ण वसुंधर पाविउ ४
पंचहिं कवउ भिण्णु उरु रक्खेवि तं गुरु-चरिउ असेसु-वि लक्खेवि
भद्दिय-भायरेण जुजुहाणें सारहि पाडिउ एक्कें वाणें
एक्कें कणय-कलसु धणु एक्कें तुरय चयारि-वि णिहय चउक्कें
पाडिय चक्क-रक्ख रह-चक्कइं दुट्ठ-कलत्तइं जिह वि ण थक्कइं ८

घत्ता

जो दुण्णय-दोसु आसि कियउ सो एवहिं णिव्वाडिउ ।
धणु कट्टेवि सच्चइ-राउलेण दोणु णाइं विब्भाडिउ ॥ ९

[७]

गय कियवम्म-दोण तहो भज्जेवि णिय-थाणंतरे कुरव पलज्जेवि
सिणि-णंदणु पइट्ठु अणिवारिउ सुअरिसणेण ताम हक्कारिउ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तुहुं हेवाइउ अवरेहिं लोएहिं   कण्ण-कलिंग-दोण-किव-भोएहिं
पहरु पहरु जय-सिरि आसंघेवि   कउ पइसरहि वूहे मइं लंघेवि ४
एम भणेवि विद्धु थिरु थाएवि   अग्गि-सुवण्ण-वण्ण-णाराएहिं
ते सर छिण्ण जणद्दण-भाएं   कम्म-वंधु जिह खीण-कसाएं
सुअरिसणेण चयारि-वि घोडा   हणिय सिलीमुह लाएवि थोडा
तो माहवेण तुरंगम धाइय   हउ धउ चाव-लट्ठि दोहाइय ८

घत्ता

सारहि-सुयरिसण-महा-सिरइं   भल्ल-खुरुप्पेहिं ताडियइं ।
णक्खत्तइं विण्णि वलंताइं   णं आयासहो पाडियइं ।। ९

[८]

जायवेण वोल्लाविउ सारहि   वाहि वाहि रहु अग्गए सारहि
दोण-महा-समुद्दु मइं लंघिउ   एवहिं कुरु-णिहाउ आसंघिउ
अज्जुण-कर-विप्फारिय-जीवहो   सद्दु सुणिज्जइ उहु गंडीवहो
वट्टइ सुहइं णिमित्तइं जायइं   वाहि वाहि जहिं सेण्णइं आयइं ४
जवण-किराय-दरय-कंवोयहं   टक्काहीर-कीर-खस-लोयहं
केरल-मुरलाणीय-णर-जट्टहं   पच्छल-सिंधल-मेहल-भोट्टहं
गुज्जर-गउड-लाड-सोरट्ठहं   कच्छ-खुद्द-मालव-मरहट्ठहं [1]
कोहड-कुसिय-कुणीर-कुणिंदहं   जालंधर-णारायण-विंदहं ८

घत्ता

आयइं समरंगणे सयलइ-मि   सेण्णइं मइं मारेवाइं ।
वहु-कालहो कालें भुक्खिएण   कल्लेवउ अज्जु करेवाइं ।। ९

[९]

आयइं वलइं ताम मारेसमि   पच्छए णरहो पासु जाएसमि
होहि सुमित्त महाहवे धीरउ   हउं सच्चइ दुब्भेय-सरीरउ

---

१. **हि**. वंग तिलंग मलय मरहट्ठहं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पत्थ-मूले सिक्खियइं महत्थइं   देवासुर-विद्दवण-समत्थइं
दूर वाउ(?) सिक्खविउ अणंते   दिढ-पहरत्तणु रेवइ-कंते   ४
दिण्णु गयायरिएण असक्कें   दोमइ-वल्लहेण लहु एक्कें
कामें सद्द-वेहु सहुं दिट्ठिए   को चुक्कइ रिउ णिवडिउ दिट्ठिए
तो जोत्तारें वाहिउ संदणु   कुरु-मज्झेण गयउ सिणि-णंदणु
वंचेवि णर-णरिंद जे थोडा   गयणु पियंत जंति णं घोडा   ८

घत्ता

सव्वइं दुज्जोहण-साहणइं   एक्क-रहेण णिरुद्धाइं।
गय-जूहइं जिह पंचाणणेण   जीविय-संसए छुद्धाइं॥   ९

[१०]

समारंभिओ भीसणो संपहारो   विहंगावली-जाय-गयणंधयारो
सरुक्करण-संछाइए अंतराले   स-माणिक्क- तुट्टंत-सण्णाह-जाले
खुडिज्जंत-चूडामणि-छिण्ण-पट्टो   ललंतंत-गुप्पंत-पाइक्क-थट्टो
दलिज्जंत-मायंग-कुंभत्थलोहो   विणिग्गंत-मुत्तावली-दिण्ण-सोहो   ४
पहम्मंत-चिंधो खुडंतायवत्तो   वसा-वीसढो लोहिओहाणुरत्तो
स-सीसक्क-छिज्जंत-सुंडीर-सीसो   सिवा-मुक्क-फेक्कार-पब्भार-भीसो
वसा-मेय-मज्जंत-णच्चंत-भूओ   इमो एरिसो संगरो एम हूओ
ण सो तत्थ वाहो ण जो भिण्ण-गत्तो   ण सो कुंजरो जो धरित्तिं ण पत्तो   ८
ण सो संदणो जस्स चक्कं ण छिण्णं   ण सो पत्थिवो जस्स अंगं ण भिण्णं
ण सो किंकरो जेण सीसं ण दिण्णं   ण सो सामिओ जेण पासं ण रुण्णं
ण सेण्णस्स तं तेरिसं आयवत्तं   ण तं पंडुरं जं च भूमिं ण पत्तं
पणट्ठा भडा के-वि अण्णे णियत्ता   रणे वावरंता सुभिज्जंत-गत्ता   १२

घत्ता

गय णव दस वीस तीस तुरय   सत्तरि सट्ठि असी-वि णर।
रणे ओलि णिवद्ध कडंतरेवि   पुणु महियले खुप्पंति सर॥   १३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[११]

एम करेवि महंतु महाहउ सरहसु जाम पयट्टइ माहउ
दुज्जोहणेण ताम तिहिं अत्थेहिं चउहिं तुरंगम चिंधउ सत्तेहिं
सारहि विहिं परिवड्ढिय-माणेहिं सत्तहिं चित्तसेण-अहिहाणेहिं
पेसिय-घोर-महाहव-कामें पंचवीस सर सउणीय-मामें
दूसहेण पण्णारस तोमर सोलह दूसासणेण महा-सर
तिहिं तिहिं सो-वि हणंतु ण थक्कइं सच्चइ सेण्णु जेवं परिसक्कइं
विंधइ वलइ धाइ हक्कारइ छिंदइ सर णरवर विणिवारइ
खंडिउ सउणिहे धणु एत्थंतरे कुरुव-राउ तिहिं भिण्णु थणंतरे

घत्ता

हउ चित्तसेणु मग्गण-सएण दूसहु दसहिं सिलीमुहेहिं।
दूसाणणु दूसिउ सत्तरिहिं रुहिरु वहाविउ रण-मुहेहिं ॥

[१२]

अवरु लेवि धणु सउणिय-मामें पण्णारहेहिं विद्धु जस-कामें
दुम्मुहेण वारहेहिं समाहउ दूसहे णवेहिं दूसह-साहउ
दूसासणेण दसहिं सम-घाएं तेहत्तरिहिं णिहउ कुरु-राएं
तिहिं सुमित्तु सारहि उरे ताडिउ णवहिं महद्धउ कह-वि ण पाडिउ
तो सिणि-णंदणेण ते तज्जिय पंचहिं पंचहिं सव्व परज्जिय
सारहि मारिउ कुरुवइ-केरउ रहवरु तुरएहिं णिउ विवरेरउ
तं णिएवि साहणइं पणट्ठइं गरुडहो णायउलाइं व तट्ठइं
पच्छए लग्गु खत्तु रिउ-वूहए णं सुंघंतु वग्घु मिगि-जूहए

घत्ता

जहिं हत्थि-हडउ जहिं तुरय-थड रहवर-विंदइं जहिं जे जहिं।
जिह विज्जु-पुंजु उप्परि गिरिहे सच्चइ णिव्वडइ तहिं जे तहिं ॥

[१३]

ते अट्ठ कुणिंद-कुणीरेहिं दय-किराय-पमुह वर-वीरेहिं
सिल-प्पहाण-सिलिक्का-हत्थेहिं खेवणि-मुट्ठि-गयासणि-हत्थेहिं(?)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सव्वेहिं सच्चइ लइउ अक्खत्तें तेण-वि ते आढत्त पयत्तें
तिरिय-तोमर-कण्णिय-घाएहिं वइहत्थिय-विवाड-णाराएहिं ४
वच्छदंत-खुर-थूणा-कण्णेहिं एवं सिलीमुहेहिं अण्णण्णेहिं
णहे पेक्खंतहं सुरवर-विंदहं दिण्णइं पहरण-णिवह णरिंदहं
तोडइ सिर-कमलइं कर-पल्लव पाय-पओरु हणिय सर-पल्लव
तिण्णि सहासइं हयइं हयत्थहं पंच-सयइं वर-खेवणि-हत्थहं ८

घत्ता

दस सयइं गइंदहं मत्ताहं एयारह सय रहवरहं।
घाइय वे सहस तुरंगहं केण संख वुज्झिय णरहं॥ ९

[१४]

हय-गय-रह-णरवर-उवगरणेहिं छाइय मेइणि विविहाहरणेहिं
वावण-कुमुएरावय-संभव मंद-भद्द-संकिण्ण-मउब्भव
संचूरिय(?) मेइणि असेस तंवेरम कइकय-आजाणेय-तुरंगम
जं सिणि-णंदणेण सर-सीरिउ तं दूसासणेण वलु धीरिउ ४
दुज्जोहणेण सेण सु-गवेसिय जे पहाण जोह ते पेसिय
एहु गावग्गणु घाय ण वुज्झइ पर सामण्णेहिं अत्थइं जुज्झइ
तो आढत्तु तेहिं सामण्णेहिं तेण-वि ते मग्गणेहिं अग्गण्णेहिं
कय पाहण फुट्टंति सिलिक्केहिं भग्गइं वलइं वलंत-तिडिक्केहिं ८

घत्ता

तो सहस-सयहं पंचहं सयहं लक्खहं सीसइं छिण्णइं।
जायवेण रणंगणे देवयहो णं ओवाइउ दिण्णइं॥ ९

[१५]

णासइ कुरुव-राउ दूसासणु दुम्मुहु चित्तसेणु दुम्मरिसणु
तहिं अवसरे परिवड्ढिय-वेरें वुज्झइ आसत्थाम-जणेरें
सारहि णेहि महारहु तेत्तहे सच्चइ कुरु-कडवंदणु जेत्तहे
जें एवहिं जे हयइं कोवंडइं अज्ज-वि थरहरंति उरे कंडइं ४
जायउ जाउ धणंजय-मग्गें खज्जउ वलु जिह जगु उवसग्गें

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ताम विसज्जिय-ससर-सरासणु   दिट्ठु पलायमाणु दूसासणु
पभणइ गुरु णासंतु ण लज्जहि   एक्कहो किह समरंगणे भज्जहि

घत्ता

विस-जउहर जूउ केस-ग्गहणु   गो-ग्गहु कवडु मंतु करेवि।
कहिं एवहिं णासइ णीसुइय   जायव-जम-मुहि पइसरेवि ॥ ८

[१६]

अच्छउ मारुइ पत्थु स-घुडुक्कउ   सच्चइ-सरेहिं जे पाणेहिं मुक्कउ
दोमइ दासि संढ भीमज्जुण   एम भणंतओ सि कुरु णिग्गुण
पउ एवहिं म देहि विवेरउ   भीमें सिरु तोडेवउ तेरउ
तं णिसुणेवि वलिउ दूसासणु   जम-भू-भंगुरु लेवि सरासणु ४
छाइउ सिणि-सुउ सरवर-जालें   तेण-वि सो-वि अणिओह-करालें
अंतरे वाहिउ ताम तिगत्तेहिं   जय-सिरि-सुर-वहु-रामासत्तेहिं
तिण्णि सहास ताहं वइसारिय   चउ जुवराय-तुरंगम मारिय
सारहि णिहउ महारहु खंडिउ   धउ स-पडाउ-वि हासेवि छंडिउ ८

घत्ता

दूसासणु सल्लिउ वच्छयले   सो-वि सुसम्में जय-मणहो।
पच्छा एवि णिउ सवडम्मुहउ   दुज्जसु णं दुज्जोहणहो ॥ ९

[१७]

सच्चइ धरेवि ण सक्किउ आएहिं   दरय-कुणिंद-कुणीर-किराएहिं
णक्कण-तामलित्त-तुक्खारेहिं   मागह-सूरसेण-गंधारेहिं
अंग-कलिंग-वंग-मंगालेहिं   उड्ड-पउड्ड-मुंड-महिपालेहिं
आजाणेय-जवण-जउहेएहिं   ओयहिं अवरेहि-मि अपमेएहिं ४
तो णारायणेण णरु वुच्चइ   अच्छइ आउ गवेसउ सच्चइ
दीसइ कंचण-केसरि-चिंधउ   रुंजइ जलयरु जय-जस-लुद्धउ
पभणइ सव्वसाइ किं आएं   णासिउ कज्जु जुहिट्ठिल-राएं
जो परिरक्खइ सो-वि विसज्जिउ   को पहु णंदइ णाइ-विवज्जउ ८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घत्ता

रवि लंवइ रिउ ण समावडइ दोणु ण जाणहुं किं करइ।
एक्कल्लउ अच्छइ धम्म-सुउ अज्जुणु चिंतहे पइसरइ॥ ९

[१८]

सच्चइ एइ जाम जहिं केसवु अंतरे थक्कु ताम भूरीसवु
जायव-हरिण ढुक्कु लइ ओरें कमु णिवद्धु मइं सीह-किसोरें
धाइउ तो णारायण-भायरु जगु लंघंतु णाइं खय-सायरु
भिडिय परोप्परु सरवर-जालेहिं केसरि-दीहर-णहर-करालेहिं ४
करयर-राउ करंतेहिं चावेहिं सुरधणु-विब्भम-भंगुर-भावेहिं
विहि-मि परोप्परु सारहि ताडिय विहि-मि परोप्परु रहवर पाडिय
विहि-मि परोप्परु णिहय तुरंगम वे-वि वलुद्धुर णाइं विहंगम
विहि-मि परोप्परु कवयइं भिण्णइं विहि-मि परोप्परु चावइं छिण्णइं ८
विहि-मि चम्म-रयणइं उरे भरियइं विहि-मि करेहिं करवालइं धरियइं

घत्ता

उड्डंति पडंति भमंति णहे घाय दिंति सिरे उर-करहं।
फर-विंदहं असिवर-विज्जुलहं अणुहरंति णव-जलहरहं॥ १०

[१९]

विहि-मि चमर-रयणइं रणे भग्गइं विहि-मि परोप्परु छिण्णइं खग्गइं
विहि-मि परोप्परु चावइं भिण्णइं विहि-मि परोप्परु कवयइं छिण्णइं
विण्णि-वि वावरंति कर-पहरेहिं दसणेहिं करि व हरि व वर-णहरेहिं
दाढेहिं कोल व सिंगेहिं महिस व तिहिं भूविहिं सच्चइ-भूरीसव ४
पुणु अब्भंतर-वाहिर-मग्गेहिं विग्गह-पग्गह-पमुहेहिं करणेहिं
सोमयत्त-णंदणेण विरुद्धें पाडिउ जायउ वेहाविद्धें
पाउ दिण्णु गले पच्चुच्चाइयु किर अप्फालहिं महिहे पडाइउ

घत्ता

तो वुच्चइ णरु णारायणेण सीसु धणंजय तउ तणउ।
लहु छिंदहि भुय भूरीसवहो मारिउ भायरु महु-तणउ॥ ८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२०]

जाम ण मुच्चइ सच्चइ पाणेहिं   लइ विभच्छ ताम रिउ वाणेहिं
भणइ किरीडि अकज्जु ण किज्जइ   खत्तु मुएवि केम पहरिज्जइ
तो सहसत्ति कुविउ णारायणु   दुद्दम-दाणविंद-विणिवायणु
कवणु खत्तु जहिं विसु संचारिउ   कवणु खत्तु जहिं जउहरु वालिउ
कवणु खत्तु जहिं किउ केस-ग्गहु   कवणु खत्तु जहिं मंडिउ गो-ग्गहु
कवणु खत्तु जहिं मिलेवि तिगत्तेहिं   तुहुं एक्कल्लउ लयउ अणंतेहिं
कवणु खत्तु जहिं विहउ णरिंदेहिं   रुद्धु भीमु भयदत्त-गइंदेहिं
कवणु खत्तु तुह णंदण-घायणे   कवणु खत्तु घोडा-पय-पायणे

घत्ता

तो पत्थें अमरिस-कुद्धएण   पेक्खंतहो तहो केसवहो।
कुरुवइहे जयासालंभु जिह   छिण्णु वाहु भूरीसवहो॥

[२१]

तो परिहरेवि जणद्दण-भायरु   धिद्धिक्कारिउ खंडव-डामरु
णिम्मल-सोम-वंसे उप्पण्णहो   सयल-कला-कलाव-संपुण्णहो
ण-वि जुज्जइ तुम्हारिस-पुरिसहं   एहु कम्मु पर महुमह-सरिसहं
जे समुद्द-पच्चंत-णिवासिय   णंद-गोव-सिणि-जायव-वंसिय
भणइ पत्थु सव्वहो तणु तम्मइ   जासु णियंतहो भाइ णिहम्मइ
सोमयत्ति तं वयणु सुणेप्पिणु   थिउ देवाहिदेउ चिंतेप्पिणु
जासु ण कोहु ण कामु ण कामिणि   जेण विवज्जिउ जम्मण-जामिणि
जो संसार-मडप्फर-भंजणु   णिक्कलु परमु णिराउ णिरंजणु
सयल-भुवण-जण-मंगलगारउ   जो रुच्चइ सो होउ भडारउ
तं झाएवि णिय-देहब्भंतरे   थिउ पाउग्गमे रणे सर-सत्थरे

घत्ता

तिहि तिविहेण णीसल्लु किउ   सिणि-तणयहो सउरिहे णरहो।
देवाहिदेउ जिणु संभरेवि   सग्गहो गउ वंभुत्तरहो॥

[२२]

पुच्छिउ सेणिएण तो गणहरु कहि महु पहु संदेहु महत्तरु
सच्चइ जो तियसह-मि ण जिज्जइ कंठहो पाउ केम तहो दिज्जइ
कहइ महा-रिसि मागहणाहहो तिविह-परम-सम्मत्त-सणाहहो
पुरु पउलासु णामु तं देवउ भुंजइ सयल-राय-किय-सेवउ ४
तासु धीय देवय उप्पण्णी गुण-विण्णाण-कला-संपुण्णी
णियय-सयंवरे वहु-अवलेयहो घत्तिय ताए माल वसुएवहो
धाइउ सोमयत्तु वर-वाएं पडिवाउ जुज्झे सिणि-राएं
दिण्णु पाउ गले कह व ण मारिउ रोहिणि-वल्लहेण विणिवारिउ ८
लज्जेवि कह-वि पइट्ठु वणंतरे दइवी वाणि समुट्ठिय अंवरे
जो पहु जेट्ठ-पुत्तु तउ होसइ सो सिणि-सुयहो पाउ गले देसइ

घत्ता

तें कज्जें सच्चइ अहिहविउ समर-काले भूरीसवेण।
उच्चाइउ लेवि सयं भुएहिं जिह गोवद्धणु केसवेण ॥ ११

इय रिट्ठणेमिचरिए धवलइयासिय-सयंभुएव-कए
पंचसट्ठिमो सग्गो ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

छासट्ठिमो संधि

किय सच्चइ णर-णारायणहं   कुढे लग्गंतउ णिट्ठविउ।
गुण-वयणेहिं भीमु जुहिट्ठिलेण   तिहि-मि गवेसउ पट्ठविउ।। १

[१]

एत्तहे सिणि-णंदणु मिलिउ   णं जम-दंडु समावडिउ।
एत्तहे कुरुव-राउ चलिउ   पंडव-साहणे अब्भिडिउ।। १

तो दुमय-विराड धणुद्धरेण   हय सर-सएण वाहत्तरेण
विहि भल्लेहिं रायहो छिण्णु धणु   पुणु पंचासिहिं रणे वणिउ तणु
मच्छाहिउ तीसहिं उरे लिहिउ   धट्ठज्जुणु वीसहि विहलु किउ ४
दस-सरेहिं परज्जिउ पवण-सुउ   सहएउ णउलु तिहिं तिहिं तणउ
पंचाल-पुत्त तिहिं तिहिं जे जिय   अवर-वि सामंत णिरत्थ किय
वलु सधणु वणिउ वइरिहिं तणउं   पुणु गउ थाणंतरु अप्पणउं
जहिं अज्जुणु ढुक्कु जयद्दहहो   णं पलय-महाधणु हुयवहहो ८
एत्तहे-वि णवर दोणायरिउ   पंचाल-पवले वले उत्थरिउ
सरवरेहिं विहत्थी-मेत्तएहिं   करिवर-कुंभत्थल-भेत्तएहिं

घत्ता

वले जले थले णहयले दिसि-वलये   सर पज्जुण्णें दरिसियउं।
सो दीसइ कवणु पएसु ण-वि   जेत्थु ण दोणें वरिसियउ।। ११

[२]

सो ण तुरंगमु सो ण गउ   ण-वि रहु ण-वि पहु ण-वि य धउ।
रण-मुहे को-वि ण उव्वरिउ   जो ण दोण-वाणेहिं भरिउ ।। १

तं अलमल-मयगल-रव-मुहलु   तुरमाण-तुरंगम-चलण-वलु
रह-चक्क-किलामिय-धरणियलु   धय-चिंधालुंखिय-गयणयलु

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

दप्प-हरण-पहरण-रण-कुसलु   गयमय-मेलाविय-अलि-सयलु ४
पडु-पडहहो सद्दिय-भुवणयलु   रण-रामालिंगिय-वच्छयलु
पडिपेल्लिउ दोणें पंडु-वलु   णं पवण-गलत्थिउ उवहि-जलु
पंचमुह-चवेड-चुक्क-सवलु   णं हरिण-जूहु छंडिय-कवलु
ओलंविय-असि-फरु-कर-जुयलु   पल्लट्टिय-रहवरु वण-वियलु ८
ल्हिक्कविय-चिंधु परिचित्त-वलु   संभरिय-जुहिट्ठिल-कम-कमलु

घत्ता

तं पंडव-साहणु धीरवेवि   पंच कुमार समावडिय।
पंचेंदिय जेम महारिसिहे   दोणायरियहो अब्भिडिय ।। १०

[३]

सव्वाहरणालंकरिय   सुर-कुमार णं अवयरिय।
जण-मण-णयणाणंदयर   पंच-वि णाइं अणंग-सर ।। १

धट्ठज्जुण-सोयर दुमय-पुत्त   कंचणमय-देहावरण-गुत्त
सोवण्ण-महारह कणय-चिंध   दुव्वार-वइरि-वाहिणि-णिसिंध
वीराहिवीरु वरवीरु केउ   पर चित्तणु कित्तणु चित्तकेउ ४
चित्तरहु सुवम्मउ चित्तवम्मु   धाइउ संवंधु करेवि धम्मु
धउ पाडिउ मोडिउ आयवत्तु   धणु खंडिउ कह-वि ण परिसमत्तु
तो कंचण-कलस-महा-धएण   किवि-कंतें वेहाविद्धएण
पंचहिं पंचहिं उर-लग्गणेहिं   जम-पट्टणु पेसिय मग्गणेहिं ८
णिय-वंधव-णिहणे पवत्तमाणे   धट्ठज्जुणु धाइउ तहिं पमाणे
सर मुएवि महारहु रहहो देवि   किर छिंदइ सिरु करवालु लेवि

घत्ता

तो दोणें वइहत्थिय-सरेण   दुमय-पुत्तु विणिवारियउ।
धउ पाडिउ सारहि विद्दविउ   तुरएहिं रहु ओसारियउ ।। ११

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[४]

तो धट्ठज्जुण-णंदणेण गुरुभय-चोइय-संदणेण ।
अद्धइं दस सर ताडियउ स-सरु सरासणु पाडियउ ॥

तो अवरु पवरु करे करेवि धम्मु उरे विद्धु खुरुप्पें खत्तधम्मु
दोहाइउ धाइउ धरणि पत्तु णं दुमु दुव्वाएं भग्ग-गत्तु
धट्ठज्जुण-णंदणे विगय-पाणें विहखत्तु पधाइउ तहिं पमाणें
कइकय-पहु वसह-समुद्ध-घोणु सर वीस चउक्केहिं विद्धु दोणु
तेण-वि वाहत्तरि वाण मुक्क विहखत्तहो णं जम-दूय ढुक्क
स-तुरंग स-सारहि सायवत्तु रहु भग्गु सो-वि जम-णयरु पत्तु
दप्पुद्धरु धाइउ धट्ठकेउ किउ तह-वि खणद्धें कंठ-छेउ
तिह चेइयाणु तिह सइंभुमालि जरसंधहो सुउ तिह रयणमालि

घत्ता

जो जो दोणहो रणे अब्भिडइं तहो तहो भंजइ माण-सिह ।
खर-णहर चवेडावड्डणेहिं हरिणु वेयारइं सीहु जिह ॥

[५]

दुम्मएं अक्खोहणि-वलेण पेल्लिउ दोणु महा-वलेण ।
रिउहुं करेप्पिणु चप्पणउं गउ थाणंतरु अप्पणउं ॥

विद्दविउ णिएप्पिणु णियय-सेण्णु आयण्णेवि अण्णु-वि पंचयण्णु
जाणावइ भीमहो धम्म-पुत्तु विणिवाइउ अज्जुणु रणे णिरुत्तु
पालिय-परिहास-कियावलेउ सइं पहरइं मंछुडु वासुएउ
सच्चइहे ण आया का-वि वत्त लइ जाहि वच्छ करि विजय-जत्त
सिणि-णंदणु आहवे जइ समत्तु तो अक्खु लहेसहु सुद्धि केत्तु
वुल्लेसइ मं पुणु को वि धुत्तु अहो पंडव-णाहें किउ अजुत्तु
कुढे लाएवि णियय सहोयरासु माराविउ सुहि दामोयरासु
तो वग-हिडिंव-वल-मद्दणेण वोल्लिज्जइ पवणहो णंदणेण

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घत्ता

जइ आसिय वा मोक्कल्लिउ   दोमइ-परिहवे दुविसहे।
तो सव्वु समप्पइ कुरु-वलु   किउ विहवत्तणु उत्तरहे॥

[६]

तो-वि जुहिट्ठिल अज्जु हउं   करमि विहासिउ भाइ-सउं।
दुमय-सुयहे वद्धावणउं   भाणुवइहे विहवत्तणउं॥

थिउ मारुइ उप्परि संदणहो   जयकारु करेवि तव-णंदणहो
णं केसरि सिहरे महीहरहो   णिक्खेवउ दोण-भयंकरहो
अप्पाहिउ पहु धट्ठज्जुणहो   हउं वत्त-गवेसउ अज्जुणहो
विप्फारिय-धणुवरु तुलिय-सरु   णं तिउरहो समुहु पयट्टु हरु
णं मंदरु खीर-महण्णवहो   थाणंतरु कलस-समुब्भवहो
किर ढुक्कइ परिह-पयंग-भुउ   रण-भोयण-कंखउ पवण-सुउ
गय-साहणु अंतरे ताव थिउ   तमि-पाराउट्टउ तेण किउ
सरणियर -णिवारिउ दिसिहिं गउ   णं जलण-जालु दुप्पवण्ण-हउ

घत्ता

तो दोणें विद्धु णिडालयले   भीमें रोस-वसंगएण।
सरु मोडिवि घत्तिउ धरणि-वहे   अंकुसु णाइं महागएण॥

[७]

तो सोणास-महारहेण   वुच्चइ सुर-गुरु सच्छिवेण।
जाहि विओयर ओसरेवि   इत्थु ण सक्कहि पइसरेवि॥

जइ किर अणुमइए महारियए   अज्जुणु पइट्ठु गुरुयारियए
तो मारुइए तुज्झु कहिं तणउं   कुरु-वूहब्भंतरे पइसणउं
पुणु पावणि पभणइ पणय-सिरु   मयरहर-महारव-गहिर-गिरु
पंचासी वरिसइं ताम तउ   णरु णव-जुवाणु किर कवणु भउ
अणुमइए जेण सो पइसरइ   केसउ साहिज्जउ जसु करइ

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

एवड्डु वार हउं अज्जुणहो   आसंकिउ अण्णु-वि अवगुणहो
एवहिं गुरु तव पच्चारियउ   वलु वलु कहिं जाहि अमारियउ
मेल्लिय सुघोस णामेण गय   तहो उप्परि णं जम-दिट्ठि गय ८

घत्ता

पंडव-पयंड-भुयदंड-धुय-लउडि-घाय-दुव्वाय-हउ।
उप्पएवि महारह-पायवहो दोण-विहंगमु कहिमि गउ ॥ ९

[८]

तहिं अवसरे दूसासणेण   णिय-कुल-कित्ति-विणासणेण।
पेसिय सत्ति विओयरहो   सरि गिरिवरेण व सायरहो ॥ १

अद्ध-वहे जे पवण-सुएण छिण्ण   चउ-सरेहिं चयारि तुरंग भिण्ण
धयरट्ठहो णंदण दुण्णिवार   एयारह अंतरे थिय कुमार
विंदार-जेट्ठ-विंदाणुविंद   धाइय मुक्कंकुस जिह गइंद
सुयरिसण-दुव्विमोयण-सुधम्म   सु-रउद्द-सुसेण-रउद्दकम्म ४
सुविसाल- णिरिक्खण-कुंडभेइ   जम-चंड-दंड-कोवंड-हेइ
स-तुरंग स-सारहि स-रह ढुक्क   रवि-किरण-भयंकर सर विमुक्क
ते भीमें परिविंधण-मुहेहिं   तो सयल-वि लइय सिलीमुहेहिं
भड भिंदेवि हेट्ठाणण पयट्ट   गुण-धम्म-विहूणहं सा जि वट्ट ८

घत्ता

तो कुरुव करेप्पिणु सत्तुयउ   पुणु-वि समच्छरु धाइयउ।
केत्तहिं दूसासण जीय-जलु   जोयइ णाइं तिसाइयउ ॥ ९

[९]

तहिं अवसरे दोणाइरिउ   णाइं महाघणु उत्थरिउ ।
पइसेप्पिणु सरवर-णिवहे   रहु अप्फालिउ धरणि-वहे ॥ १

पुणु वीयउ लयउ विओयरेण   गोवद्धणु णं दामोयरेण
पुणु तइयउ विप्फुरियाणणेण   अट्ठावउ णाइं दसाणणेण

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

पुणु लइउ चउत्थउ दुम्मुहेण   णं अमिय-महण-गिरि महुमहेण
उच्चाइउ पुणु पंचमउ रहु   सेसें असेसु णं धरणि-वहु ४
पुणु छट्ठउ वइरि-वियारणेण   स-मघेण व धणु अंगारएण
आयामिउ पुणु सत्तमउ रहु   णं वाहुवलीसरेण भरहु
अट्ठमउ वि एम स-विग्गहेण   णं ससहरु लइउ महागहेण
ते अट्ठ महा-रहवर णिमिय   स-तुरंगम-सारहि धूलिकिय

घत्ता

तो अण्णेहिं अण्णेहिं रहे चडेवि   झड ण सहंति विओयरहो।
गउ पुट्ठि देवि दोणायरिउ   पडिवउ णिय-थाणंतरहो॥ ८

[१०]

अज्जुण-धणु-गुण-गुंजियउ   पंचयण्णु ओरुंजियउ।
भीमें सीह-णाउ कियउ   धम्म-पुत्तु आसासियउ॥ १

पवि-पुत्तें जं किउ सीह-णाउ   तं धाइउ सरहसु अंगराउ
खल खुद्द विओयर थाहि थाहि   कहिं वलु अमणूसउ करेवि जाहि
तो एम भणेवि सर घिविय वीस   पहु पासे ठंति किं कहि-मि वीस ४
पंचहिं अवरेहिं जुत्तारु लिहिउ   स-धुरंधरु कासु ण जणइ दिहिउ
चउसट्ठि विओयरु घिवइ तासु   सइं मग्गण चाइहे जंति पासु
कण्णेण चयारि विमुक्क वाण   काणीण होंति सइ तुच्छ-दाण
पंडवेण मुक्क वहु वंस-वाण   गुण-धम्म-रहिय सइ अप्पमाण ८
रवि-सुएण सरेहिं सरोहु छिण्णु   णिसियरहं विहंजेवि वलि व दिण्णु

घत्ता

कण्णहो कोवंडु पंडु-सुएण   खंडिउ महि-मंडले पडिउ।
को धणु णिज्जीउ ण परिहरइ   जइ-वि महग्घ-कोडि-घडिउ॥ १०

[११]

अवरु चाउ किर करइ करे   ताम विओयरेण समरे।
ताडिउ तिहिं तोमरेहिं उरे   कह-वि ण छुद्धु कयंत-पुरे॥ १

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

धणु वीयउ छिण्णु महावलेण सहुं सारहि सिरेण स-कुंडलेण
सहुं तुरय-चउक्क-धवलुद्धुरेण सहुं रहेण धएण कवंधुरेण
तहिं अवसरे कायरु कुरुव-राउ विहडप्फडु दोणहो पासु आउ ४
अहो ताय ताय तुहुं काइं सिण्णु जें तिहि-मि जणहुं पइसारु दिण्णु
अज्जुण-जुज्जुहाण-विओयराहं विस-विसमउ विसम-धणुद्धाराहं
तिण्णि-वि महु साहणु विद्दवंति जम-काल-कयंतहं अणुहंरति
तं णिसुणेवि पभणइ भूमि-देउ वुच्चइ किं णरवइ णिरवलेउ ८
महु सरि-सुय-विउरहं ण किय वाय एवहिं वोल्लहि किर काइं राय

घत्ता

जाहि जयद्दहु धीरवहि अक्खेवि कण्णहो सउवलहो।
हउं सच्चइ भीमें सूरियउ तुम्हे-वि ते-वि तामब्भिडहो ॥ ११

[१२]

जउहरे जुए केसग्गहणे गो-ग्गहे दूय-समागमणे।
ण किउ णिवारिउ महु तणउ एवहिं जीविउ कहिं तणउं ॥ १

तुहुं वेयारिउ तिहिं णीसण्णेहिं सउणि-माम-दूसासण-कण्णेहिं
जेहिं विरोहिय पंडव डंभें लइय वसुंधर जूयारंभे
जो जूवारु अज्जु सो ढुक्कउ रण-पिडु मंडेवि दाणउ मुक्कउ ४
जो गय-घड-सारिउ संपाडइ जो भीमज्जुण पासा पाडइ
चरु गमु छक्कु वज्झु जो लक्खइ सिंधव-सीस-मरणु सो रक्खइ
तो धर-कामधेणु-संदोहणु दोणहो वयणेहिं गउ दुज्जोहणु
जहिं परिवारिउ भड-संदोहेहिं णरहो जयद्दहो विहिं सर-छोहेहिं ८
ताम दिट्ठ रवि-ससि-समतुल्ला अज्जुण-चक्क-रक्ख जे भुल्ला

घत्ता

(ताम) उत्तमोज्ज-जुहमण्ण रणे पत्थहो पहेण समुच्चलिय।
(लइ) वलहो वलहो कहिं पइसरहु कुरुव-णरिंदें पडिखलिय ॥ १०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[१३]

ते दुइ जण सो एक्कु जणु तिहि-मि भयंकरु जाउ रणु।
सर-सरवरेहिं अणेय हय चूरिय चामर छत्त धय॥

दुज्जोहणेण ते वे-वि जिय तेहि-मि तहो संदण-हाणि किय
गय चक्क-रक्ख पत्थहो मिलिय कुरु-मद्दराय एक्कहिं मिलिय
एत्तहे वि विओयरु वावरिउ णं णर-णिहेण जमु संचरिउ
वर-गय-चोवाण-हत्थु भमिउ णरवर-सिर-झेंडुएण रमिउ
जगडियइं असेसइं रिउ-वलइं उम्मग्ग लग्ग सोणिय-जलइं
पाडियइं छत्त-चामर-धयइं णाडियइं महा-कवंध-सयइं
कप्पियइ कुंभि-कुंभत्थलइं घिवियइं चउदिसु मुत्ताहलइं
हय हय वर-सारहि णिट्ठविय वहु वइवस-पट्टणु पट्ठविय

घत्ता

रह मोडिय वूहइं फोडियइं गय-घड विहडाविय णट्ठ णर।
जिह सीहहो तेम विओयरहो कण्णु जे अग्गइ थाइ पर॥

[१४]

कुरु सेण्णहे सीमंतिणिहे णावइ दुच्चारित्तिहे।
भीमें सव्वु विणासु किउ एक्कु कण्णु पर कहि-मि थिउ॥

रवि-सुएण रवि-किरण-करालें छायउ माया-सरवर-जालें
हसेवि सविब्भमु केरल-जाएं उरयडे विद्धु कण्णु णाराएं
तेण-वि धणु-विण्णाणु पगासिउ पावणि देहावरणु विणासिउ
कुरुव-कुरंगालंघिय-सीमें पंचवीस सर पेसिय भीमें
धणु दोहाइउ रहवरु खंडिउ आयवत्तु धउ छिंदेवि छंडिउ
सारहि भिण्णु तुरंगम घाइय वइवस-पुरवर-पंथें लाइय
अंगराउ ओसरिउ रहंतरु कलयलु किउ सुरवरेहिं अणंतरु
अण्णहिं रहवरे णवर चडेप्पिणु अहिणवु करे कोवंडु करेप्पिणु

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घत्ता

स-विलक्खु स-सज्झसु सूर-सुउ पडिवउ कह-वि कह-वि वलिउ।
सोमाइउ मत्त-महागएण लीलए कमलु जेवं कलिउ॥ १०

[१५]

पुणु वि भिडिय परिकुविय-मण कण्ण-विओयर वे-वि जण।
सर जालालुंखिय-गयण तोसिय-हरि-हर-चउवयण॥ १

विण्णि-वि सधणु रुहिर-जलोल्लिय जमल-पलास णाइं पप्फुल्लिय
णित्तम-तवण-तणुत्तम-तोएं सर तेवीस मुक्क राहेएं
तो कुरु-कुल-कलि-काल-विलासें रक्खस-वंस-विणास-पयासें ४
विसु जउहरु पासा केस-ग्गहु दोमइ-हरणु वसणु वणु गोग्गहु
गुण-विच्छाउ सरेप्पिणु वालहो चाउ चउत्थउ चंपा-पालहो
पाडिउ हियउ णाइं कुरु-णाहहो दाढा-खंडु व आइ-वराहहो
धणु पंचमउं छिण्णु रहु पाडिउ णं कुरुवाहं मडप्फरु साडिउ ८
अवर-महारहे सिहर-णिसण्णें अच्चग्गलउ कम्मु किउ कण्णें

घत्ता

रहे अण्णहिं अण्णहिं संकमइ मासे मासे दस-सय-किरणु।
आइय पुणु घडियब्भंतरेण पंच वार किउ संकमणु॥ १०

[१६]

तहिं अवसरे दुज्जोहणेण पर-वल-जल-अड्डोहणेण।
रवि-तणयहो उद्धरण-मण पेसिय भायर पंच जण॥ १

दुम्मरिसण-दुज्जय-चित्तसेण दुम्मुह-दूसह वहु-अमरिसेण
संकुद्धुद्धाइय रहवरत्थ वर सर-सरासण-हेइ-हत्थ
गुरु-गंधवहुद्धुय-धयवडोह आइद्धावरण-णिवद्ध-कोह ४
तो तेहिं महाहवणुज्जएहिं पंचहि-मि कुमारेहिं दुज्जएहिं
आरोडिउ भीमु मइंद-कीलु रह-महिहर-धय-लंगूल-लीलु

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संजमिय-तोण-केसर-सणाहु णिप्पसर-सरासण-रसण-राहु
सर-णहर-भयंकरु वलेवि थाइ सारंगहं सीह-किसोरु णाइं ८
ते पंच-वि कम-वहे पडिय तासु मुसुमूरिय-एक्कु वि णहु गयासु

घत्ता

तो अण्णें कण्णायड्ढिएहिं लइउ अणंतेहिं सरवरेहिं।
लक्खिज्जइ मारुइ मलउ जिह रुद्दु चउद्दिसु विसहरेहिं ॥ १०

[१७]

सो सर-पंजरु सर-सएण विणिवारिउ पवणंगएण।
कण्णहो छट्टउ छिण्णु धणु चूरिउ सयडु सोवकरणु ॥ १

रवि-सुएण विसज्जिउ लउडि-दंडु सो भीमें किउ सय-खंड-खंडु
तं वि-रहु णिराउहु णीएवि कण्णु दुज्जोहणु दुम्मणु थिउ विसण्णु
पट्ठविय पडीवा अट्ठ भाय णिय-मित्तहो मित्त-सुयहो सहाय ४
ते चित्ताउह-चित्ताउ-चित्त चित्तस्स-सरासण-चारुचित्त
वुह-चित्तधम्म ओ अट्ठ भाय णं वग्घहो कम-वहे हरिण आय
समकंडिउ मारुइ समुहु धाइ आरोडिउ मिगेहिं गइंदु णाइं
णाराएहिं पंडु-सुएण भिण्ण गय धरणि महा-दुम णाइं छिण्ण ८
स-तुरंग स-सारहि सायवत्त स-सरासण स-रह स-धय समत्त

घत्ता

अण्णहिं भुय अण्णहिं चरण गय अण्णहिं सीसइं पाडियइं।
णं जउहर-ज[illegible]-महा-दुमहो फलइं स-डालइं साडियइं ॥ १०

[१८]

चडेवि महारहे सत्तमए वलिउ समच्छरु तहिं समए।
पडिवउ भीमें वि-रहु किउ सत्तम वार रणे कण्णु जिउ ॥ १

हय सत्त महा हय सत्त सूव हरि अट्ठवीस णिज्जीव हूव
रुहिरारुणु सहुं सुहडेहिं कण्णु णं धाउ सिलावडे गिरि-णिसण्णु

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तो कुरुव-णरिंदें तहो सहाय   पडिवारा पेसिय सत्त भाय
दिढरहु सत्तुंजउ सत्तुहणु   दुद्धरु जउ विजउ विगण्णु महणु
धाइय दुद्धरिस विओयरासु   णं मत्त महागह ससहरासु
आढत्तु महाहउ परम-घोरु   णं धरिउ करिहिं केसरि-किसोरु
सो मारुइ कम्मइं करइं वे-वि   कण्णहो आभिट्टइ हणइ ते-वि ते-वि
कण्णहो विणिवारइ वाण-जालु   ताह-मि ढुक्कइ णं पलय-कालु
मणि-कुंडलु कण्णहो तणउ छिण्णु   ताह-मि एक्केक्कउ सरेहिं भिण्णु

घत्ता

जे कुरुव-णरिंदें पट्ठविय   तेण-वि भीमहो आलणउं ।
जेमंतहो कण्णहो भोयणए   णं किय सत्त-वि सालणउं ॥

[१९]

तो सोणिय-पव्वालिएण   कण्णें कोव-करालिएण ।
कड्ढेवि स-सरु सरासणउं   छिण्णु कवउ भीमहो तणउं ॥

पंडवेण-वि तासु ण दिण्णु खणु   जं लेइ सइं करे तं हणइ धणु
सत्तमउ खुरुप्पें खंडियउ   अट्ठमउं विहंजेवि छंडिउ
णवमउं खल-हियउ व वंकुडउ   दसमउं कु-कलत्तु व थड्डुडउ
एयारहमउं सरु ताडियउ   ससि-खंडु व गयणहो पाडियउ
वारहमउं कोडि-वलग्गणउ   किविणहरु व घल्लिय-मग्गणउ
तेरहमउं वइरि-णिसंधणउ   दुज्जण-दुव्वयणु व विंधणउ
चउदहमउं वासव-चाव-समु   पण्णारहमउं संगाम-खमु
सोलहमउं रवि-तणयहो तणउं   गुण-विद्धि-रहिउ णं कित्तणउं

घत्ता

धणु उद्दलिय-लयंताहं   भीमसेण-चंपाहिवहिं ।
सम-सीसी वट्टइ विहि-मि रणे   णं णं दइव-पयावहिं ॥

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

[२०]

तो आरोसिउ रवि-तणउ खंडिउ रहु भीमहो तणउ।
हउ सारहि हयवर तुरय स-धय स-चामर धरणि गय ॥ १

तो णिय-रहवरेण विसुद्धएण कण्णाणुअ-अणुएं कुद्धएण
पट्ठविय सत्ति रवि-णंदणहो किर णिवडइ उप्परि संदणहो
णं धगधगंति पलयग्गि-सिह रवि-सुएण णिवारिय असइ जिह ४
तो भीमें करे असि-लट्ठि किय स-वि छिंदेवि भिंदेवि खयहो णिय
पुणु हणइ णवल्लेहिं पहरणेहिं णिज्जीव-तुरंगम-वारणेहिं
रहवरेहिं रहंगेहिं वर-भडेहिं जंपाणेहिं छत्तेहिं धयवरेहिं
रवि-तणएं ताइ-मि णिज्जियइं मुसुमूरेवि महिहे विसज्जियइं ८
वड्ढारिय सुद्धि विओयरेण विज्जु व महिहरहो पओहरेण

घत्ता

जा जाहि कण्ण णउ हणमि पइं सुट्ठु किएण-वि अवगुणेण।
फुडु दिवसे चउत्थए पंचमए तुहुं मारेव्वउ अज्जुणेण ॥ १०

[२१]

हसेवि दिवायर-णंदणेण किय-रिउ-कुल-कडवंदणेण।
धणु-कोडिए पडिपेल्लियउ पुणु मारुइ णित्तेल्लियउ ॥ १

जाहि विओयर भोयण-सालउ अहवइ कहिं मग्गे भिक्खालउ
णउ मारमि कुंतिहे आएसें हउं तुम्हहं पंचमउ विसेसें
जइ मारिउ गंडीव-धणुद्धरु णं तो ते जि तुम्हि सो भायरु ४
ताम जणद्दणेण णरु पेसिउ एहु सो कण्णु तुहारउ वइरिउ
जाम ण आएं भीमु णिहम्मइ अरि सवसाणु ताम वरि गम्मइ
तो गंडीव-महाउह-हत्थें सत्तु-विणासु मुक्कु सरु पत्थें
सो विणिवारिउ आसत्थामें रवि-सुउ ल्हसिउ धणंजय-णामें ८
सच्चइ-रहवरे चडिउ विओयरु मिलिउ किरीड-मालि दामोयरु

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घत्ता

ते णिएवि चयारि-वि कुरुव-पहु णाइं तिसूलें सल्लियउ।
हरि-हर-सइंभुव-वासवेहिं कुसुमवासु णरे घल्लियउ॥

इय रिट्ठणेमिचरिए धवलइयासिय-सयंभुएव-कए
छासट्ठिमो सग्गो॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सत्तसट्ठिमो संधि

*सच्चइ-भीम-समागमणे णिय-कुल-गिरि-सिहर-सयद्दहहो।
जिणेवि असेस णराहिवइ रणे अज्जुणु भिडिउ जयद्दहहो ॥ १

[१]

सच्चइ-भीम-पत्थ ते दुद्धर तिण्णि-वि एक्कहिं मिलिय धणुद्धर
तिण्णि-वि णं पच्चक्ख हुवासण तिण्णि-वि णं हरि-हर-कमलासण
तिण्णि-वि रवण्णइं तिहिं भुवणहिं +++++++++++++++++
तिण्णि-वि सिहर णाइं अचलिंदहो तिण्णि-वि णं चूडामणि इंदहो ४
तिण्णि-वि वंधव वड्ढिय णेहा जम-वइसवण-पुरंदर जेहा
तिण्णि-वि काल णाइं णर-वेसें कुरुव-णरिंदहो कुविय विसेसें
णं थिय तिण्णि लोय एकंतहो ढुरुढुल्लंति जयद्दहु जेत्तहो
तिण्णि कयंत व विहि उप्पाइय रण-भोयणु भुंजणहं पराइय ८

घत्ता

ताहं चउत्थु जणद्दणु सच्चइ-वीभच्छ-विओयरहं।
णं परमप्पउ परम-गुरु वंदणउ पियामह-हरि-हरहं ॥ ९

[२]

चलिय चयारि-वि वइरि-वियारा णं सणि-राहु-केउ-अंगारा
वलिउ विओयरु मत्त-गइंदहं उत्तमोज्ज-जुहमन्न-णरिंदहं
सच्चइ दूसासणेण खलिज्जइ तेण-वि तासु पडुत्तरु दिज्जइ
तउ पेक्खंतहो कुरु ओसारिउ ++++++++++++++ ४
तउ पेक्खंतहो जिउ कियवम्मउ जसु धयरट्ठ-सुएहिं सहुं सम्मउ

---

*ज. gives the following verse in the beginning:
गज्जंति ताम्व कइ-मत्त-कुंजरा लक्ख-लक्खण-विहीणा।
जा सत्त-दीह-जीहं सयंभु-सीहं ण पेच्छंति ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तउ पेक्खंतहो तहो जलसिंधहो पाडिउ सीसु सवाहहो खंडहो
हउ सुअरिसणु भग्गु दुज्जोहणु तुहु-मि पणट्ठु णट्ठु कलि-रोहणु
हय-पहाण-जोहेहिं पइं जुज्झिउ तहिं मइं सयलु वलावलु वुज्झिउ
अवरु तिगत्तउ हणिउ अलंवुसु णाइं महा-भुवंगु आसीविसु

घत्ता

ताहं णियंतहं तुहु-मि रणे जं महु उव्वरिउ अ-मारियउ।
तं दोमइ-केसग्गहणु किर भीमें थुत्थुक्कारियउ॥

[३]

थिउ दूसासणु णं हउ खग्गें गउ सच्चइ कण्हज्जुण-मग्गें
मारुइ हत्थि-हडउ मुसुमूरइ णिय-वंधवहं मणोरह पूरइ
उत्तमोज्जु उत्तमह वियट्टइ जूहमण्णु-वि सेण्णइं दलवट्टइ
णर-सरवरहं मरइ जो ढुक्कइ पंचहं जमहं को-वि किं चुक्कइ
हय गय जोह वसुंधर पाविय रत्त-तरंगिणि तुरिउ वहाविय
सिरइ तरंति समउ सीसक्केहिं रह वहंति वुड्डंतेहिं चक्केहिं
छत्तइं चामराइं धय-चिंधइं आहरणइं मणि-रयण-समिद्धइं
के-वि तरंति तहि-मि अणुवद्धेहिं से वि(?) वंधु वंधंति कवंधेहिं

घत्ता

रत्त-तरंगिणि उत्तरेवि सामिय-पसाय-रिणु हिए ठवेवि।
वाउरंति सहुं अज्जुणेण णिय-जीविउ जम्महो हत्थे ठवेवि॥

[४]

तहिं अवसरे किय-परम-विसाएं वुच्चइ अंगराउ कुरु-राएं
कण्ण कण्ण रवि लंवइ लग्गउ अज्जुणु केण-वि समरि ण भग्गउ
पेक्खु पेक्खु किह साहणु मारइ सुण्णउ जमहो रट्ठु वड्ढारइ
पइ-मि जियंते अम्हहं आवइ हणु हणु जाम ण उप्परि आवइ
रक्खु जयद्दहु वलु साहारहि विहवत्तणु दूसलहे णिवारहि
एहु सो अवसरु पडिउवयारहो अद्धासणहो कत्त-सर-भारहो
पभणइ सउरि ण सक्कमि धीमें वड्ड-वार खलियारिउ भीमें

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एव-मि तउ आएसें जुज्झमि विजउ पराजउ कासु ण वुज्झमि ८

घत्ता

एवं चवेवि चंपाहिवइ तइलोक्कुच्छलिय-महागुणहो।
जेम गइंदु महा-गयहो सवडम्मुहु धाइउ अज्जुणहो॥ ९

[५]

ताव स-चक्करक्खु स-जणद्दणु स-धणु स-भीमु स-माहवि-णंदणु
स-रह स-सारहिं पत्तु धणंजउ वलइं हणंतु रणंगणे दुज्जउ
णं हुयवहु डहंतु तण-कट्ठइं गरुडहो णायउलाइं व तट्ठइं
णव सर संधेवि सव्वायामें विद्धु थणंतरे आसत्थामें ४
सत्तहिं वासुएउ वच्छत्थले णं सारंग लग्ग णीलुप्पले
ते सर स-सर-सरासण-हत्थें दसहिं दसहिं विणिवारिय पत्थें
पंचवीस गुरु-सुएण विसज्जिय सत्तरि दुज्जोहणेण पउंजिय
दस रवि-सुएण सत्त तहो ताएं अवर-वि अवरें कउरव-लोएं ८

घत्ता

सउणि-सल्ल-सल-कण्ण-किव अवर-वि णरेण सामंत-सय।
पंचहिं छहिं सत्तहिं हणेवि पुणु सट्ठिहिं सट्ठिहिं सव्व हय॥ ९

[६]

दसहिं सरेहिं विद्धु चंपावइ भूमि-भाउ भुवणिंदिहिं णावइ
पुणु पडिवउ सत्तहिं धणु-धीमें तिहिं सिणि-णंदणेण तिहिं भीमें
तेण-वि दीहर सर सर-लट्ठिहिं तिण्णि-वि ताडिय सट्ठिहिं सट्ठिहिं
लइउ धणंजएण सय-गण्णें सो पंचासहिं घाइउ कण्णें ४
णरेण सरासणु छिण्णु खणंतरे णवहिं पडीवउ भिण्णु थणंतरे
अवरे रवि-णिहेण णाराएं चक्क-रक्ख दोहाइय घाएं
ताम णिवारिउ आसत्थामें अवरु लेवि धणु सव्वायामें
दिणमणि-णंदणेण णरु छाइउ विहि-मि परोप्परु कहव ण घाइउ ८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घत्ता

जलु थलु णहयलु दिस-वलउ रवि-मंडलु मंडिउ सरवरेहिं ।
जुज्झंतहं कण्णज्जुणहं विहिं अंतरु दिट्ठु ण सुरवरेहिं ॥ ९

[७]

सच्चइ भीमें लयउ अखत्तें विद्धु अणेयहिं सरेहिं पयत्तें
कुरु-जणु कुरु-णिवेण पच्चारिउ धावहो कण्णु रणंगणे मारिउ
करिवर कक्क(?)महाधउ पाडिउ +++++++++++++++
चक्क-रक्ख-हय धुरि विणिवाइउं हरिहिं चउक्कउ जसु जलु धाइउ ४
राहा-सुउ सरेहिं मुच्छाविउ णिय-रहे गुरु-णंदणेण चडाविउ
पुणु पउरंदरि विलिहिउ तीसहिं णरु वारहहिं किविं(?) हरि वीसेहिं
सत्तहिं तावणि-तणएं तच्छिउ चउहिं जयद्दहेण उम्मच्छिउ

घत्ता

सरहं सहासइं पेसियइं कउरवेहिं जाइं रणे दुज्जयहो ।
ताइं समुद्दहो सरि-मुहइं सव्वइं णासंति धणंजयहो ॥ ८

[८]

सो सर-णियरु णिवारिउ पत्थें णरवइ सव्वु-वि लद्धउ हत्थें
दोण-पुत्तु चउसट्ठिहिं छाइउ विहिं दुज्जोहणु कह-वि ण घाइउ
तिहिं विससेणु भिण्णु किउ वीसहिं मद्दाहिउ सएण सलु तीसहिं
दसहिं सरेहिं जयद्दहु ताडिउ तिहिं दूसासणु कह-व ण पाडिउ ४
रहवर-हय-गय-जोह-णिसिंधइं जो जो ढुक्कइ तं तं विंधइं
दूसहु दुण्णिरिक्खु संभूयउ णं अवसाण-काले जम-दूयउ
सत्थ-वारु दिव्वत्थु विसज्जिउ कउरव-साहणु तेण परज्जिउ
णरवइ णिरवसेसु वामोहिय सीहें जेम महा-गय रोहिय ८

घत्ता

रहियहं रहहं तुरंगमहं कुरु-णरहं णरिंदहं गयवरहं ।
भिंदेवि अंगइं जंति सर रवि-किरण णाइं णव-जलहरहं ॥ ९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[९]

मुहरंगेहिं तुरंगे रंगाविय   खंडिय रहवर कडि कडुवाविय
चित्तइं णिवडियाइं सामंतहं   णिसुढिय वाहु-दंड पहरंतहं
कुरुवइ थंभ(?) जाय गइ-भग्गी   केवल मरण-चिंत परिलग्गी
के-वि चवंति जाहु वरि तेत्तहे   फग्गुण-धणु-गुणु-सद्दु ण जेत्तहे
ल्हिक्क के-वि रह-गय-तुरियंतरे   चिंतवंति कि-वि चित्तब्भंतरे
जाउ धणंजउ धरेवि ण सक्कहु   मरउ जयद्दहु पुरउ ण थक्कहु
किहि-मि पहरणाइं परिचत्तइं   केहि-मि ल्हिक्काविय णिय-छत्तइं
केहि-मि भरिय वाहु सर-दंडेहिं   के-वि णट्ठ लग्गंतेहिं कंडेहिं

घत्ता

वण-वियणाउरु करेवि वलु   तहो अवजस-सलिल-महद्दहहो ।
राहु जेम रवि-मंडलहो   गउ अज्जुणु भिडिउ जयद्दहहो ॥

[१०]

तो हक्कारिउ सेंधव-राएं   पंडव संढ भरिउ जम-राएं
वाहि वाहि किं धरहि महारहु   हउं सो अच्छमि एहु जयद्दहु
विजयासंघ करेवि णिय-खंडए   दोमइ जेण हरिय वलिवंडए
वूहहो वारि जेण जिय पंडव   सीहहो णासेवि गय वेयंड व
एम भणेवि भुवइंद-करालें   छाइउ अज्जुणु सरवर-जालें
णउ तुरंग णउ दीसइ संदणु   णउ सच्चइ ण भीमु ण जणद्दणु
णउ गंडीउ ण कंचण-वाणरु   लग्गु जयद्दहु जिह वइसाणरु
भग्गइं वलइं जाइं किय-जत्तइं   ताइ-मि तहिं अवसरे परिपत्तइं

घत्ता

सएण पत्थु हरि सत्तिरिहिं   छहिं सच्चइ सत्तहिं पवण-सुउ ।
चक्क-रक्ख तिहिं तिहिं हणेवि   दुप्पेक्खु जयद्दहु रवि व हुउ ॥

[११]

पंडव पहरु पहरु किं अच्छहि   मइं विंधंतउ किं ण वि अच्छहि
तुहुं हेवाइउ केहि-मि अण्णेहिं   भूरीसव-कलिंग-किव-कण्णेहिं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हउं सो सिंधव-णाहु ण वुज्झहि   सव्व-परक्कमेण लइ जुज्झहि
खंडवु दड्ढु जेण सब्भावें   कालकंज जिय जेण पयावें ४
जेण णियत्तउ उत्तर-गोग्गहु   जेण परक्कमेण किउ विग्गहु
तेण परक्कमेण लइ वावरु   णं तो इट्ठा-देवय संभरु
पभणइ पत्थु कोवाणले चडियउ   कहिं महु अज्जु जाहि कमे पडियउ
तोणा-जुयले सिलीमुह जेत्तिय   मेल्लि मेल्लि समरंगणे तेत्तिय ८

घत्ता

कुरु पच्चारिउ अज्जुणेण   ते तुम्हइं सो हउं एहु रणु।
रक्खहो सीसु जयद्दहहो   लइ धरहु सव्व मइं एक्कु खणु ॥ ९

[१२]

एम भणेवि तोसिय-सुर-सत्थें   सर चउसट्ठि विसज्जिय पत्थें
छिण्ण णहंगणे सिंधव-राएं   सिल-धोएण वाण-संघाएं
तिहिं गांडीउ विद्धु ण महा-गुणु   छहिं णाराएहिं ताडिउ अज्जुणु
अट्ठहिं घोडा अट्ठहिं वाणरु   पंचहिं रहु सएण दामोयरु ४
सच्चइ सच्चवंतु चउवीसेहिं   छाइउ भीमसेणु वत्तीसेहिं
विहिं जुहवण्णु थणंतरे ताडिउ   उत्तमोज्जु तिहिं कह-वि ण पाडिउ
तो णरेण सारहि-सिरु ताडिउ   कणय-वराह-चिंधु तमि तोडिउ
चक्क-रक्ख हय रहवरु खंडिउ   तुरय-चउक्कु वियारेवि छंडिउ ८

घत्ता

वुच्चइ णरु णारायणेण   पहरंतहं किज्जइ खेउ ण-वि।
खुडहि जयद्दह-सिर-कमलु   अत्थवणहो जाम ण जाइ रवि ॥ ९

[१३]

विद्धखत्तु णामेण मह-प्पहु   तासु पुत्तु इहु जाउ जयद्दहु
दइवी वाणि समुट्ठिय जम्मणे   आयहो सिरु छिज्जंतु रणंगणे
जइ कयाइ धरणियले पलोट्टइ   तो हंतारहो सीसु विसट्टइ
तो एं कारणेण रणे दुज्जय   अंजलीउ सरु मेल्लि धणंजय ४
जो सुइणंतरे देवेहिं दिण्णउं   अहि पच्छण्ण-वेसु अवइण्णउं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तेहिं खुडेप्पिणु तेहिं णहंगणे विद्धखत्तु जहिं तवइ तवोवणे
तासु करंजलि-जले जइ घिप्पइ तो सिरु फुट्टेवि सो-जि समप्पइ
तं उवएसु लहेवि सेयासें खुडिउ सीसु णिउ सरेणायासें ८

घत्ता

हंसें तोडेवि कमलु जिह उच्छंगे णिमिउ तहो तावसहो ।
तेण-वि घत्तिउ धरणियले सिरु फुट्टेवि गउ पुरु वइवसहो ॥ ९

[१४]

णिहए जयद्दह-राए रणंगणे तूरइं हयइं जुहिट्ठिल-साहणे
कलयलु सुट्ठु घुट्ठु वड्ढारउ चेलु भमाडिउ अगणिय-वारउ
पूरिय पइज्ज धणंजय-केरी भमिय कित्ति आणंद-जणेरी
कउरव-साहणु चिंतावण्णउं णं वहे हरिण-जूहु आदण्णउं ४
परिहव-दवेण दड्ढु विद्दाणउं णिंदइ वार-वार अप्पाणउं
एक्कु धणंजउ धरउ सरासणु मग्गइ दइउ जासु रणे पेसणु
जउहर-जूय-कयग्गह-गोग्गह ते जे जाय णव गह साणुग्गह
पाडिय जे कवडेण दुरोयर एवहिं ते परिणविय महा-सर ८

घत्ता

ताम सयंभुवणाहिवइ सुर-सत्थु सुरिंदहो पासे थिउ ।
मेल्लिउ कुसुम-वासु णरहो हय दुंदुहि साहुक्कारियउ ॥ ९

इय रिट्ठणेमिचरिए धवलइयासिय-सयंभुएव-कए ।
[णामें] जयद्दहवहो[उ]सत्तसट्ठिमो[इमो] सग्गो ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अट्ठसट्ठिमो संधि

णिहए जयद्दहे दुव्विसहे अम्हहं जयास ण पूरइ।
एवहिं को साहारु महु दुज्जोहणु हियए विसूरइ ॥१

[१]

धवलु महारउ तेण तेण चित्तें। थिउ धुर छंडेवि तेण तेण चित्तें।
को भरु कड्ढइ तेण तेण चित्तें। खंधु समोड्डेवि तेण तेण चित्तें॥ १

सव्वहं संगरे पहरंताहं ओ मंडु हरंतु धरंताहं
किह खुडिउ जयद्दह-सिर-कमलु दुज्जोहणु मेल्लइ अंसु-जलु
खउ आउ असेसहं सज्जणहं परिणविय वसुंधर दुज्जणहं
पहु धीरेवि धीरेवि कुरुव-वलु गुरु-णंदणु पभणइ अतुल-वलु ४
परिरोवहि णरवइ काइं तुहुं साहारहि साहणु लुहहि मुहु
ण करेवउ परम-विसाउ पइं पहरंतहे सयल मरंति सइं
जो मुउ सो मुउ किर कवणु छलु अच्छउ चंपाहिउ सल्लु सलु
णित्तिंसहो पावहो णिग्गुणहो हउं एक्कु पहुच्चमि अज्जुणहो ८

घत्ता

सव्वहो लोयहो पीड कर दुव्विसह पुरस्सर कामहो।
फग्गुण-माहव विद्धि-कर पर एक्कहो आसत्थामहो॥ ९

[२]

एम भणेप्पिणु तेण॰ पडिभडे भिडिउ तेण॰
मेहु महीहरे तेण॰ जिह ओवडिउ तेण॰
एम भणेप्पिणु पडिभडे भिडियउ मेहु महिहरे जिह ओवडिउ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गुरु-णंदण अमरिस-कुविय-मण   पहरंति परोप्परु के-वि जण
एक्कहो-वि एक्कु ण-वि ओसरइ   एक्कहो एक्कु-वि णउ खउ करइ
पेक्खंतहो तहो दुज्जोहणहो   णीसेसहो कउरव-साहणहो   ४
गुरु-सुएण धणुहे गुणे करेवि कर   पहिलारा पेसिय सउ-वि सर
तेहत्तरि पुणु णारायणहो   सउ सट्ठि णरहो णारायणहो
सेयासहो दस दस दारुयहो   णव भीमहो वारह सिणि-सुयहो
जुहमण्णुहे सत्त रणुद्धयहो   वत्तीस कणय-वाणर-धयहो   ८
पंचहिं गंडीव-लट्ठि पहय   छहिं उत्तमोज्जु अट्ठहिं तुरय

घत्ता

सच्चइ-हरि-भीमज्जुणहुं   रह-छत्त-धयहिं सर लग्ग।
दीहर-विग्गह विसम-मुह   णं विसहर दुमेहिं वलग्ग ॥   १०

[३]

ताव धणंजउ तेण०   विप्फुरियाणणु तेण०।
कुविउ गइंदहो तेण०   जिह पंचाणणु तेण०॥   १

तहो रण-रस-रहस-वसुद्धयहो   सर-सहसु विसज्जिउ गुरु-सुयहो
तें पाडिउ हरि-लंगूल-धउ   वारहहिं तुरंग-चउक्कु हउ
छहिं सारहि सत्तहिं दोण-सुउ   मुच्छाविउ कह-वि कह-वि ण मुउ
गुरु-णंदणु भणेवि ण घाइयउ   किउ णिक्किउ ताम पधाइयउ   ४
वाहत्तरि पेसिय तेण सर   जम-राएं णावइ आण-कर
सेयांसें ताहं विणासु कउ   एक्केक्कउ तिहिं तिहिं झत्ति हउ
अवरेक्कें ताडिउ वच्छयले   तणु छिंदेवि णिवडिउ धरणियले
कह-कह-वि ण मुउ रहे उल्लरिउ   णिउ सूएं कहि-मि राउ तुरिउ   ८

घत्ता

तो अप्पुणु गंडीव-धरु   णिंदइ हेट्ठामुहु होएवि।
कवण लहेसमि सुद्धि हउं   गुरु-पियर-पियामह घाएवि ॥   ९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[४]

दोणहो पासिउ तेण०   किउ पराणउं तेण०।
हउ मइं पावें तेण०   पंडु-समाणउं तेण० ॥

तो पुरिसु धिगत्थु धिगत्थु करु   गंडीउ धिगत्थु धिगत्थु सरु
चारहडि धिगत्थु धिगत्थु रणु   जहिं हम्मइ वंधव-सयण-जणु
जे मुक्क वाण णइ-णंदणहो   अवरत्तउ सो अज्ज-वि मणहो
भयवत्त-महत्तरु णिट्ठविउ   पेयाहिव-पट्टणु पट्ठविउ
जो वंदणीउ समु केसवहो   तहो छिण्णु वाहु भूरीसवहो
रोवाविय दूसल विहव किय   संदेहे किवासत्थाम थिय
महि होसइ सयल जुहिट्ठिलहो   महु पाउ जयासुकंदुलहो
णिक्कारणे रइआरोहणेण   माराविय सुहि दुज्जोहणेण

घत्ता

रण-रंगंगणे पत्थु णडु   किर हरिस-विसायहिं णच्चइ।
ताम महीहरे मेहु जिह   उत्थरिउ कण्णु जहिं सच्चइ ॥

[५]

पत्थु पधाइउ तेण०   तवणाणंदहो तेण०।
मत्त-गइंदु व तेण०   मत्त-गइंदहो तेण० ॥

हरि भणइ वाम करे केसविय   किं सत्ति ण पेक्खहि वासविय
आयहे कहिं जाहि अ-मारियउ   वीभच्छु समासए वारियउ
चंपाहिउ माहवे लहउ स-वि   विहिं एक्कु-वि एक्कहो वज्झु ण-वि
सच्चइहे समप्पिउ णियय-रहु   थिउ दारुइ सारहि दुव्विसहु
उब्भिउ चामीयर-गरुड-धउ   सव्वहो कुरु-जणहो जणंतु भउ
सुग्गीव सेण्ण घण पुप्फहय   सवलाह जुत्त तुरंग गय
रणु जाउ सूर-सिणि-णंदणहुं   वहु-मग्गोवाहिय-संदणहुं
छिंदंत परोप्परु सरेहिं सर   णं चंद दिवायर करेहिं कर

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

घत्ता

गुणु दोहाइउ सच्चइहो हरि भीमज्जुणहं णियंतहं ।
कण्ण-धणुग्गय-पीडियहं को रक्खइ जीउ मरंतहं ।।

[६]

अवरु सरासणु तेण० लेवि तुरंतें तेण० ।
विद्ध थणंतरे तेण० रोस-फुरंतें तेण ० ।।

कण्णहो सव्वंगिउ भरिय सर णं कालहो-केरा आण-कर
सारहि भल्लेण वियारिउ पेयाहिव-पुरे पइसारियउ
चउ-भल्लेहिं तुरय-चउक्कु हउ तिहिं पाडिउ रहवर-कक्ख-धउ
धणु छिण्णु भिण्णु देहावरणु णर वज्झु भणेप्पिणु पत्तु मरणु
कुरुवइ स-रहेण ण वाहियउ सइणेउ ण केण-वि साहियउ
तहिं अवसरे रहसुद्धाइयउ रहु लेवि सुमित्तु पराइयउ
सो सिणि-णंदणहो समावडिउ दासारुहु दारुय-रहे चडिउ
अत्थवणहो ताम पयंगु गउ कुरु दुम्मणु अवरहं जाहु खउ

घत्ता

मं लग्गेसहि दुव्विसहु धगधगंतु णहयल-घरहो ।
रवि कोव-पलित्तु पयावइणा णं घत्तिउ पच्छिम-सायरहो ।।

[७]

ताम विओयरु तेण० उम्मण-दुम्मणु तेण० ।
कह किरीडिहे तेण० मसिवुण्णाणणु तेण० ।।

चंपाहिउ चावहिं छिण्णएहिं महु गालि-सहासेहिं दिण्णएहिं
जं मुट्ठिए हणेवि ण मारियउ तं पइं किर थुथुक्कारियउ
तिह करु जिह तोडहि सिर-कमलु विससेणु ण जीवइ जेम खलु
तो णिरु परिवड्ढिय-मच्छरेण पच्चारिउ अंगराउ णरेण

सय-वार वियत्तणे वि-रहु किउ   णउ केण वि गालि-सएहिं लइउ
जं सत्तु भीमु जं संभरहि   महु कल्लहो कल्ल-कल्ले मरहि
जं गुणु अहिमण्णहो छिण्णु पइं   मारेवउ तं विससेणु मइं
जइ आयहं एक्कु वि णउ करमि   तो चियहे वलंतिहे पइसरमि

घत्ता

ताम पसंसिउ महुमहेण   पइं सरिसु अवरु को महियले।
जो उज्जलहो जयद्दहहो   सिरु खुड्डइ जियंतए कुरु-वले॥ १०

[८]

तो गंडीवेण तेण०   जाउ विहत्तउ तेण०।
अक्खोहणियउ तेण०   सत्त समत्तउ तेण०॥

णरु पभणइ थोत्तुगिण्ण-गिरु   कर-कमल-कयंजलि-पणय-सिरु
जं जउहरे चुक्क हुआसणहो   जं पाडिय राह णहंगणहो
जं खंडवे सुरवरे परिहविय   जं कालकंज-वणे विद्दविय
जं कुरुवइ विग्गहे वावरिउ   जं उत्तर-गोग्गहे उव्वरिउ
जं धरेवि ण सक्किउ दुद्धरेहिं   एक्कल्लउ वहु-जालंधरेहिं
जं णिहउ जयद्दहु पइसरेवि   अ-मणूसउं कुरुव-सेण्णु करेवि
तं सव्वु पसाएं तउ तणेण   को जिज्जइ वलेण महु त्तणेण
गय एवं चवंत चवंत तहिं   सो अच्छइ पंडव-णाहु जहिं
अवरोप्परु दिण्णइं साइयइं   अंसुवइं स-हरिसइं आइयइं

घत्ता

कहिं सच्चइ कहिं पवण-सुउ   कहिं अज्जुणु कहिं तव-णंदणु।
कहिं मेलावउ भायरहं   पवियंभइ सव्वु जणद्दणु॥ ११

[९]

ताव णिरुज्जमु तेण०   चत्ताओहणु तेण०।
गुरु-थाणंतरु तेण०   गउ दुज्जोहणु तेण०॥

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

अहो ताय तुज्झु जइ णावडइ   तो सिंधउ केम समावडइ
वीभच्छु केम वले पइसरइ   कडवंदणु सच्चइ किह करइ
किह भिडइ भीमु मह भायरहं   हय एक्कतीस एक्कोयरहं ४
किह होइ विणासु वरूहिणिहे   रण-मुहे सत्तहे अक्खोहिणिहे
लोलंत पेक्ख सामंत-सय   दोहाइय रहवर तुरय गय
अम्हारउ जीवणु संगहहि   भीमज्जुण-पक्खु समुव्वहहि
पर-तक्कणेण पर-डंभणहो   को णंदइ भिच्चें वंभणहो ८
दुज्जोहण-दुव्वयणासि-हउ   गुरुदेवु पडुत्तरु कोव-गउ

घत्ता

वहुअ वइरि एक्कल्लएण   वंभणेण होवि मइं मुक्किय।
तुम्हेहिं सव्वेहिं खत्तिएहिं   ते तिण्णि धरेवि ण सक्किय॥ १०

[१०]

णियय-हियाहिउ तेण०   अवुहु ण वुज्झइ तेण०।
पर णिक्कारणे तेण०   दिवे दिवे जुज्झइ तेण०॥ १

विउरेण-वि तुहुं [ण]-वि सिक्खविउ   को णउ जो तेण ण दक्खविउ
पहु हउ-मि हियत्तणेण कहमि   भीमज्जुण-पक्खु ण उव्वहमि
राहाहवे खंडवे कंज-वहे   वंदि-ग्गहे गो-ग्गहे दुव्विसहे ४
गंगेय-तिगत्त-महाहयणे   भयवत्त-जयद्दह-णिट्ठवणे
पंडवहं परक्कम दिट्ठ पइं   दुव्वयणेहिं विंधहि तो-वि मइं
रत्ति-दिउ वइरिहिं अब्भिडमि   दुज्जोहण केम-वि णावडमि
दूसासण-सउणि-कण्ण-चविउ   लग्गइ ण महारउ सिक्खविउ ८
विद्दवियइं अज्जु जाइं वलइं   आयइं अहिमण्ण-दुमहो फलइं

घत्ता

तो वुच्चइ दुज्जोहणेण   पर जाम ताम पहरेवउं।
जहिं असेस सामंत गय   तहिं मइ-मि ताय जाएवउं॥ ९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[११]

ताह-मि अम्ह-वि तेण० अज्जु ण अंतरु तेण०।
होउ णिसारणे तेण० वइ एक्कंतरु तेण०॥ १

जिम ताहं जिमम्हहं जाव जउ जिव ताहं जिम्हहं छत्तु धउ
जिम ताहं जिम्हहं पाण गय जिम ताहं जिमम्हहं रज्ज-मय
जिम ताहं जिमम्हहं वज्जाइं जिम ताहं जिमम्हहं कज्जाइं ४
जिम ताहं जिमम्हहं वइसणउं जिम ताहं जिमम्हहं णीसरणउं
जिम ताहं जिमम्हहं चामरइं जिम ताहं जिमम्हहं पुरवरइं
जिम ताहं जिमम्हहं सयल महि जिम ताहं जिमम्हहं परम दिहि
जिम ताहं जिमम्हहं भूय-चिहि जिम ताहं जिमम्हहं मरण-विहि ८

घत्ता

तो वोल्लइ दोणायरिउ कुरुवइ विहिं एक्कु करेवउं।
जिम विणिवाइय पंडु-सुव जिम लग्गेवि परए मरेवउं॥ ९

[१२]

जाहि णराहिव तेण० धीरु म छंडहि तेण०।
वलइं णियत्तिवि तेण० जुज्झु समंडहि तेण०॥ १

सण्णाहु ण मेल्लमि ताम पहु विणिवारिउ जाम ण असि-णिवहु
दुज्जोहणु भीम-भुवंग-धउ सणि णावइ कण्णहो पासु गउ
किह हम्मइ विद्धखत्तु भणउ जइ संमउ ण-वि दोणहो तणउ ४
तो तिण्णि-वि भड पइसंति किह मयरहरु वियारेवि मयर जिह
चंपाहिउ पभणइ थाउ मणे देव वि अ-देव पंडवहं रणे
जगे णरहो धणुद्धरु को-वि णरु ण पुरंदरु जमु वइसवणु हरु
ण-वि हउं ण-वि दोणु ण दोण-सुउ ण पियामहु णउ भयवत्तु हुउ ८
सयल-वि पहरेवि णिय-थामे थिय विद्दविय के-वि के-वि वि-रह किय

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घत्ता

तो-वि भिडेवउं खत्तिएण जउ अवजउ दइवायत्तउं।
रयणि-महाहउ आढवहि जा मिलउ सइं भुवण-त्तउ॥

इय रिट्ठणेमि-चरिए धवलइयासिय-सयंभुएव-कए
अट्ठसट्ठिमो इमो सग्गो॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ऊणहत्तरिइमो संधि

स-विलक्खेहिं सिंधव-मारणेण अज्जुण-वाण-णिसिद्धएहिं ।
णिसि-झुज्झु पडीवउ मण्णियउ कुरुवेहिं वेहाविद्धएहिं ॥ १

[१]

रयणिहे उहय-वलइं सण्णद्धइं उहय-वलइं लग्गग्गिम-खंधइं
उहय-वलइं वल-विक्कम-सारइं उहय-वलइं किय-हण-हण-कारइं
उहय-वलइं उब्भिय-धय-चिंधइं उहय-वलइं अइ-वेहाविद्धइं
उहय-वलइं वाइय-वाइत्तइं उहय-वलइं कोवग्गि-पलित्तइं ४
उहय-वलइं तोरविय-तुरंगइं उहय-वलइं चोइय-मायंगइं
उहय-वलइं परिहिय-सण्णाहइं उहय-वलइं हल-वाण-सणाहइं
उहय-वलइं सुर-महिहर-धीरइं उहय-वलइं वण-विहुर-सरीरइं
उहय-वलइं रण-रहसुब्भिण्णइं उहय-वलइं हणंति अणिविण्णइं ८

घत्ता

तमु पसरिउ उद्धाइयउ रुहिर-महाणइ णीसरिय ।
जम-महिसहो फेणु मुयंतहो जीह णाइं थिय दीहरिय ॥ ९

[२]

उहओवास-वलइं तम-जालें पच्छाइयइं पडेण व कालें
उहओवास-वलेहिं रउ धावइ रण-रक्खसु वस-लालसु णावइ
उहओवास-वलइं रेल्लंती रत्त-तरंगिणि वहइ महंती
उहओवास-वलइं रस-भरियइं णं रवि-विंवइं किरणावरियइं ४
उहओवास-वलइं रुहिरोल्लइं णाइं पलास-वणइं पप्फुल्लइं
उहओवास-वलइं वहु-रुंडइं ताल-मुंड-काणणइं व भंडइं
उहओवास-वलेहिं गय साडिय णं घण दइवें गयणहो पाडिय
उहओवास-वलइं सिय-छत्तइं वसुमइ-गयइं णाइं सयवत्तइं ८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घत्ता

तहिं अवसरे पंडव-वाहिणि कुवियएं कुरु-परमेसरेण।
समरंगणे सरेहिं विरोलिय णलिणि णाइं सरे कुंजरेण॥ ९

[३]

विद्धु विओयरु दसहिं पिसक्केहिं तिहिं तिहिं मद्दिपुत्त लल्लक्केहिं
णवहिं घुडुक्कउ अट्ठहिं अज्जुणु छहिं सिहंडि सत्तहिं धट्ठज्जुणु
पंचहिं वासुएउ विहिं वाणरु सच्चइ चउहिं विराडु णिरंतरु
एक्कें जण्णसेणु उरे ताडिउ रायहो थरहरंतु धउ पाडिउ ४
तव-सुएण जम-भउंह-समाणउं विहिं धणु छिण्णु दसहिं तणु-ताणउं
अवरें मग्गणेण फणि-केयणु मुच्छविउ रहे थिउ णिच्चेयणु
गुरु उत्थरिउ ताम सर-जालेहिं सो-वि णिरुद्धु णवर पंचालेहिं
सोमय-सिंजय-पंडव-मच्छेहिं अवरेहिं-मि कर-सर-परिहच्छेहिं ८

घत्ता

वेढिज्जइ दोणु रणंगणे सव्वेहिं पंडव-साहणेहिं।
णं दूसहु किरण-भयंकरु जरढ-दिवायरु णव-घणेहिं॥ ९

[४]

ढुक्कु संझ सहुं तइमिर-जालें जीह पसारिय णं खय-कालें
भुक्खालुएण महासम-संतें वे-वि वलइं वे कवल करंतें
वुक्कण करकरंति चउ-पासेहिं किय वमाल गोमाउ-सहासेहिं
गुरु ढेक्कार मुक्क भल्लुक्केहिं वस-लालसेहिं पसएहिं ढुक्कंतेहिं ४
कुद्दिउ वद्धावणउं करालेहिं जोइणि-भूव-भाव-वेयालेहिं
गय-गज्जिएहिं चक्क-चिक्कारेहिं किं-पि ण सुव्वइ धणु-टंकारेहिं
तिमिर-रएहिं ण दीसइ अंतरु पर सद्देण भिडंति परोप्परु

घत्ता

तहिं संझा-समए व भयंकरे रणु-वि भयंकरु वाहिणिहिं।
सहयारु जेम लूसिज्जइ णरु णिवंडतु जे जोइणिहिं॥ ८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[५]

आहउ कहो-मि अत्थि करवालें सो णिवडंतु लइउ वेयालें
थवेवि महारहे-ईसासुट्ठए पउलिउ पहरणग्गि-अंगिट्ठए
सोणिय-पाणु करंतें चक्खिउ मिट्ठु भणेवि णिय-कंतेहिं रक्खिउ
कहि-मि भडहो सिव उवरे विलग्गइ हियउ लेवि कंठुल्लए लग्गइ
अहरु धरइ सरु करइ सुहाविणि पुरिसायंति णाइं वर-कामिणि
कहि-मि कवंधु णडइ परितुट्ठउं चंगउ जं रिउ-वयणु ण दिट्ठउ
कहि-मि कवंधे णहंगण-गामिणि झत्ति परिट्ठिय रेवा सामिणि
णाइ सवेयणेहिं व णियंगेहिं परुवइ भडु णाणाविह-भंगेहिं

घत्ता

कत्थइ असि-करहो कवंधहो उप्परि गिद्धु परिट्ठियउ।
सामिय संमाणु सरेप्पिणु णं पडिवउ भडु उट्ठियउ॥

[६]

तहिं रयणी-मुहे अक्खय-तोणें पंडव-वलु संताविउ दोणें
आयस-तोमरेहिं ओसारिउ तम-पडलु व रवियरि [वि]णिवारिउ
ता मंभीस देवि सिवि धाइउ णं गयवरु गयवरहो पराइउ
दसहिं सरेहिं विद्धु किवि-कंतें तेण-वि तीसेहिं कोवु वहंतें
गुरु-सारहि भल्लेण वियारिउ घुम्माविउ कह कह-वि ण मारिउ
तो हय हणेवि सिविहे सोणासें सीसु छिण्णु सयवत्तु व हंसें
ताव रणंगण-पंकय-भिंगें विद्धु भीमु वारहहिं कलिंगें
तिहिं सारहि वच्छच्छलि ताडिउ विहलंघलु रह-कुव्वरे पाडिउ

घत्ता

उप्पइउ णहंगणु लंघेवि मारुइ रोसाऊरियउ।
स-गइंदु कलिंगु पडंतेण मुट्ठि-पहारें चूरियउ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[७]

धुय-जयराय णराहिव धाइय विण्णि-वि मुट्ठि-पहारें घाइय
चामीयर-घंटालि-वमालिय अहिणव-कउसुममालोमालिय
मुक्क सत्त रवि-सुएण सुधीमें ताइं जे पडिवउ आहउ भीमें
तहिं अवसरे धयरट्ठहो णंदणु दुम्मउ अग्गए थक्कु स-संदणु ४
विद्धु तेण चउसट्ठिहिं वाणेहिं सेण-विहंगम-अणुहरमाणेहिं
सर-सएण पवि-पुत्तें खंडिय सारहि सद्धय छिंदिवि छंडिय
चडिउ गंपि दुक्कण्णहो संदणे विद्धु विहि-मि तहिं भड-कडवंदणे
धाइउ अहिमुहु वाण-पहारहं वसहु णाइं णव-जलहर-धारहं ८

घत्ता

रणे दुज्जोहणहो णियंतहो सुरहं णियंतहं गयणयले।
सो भीमें पाय-पहारेण रहु पइसारिउ धरणियले॥ ९

[८]

कह-वि कह-वि परिवज्जिय-संदण णासेवि गय गंधारिहिं णंदण
हरिण व हरिणाहिवहो णिलुक्का जहिं दुज्जोहणु तेत्तहे ढुक्का
पभणइ सोमयत्तु एत्थंतरे सच्चइ जायव-लोयब्भंतरे
विण्णि महारह सच्चइ अज्जुणु तुहुं पहिलारउ वीयउ पज्जुणु ४
तहो विक्कमहो एउ किं जुज्झइ सलु सहुं पुत्तु अखत्तें छिज्जइ
किय-अवराह-महादुम-डालहो फलु दक्खवमि अज्जु वहु-कालहो
जइ पइं कल्लए णिसिहे ण मारमि तो णिय-देहु णरइ पइसारमि
पभणइ सच्चइ सव्वइ घाइउ तुहु मि ण चुक्कहि उप्परि आइउ ८

घत्ता

सिणि-सोमवंस-वंसुब्भव णं वण-हत्थि समावडिय।
अवरोप्परु थाहि भणेप्पिणु सच्चइ-सोमयत्त भिडिय॥ ९

[९]

तहिं अवसरे रहवरहं सहासें धाइउ कुरुवइ सव्वायासें
दसहिं सहासेहिं पवर-तुरंगहं सत्तहिं सयहिं मत्त-मायंगहं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सउणि वि हयहं सहासें लक्खें वेढिउ सच्चइ मिलेवि विवक्खें
धट्ठज्जुणेण ताम रहु वाहिउ कउरव-लोउ सव्वु अवगाहिउ ४
सिणि-णंदणु भूरीसव-वप्पें णवहिं विद्धु तेण-वि तं मप्पें
सोमयत्तु रहवरि वइसारिउ जत्तारेण कहि-मि ओसारिउ
रण-वहु-गाढालिंगण-कामें तो हक्कारिउ आसत्थामें
जायव थाहि थाहि कहिं गम्मइ जिम्व विहि एक हणइ जिम्व हम्मइ ८

घत्ता

तो विण्णि-वि भिडिय परोप्परु परम-घोर-कडवंदणेण।
रहु वाहिउ आसत्थामहो ताम हिडिंवा-णंदणेण॥ ९

[१०]

परकलेण कालायस-घडिएं दुण्णिरिक्ख-रिक्खाजिण-जडिएं
तीस णियत्तण-वर-विक्खंभें उब्भिय-गिद्ध-महद्धय-खंभें
अट्ठ-महारहंग-संचारें रक्खस-अक्खोहिणि-परिवारें
रुहिरारत्त पडाउग्घाएं आउ महारहेण भडवाएं ४
खय-रवि-जुयल-समप्पह-णयणउ मंदर-कंदर-दारुण-वयणउ
विज्जुल-लोल-ललाविय-रसणउ धूसरु धूम-वण्णु घण-कसणउ
विउड-णासु लंवोट्ठुदंतुरु पेट्टिसु(?) कविल-केसु भू-भंगुरु
वियड-दाढु पडिभड-भेसंतउ सिल-पाहाण-विट्ठि-पेसंतउ ८

घत्ता

रिउ गंधु-वि सहेवि ण सक्कियउ तहो रयणियरहो एंताहो।
पर आसत्थामु ण कंपिउ घाय-सयाइं-मि देंताहो॥ ९

[११]

तो एत्थंतरे छाया-भेसिय रणे रक्खसिय विज्ज विद्धंसिय
विद्धु घुडुक्कएण वहु-वाणेहिं सयल-विहंगम-अणुहरमाणेहिं
गुरु-सुएण अद्ध-वहे जे खंडिउ ++++++++++++++
ताम समच्छरु अंजण-पावउ णं गज्जंतु पत्तु अइरावउ ४
तेण महंतउ किउ कडवंदणु धाइउ मग्गणेहिं गुरु-णंदणु

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तेण-वि छिण्णु विद्धु स-सरासणु धुरि स-तुरंगमु णिउ जम-सासणु
लइयइं णिसियरेण फर-खग्गइं ताइ-मि कुतवसि-वयइं व भग्गइं

घत्ता

गय मुक्क खुरुप्पें खंडिय पुणु अण्णहिं रहवरे चडिउ।
पायव-पाहाण-पिसक्केहिं णं खय जलहरु ओवडिउ॥

[१२]

ते पायव पाहाण सिलीमुह णिय दोणायणेण हेट्ठामुह
छिंदेवि छिंदेवि थूणा-कण्णेहिं रिउ वच्छयले भिण्णु अण्णण्णेहिं
पाडिउ महियले अंजण-पावउ सूडिउ वासवेण णं पावउ
ताम घुडुक्कएण हक्कारिउ थाहि थाहि जिह णंदणु मारिउ
गुरु-सुएण विहसेप्पिणु वुच्चइ पइं समाणु महु भिडेवि ण रुच्चइ
जाहि वच्छ जइ चंगें कारणु णं तो मेल्लि मेल्लि णिय-पहरणु
पभणइ भीमसेणि करि वुत्तउं जाहि ताय रणे मरहि णिरुत्तउं
हउं सो जाउहाणु जमु वीयउ तासु पुत्तु जें घाइउ कीयउ

घत्ता

अवरोप्परु पच्चारेप्पिणु णं वे गिरि एक्कहिं घडिय।
पंडव-कउरवहं णियंतहं भीम-दोण-णंदण भिडिय॥

[१३]

भीम-सुएण सरासणि मेल्लिय सयल-वि गुरु-सुएण पडिपेल्लिय
जं जं रणे रयणियरे पगासिउ तं तहो माया-जालु विणासिउ
जाउहाणु थिउ होवि महीहरु किउ गुरु-सुएण सो-वि सय-सक्करु
भीम-सुएण ण अप्पउ दरिसिउ जलहरु होवि णहंगणे वरिसिउ
पवणत्थेण सो-वि विणिवारिउ लक्खु णिसायराहं तहिं मारिउ
ताम घुडुक्कएण दुव्वारइं रूवइं कियइं अणेय-पयारइं
गिरि-धीरइं सायर-गंभीरइं सरह-सीह-सद्दूल-सरीरइं
महिस-वराह-रिक्ख-सारंगइं सव्वइं करेवि मडप्फरु भग्गइं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घत्ता

पहरंते आसत्थामेण   जोइयउ दुज्जोहणहो मुहु ।
किं होमि ण होमि तुहारउं   किंकरु णाह णिहालि तुहुं ।। ९

[१४]

तो दुज्जोहणेण वोल्लिज्जइ   अण्णहो सुहड-लीह कहो दिज्जइ
गुरु-वयणेहिं गुरु-पुत्ते विसेसिउ   सउणि किरीडिहे उप्परि पेसिउ
किउ गुरुमित्तु णीलु किववम्मउ   दूसासणु णिकुंभु जयवम्मउ
णंदसेणु कमलक्खु पुरंजउ   दिढरहु सल्लु सयप्पणु संजउ ४
ओय-वि अवर-वि पडिवलु दिण्णा   धाइय रण-रस-रहसुब्भिण्णा
वेढिउ तेहिं अखत्तें जुत्तउ   एक्कु अणेक्कहिं मिलेवि धणंजउ
ताव विओयर-सुएण स-संदणु   दसहिं सरेहिं विद्धु गुरु-णंदणु
मुच्छा-विहलंघलु रहे पाडिउ   णं गिरि हरि-कुलिसाउह-ताडिउ ८

घत्ता

चेयण कह कह-वि लहेप्पिणु   पुणु पडिवारउ धाइयउ ।
लक्खिज्जइ णिसियर-लोयणहिं   णं खय-कालु पराइयउ ।। ९

[१५]

पीडिउ जाउहाण-वलु वाणेहिं   पंडव-सेण्णु मुक्कु णं पाणेहिं
दिट्ठि-वि को-वि धरेवि ण सक्कइ   एक्कु घुडुक्कउ पर परिसक्कइ
णिय जोत्तारु वुत्तु लहु तेत्तहे   वाहि वाहि रहु गुरु-सुउ जेत्तहे
तो सहस त्ति तुरंगम खेडिय   णरवर रक्खु दंड जिम मोडिय ४
दारुणद्ध-चक्कासणि मुक्की   णं खयकाल-रत्ति उवढुक्की
करणु देवि गुरु-सुएण लइज्जइ   णं जयलच्छि मंड कड्ढिज्जइ
णं णव-वहु वरेण परिणिज्जइ   णं सरि सायरेण आणिज्जइ
भुयहिं भमाडिवि तहो जे विसज्जिय   विज्जु जेंव गयणंगणे गज्जिय ८

घत्ता

कल-किंकिणि-घंटा-मुहलिय   चंदण-चच्चिय लद्ध-जय ।
हरि सारहि संदणु चूरेवि   पुणु पायालहो असणि गय ।। ९

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

[१६]

जं संदणु मुसुमूरेवि मुक्कउ धट्ठज्जुण-रहे चडिउ घुडुक्कउ
विहि-मि सरेहिं विद्धु गुरु-णंदणु तेण वि गरुयउ किउ कडवंदणु
ताम विओयरु रहसुद्धाइउ पुत्तहो केरए विहुरे पराइउ
रह-सहसेच्छहिं(?) पवर तुरंगहं सत्त-सएहिं मत्त-मायंगहं ४
तेण वि पडिगाहिउ णिय-णंदणु दिण्णु स-तुरउ स-सारहि संदणु
दोण-सुएण ताम सर लाइय रयणियरहं अक्खोहणि घाइय
पेक्खंतहो तहो पंडव-राणहो गयणे चडंति ताम अत्थाणहो
रहवर-णर-तुरंग-महि पाविय रुहिर-महाणइ-णिवह वहाविय ८

घत्ता

तो दोणायरियहो पुत्तेण विद्धु थणंतरे रयणियरु।
उरु भिंदेवि सहु संणाहेण धरणिहे गंपि पइट्ठु सरु॥ ९

[१७]

रहवरे घुम्मेवि पडिउ घुडुक्कउ कह व कह व जीविएण ण मुक्कउ
ताम जुहिट्ठिलु मणे चिंताविउ महणावत्थ समुद्दु व पाविउ
विहि-मि अणीयहिं दोणि विसेसिउ कुसुम-वासु सुरवरेहिं पदरिसिउ
सच्चइ सोमयत्तु तहिं अवसरे कुविय वे-वि णं गह खय-वासरे ४
भीमें अंतराले तो थाएवि विद्धु सिलीमुह दह उरे लाएवि
तेण-वि वाण-सएण विओयरु छाइउ णं घण-जालें महिहरु
जायवेण दस विसिह विसज्जिय पुणु पडिवारी सत्ति पउंजिय
सत्तहिं कप्पिउ कवउ खणंतरे अवरें पाडिउ हणेवि थणंतरे ८

घत्ता

रहु छंडेवि भीमहो पुत्तेण रिउ-मुहु रोसाऊरियउ।
पेक्खंतहो कउरव-लोयहो परिह-पहारिहिं चूरियउ॥ ९

[१८]

चूरिउ सीसु वि सहु मत्थिक्कें धरिउ विओयरु तो वल्हिक्कें
पंडु-सुएण णवहिं णारायहिं विद्धु थणंतरे णिब्भर-घायहिं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तेण-वि घित्त सत्ति उरे लग्गी णाग-कण्ण दुमे णाइ वलग्गी
मुच्छाविय मायरिसहो णंदणु कह-वि समुट्ठिउ किय-कडवंदणु
गिरिवर-गरुय-भयंकर-काएं चूरिउ सीसु गयासणि-घाएं
दसहिं सरेहिं स-सूय स-संदण घाइय दह धयरट्ठहो णंदण
पंचहिं पंच-वि सउणिहे भायर णं खय-दिवसहिं सोसिय सायर
ताव जुहिट्ठिलु भिडिउ तिगत्तहं मद्द-खुद्द-मालव-सामंतहं
सिवि-अंवट्ठाभीरहं भोयहं सग-पमुहहं अवरहं मि अणेयहं

घत्ता

सर-णियर-णिरंतर-भिण्णेण णिययाणीएं भग्गएण ।
तव-तणउ पडिच्छिउ दोणेण णाइं गइंदु महागएण ॥

[१९]

दोण-जुहिट्ठिल भरिय रणंगणे पिक्खाविय गिव्वाण णहंगणे
विण्णि वि वावरंति लहु-हत्थेहिं पउरंदर कउवेरेहिं अत्थेहिं
वारुण-वायव-गिरि-अग्गेयहिं तामस-सउर-सएहिं अणेयहिं
ताम धणंजएण लहु-हत्थें दोणायरिउ लइउ वंभत्थें
सीसु भणेवि वंचिय-पउरंदरि धाइउ पुणु पंचालहं उप्परि
सयल-वि वायवेण उड्डाविय अज्जुण-भीमेहिं मंभीसाविय
विण्णि-वि वलइं ताम णिद्दइयइं सीय-वाय-तम-रय-पच्छइयइं
वण-वियणाउराइं समसीणइं मिहुणइं थियइं णाइं रय-खीणइं

घत्ता

तेहए-वि काले पडिवण्णए मुएवि महारह हत्थि-हड ।
पहरंति केवि पडिसद्दणे रुहिरे तरंत तरंत भड ॥

[२०]

ताम णरेण वुत्तु णिय-सारहि तुरिउ महारहु अग्गए सारहि
जहिं किउ कण्णु दोणु दुज्जोहणु जहिं गुरु-णंदणु रइयारोहणु
जहिं किववम्मु सउणि दूसासणु जहिं विससेणु सल्लु स-सरासणु
जायव लइ वस-कद्दमे खुत्तइं जाव रहह चक्कइं पंगुत्तइं

जाम तुरंगम सर जज्जरियइं जाव हत्थि असि-खंडह सरियइं ४
जाम णिद्द वट्टइ सामंतहं पविरलु जाम सद्दु वाइत्तहं
जाम तमंधयारु णउ पेल्लइ रुहिर-महाणइ जाम ण रेल्लइ
ताम भिडिउ धङ्कज्जुणु दोणहो अवरहो अवरु अणिट्ठिय-तोणहो

घत्ता

जिम्व अम्हेहिं मुव समरंगणे सत्तु व साहणेहिं मुएहिं ।
जिवं पर-वलु सयलु जिणेप्पिणु जयसिरि लइय सइं भुएहिं ।। ८

इय रिट्ठणेमिचरिए धवलइयासिय-सयंभुएव-कए
ऊणहत्तरिइमो सग्गो ।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सत्तरिमो संधि

चत्ताओहणु दुज्जोहणु ताम पासु गउ कण्णहो ।
पइ-मि सुमित्तेण जियंतेण अकुसल-कउरव-सेण्णहो ॥ १

[१]

अहो अमर-धराधर-धीर-चित्त रक्खेवा कुरु पइं परम-मित्त
मारेवा पंच-वि पंडु-पुत्त सिणि-णंदण-हरि-वलएव-जुत्त
मच्छाहिव वेइ व कइकया-वि पंचाल-वि सोमय-सिंजया-वि
तं णिसुणेवि पभणइ अंगराउ किं करहिं जियंतें मइ विसाउ ४
सुणु कुरुवइ सव्व णरिंद पवर पढमज्जुणु पच्छइ हणमि अवर
परमत्थें पिसुणहं सिरइं लेमि तउ वसुमइ णीसावण्ण देमि
चंपाहिव-वयणेहिं किउ पलित्तु णं चित्तभाणु दुप्पवण-छित्तु
मुहे दुम्मुह किह णीसरिय वाय जिह मारमि पंच-वि पंडु-जाय ८

घत्ता

एक्कें पत्थेण लहु-हत्थेण सिंधव-वहि किय-तज्जिय ।
समर-भडुज्जय ते दुज्जय पंच-वि केण परज्जिय ॥ ९

[२]

भणु कहिं ण भग्गु तुहुं अज्जुणेण तिण-कट्ठ-णिवहु जिह फग्गुणेण
दोमइहे सयंवरे इक्क-वार जिउ उत्तर-गोग्गहे तिण्णि-वार
भीमेण भग्ग रह सत्त-वार छिण्णइं धणुहरइं अणेय-वार
सिंधवहो पत्थें एक्क-वार सिणि-णंदणेण अण्णेक्क-वार ४
वेयारिउ कुरुवइ वहुय-वार जिह मारमि पंडव दुण्णिवार
तो वुच्चइ चंप-पुरेसरेण गज्जेवउ पाउसे जलहरेण
अहि-भक्खणे गरुड-विहंगमेण मय-काले मत्त-तंवेरमेण
करि-कुंभ-दलणे पंचाणणेण पडिवक्ख-समागमे भडयणेण ८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घत्ता

खत्तिउ गज्जइ तहो छज्जइ जो जुज्झइ अवियारेण।
वंभण भोयणे रण-रंगणे तासु काइं वावारेण ॥ ९

[३]

तुहुं गुरु गुरु-णंदणु वंभयारि णिय-सामिय-वले दोहावयारि
जुज्झेवि दस दिवस महा-रहेण किउ सुंदरु कवणु पियामहेण
दुज्जोहणु दुहेवि कियाहिसेउ पंडवहं मरंते दिण्णु भेउ
सावेण सरेण-वि जो समत्थु तेण -वि विहि-वइरिहिं दिण्णु हत्थु ४
णासंतु जयद्दहु धीरवेवि माराविउ पत्थइ भेउ देवि
गुरु-सुउ अक्खोहणि हणइ जाम पंचह-मि मज्झे किण्णेक्कु ताम
संगाम-हरिण पइं कवणु कज्जु जुज्झहि पारक्कउ होवि अज्जु
किउ पभणइ तेरी लुहिय जीह मरु पाएं पेल्लिवि लुणमि जीह ८

घत्ता

पेक्खेवि माउलु गुरु-कोवालु लइउ खग्गु गुरु-पुत्तेण।
किं भडवाएण मरु घाएण पाडमि सीसु निरुत्तेण ॥ ९

[४]

अवरुप्परु उट्ठाउट्ठि जाम दुज्जोहणु मज्झे पइट्ठु ताम
चंपाहिउ पभणइ एउ एउ परमेसरु मा धरि घाउ देउ
जा णिज्जइ वइवसपुर-पहेण फलु एत्तिउ वंभण-संगहेण
घरे भमइ ण जुज्झहि सामि-कज्जे कलहिज्जइ जं मणु सइय सज्जे ४
णरु दीसइ इंतउ रहवरेण भिडु गज्जहि जेम मडप्फरेण
मइं घइं मारेवउ समरे पत्थु एहु अच्छइ उज्झिउ धम्म-हत्थु
पणवेप्पिणु पभणइ कुरुव-राउ गुरु-पुत्त होहि आहवे सहाउ
अवरोप्परु किं भड-मच्छरेण सव्वहो पहरेवउ सहु णरेण ८

घत्ता

ताव तुरंतउ पहरंतउ हय-गय-रह-सय-वाहणु।
रवि-सुउ जेत्तहे रणे तेत्तहे धाइउ पंडव-साहणु ॥ ९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[५]

वाहित्तु असेसहिं थाहि थाहि चंपाहिव रहवरु वाहि वाहि
सव्वहं अणत्थहं तुहु-मि मूलु तुहुं वंधव-सयलहं हियय-सूलु
तुहुं वीसु तुहुं जउहरु जलण-जालु तुहुं जूउ कय-ग्गहु वसण-कालु
तुहुं गोग्गहे तुहुं जि असंधि-कज्जु तुहुं कउरव-लोयहो पलउ अज्जु
णारायहिं छाइउ दुब्भेवणेवि(?) सहसत्ति णिवारिय तेण ते-वि
रह खंडिय पाडिय णरवरिंद हय हय गय गय णागय गइंद
दुज्जोहणु पभणइ पेक्खु पेक्खु पडिपीडिउ कण्णें जिह विवक्खु
गुरु-तोय तो-वि णावडइ तुज्झु देव-वि अदेव जइ देहि जुज्झु

घत्ता

जाहि समाउलु किं आउलु आयहो होहि सहिज्जउ।
पइं किव-कण्णहिं अपसण्णहिं कहिं धम्मु कहिं धणंजउ॥

[६]

तो दूरायड्ढिय धणु-गुणाहं आभिट्ठ जुज्झु कण्णज्जुणाहं
दुज्जोहण-तवसुय-किंकराहं सुरवर-करि-कर-दीहर-कराहं
विणिवद्ध-गोह-ताणंगुलीहिं सुरपहु-वि मुक्क कुसुमंजलीहिं
कल-किंकिणि-मुहलिय-कडियलाहं आवरणावरिय-उरत्थलाहं
विप्फुरिय-दिव्व-मणि-कुंडलाहं सर-णिवह-पिहिय-रवि-मंडलाहं
णारायहिं विण्णि-वि वावरंति णं धारें जलहर उत्थरंति
णं दाणेहिं मत्त महा-गइंद णं दीह-णहर-पहरेहिं मइंद
णं सिंगेहिं महिस महा-रउद्द णं पवर-भुवंगेहिं वेण्णि रुद्द

घत्ता

णीवण्णहं णर-कण्णहं विहि-मि परोप्परु वाणेहिं।
जाउ रणंगणु गयणंगणु छाइउ अमर-विमाणेहिं॥

[७]

रवि-सुएण विद्धु समुहुत्थरंतु तिहिं फग्गुणु तिहिं गुणु तिहिं अणंतु
चउ तुरय वियारिय अज्जुणेण धणु हत्थहो पाडिउ सहु गुणेण

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सारहि-सिरु खुडिउ महा-खुरेण विणिभिण्णु कण्णु उरे तोमरेण
किउ कलयलु अमरच्छर-जणेण रहे किवेण चडाविउ दुम्महेण ४
तहिं अवसरे हय-गय-रह-वरेण्णु दुज्जोहणु धीरइ णियय-सेण्णु
मा भज्जहु वइरि-महा-भएण हउं जुज्झमि समउ धणंजएण
किर एम भणेवि उत्थरइ जाम गुरु-णंदणु पेरिउ किवेण ताम
धरे धरे रक्खेवउ कुरुव-राउ मा होसइ आयहो रणे पमाउ ८

घत्ता

अम्हेहिं संतेहिं जीवंतेहिं पिहिवि-पालु किह धावइ।
एक्कें अंगेण सहु खग्गेण सयण-विहूणउं णावइ॥ ९

[८]

तो तेण धरिज्जइ कुरुव-राउ अप्पणु पहरेवउ कवणु णाउ
वोल्लिज्जइ णर-परमेसरेण मइं काइं जियंतें महि-भरेण
जो भण्णइ सण्णइ सो जि दुक्खु मुए मुए पाडिज्जउ वइरि रुक्खु
वुच्चइ दोणायरियहो सुएण दुज्जोहण जुज्झमि तुह कएण ४
जउ अवजउ विहि-आयत्तु होइ उप्पण्ण-णाणु किं अच्छि कोइ
किं करहि जियंतेहिं कवणु कज्जु जइ भिडहि भडारा तुहुं जे अज्जु
दोणायणु एम भणेवि थक्कु भज्जंतु असेसु-वि वइरि-चक्कु
दस दसहिं सरहिं पंचाल भिण्ण णं वलि रण-वणदेवयहे दिण्ण ८

घत्ता

णाविय-खग्गए वले भग्गए कड्डिय स-सरु धणुग्गुणु।
आसत्थामहो उद्दामहो थक्कु एक्कु धट्ठज्जुणु॥ ९

[९]

रहसें परिवारिय-संदणेण हक्कारिय दुमयहो णंदणेण
उवजीवहि वंभणु होवि खत्तु पइं घाइए दुरियागमणु कत्तु
किह एहिं वरायहिं किंकरेहि लइ जुज्झहो वे-वि महा-सरेहिं
हउं दोणायरियहो पलय-कालु उच्चारेवि पेसिउ वाण-जालु ४
गुरु-सुएण णीवारिउ दुहइं देंतु णं अंविय-कंता-छोह देंतु

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धउ विद्धु महा-रहु किउ दु-खंडु   सहु छत्तें पाडिउ कणय-दंडु
रहु सारहि वारह अंगरक्ख   किय सयल-वि गिरि जिह लुत्त-पक्ख
सउ सएण तिण्णि तिहिं तिण्णि विद्ध   पंचाल-वरूहिणि रणे णिसिद्ध   ८

घत्ता

दुमयहो णंदणु   हय-संदणु   ओसारिउ णिय-थामहो।
ताम विओयरु   स-सहोयरु   धाइउ आसत्थामहो॥   ९

[१०]

एत्थंतरे अंतरे थिय णरिंद   केरल कुणीर कोहव कुणिंद
जालंधर जाउण जवण जट्ट   खस टक्क कीर टंकण अरट्ट
मेहल चिलाय पत्थल विसेस   गंधार मद्द मागह महेस
जउहेयाहीरह तामलित्त   सग भरुस कच्छ अवर-वि विचित्त   ४
गय-घाएहिं भीमें भग्ग सव्व   दुप्पवण-पणोल्लिय-तरुवर व्व
तो जय-सिरि-गहणुक्कंठुलेण   हक्कारिउ दोणु जुहिट्ठिलेण
पुणु पंचहिं विद्धु सिलीमुहेहिं   सोणासें सत्तहिं फणि-मुहेहिं
थिर-थोर-पलंव-महा-भुएण   सर-सहसु विसज्जिउ तव-सुएण

घत्ता

मुक्कु तुरंतेण   किवि-कंतेण   धाइउ दुप्परियल्लउ।
राएं थंभिउ   पवियंभिउ   रणु जिह पेम्मु णवल्लउ॥   ८

[११]

पडिलग्गु परोप्परु संपहारु   रउ पसरिउ जाउ तमंधयारु
णउ दीसइ जलु थलु गयण-मग्गु   ण धरत्थु ण सिविउवर-वलग्गु
णारोहु ण रहिउ ण आसवारु   अप्पएण पराएण णउ वियारु
तो लइयउ कंचण-दीवियाउ   सिहि-जाला-मालालीवियाउ   ४
वहु-गंध-तेल्ल-पव्वालियाउ   रहे रहे दह दह पज्जालियाउ
चउ चउ चतुरंगए सत्त सत्त   वर-जामिणि वासर-सोह पत्त
सण्णाहेहिं मणि-रयणुज्जलेहिं   मुत्ताहल-मालेहिं णिम्मलेहिं
पहरण-आहरण-सियंवरेहिं   गय-दंतिहिं छत्तेहिं चामरेहिं   ८

घत्ता

तिमिरु अणंतउ उवसंतउ रणु पडिवण्णु असुंदरु।
जाउ भिडंतहं सामंतहं दीवीवालु पुरंदरु॥ ९

[१२]

तहिं कालें तं वलु अज्जुणेण हक्कारिउ गुरु धट्ठज्जुणेण
सउवलु सहएव-सहोयरेण वाहिय कालायस-संदणेण
गुरु-णंदणु भीमहो णंदणेण कियवम्मु जुहिट्ठिल-पत्थिवेण
मद्दाहिउ मच्छ-णराहिवेण चंपाहिउ णउलहो भायरेण ४
विससेणु जण्णसेणें सरेण दुज्जोहणु वरिउ विओयरेण
तम-पडलु व णं णहे दिणयरेण ++++++++++++
गंगेय-विमद्दणु किवहु कुद्धु पडिविंझें दूसासणु णिरुद्धु
सच्चइ-भूरिहिं संगामु जाउ पडिवारउ उट्ठिउ रय-णिहाउ ८
पडिवारि सोणिय-सरि पयट्ट पवहाविय रह गय तुरय थट्ट

घत्ता

ताम धणुद्धरु रणे दुद्धरु वाहोवाहिय-संदणु।
पवर रहत्थहो तहो पत्थहो भिडिउ जडासुर-णंदणु॥ १०

[१३]

स-रहसेण पघोसिय-कलयलेण पंचासेहिं विद्धु अलंवलेण
सेयासें रोसवसंगएण रयणियरु समाहउ सर-सएण
वाणासणु वाणहिं णवहिं छिण्णु तिहिं सारहि वच्छत्थले विभिण्णु
धउ एक्कें चउ-वि महा-तुरंग विहिं चक्करक्ख विहिं वे रहंग ४
रहु मेल्लेवि धाइउ जाउहाणु असिवर-फर-रयण पउंजमाणु
तो पत्थें खंडिउ मंडलग्गु हय-वम्म-रयणु णासणह लग्गु
जं भग्गु णिसायरु अज्जुणेण तं विद्धु दोणु धट्ठज्जुणेण
पंचहिं सरवरेहिं सिलासिएहिं चामीयर-पुंख-विहूसिएहिं ८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घत्ता

मच्छर-भरिएण आयरिएण पंचवीस सर पेसिय।
धम्म-विवज्जिय गुण-वज्जिय णं कु-सीस परिसेसिय॥ ९

[१४]

तिहि-मि धणु धट्ठज्जुणहो भग्गु सुकलत्तु जेम करे अवरु लग्गु
वाणेण मरण-करणेण जाम किर विंधइ कण्णें छिण्णु ताम
किउ वारह खंडइं आसुएहिं पंचहिं पंचहिं गुरु गुरु-सुएहिं
विणिभिण्णु णवहिं मद्दाहिवेण वीसहिं सइं कुरुव-णराहिवेण ४
तिहिं दूसासणेण धणुद्धरेण पंचहिं सउवलेण व दुद्धरेण
ते सव्वायामें धणु-गुणेण तिहिं तिहिं णिसिद्ध धट्ठज्जुणेण
एत्तहे वि सउणि णउलहो पलित्तु वच्छत्थले कण्णिय-सरु णिहित्तु
विहवलेण विमुक्क पिसक्क सट्ठि दोहाइय मामहो चाव-लट्ठि ८

घत्ता

अवरें वाणेण भिडमाणेण रणे आयामिउ सउवलु।
कहवि ण मारिउ ओसारिउ सूएण वण-विहलंघलु॥ ९

[१५]

तो भिडिय परोप्परु अमरिसेण महि-कारणे कुरुवइ-भीमसेण
सर पंच मुक्क दुज्जोहणेण णव भीमें रिउ-मइ-मोहणेण
छत्तीसेहिं कुरुव-णराहिवेण छच्चावइं छिण्णइं पत्थिवेण
वर गय पट्ठविय विओयरेण वंचिज्जइ कुरु-परमेसरण ४
तो आसत्थामहो ढुक्कएण सो छिण्णु पलंव-महाभुएण
वहु थूणा-कण्णहिं गुरु-सुएण ++++++++++++++
भड-भीयर-समर-कियायरेण सउ वाणहं मुक्क णिसायरेण
दोणायणु रुहिरारुणिय-गत्तु मुच्छाविउ चेयण कहव पत्तु ८

घत्ता

पहउ पिसक्केण लल्लक्केण संसय-भावहो ढुक्कउ।
कह-वि पयत्तेण णिउ जत्तेण मुच्छाविहलु घुडुक्कउ॥ ९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[१६]

सुरधणु-धीरइं धणुवरइं लेवि कियवम्म-जुहिट्ठिल भिडिय वे-वि
पत्थेण मुक्क सर पंचवीस णं भीम भुवंगम भुअण-भीस
तो भोजक-वंसाहिवेण विद्धु धणु छिंदेवि सत्तहि पडिणिसिद्धु
कवरेण करिसिय-कम्मुएण धणु दसहिं वियारिउ तव-सुएण ४
पंचहिं पर देहावरणु भिण्णु उरे अवरेहिं पवर-सरेहिं भिण्णु
विहलेण-वि काया-भंतिएण धणु अवरु लेवि जउ-वंसिएण
तहिं वीसहिं विद्धु अजायसत्तु धुरि दसहिं खुरुप्पेहिं छिण्णु छत्तु
उद्धाइउ सत्ति-सणाहु णाहु कियवम्महो हउ दाहिणउ वाहु ८

घत्ता

तेणवि तज्जिउ किउ कज्जिउ वइहत्थिए सर-जालेण।
णट्ठु स-संदणु तव-णंदणु गंथु जेम वहु-कालेण॥ ९

[१७]

जं णरवइ संसय-भावे छुद्धु तं चंपाहिवहो विराडु कुद्धु
णारायहिं णवहिं थणंतराले विणिभिण्णु भयंकरे समर-काले
तेण-वि तेहत्तरि-मग्गणेहिं धय-चामर-छत्त-वलग्गणेहिं
विणिवारिउ सारहि णिहय वाह उरे भिण्णु वियारिय वाम-वाह ४
मुच्छाविउ दाविउ दप्प-साडु णिय भिच्चहिं ओसारिउ विराडु
तो रणु पडिलग्गु स-संदणाहं सहएव-दिवायर-णंदणाहं
वित्थारिय-जगे-जस-मंडवेण सर वीस विसज्जिय पंडवेण
हय विहिं पंचासिहिं रवि-सुएण सत्तरिहिं विद्धु णउलाणुएण ८

घत्ता

छिण्णु वरत्थेण रहु पत्थेण विप्फुरंतु सय-चंदउ।
किउ अवलेवेण सहएवेण करे स-खग्गु वसुणंदउ॥ ९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[१८]

वसुणंदउ भग्गु स-मंडलग्गु   पुणु चक्कु भयंकरु करे वलग्गु
तमि छिण्णु गयासणि मुक्क तेण   परिसेसिय असइ व सुपुरिसेण
पट्ठविय सट्ठि(सत्ति?) सहसत्ति आय   सा रवि-सुएण किय विण्णि भाय
सहएउ भग्गु थिउ जण्णसेणु   णं पवर करेणुहे वर-करेणु ४
वट्टंतए तहिं संगाम-काले   विससेणु परिट्ठिउ अंतराले
पंचालहो पंचहिं कवउ छिण्णु   णाराएं एक्कें हियउ भिण्णु
ओसारिउ ताव सिहंडि पत्तु   णव सर विमुक्क किउ कहिं-मि जंतु
हउ आसत्थामहो माउलेण   पाऊण-सएं अण्णाउलेण ८

घत्ता

तेण वि ताडिउ   तहो पाडिउ   किवहो धरंत-धरंताहो।
हत्थे ण तिट्ठइ   खणे रिट्ठइ   सव्वहो धणु-गुणवंतहो ॥ ९

[१९]

सहसत्ति सत्ति पेसिय किवेण   जिय पंचहिं पंचालाहिवेण
पडिविंधु ताम स-सरासणेण   तिहिं हउ णिलाडे दूसासणेण
तेण-वि सोलहेहिं सिलीमुहेहिं   जुवराउ णिवारिउ अहिमुहेहिं
कउरवेण वियारिय चउ तुरंग   जत्तारु-वि हउ पाडिय रहंग ४
पायत्थ पधाइउ चंडवेउ   पलयेक्क-चक्क-लल्लक्क-तेउ
रणु एम परोप्परु विहि-मि जाम   सिरि-संभव-भूरि भिडंति ताम
सर पंच विसज्जिय माहवेण   दस भूरि भूरि कियाहवेण
जायवेण स-धणु तणु-ताणु छिण्णु   तेण-वि तिहिं सच्चइ हियइ भिण्णु ८

घत्ता

सत्तिए भिंदेवि   सिरु छिंदेवि   रहहो पलोट्टिउ पाएण।
खयरवि-तेएण   सइणेएण   गिरिहिं व दुमु दुव्वाएण ॥ ९

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

[२०]

जं भूरि कयंतहो वयणे छुद्धु   तं रवि-सुएण सच्चइ णिरुद्धु
अवरोप्परु दस दस सर विमुक्क   उरगमणहं णं उरगमण ढुक्क
जम-भउंह-भंगुब्भीसणइं   विहिं विण्णि-वि हयइं सरासणइं
चंपाहिउ पंचहिं पडिणिसिद्धु   विससेणु पडीवउ दसहिं विद्धु ४
भीसावणु हा-हे-सद्दु जाउ   वोल्लाविउ कण्णें कुरुव-राउ
धट्ठज्जुण-सच्चइ हणहुं वे-वि   जं भग्गहुं मेइणि सयल लेवि
दसहिं दसहिं सहासिहिं रह-गयाइं   अण्णु-वि लक्खेण महाहयाइं
पट्ठविउ सउणि दुज्जोहएण   सिणि-णंदणु वेढिउ णंदणेण ८

घत्ता

तो कुरु-णाहेण असगाहेण वुत्तु एम णिय-सारहि ।
जायउ जेत्तहे लहु तेत्तहे रहु महु केरउ सारहि ॥ ९

[२१]

रहु वाहिउ सच्चइ दसहिं विद्धु   तेण-वि वाणउइहिं पडिणिसिद्धु
पुणु पंच सयइं परिपेसियाइं   रह-उवगरणइं णीसेसियाइं
अवरेण सरासणु सरेण भिण्णु   कियवम्म-रहे कुरुवइ चडिण्णु
तो णरु णिरुद्धु सुवलंगएण   हउ दहिं पीडिउ वउ सर-सएण ४
वीसहिं णरेण गंधार-णाहु   छहिं दूसहु दुप्पहु तिहिं सुवाहु
दूसासणु तिहिं तिहिं उलुअ-णामु   पंचहिं विणिवारिउ सउणि मामु
तिहिं तिहिं असेस णरवइ णरेण   सउवलु पणट्ठु सुय-रहवरेण
छहिं वाणहिं दोणहो सहुं गुणेण   धणु छिण्णु ताव धट्ठज्जुणेण ८

घत्ता

गसिउ स-वाहणु कुरु-साहणु जण्णसेण्ण-सिणि-जाएहिं ।
णं विसमाणणु जक्खाणणु दुद्दमग्गि-दुव्वाएहिं ॥ ९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२२]

तो कण्ण-दोण दुज्जोहणेण गरहिय असमत्ताओहणेण
जइ तुम्हहिं रणु आढत्तु आसि ता हउं ण होंतु सव्वाहिलासि
वरे एवमि एवमि दिण्ण पाण भूयह-मि ण लज्जहं भज्जमाण
तहिं काले णियत्तिय-संदणेहिं विससेण-दोण-रवि-णंदणेहिं ४
सइणेयहो लाइय थरहरंत दस दस वच्छत्थले वच्छदंत
सउवलेण पंच कउरवेण सत्त अवरेहिं दुइ दुइ काल-पत्त
सिणि-णंदणु सव्वेहिं पडिणिसिद्धु धट्ठज्जुण कण्णें दसहिं विद्धु
धउ धणुवरु सारहि वर-तुरंग विणिवाइय अवर-वि किय सहंग ८

घत्ता

वाण विहलंघलु पंडव-वलु भग्गु भिडंतेहिं पंडवेहिं ।
महिहे समग्गइं फर-कर-खग्गइं घिवेवि सयं भुव-दंडेहिं ॥ ९

इय रिट्ठणेमिचरिए धवलइयासिय-सयंभुएव-कए
सत्तरिमो सग्गो ॥

इकहत्तरिमो संधि

भग्गए रह-गय-वाहणे पंडव-साहणे णर-णारायण-मुक्कउ ।
लोल-ललाविय-जीहहो सीहु व सीहहो कण्णहो भिडिउ घुडुक्कउ ॥ १

[१]

भणइ अणीए भग्गे तव-णंदणु अज्जुण वाहि वाहि लहु संदणु
पिययण पलयमाण गय-सारहि कुरुवइ अंगराय विणिवारहि
कहइ अणंतु ण अवसरु अण्णहो वासवपुत्त-जायव करे कण्णहो
ताम समत्थु-वि णरु ण पहुच्चइ आयहो समरि घुडुक्कउ मुच्चइ ४
मायविउ वहु-मायहिं जुज्झइ सव्व-कुसलु सव्वत्थइं वुज्झइ
महुसूयण-उवएसें आएं तो पट्ठविउ जुहिट्ठिल-राएं
लइ धणु चक्कु सूलु गय-खंडउ पंडव-लोयहो होहि तरंडउ
जंपइ जाउहाणु मुहु जोएवि अच्छु णाह णिच्चिंतउ होएवि ८

घत्ता

हउं समरंगणे मुक्कउ जमु जिह ढुक्कउं कुरु-समसुत्ती दावमि ।
संसय-भावे वलग्गी महि आवग्गी कल्लए पइं भुंजावमि ॥ ९

[२]

गज्जिऊण एवं तमीयरो भूरी-भाव-भूभाय-भीयरो
धूमकेउ धूमयर-सत्थहो काल-महाकालग्गि-दूसहो
अक्क-चक्क-लल्लक्क-लोयणो सव्वगासि-वडवा-मुहाणणो
पलय-काल-पडिरूव-भीसणो महण-पत्त-मयरहर-णीसणो ४
चलण-लीढ-अट्ठय-वसुंधरो उत्तमंग-उद्धंपियंवरो
धाइओ भडो भीम-णंदणो कड्ढिओ पिसायहिं स-संदणो
णक्ख-चम्म-ओणद्ध-अवयवो अद्ध-चक्क-चिक्कार-भइरवो
णेमि-वलय-जव-जिय-विहंगमो भूरि-भार-भारिय-भुअंगमो ८

(विलासिणी छंद)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घत्ता

णर-णारायण-रायहिं पेसिउ आएहिं पर-वले भिडिउ घुडुक्कउ।
णं हरि-हर-वंभाणेहिं तिहि-मि पहाणेहिं मंदरु सायरे मुक्कउ ॥ ९

[३]

गिरि-फुडण तडि-पडण- पडिरवेण किलिगिलइ
रमछमइ णहु छिवइ महि कमइ रिउ ललइ
घणघणइ पहरणइं अवरह इ वले मिलइं
अयरिसउ तणु करेवि धय-पडेहिं पडिणिलइं ४
मण-पवण-चल-गमणु खयर-वहे रयणियरु
परिभमइ जउ जउ जे तउ तउ जे रय-णियरु
रह-दलइं गय-दलइं भड लुणइ हय हणइ
जउ जउ जे तउ तउ जे घवघवइ रुहिर-णइ ८
जउ जउ जे गयरुअइं तउ तउ जे पइसरइ
जउ जउ जे वस वहइ तउ तउ जे रउकरइ
जउ जउ जे पउ घिवइ तउ तउ जे रसरसइ
जउ जउ जे रसरसइ तउ तउ जे अहितसइ १२
तउ तउ जे विसु मुअइ जउ जउ जे जगु सुवइ
जउ जउ जे रणे भमइ तउ तउ जे दिसि भमइ
जउ जउ जे दिसि भमइ तउ तउ जे णहु णमइ
(सव्व-लहु छंद)

घत्ता

वलइ गिलंतु घुडुक्कउ असणि व मुक्कउ धरिउ ण सक्किउ अण्णें।
कायर मंभीसंतें थाहि भणंतें सरहिं पडिच्छिउ कण्णें ॥ १६

[४]

तो दुज्जोहणेण स-सरासणु वाहि वाहि पेसिउ दूसासणु
चंपाहिवहो करहि परिरक्खणु हिंडइ जाउहाणु अवलक्खणु
णवर दिवायर-दूसह-तेयहो कहि-मि पभाउ करेसइ आयहो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ताम जडासुर-सुएण समक्खें   कुरुव-राउ वोल्लाविउ रक्खें ४
वणे णिवसंतु अतुलु माहप्पें   जणणु महारउ आयहो वप्पें
घाइउ जेण तेण रणे मुच्चमि   हउं जे एक्कु तिहुअणहो पहुच्चमि
हियवोवरि कर-पल्लव ढोएवि   अच्छहि णाह णिहालउ होएवि
कुरु-परमेसरेण मोक्कल्लिउ   जाहि जाहि लहु हत्थुत्थल्लिउ ८

घत्ता

भीम जडासुर-णंदण वाहिय-संदण दिण तूर किय कलयल।
पंडव-कउरव-किंकर भुअण-भयंकर भिडिय घुडुक्कालंवल॥ ९

[५]

वे-वि णिसायर   समर-कियायर
वे-वि रणुद्धय   गिद्ध-महद्धय
विण्णि-वि वियवर   रहिय-वरंवर
दुइ-वि भयावह   पइसाविय-रह ४
दुइ -वि महोयर   रिउ-जम-गोयर
दुइ-वि धणुद्धर   सुरह-मि दुद्धर
वे-वि स-विक्कम   सक्क-परक्कम
दुइ-वि स-मच्छर   तोसिय-अच्छर ८
दुइ-वि दुराणण   जिह पंचाणण
दुइ-वि वलुद्धर   जिह सुर-सिंधुर
दुइ-वि स-मलहर   जिह णव जलहर
तो लल्लक्केहिं   दसहिं पिसक्केहिं १२
किउ हय-संदणु   भीमहो णंदणु
सो-वि पहरिसिउ   धणु जिह वरिसिउ
वि-रहु अलंवलु   किउ विहलंघलु

घत्ता

वज्ज-दंड-सम-सारेहिं मुट्ठि-पहारेहिं हणेवि परोप्परु पीसिउ।
मंदर-खीर-समुद्दहं विहि-मि रउद्दहं णाइं विमद्दु पदीसिउ॥ १६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[६]

दिव्वाउहेहिं वण-हुयवहेहिं
सिल-पायवेहिं घण-वायवेहिं
कुलिसाचलेहिं हरि-मयगलेहिं
असुरामरेहिं गरुडोरगेहिं
अवरेहिं तेहिं +++++
पहरंति दोहिं पच्छण्ण होहिं
मायहिं रमंति णहंयले भमंति
चलणेहिं तुरंति वयणेहिं फुरंति
णयणेहिं डहंति सिक्किणि लिहंति
तो दिढ-भुएण भीमहो सुएण
कड्ढेवि किवाणु सिहि-सिह-समाणु
सिरु छिण्णु तासु रयणीयरासु

घत्ता

लेवि धित्तु हइडिंवे जम-पडिविंवे रहवरे कउरव-रायहो।
लइ लइ दुण्णय-दुम-फलु चक्खउ कुरु-वलु रस-विसेसु को आयहो ॥१३

[७]

दुक्खवेवि खिवेवि सीसारविंदु पच्चारेवि खेरिवि कुरु-णरिंदु
रयणीयरु भीयरु सुट्ठु जाउ रहु पेल्लिउ मेल्लिउ सीह-णाउ
अरुणच्छु दलु लहु लोहियासु थोरट्ठि-गंठि णिप्फरिस-पासु
संहारण-तारण-सम-किरीडु दुज्जोहण-साहण-पाण-पीडु
भू-भाय-भयावह-भूरिभाउ वारहय-रयणि-परिमाण-चाउ
धूमप्पह-कंस-मयंग-ताणु सय-साम-तुरंगम-जुत्त-जाणु
सोणिय-पुडिंग-चित्तलिय-चिंधु णं णिम्मज्जायउ पलय-सिंधु
परिभमइ भमाडइ वइरि-सेण्णु मं भज्जहो वलहो वलंतु कण्णु

घत्ता

धाइउ रयणियरु णरिंदहो करि व करिंदहो जाउ रउद्दु रणंगणु।
पेल्लावेल्लि करंतहं सुरहं णियंतहं झुल्लइ णाइं णहंगणु॥ ९

[८]

तो कणियार-कुसुम-दल-वण्णें लयउ परमु दिव्वाउहु कण्णें
रयउ घुडुक्कएण मायावउ साहणु हणु हणु सद्दुद्दामउ
तरु-गिरि-सिल-पाहणहिं हत्थउ वारुण-वायव-अग्गेयत्थउ
दिस-पमाणु सायर-गंभीरउ विसहर-विसमु धराधर-धीरउ ४
हय-वाइत्त-पवड्डिय-कलयलु तं णिएवि आसंकिउ कुरु-वलु
अंगु राउ पर एक्कु ण कंपिउ णिसियर-णियरु खुरुप्पेहिं कप्पिउ
सहुं सीसक्केहिं सीसइं छिण्णइं स-कवंधइं तणु-ताणइं भिण्णइं
आसवार स-तुरंग समाहय सरह रहिय सारोह समागय ८

घत्ता

माया-वलु जगडाविउ रणे विहडाविउ सरेहिं दिवायर-पुत्तें।
लक्खण-लक्ख-विणासेहिं दोस-सहासेहिं कुकइ कव्वु जिह धुत्तें॥ ९

[९]

उवढुक्कएण मग्गण-गण घित्त घुडुक्कएण
कण्णहो अणिट्ठ उरु भिंदेवि पुणु महियले पइट्ठ
तेण-वि णिसिद्धु दोसायरु दसहिं सरेहिं विद्धु
थरहरिय-गत्तु कह कह-वि हु धरणीयलु ण पत्तु ४
भीमुब्भवेण सहसारु चक्कु मुक्कउ जवेण
रवि-सुएण छिण्णु उववसिणु णाइं रणे सिरिहे दिण्णु
गय भीयरेण लल्लक्क मुक्क रयणीयरेण
कलहोय-वण्ण संचारिम णावइ णाग-कण्ण ८
स-वि अदिहि देंति विणिवारिय असइ व पासु एंति

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घत्ता

तो उप्पएवि स-संदणु भीमहो णंदणु वरसिउ विविहेहिं घाएहिं।
णं परिवड्ढिय-मलहरु जुय-खय-जलहरु धारा-णियरु णिवाएहिं॥

[१०]

तओ सूर-पुत्तेण वाणेहिं भिण्णो हया आहया संदणो झत्ति छिण्णो
विणासं णिया जाउहाणी कुमाया समुट्ठाविया अंगवंगेहिं घाया
हिडिंवा-सुएणं पि से दिव्व-अत्थं कयं वच्छदंतेहिं सव्वं णिरत्थं
खणे अण्ण मायावलेवेण भीसें खणे वीस चालीस पंचास सीसें
खणे विज्जुला-लोल-लोलंत-जीहो खणे कुंजरो तक्खणे होइ सीहो
खणे पास-पासे खणे दूर-दूरे खणे भूमि-भाए खणे ठाइ सूरे
खणेंगुट्ठमेत्तो खणे सेलु तुंगो खणद्धे विरूवो खणद्धे अणंगो
खणे वाह-पट्ठे खणे हत्थि-खंधे खणे छत्त-दंडे खणे चारु-चिंधे

घत्ता

दुच्छिउ दिण्ण-दिउत्तें भीमहो पुत्तें थाहि थाहि लइ पहरणु।
सामिहे जं ण धरिज्जइ अवसरे दिज्जइ सीसें एत्तिउ कारणु॥

[११]

एम भणेवि वरिसिउ सय-वारउ णं जलहरु मुवंतु जल-धारउ
दिणमणि-णंदणेण सर पेसिय पडिभड-कवड-माय णीसेसिय
विप्फुरियाहवेण अरुणक्खें अवर माय उप्पाइय कक्खें
जाउ महागिरि गिरि परिवारिउ वज्ज-सरेहिं रवि-सुएण वियारिउ
जाउ गइंदु मइंदें तासिउ जाउ भाणु सुब्भाणें णासिउ
जाउ जलणु जलहरेण कलंकिउ जाउ मेहु दुव्वाएं वंकिउ
जाउ जलहि मंदरेण विरोलिउ एम घुडुक्कउ आहिंदोलिउ
णाणाउहु णाणाविह-वाहणु णिय-रहे चडिउ अणिट्ठिय-साहणु

घत्ता

तो पंचग्गि-समाणेहिं पंचहिं वाणेहिं कण्णहो छिण्णु सरासणु।
तेण-वि तहो अग्गेयहिं सरहिं अणेयहिं चउदिसु दिण्णु हुवासणु॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[१२]

तो पलित्त साहणेण लोहिय-प्पसाहणेण
भीमसेण-णंदणेण काललोह-संदणेण
धूमवण्ण-विग्गहेण लोयणग्गि-दूसहेण
कालरूव-भीसणेण मेह-णाय-णीसणेण ४
भूरि-भाव-भावणेण दिव्व-माय-दावणेण
विप्फुरंत-कुंडलेण ढक्कियक्क-मंडलेण
दुद्धरासणी विमुक्क विज्जुलावली व ढुक्क
अट्ठ चक्क सार-भूव देवय व्व दिण्ण-धूव ८
जोयणाइं दो कराल एक्क-जोयणं विसाल
तं णिएवि धायरट्ठ पुट्ठि दिंत के-वि णट्ठ
तो दिवायरंगएण दिव्व-मच्छरंगएण
सज्जे भीम-णंदणासु लेवि मुक्क मंड तासु १२

घत्ता

स-धउ स-छत्तु स-चामरु स-धुरि स-हयवरु रहु संचूरेवि मुक्कउ।
करणु देवि तहो थाणहो अंतरे वाणहो गउ केत्तहे-वि घुडुक्कउ ॥१३

[१३]

णं अयरिसणु हूउ परमप्पउ पडिवउ जाउहाणु किउ अप्पउ
रोक्कइ वलइ धाइ वहु-वेसेहिं सरह-सीह-सद्दूल-विसेसहिं
मक्कड-महिस-मेस-मायंगेहिं करह-कोल-खर-रिच्छ-भुवंगेहिं
वसह-तुरंग-रोज्झ-रुरु-चमरेहिं मंकुण-दंस-मसय-दुब्भंमरेहिं ४
सारमेय-गोमाउ-विरालेहिं भल्लुय-भूय-पेय-वेयालिहिं
डाइणि-जोइणि-गह-चामुंडेहिं वायस-घोर-गिद्ध-भेरुंडेहिं
तहिं अवसरे थिएण आसण्णें विजय-सरासणु कड्ढिउ कण्णें
दस सय संख सरासण पेसिय माया-रूव-रिद्धि णीसेसिय ८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घत्ता

सरहिं णिरंतर पूरिउ कह व ण चूरिउ णिसियरु माया-पाणें।
अंतर-थाणें पइसइ कह व ण दीसइ णिक्कलु जिह विणु जाणें॥ ९

[१४]

ताम वग-णंदणो वइरि संसग्गिणा झत्ति संदीविओ परम-कोवग्गिणा
भणइ दुज्जोहणु देहि आएसयं जा हिडिंवा-सुअं करमि णीसेसयं
एक्कचक्काहिवो जेण विणिवाइओ से सरीरुब्भवो एस संभाइओ
भणइ कुरु-परिविढो जाहिं जाहिद्धुअं णेहि जम-सासणं पंडुणंदण-सुअं ४
हरिसिओ रक्खसो वाहिओ संदणो अमर-वर-कामिणी-लोयणाणंदणो
सरहसुद्धाइया दो-वि जायं रणं सुरवहू-जयसिरी-पाणिगह-कारणं
पहय पडु-पडह दडि-संख-कोलाहलं विवुह-वहु-अंगणा-गीय-जय-मंगलं
वच्छदंतासणी-भिण्ण-गयणंगणं एवमारंभियं तेहिं समरंगणं ८

घत्ता

घायालिंगण-सारउ कइयवगारउ करण-वंध-सय-भरियउ।
मुच्छण-वेयण-भावेहिं विविहालावेहिं सुरयहो रणु अणुहरियउ॥ ९

[१५]

तो ओणिद्दए णिद्दा-भुत्तइं पंडव-कुरुवाणीयइं सुत्तइं
णिसियर वावरंति विण्णि-वि जण विण्णि-वि लोहियक्ख-रत्ताणण
विण्णि-वि भीम-वगासुर-णंदण विण्णि-वि काललोहमय-संदण
विण्णि-वि गिद्ध-चिंध दप्पुद्धर वे-वि मयंध कुद्ध णं सिंधुर ४
विण्णि-वि घोर रूव धूमप्पह विण्णि-वि रिक्खचम्म सज्जिय-रह
विण्णि-वि सायमुहेहि तुरंगेहिं विण्णि-वि हत्थि-चम्म-फरुसंगेहिं
विण्णि-वि भूसिय कंसिय-कवएहिं विण्णि-वि धणुअवरेहि वज्जमएहिं
विण्णि-वि सिल-धोयहि णाराएहिं विण्णि-वि खर-वाणेहिं साहाएहिं ८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घत्ता

णिएवि वगासुर-णंदणु किय कडवंदणु कुरुवइ-दिहि-संपुण्णउ।
जउण-विओयर-जायहो रज्जु ण-रायहो पंडव-वलु आदण्णउ॥ ९

[१६]

वोल्लाविउ ताम भीमो अणंतेण भो भो पधाव प्पधाव प्पयत्तेण
तुह णंदणो घाइओ जाउहाणेण तं सुणेवि कोवग्गि-जज्जल्लमाणेण
मायरिस-पुत्तेण वड्ढिय-पयावेण आयड्ढियायत्त-सोवण्ण-चावेण
खर-वाहणा रक्खसा थरहरंतेहिं हय पंच-पंचेहि दूवच्छदंतेहिं ४
थक्को त्ति आलाउहो तेण कुद्धेण भीमस्स छिण्णु धणु गिद्ध-चिंधेण
तेण-वि तहो घाइया लउडि-दंडेहिं णं मत्त तंवेरमा उद्ध-सुंडेहिं
चुण्णं गयाओ गयाओ-वि घाएहिं भग्गा महालाण-थंभ व्व णाएहिं
वोल्लाविओ ताम पत्थो उविंदेण तुह भायरो मारिओ रक्खसिंदेण ८

घत्ता

भीम-अलाउह-संगरि हरि-वयणंतरि अज्जुणु जिह जमु ढुक्कउ।
भडु एत्तहिं वि स-मच्छरु णाइं सणिच्छरु कण्णहो वलिउ घुडुक्कउ॥ ९

[१७]

खउ करंतु दुज्जोहण-सेण्णहो सच्चइ-जमल पधाइय कण्णहो
सोमय-सिंजयाहं रक्खस-वलु णरु णरवइहि पवड्ढिय-कलयलु
तो हल्लोहल्लिहूउ जणद्दणु वुत्तु हिडिंवासुंदरि-णंदणु
धाउ धाउ हउ जणणु तुहारउ दुज्जउ जाउहाणु मायारउ ४
सरहसु भइमसेणि हरि-वयणें धाइउ धूमकेउ णं गयणें
विण्णि-वि भिडिय जाउ कडवंदणु हउ परिहेण विओयर-णंदणु
णिवडिउ कंपमाणु महि-मंडले चेयण लहेवि लउडि किय करयले
दिण्णु घाउ संचूरिउ रहवरु स-धउ स-च्छत्तु स-सूयउ स-चामरु ८

घत्ता

णहे उप्पएवि पहरिसिउं रुहिरु पदरिसिउ वग-सुउ सज्झस-मुक्कउ।
थिउ अलि-सामल-देहहो मेहु व मेहहो उप्परि तहो-वि घुडुक्कउ॥ ९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[१८]

तो तारा-मंडल-ढुक्कएण णासिय रिउ-माय घुडुक्कएण
दरिसाविउ किउ कडवंदणेण पाहाण-वरिसु वग-णंदणेण
समरंगणे कोव-वसंगएण तमि-सरिहिं छिण्णु भीमंगएण
पुणु जुज्झिय सव्व-महाउहेहिं पुणु वर-तुरएहिं पुणु कररुहेहिं ४
पुणु करण-विसेसेहिं दूसहेहिं पुणु कंठग्गह-केसग्गहेहिं
लद्धावसरेण अलाउहासु असि दुहिय लेवि सिरु छिण्णु तासु
सवडंमुहु दुज्जोहणहो घित्तु अण्णु-वि तिहिं रुहिरंजलिहिं सित्तु
फलु एउ एहु रसु दुण्णयाहं दक्खवइ सव्व-बंधव-सयाहं ८

घत्ता

पेक्खेवि पंडव-किंकरु भिडिउ भयंकरु रह-गय-तुरय-वरेण्णइं ।
कंठ-परिट्ठिय-जीयइं पाणहं भीयइं णट्ठइं कउरव-सेण्णइं ॥ ९

[१९]

रवि-सुएण ताम जिउ पंड-वलु मंदरेण महिउ णं उवहि-जलु
पंचाल मच्छ कइकय पवर सोमय सिंजय पंडव अवर
ते दसहिं दसहिं मग्गणहिं हय णं घण-धारें हय वसह-गय
पर थक्कु घुडुक्कउ एक्कु जणु गज्जंतु णाइं णहे पलय-घणु ४
अवरोप्परु छइउ णिरंतरहं वइहत्थिय-वच्छदंत-सरहं
कण्णियहिं वराह-कण्णा-सयहिं णालीयहिं चामीयरमयहिं
तावणिहिं तुरंग चउक्कु हउ पुणु अंतर-ठाणहो भइमि गउ
दस दिसु केत्तहिं-वि ण दीसियउ कउरवेहिं कण्णु आकोसियउ ८

घत्ता

णउ जाणहं कह होसइ काइं करेसइ णिसियरु अमरिस-कुद्धउ ।
जीविउ दुक्करु दीसइ कहो किर सीसइ कुरुवइ संसय-छुद्धउ ॥ ९

[२०]

कुरु-परमेसरेण आदण्णें सयल दिसा-णिवंधु किउ कण्णें
लोयण-गोयरु वाणेहिं छाइउ घोरु तमंधयारु उप्पाइउ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तो विण्णाण-करण-गुण-जुत्तें विरइय माय हिडिंवा-पुत्तें
अंवरु अरुणु करेप्पिणु मुक्कउ विज्जुल-वहलुज्जलिय-जलणुक्कउ ४
हा हे सद्दु महा-भयगारउ मुक्काउह तरु-गिरि-अंगारउ
तिहि-मि के-वि ण परम्मुहिभूय वलेवि परिट्ठिय जिह जम-दूय
कहिं-मि सिवउ विमुक्क-फेक्कारउ हुयवहु चित्त-णयण-पब्भारउ
कहि-मि पणच्चियाइं हय-खंधइं णं सीसेहिं रिणु देवि कवंधइं ८

घत्ता

एम स-चिंधु स-वाहणु कउरव-साहणु चूरिउ सिल-पाणेहिं।
दिणमणि-सुएण घुडुक्कउ सज्झस-मुक्कउ जिणेवि ण सक्किउ वाणेहिं।। ९

[२१]

णिवडंति फुरंतइं संमुहाइं गयणहो णक्खत्त-समाउहाइं
वोल्लंति परोप्परु कुरुप्पहाणु सुरवर पवहंति ण जाउहाणु
कल-किंकिणि-माला-मुहलियंग हय कण्णहो केरा वर तुरंग
अण्णहिं रहे चडिउ पयंग-जाउ जणु जूरिउ चूरिउ अंगराउ ४
भो भाणव जइ तुह अत्थि सत्ति तो मेल्लेवि वासवयत्त सत्ति
जा रक्खिय कारणे अज्जुणासु सा करउ हिडिंवा-सुय-विणासु
पट्ठविय तेण हउ जाउहाणु वड्ढंतु-वि गिरिवर-परिपमाणु
आगासहो पडिउ पसारियंगु अत्थमिउ णाइं वीयउ पयंगु ८

घत्ता

तेण सयं भू-पत्तें भीमहो पुत्तें अक्खोहणि संचूरिय।
पंडु-सुयहुं भउ लाइउ पर-वलु खाइउ खगहं मणोरह पूरिय।। ९

इय रिट्ठणेमिचरिए धवलइयासिय-सयंभुएव-कए।
घुडुक्कावह[-णामो इमो] इकहत्तरिमो सग्गो।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बाहत्तरिमो संधि

विणिवाइए भीमहो णंदणे   पंडु-सेण्णु थिउ दुम्मणउं।
पेक्खंतहो कउरव-लोयहो   कण्हें किउ वद्धावणउं॥ १

[१]

सुर-समर-विढत्त-महागुणेण   वोल्लविउ माहउ फग्गुणेण
सुर-गिरि-चंकमणे समुद्द-खोहे   दिवसयराणुग्गमे जम-विरोहे
भू-भाय-कंपे णव-गह-णिवाए   सुय-सोयाऊरिए धम्म-जाए
संतोसु तुज्झु कज्जेण केण   किउ वद्धावणउं महंतु जेण ४
तो कहिउ णरहो णारायणेण   आणंदिउ आएं कारणेण
ण घुडुक्कउ मुउ मुउ अंगराउ   विणु सत्तिए णिव्विसु अहि व जाउ
सिणि-णंदणु पभणइ देव देव   अज्जुणहो ण उप्परि मुक्क केवं
सच्चइहे कहिज्जइ महुमहेण   मइं मोहिउ कण्णु ण घित्त तेण ८

घत्ता

एक्काहणि वासव-दिण्णय   जइ सा कह-वि समल्लियइ।
तो मारइ णरेण मरंतेण   अम्हहं एक्कु-वि ण-वि जियइ॥ ९

[२]

दइवोवहेण वियत्तणेण   अविमुक्क णरहो हियत्तणेण
माहवहं विहि-मि चवइ एवं जाम   दोणहो धाइय सामंत ताम
सिवि-सोमय-सिंजय-कासि-राय   पंचाल-मच्छ-कच्छय-सहाय
तो जमल-जुहिट्ठिल-भीमसेण   वोल्लाविय कण्हें स-हरिसेण ४
जिह भंडणु तिह खउ खत्तियाहं   रोवेसहु कारणे केत्तियाहं
पढमुत्तरु मुउ रक्खंतु सेउ   अहिमण्णु घुडुक्कउ पुणु अजेउ
को जाणइ अज्जु-वि विजउ काहं   अवलंवेवि धीरम भिडहु ताहं
ववसाइहिं सोक्खइं जेम होंति   स-मणोरहं तुम्हहं मिलिउ कोंति ८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घत्ता

धणु देंतउं को-वि ण विद्धउ को पहरंतउ णउ मरइ।
धणु देइ रणंगणे पहरइ णीसावण्णु वे-वि करइ॥ ९

[३]

तो सोयर-सुय-उक्कंठुलेण णारायणु वुत्तु जुहिट्ठिलेण
परमत्थु भडारा कहिउ एहु महु आयहो उप्परि गरुअ-णेहु
किउ अलयालंवल-मद्दणेण महु पेसणु भीमहो णंदणेण
परिवड्ढइ तेण महंतु दुक्खु वज्जमउ ण को-वि ण को-वि रुक्खु ४
सिरि-रामालिंगिय-विग्गहेण तव-तणउ णिवारिउ महुमहेण
कायर-पुरिसहं अवसरु ण होइ रोवंतु ण पावइ पिहिवि कोइ
गुरु पेक्खु पेक्खु किह वलइ खाइ हरिणउलइं हरिणाहिवइ णाइं
तो धाइय सरहसु पंडु-पुत्त णं सीह विउज्झाविय पसुत्त ८

घत्ता

गय गयहं तुरंग तुरंगमहं रह रहवरहं समावडिय।
भीमज्जुण-जमल-जुहिट्ठिल पंच-वि दोणहो अब्भिडिय॥ ९

[४]

दडि-गोमुह-डंवर-पडह देवि भिडिय कुरु-पंडव-वलइं वे-वि
पहरंति परोप्परु सुहड के-वि णखत्त-पहइं पहरणइं लेवि
उण्णिद्दए णिद्दए घुम्ममाण णिवडंति किवाण-णिहम्ममाण
सुरधणु-पयंड-गंडीव-हत्थु खणु एक्कु णिवज्झहु भणइ पत्थु ४
मं पहरहो स-तिमिरे संपहारे णउ दीसइ किंपि तमंधयारे
रय-रुहिर-तरंगिणि-भग्ग-मग्गे जुज्झेसहो ससहरे णहे वलग्गे
विविहाउह-मंडिय-मंडवेहिं पडिवण्णु वयणु कुरु-पंडवेहिं
परिपुज्जिउ अज्जुणु सुत्त ते-वि रह-सिविय-तुरंगेहिं आरुहेवि ८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घत्ता

समरंगण-वहु-अवरुंडिउ अण्णेहिं धुणेवि विसाणइं।
सुहु सुत्त के-वि सिरि देप्पिणु करि-कुंभइं उवहाणइं॥ ९

[५]

के-वि करिवर-कुंभेहिं सघणेहिं थिय लग्गेवि णं कामिणि-थणेहिं
पसमिउ कुरु-पंडव-संपहारु पवियंभिउ घोरु तमंधयारु
परिपूरेवि सयल दियंतरालु णं वलइ गिलेवि सुहु सुत्तु कालु
ससि अरुणु परिट्ठिउ ताम गयणे णं आमिस-गासु कियंत-वयणे ४
थोवंतरे थिउ ससि-चिंधु धवलु णं णहयल-सरे पप्फुल्ल-कमलु
णं पुव्व-दिसावहु-सिय-कवोलु तो वसुह-वरंगण-गहण-लोलु
दुज्जोहणु पभणइ ताय ताय तुह अवसरु मारहि पंडु-जाय
कइयहं वि महारउ ण किउ कज्जु वइरिहिं जे समिच्छहि देवि रज्जु ८

घत्ता

तो वुच्चइ दोणायरिएण मं तुहुं कुरुवइ एम भणे।
को पंडव जोहेवि सक्कइ देव अदेव वि जाहं रणे॥ ९

[६]

हउं जिणेवि ण सक्कमि पंडु-जाय णिय-सत्तिए जुज्झमि कुरुव-राय
सइं पहरहि जइ साहीण-हत्थ किं दोणु पडिच्छइ पंच पत्थ
एक्केण-वि पत्थें करेवि वप्पु दरिसाविउ तह तह लोह-दप्पु
रक्खस-वहे गोत्तहो अंतराले भययत्त-जयद्दह-समर-काले ४
जुज्झावहि एवहिं णिय-सहाय दूसासण-सउवल-अंगराय
वेयारिउ जेहिं अणेय वार विस-जउहर-जूयइं किय-णिवार
जइ कुरुव णिहम्मइ एक्कु जीवु तो होज्ज ण होज्ज व जंवुदीउ
तुहुं घइं मारावेवि सयण साव गइ कवण लहेसहि पिसुण-भाव ८

घत्ता

मइं अज्जु कल्ले सामंतेहिं तइय-कण्ण-दूसासणेहिं।
मरिएवउ दिवसे चउत्थए सउणि-सल्ल-दुज्जोहणेहिं॥ ९

[७]

सव्वसाइ-विजय-उक्कंठुलेण भुंजेवउ रज्जु जुहिट्ठिलेण
सयमेव सहिज्जउ जासु विद्धु दुज्जोहण एहु परमत्थु सिद्धु
तो दूरत्थेण-वि रवि-रहेण णवणीय-पिंडु जिह हुयवहेण
जामिणि-अवसाणे विलीणु चंदु गउ गिलेवि माणु णक्खत्त-विंदु ४
दडि-काहल-संख-मुइंग देवि सु-विउद्धइं कुद्धइं वलइं वे-वि
वायरणहं मिहुणहं अणुहरंति जिह ताइं तेम सर संभरंति
जिह ताइं तेम गुण-विद्धि णेंति जिह ताइं तेम कहु दिहि ण देंति
जिह ताइं तेम णं कंपिराइं जिह ताइं तेम किरियावराइं ८
वहु-एक्क-दु-वयण-पयंपिराइं जिह ताइं तेम पडिवावराइं
तो विमलइं थियइं दियंतराइं +++++++++++++

घत्ता

उययइरि-सिहरे रवि उग्गउ दीसइ पंडव-कुरु-णरेहिं।
मा मुज्झहो केत्तिउ जुज्झहो णाइं णिवारिय णिय-करेहिं॥ ११

[८]

रवि-उग्गमे भिडियइं वलइं वे-वि गय गयहं तुरंगहं तुरय देवि
रह रहहं महाधय धयवडाहं रण-रस-रहसुब्भड भड भडाहं
रउ पुणु वि समुट्ठिउ तेत्थु काले थिउ णाइं णिवारिउ अंतराले
जइ धावहो अणियहो अणिउ देवि तो गिलमि पंडु-कुरु-वलइं वे-वि ४
अण्णेत्तहे उट्ठिउ पहरणग्गि णं विहि-मि अणीयहं करइ लग्गि
मं मुज्झहो जुज्झहो सामि-कज्जे पाइक्कहं संपय एत्तिय ज्जे
जं रण-मुहे जय-सिरि पासु एइ सुर-वहुय मरंतहं सवसु देइ
ससि-फलिहे लिहिज्जइ णियय-णामु पहरिज्जइ केम ण जाम थामु ८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घत्ता

अण्णेत्तहे वहइ रणंगणे रुहिरहो णइ भीसावणिय ।
लललललइ लोल लालाउलिय जीह णाइं कालहो तणिय ।। ९

[९]

तहिं तेहए दूसहे दुण्णिवारे कुरु-पंडव-साहण-संपहारे
हरि-भीमहिं पेरिउ सव्वसाइ दुम-दूसलएवहं वड्ढि णाइं
किं अच्छहि वड्ढिय-विक्कमाइं विणिभिंदइहि वूहइं गिरि-समाइं
उद्दीविउ पुणु गंडीवधारि भुक्खिय-कयंत-वयणाणुकारि ४
लक्खिज्जइ णउ वि रयंत-थाणु णउ दिट्ठि-मुट्ठि-संधाणु वाणु
णिवडंति समच्छर गय-तुरंग सामंत महा-सर-पूरियंग
विणिभिण्णइं जूहइं अज्जुणेण णं अवगुण-सयइं महागुणेण
आवट्टइ फुट्टइ भमइ सेण्णु णं उवहि-सलिलु मंदर-णिसण्णु ८

घत्ता

परिसक्कइ वइरि वियंभइ सधणु धणंजउ जहिं जे जहिं ।
लक्खिज्जइ समर-महोवहि रुंड-णिरंतरु तहिं जे तहिं ।। ९

[१०]

एत्तहे रणु कुरुव-धणंजयाहं एत्तहे सुर-सोमय-सिंजयाहं
एत्तहे-वि विओयर-रविसुयाहं दुज्जोहण-णउलहं सोणुयाहं
एत्तहे वि दोणु दूसहु पराहं दिवसयरु व गिंभे महीहराहं
जोयणहं ण तीरइ भड-सएहिं पंचालेहिं मच्छेहिं कइकएहिं ४
तो तवणीय-तणु-ताण-गत्त हय दोवइ-तायहो तिण्णि पुत्त
तिहिं भल्लिहिं सीसइं तोडियाइं कमलइं व मराले मोडियाइं
तो धाइय दुमय-विराड वे-वि कोवंडइं भू-भंगुरइं लेवि
समकंडिउ खंडिउ छत्त-दंडु तणु-ताणु ताहं किउ खंडु खंडु ८

घत्ता

विहिं भल्लिहिं विहि-मि णरिंदहं छिण्णइं सिरइं स-कुंडलइं ।
विहिं विहि-मि विसहर-फुट्टेहिं णाइं णिरुद्धइं सयदलइं ।। ९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[११]

धट्ठज्जुणु भीमें वुत्तु एम   हय जण्णसेणि तुहुं जियहि केम
पुत्तहो पुत्तत्तणु एत्तिउं जे   जं वइरि णिहम्मइ वइरि-पुंजे
उच्छोहिउ तेण वि पंडु-पुत्तु   किं णिहए घुडुक्कए जियहि जुत्तु
हउं दोणहो तुहुं कण्णहो पयट्टु   तं णिसुणेवि मारुइ रणे वियट्टु ४
गउ तेत्तहे जेत्तहे अंगराउ   विसमाहउ विहि-मि महंतु जाउ
तिहिं सरेहिं थणंतरे भिण्णु कण्णु   विहलंघलु कह-वि ण महि पवण्णु
सर-जुज्झु फिट्टु गय-जुज्झु लग्गु   रह-कुव्वरु एक्केकहो जे भग्गु
रविसुय-भुय-जुयल-गलत्थिएहिं   पावणि णिसिद्धु वइहत्थिएहिं ८

घत्ता

उरे घित्त सत्ति जत्तारहो   णिहय तुरंगम वि-रहु किउ।
उट्ठेवि णह-लंघण-करणेण   णउल-महारहे भीमु थिउ॥ ९

[१२]

रहु ढोइउ भीमहो अवरु जाम   दुज्जोहणु णउलहो भिडिउ ताम
पंडवेण णिवारिउ सरवरेहिं   उण्हालउ णं णव-जलहरेहिं
सहएवें दूसासणु णिसिद्धु   तहो सारहि कंठ-पएसे विद्धु
सिरु खुडिउ ण जाणिउ कउरवेण   हय खंचिय जंत महा-जवेण ४
पडिवारउ भिडइ ण भिडइ जाम   दोणज्जुण-रणु पडिवण्णु ताम
रह-मंडल-मग्गेहिं संचरंति   दिव्वत्थेहिं विण्णि-वि वावरंति
जं कुरु समरंगणे घिवइ हत्थु   तं तेण जे पडिवउ हवइ पत्थु
दुद्दम-दणु-देह-विदारणाइं   णिट्ठवियइं सव्वइं पहरणाइं ८
हम्मंतु वि हरिसिउ वद्ध-णेहु   जगे धण्णउ हउं जसु सीसु एहु

घत्ता

धट्ठज्जुणु रहवरु वाहेवि   भिडिउ ताम दूसासणहो।
पज्जालिय-जाला-मालहो   जलहरु णाइं हुवासणहो॥ १०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[१३]

दूसासणु दुमय-सुएण भग्गु कियवम्मु णवर पहरणहं लग्गु
एत्तहे आढत्ताओहणेण वुच्चइ सच्चइ दुज्जोहणेण
डज्झउ धिगत्थु एहु खत्त-धम्मु सहुं पइ-मि करेवउ कूर-कम्मु
होंतउ आसि महु परम-मित्तु पहरेवउ एवहिं मइं णिरुत्तु ४
सिणि-णंदणु पभणइ वद्ध-रोसु खत्तियहं रणंगणे कवणु दोसु
छुडु साउहु संमुहु थाउ को-वि हम्मइ गुरु-पुत्तु सहोयरो-वि
अवरोप्परु ए आलाव जाम राहेय-भीम पडिलग्ग ताम
किउ मारुइ वि-रहु वियत्तणेण तव-णंदणु भणइ हियत्तणेण ८
लहु धावहु धाइउ भीमसेणु चंपाहिउ दीसइ भीम-सेण्णु
सामंत पधाइय भग्गु कण्णु दोणायरिएण-वि पंडु-सेण्णु

घत्ता

सय पंच हयइं पंचालहं सट्ठि सयइं पुणु सिंजयहं।
दस दंति-सहासइं मारेवि धाइउ भीम-धणंजयहं॥ ११

[१४]

तो जमल करेप्पिणु चक्क-रक्ख तोसावेवि किण्णर-सिद्ध-जक्ख
धट्ठज्जुणु दोणहो समुहु ढुक्कु णं गहु णिय-थाणंतरहो चुक्कु
णं धाइउ केसरि कुंजरासु णं विज्जु-पुंजु धरणीहरासु
णं विणया-णंदणु विसहरासु णं गहकल्लोलु दिवायरासु ४
पच्चारिउ दुमयहो णंदणेण कहिं जाहि थाहि सहुं संदणेण
हउं पलय-कालु उप्पण्णु तुज्झु जिह हउ जणेरु तिह देहि जुज्झु
तो एंतु पडिच्छिउ दियवरेण सुरसरि-पवाहु णं सायरेण
परिभमिय रहेहिं हेमुज्जलेहिं अब्भंतर-वाहिर-मंडलेहिं ८

घत्ता

वसुदाणु ताण थिउ अंतरे तासु वि तोडिउ सिर-कमलु।
पहरंतहं गुरुण णिहम्मइ मणे आसंकिउ पंडु-वलु॥ ९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[१५]

अंगिरस-सरासणु करे करेवि वर वच्छदंत सर वीस लेवि
पंचालु महारहु रणे विहत्तु स-तुरंगु स-सारहि सायवत्तु
स-धयग्गु स-चामरु छिण्णु चाउ किउ दुमयहो णंदणु हय-पयाउ
करे स-सरु सरासणु अवरु लेवि गुरु विद्धु थणंतरे आहसेवि ४
तं धणु हउ वेहाविद्धएण दोहाइउ कलस-महाधएण
जं जं धट्ठज्जुणु धरइ धम्मु तं तं छिंदइ गुरु लहेवि जम्मु
आसंकिय पंडव एहु अवज्झु हरि कहइ करहो उवएसु मज्झु
हउ आसत्थामुल्लवहु एम णिय-चावलट्ठि परिहरइ जेम ८

घत्ता

जं वोल्लिउ पंकयणाहेण दोणायरिय-विणासयरु।
पडिवण्णु सव्वु तं सव्वेहिं एक्कु मुएप्पिणु णवर णरु॥ ९

[१६]

मालव-परमेसरु इंदधम्मु तहो तणउं महा-करि कूर-कम्मु
सो भीमें भीम-परक्कमेण धुय-केसर-केसरि-विक्कमेण
हउ आसत्थामु धरत्ति पत्तु जाणइ महु णंदणु रणे समत्तु
थिउ उम्मणु दुम्मणु कलसकेउ धणु छंडिउ पंडव-पलय-केउ ४
मुच्छा-विहलंघलु महि पवण्णु कह कह-वि समुट्ठिउ लद्ध-सण्णु
पत्तियइ ण कासु-वि णाम-भंतु तवणंदणु पुच्छिउ सच्चवंतु
किं सच्चउ आसत्थामु णत्थि पहु पभणइ घाइउ णरु ण हत्थि
महुमहेण वि दिज्जइ कण्ण-जाउ महिहरेण णरिंदहं कवणु पाउ ८

घत्ता

तो अलियालाव-पहावेण गुरु-वहकरणुक्कंवलइं।
रहु भरिउ जुहिट्ठिल-केरउ महिहे चउद्दह अंगुलइं॥ ९

[१७]

तो धाइय वाणासणइं लेवि पारावयास-सोणास वे-वि
संजमियाणिज्जिय जमल-तोणु पवियंभइ रुंभइ पुरउ दोणु

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वहु-रण-भर-धुर-उद्धरण-खंधु रहु चूरिउ करेवि रहंग-वंधु
गय मुक्क सिहंडिहे भायरेण स-वि छिण्ण खुरुप्पें दियवरेण ४
कइकेयण-सालु वसुंधरत्थु धट्ठज्जुणु ढुक्कु फरासि-हत्थु
णिय-रह-धुर-तुंडेहिं पाउ देवि पेक्खंतहं सेण्णहं भिडिय वे-वि
किवि-कंतें पारावय-णिहंग सत्तिए भिंदेवि पाडिय तुरंग
वसुणंदउ सर-लक्खेण भग्गु वइहत्थिय-सहसें मंडलग्गु ८

घत्ता

सरु अवरु लेवि किरि मारइ ता सुहडहं कडवंदणेण।
अद्ध-वहे जे किउ दस-खंडइं दसहिं सरेहिं सिणि-णंदणेण॥ ९

[१८]

किव-कण्णेहिं तो सच्चइ णिसिद्धु धट्ठज्जुणु दोणें पत्तु विद्धु
एत्तहे-वि मुवंतें सर-सयाइं खत्तियहं वीस सहसइं हयाइं
णरवइहिं लक्खु कलसद्धएण अक्खोहणि णिहय सवाय तेण
गयणंगणि हक्कारंति देव गइ कवण लहेसहि हणेवि देव ४
संघारहि गुरु केत्तिय विरोहि वंभुत्तरे सग्गि सुरिंदु होहि
रहु ढोइउ ताम विओयरेण वाहिउ पंचालि-सहोयरेण
धणु अवरु लेवि वहु-अमरिसेण विणिहय वसाइ सग सूरसेण(?)
पंडवेहिं पसंसिउ जण्णसेणि पइं मुएवि अवरु को जस-णिसेणि ८

घत्ता

उरु भिंदहि लहु सिरु छिंदहि कुद्धउ भीमसेणु भणइ।
पुत्तेण वि तेण किं जाएण जो ण-वि जणण-वइरु हणइ॥ ९

[१९]

तो कीयाकुल-कडवंदणेण अक्कोसिउ गुरु हरि-णंदणेण
अहो वंभण सलहिय-खत्त-धम्म कहिं सुद्धि लहेसहि पाव-कम्म
पंडवहं हरेवि महि कुरुहुं देवि वहु जीव-सहासहं सिरइं लेवि
जसु कारणे रणे पहरणहं लग्गु सो आसत्थामु वलग्गु सग्गु ४
हणु हणु जइ पच्चुज्जिएवि एइ हणु हणु जइ जीविउ जमु ण णेइ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हणु हणु अजरामरु जइ सरीरु   हणु हणु परलोयहो जइ ण भीरु
सुय-सोय-परव्वसु भग्ग-घोणु   णिय जोगब्भासे पइट्ठु दोण्णु
वोल्लाविय कउरव करहु जुज्झु   छंडियइं वरत्थइं कहिउ गुज्झु

घत्ता

उक्खंति-कालु महु वट्टइ   एवहिं आयाउ धुउ मरणु।
जो सव्वहं पासिउ वड्डमउ   सो देवाहिदेउ सरणु॥

[२०]

जो तिहुवण-मत्थए किय-णिवासु   परिगलइ पाउ णामेण जासु
जसु आण-वडीवा सयल देव   जसु तिण्णि-वि लोय करंति सेव
जो थुइहिं थुणिज्जइं सयल काल   णमिएहिं णमिज्जइ णाम माल
ण मइज्जइ जो पंचिंदिएहिं   वंदिज्जइ सुरवइ-वंदिएहिं
भाविज्जइ जो वहु-भावएहिं   ण विमुच्चइ सोक्खेहिं थाइएहिं
परिचिंतिउ सो देवाहिदेउ   उक्कत्ति करेवि गउ भूमि देउ
तेयमउ सिहि व जज्जल्लमाणु   वंभुत्तर-सग्ग-वलग्गमाणु
लक्खिज्जइ तवसुय-संजएहिं   किव-पंकयणाह-धणंजएहिं

घत्ता

तहिं अवसरे दुमयहो पुत्तेण   णरहो धरंत-धरंताहो।
सिरु छिण्णु सयं-भूव-खग्गेण   दोणहो जीविय-चत्ताहो॥

इय रिट्ठणेमिचरिए धवलइयासिय-सयंभुएव-कए।
[णामेणं दोणवहो] बाहत्तरिमो इमो सग्गो॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तेहत्तरिमो संधि

दोण-दिवायरे अत्थमिए   थिउ जगु जे सव्वु अंधारउं।
पंडव-वले वद्धावणउं   दुज्जोहण-वले कूवारउ॥ १

[१]

कउरव-साहणु सुण्णु तेण तेण चित्तें
सोह ण पावइ तेण तेण चित्तें
गुरु-परिवज्जिउ तेण तेण चित्तें
गह-कुलु णावइ तेण तेण चित्तें॥   (जंभेट्टिया)

गंगेय-गुरुज्झिउ कुरुव-वलु   णं णयण-विवज्जिउ मुह-कमलु
णं कामिणि-जोव्वणु पडिय-थणु   णं चंदाइच्च-चत्तु गयणु ४
दुज्जोहणु मुक्क-कंठु रडिउ   हा अज्जु भाणु गयणहो पडिउ
हा अज्जु निरंजणु जरेण मुउ   ++++++++++++
हा अज्जु पुरंदरु दुक्खियउ   हा अज्जु पयावइ भुक्खियउ
हा अज्जु महा-समुद्दु सुसिउ   हा वज्जमओ विक्खंभु घुणिउ ८
हा अज्जु मेरु थाणहो चलिउ   हा अज्जु पिसायहिं जमुच्छलिउ
हा कुम्म-कडाहु अज्जु फुडिउ   हा अज्जु कयंतहो सिरु खुडिउ

घत्ता

अज्जु दिसा-वहु दुम्मणिय   महि वि(हव?)रणंगणु सुण्णउं।
दुज्जोहणेण रुवंतएण   कुरु-सेण्णु असेसु-वि रण्णउं॥ ११

[२]

कुरुहुं अमगंलु तेण०   पभणइ संजउ तेण०।
जाहं विरुद्धउ तेण०   स-धणु धणंजउ तेण०॥
वेयारिओ सि तुहुं तिहिं खलेहिं   रविसुय-दूसासण-सउवलेहिं
विणिवारिउ ण किउ महु त्तणउ   गंगेयहो ण हु विउरहो तणउं

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

तहो कम्महो केरउ लद्धु फलु चूरविउ सयलु-वि कुरुव-वलु ४
गुरु-वंधव-सयणहं करेवि खउ कहि केत्तहे होसइ थत्तियउ
अच्छेवउ णरए अहोमुहेण सुपसारिय पाय पओरुहेण
दुक्खइं विसमइं विसहंतएण वस-वीसद्धु सलिलु पियंतएण
वइतरणि-तरंगिणि-उत्तरणे हुयवह-सीयले असिपत्त-वणे ८
तिल-कुसुम-समाणइं जहिं घरइं असुहइं गिरि-मेरु-महत्तरइं

घत्ता

तुहुं वेयारिउ वसुमइए तव-तणयहो दिण्णु ण अद्धउं।
णल-णहुसहं वलि-रामहं भणु आयए कवणु ण खद्धउ॥ ९

[३]

तो खलियत्थइं तेण० सज्झस-वीयइं तेण०।
भग्गइं सव्वइं तेण० कुरुवाणीयइं तेण०॥

धट्ठज्जुण-सच्चइ-चप्पियइं तवणंदण-जमल-झडप्पियइं
मारुय-गय-घायहिं चूरियइं वासवि-पिसक्क-परिपूरियइं
णट्ठइं दुज्जोहण-साहणइं कुरु-कर-परपेसिय-वाहणइं ४
तहिं अवसरे आउ अणंत-वलु मं भज्जहो मंभीसंतु वलु
कम-कम-कंपाविय-धरणियलु स-सरासणु फेरिउ सर-णियलु
गुरु-णंदणु संदणु धरेवि थिउ मुउ कवणु केण कुरु-भंगु किउ
किय दोण-दिवायरु अत्थमिउ किय सुसिउ सिंधु गिरि विक्कमिउ ८
कुरुवाहिउ पभणइ ण किय किउं हउं कहेवि ण सक्कमि कहउं किउं

घत्ता

अक्खिउ गउत्तम-णंदणेण णिसुणंतहो णरवर-विंदहं।
एक्कें वम्हत्थेण हय वेहत्थिहिं सहसु णरिंदहं॥ ११

[४]

हरि-उवइट्ठेहिं तेण० पंडव-जेट्ठेहिं तेण०।
धणु छंडाविउ तेण० गुरु माराविउ तेण० ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सुय-सोयाऊरिय-विग्गहहो दोणहो परिचत्त-परिग्गहहो
सर-सायर-सलिल-णिमग्गाहो वंभोत्तरे सग्गे वलग्गाहो
भड-णिवहहो विणिवारंताहो अज्जुणहो धरंत-धरंताहो
धट्ठज्जुणेण सिरु पाडियउ ताल-तरु णाइं फलु साडियउ
णिसुणेवि जणेर-सग्गारुहणु किउ गुरुसुएण सायर-खुहणु
रस-रसणु महीहर-हल्लवणु णक्खत्त-पडणु गह-कंपवणु
वोल्लाविउ कुरुव-णराहिवइ पंडवहं पगासमि पलय-गइ
धट्ठज्जुण-जीविउ अवहरमि जं सुएण करेवउ तं करमि

घत्ता

जइ ण-वि मारमि पंडु-सुय सिवि-सोमय-सिंजय-मच्छा।
तो अणसणु पेक्खंतु महु विण्णि व सहसच्छ-तियच्छा॥

[५]

कहिं तव-णंदणु तेण० कहिं दामोयरु तेण०।
कहिं कइकेयणु तेण० कहि-मि विओयरु तेण०॥

कहिं जमल सुहड सिहंडि-पवर कहिं जण्णसेणि सच्चइ अवर
सयल-वि मरंति महु समर-मुहे जिह करि केसरि-वयणंवुरुहे
जिह पण्णय गरुड-समागमणे जिह सलह पईव-समावडणे
तव-सुएण ताम गंडीव-धरु वोल्लाविउ खंडव-पलयकरु
अहो अज्जुण अक्खु केवं वलिउ पडिवारउ पर-वलु संगिलिउ
णिसुणिज्जइ पर-वलु दुव्विसहु रसमसइ रउद्दु तूर-णिवहु
पहरणइं फुरंति जलण-सिहइं तारायण-चंद-सूर-णहइं
धय फरहरंति हिंसंति हय रह थरहरंति गज्जंति गय

घत्ता

केण णियत्तिउ कुरुव-वलु रण-भरहो खंधु को देसइ।
जायव-पंडव-भडहिं सहुं कहु कवणु जोहु जुज्झेसइ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[६]

कहइ धणंजउ तेण० तहो तव-तोयहो तेण०।
आयण्णंतहो तेण० पंडव-लोयहो तेण०॥

ओहु पत्थिव-पर-वल-पलयकरु अवहत्थिय-मरण-ब्भय-पसरु
सोवण्ण-सीह-लंगूल-धउ जसु सोएं सग्गहो दोणु गउ
किव-भायणेउ किवि-काय-करु जाएण जेण किउ तूर-रउ
जसु आसत्थामु णामु ठविउ पंचाल-सेण्णु जें णिट्ठविउ ४
णारायणु पहरणु जसु वियइ समरंगणे आयहो को जियइ
णउ हउं णवि तुहुं णउ महुमहणु णउ भीमु ण जमलहं एक्कु जणु
ण सिहंडि पंडि धट्ठज्जुणु-वि ण-वि सोमय सिंजय कइकय-वि
जं जाणहो तं तुम्हइं करहो लहु इट्ठ-देवहो संभरहो ८

घत्ता

पंडव-पक्खिउ परम-गुरु गउ धणु-विण्णाणहो पारउ।
तं मारेविणु समर-मुहे तउ तव-सुय कहिं उत्तारउ॥ ९

[७]

अलिउ चवावि तेण० कवड-सणाहेण तेण०।
तुहुं वेयारिउ तेण० पंकय-णाहेण तेण०॥

कुल-जायहं सच्चु पसाहणउं सग्गापवग्ग-सुह-साहणउं
विहलियहं विढत्तउं देंताहं पहरंतहं सच्चु चवंताहं
जं होइ होउ तं खत्तियहं सासयइं सरीरइं केत्तियहं
सच्चेण वसुंधर देइ फलु सच्चेण मेह मेल्लंति जलु ४
सच्चेण वहंति महा-सरिउ सच्चेण समुद्द-पसरु धरिउ
सच्चेण सुरहि परिमल-सहिउ सच्चवइ पहंजणु ओसहिउ
सच्चेण गयणे उग्गमइ रवि सच्चेण फलंति महा-दुम-वि
जलु थलु गयणयलु अणिट्ठियउ तइलोक्कु-वि सच्चें परिट्ठियउ ८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घत्ता

जइ परिपालिउ सच्चु पइं तो किं महि-मंडलु फुट्टइ।
अण्णु चउद्दह अंगुलइं रहु हेट्ठामुहउ पयट्टइं ॥ ९

[८]

जल-लव-लोलहो तेण० रज्जहो कारणे तेण०।
सच्चु ण रक्खिउ तेण० पइं गुरु-मारणे तेण०॥

रज्जेण एण वसुहाहिवइ वोलाविय वारह चक्कवइ
चउद्दह कुलकर चउवीस जिण गय जाहं सुहे वि एक्कइ वि दिण(?)
णव वासुएव वलएव णव सोलहं णाराय पहाण-भव
वत्तीस पुरंदर ते-वि मय ण वसुंधर काहं-वि समउं गय ४
परिहवेवि सच्चु गुरु विद्दवेवि वहु वंधव सयण अहिद्दवेवि
गइ कवण लहेसहि कवणु सुहु दुव्विसहु सहेव्वउ परम-दुहु
जहिं सत्त णरय अण्णण्ण-विह तो भीमु पलित्तु दवग्गि जिह
को अवसरु धम्म-कहाणाहो ओलंभउ देवए राणाहो ८

घत्ता

आएं मइं धट्ठज्जुणेण केसवेण णिहउ कलसद्धउ।
जं णर-णंदणु विद्दविउ पावेण तेण सो खद्धउ॥ ९

[९]

णरेण सरोसेण तेण० वुत्तु विओयरु तेण०।
अज्जहो लग्गेवि तेण० तुहुं ण सहोयरु तेण०॥

ण जुहिट्ठिल-रायहो भिच्चु हउं हरि लेहि सुहित्तणु अप्पणउं
धट्ठज्जुण सालउ तुहुं-वि णवि णिउ खयहो जेण आयरिय-रवि
तो दुमयहो णंदणु परिकुविउ सवडम्मुहु मुक्कु णाइं उयउ
परमत्थु पत्थ एत्तिउ कहमि दोमइ-कएण सयलु-वि सहमि ४
देव-वि अदेव महु कुद्धाहो को चुक्कइ जमहो विरुद्धाहो
पंचालेहिं कवणु ण उवगरिउ एक्कु-वि ण हियत्तणु संभरिउ
गंगेउ सिहंडि ण दोणु मइं विणिवाइउ गरुवउ कवणु पइं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जइ कह व जणेर-वइरु हयउ तो सो तुहुं हत्थहो किं गयउ ८

घत्ता

रइय-वूहु किय-वाल-वह तवउं धरणहं आढत्तउ।
कवउ दिण्णु दुज्जोहणहो तें णिहएं को अवरत्तउ॥ ९

[१०]

सुय-वह-कुविएण तेण० पइं स-कसायहो तेण०।
किं सिरु तोडिउ तेण० सिंधव-रायहो तेण०॥

अहिखेउ जं जि किउ अज्जुणहो सच्चइ विरुद्धु धट्ठज्जुणहो
दोमइ-कएण केत्तिउ सहहिं करे पहरणु किं ण समुव्वहहि
कहिं जाहि पाव अण्णहिं दविउ गुरु-णिंदउ गुरु गुरु-विद्दविउ
वीभच्छहो जइ दुगुंछु करहि महु अग्गए तो एवहिं मरहि ४
सोणावइत्ति पलित्तु मणे णं लग्गु धग त्ति दवग्गि वणे
पइं घइं वारंतहो केसवहो किं खुडिउ ण सिरु भूरीसवहो
सर-वर-संथारे णिविट्ठाहो णं तवसिहि झाणे परिट्ठाहो
लइ पहरणु पहरहु वे-वि जण पेक्खंतु जुहिट्ठिल-महुमहण ८

घत्ता

जाम भिडंति भिडंति ण-वि तावं धरिय वे-वि गोविंदें।
ओसारिय जम-वइसवण पइसरेवि मज्झे णं इंदें॥ ९

[११]

भणइ जुहिट्ठिलु तेण० समर-समत्थहो तेण०।
होंतु मणोरह तेण० एवहिं पत्थहो तेण०॥

अवहेरि हणेवए जेण किय जय-सिरि दुज्जणहं समल्लिविय
दुज्जोहणु भुंजउ सयल महि वारवइ देव तुहुं पइसरहि
हउं णउलु भीमु सहएउ गउ स-जडासुरु जहिं किम्मीरु हउ
परिवड्ढिउ अमरिसु अज्जुणहो ण-वि को-वि दोसु धट्ठज्जुणहो ४
जसु केरउ जणणु वि सुज्झविउ णिय कवएं कुरुवइ जुज्झविउ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परिरक्खं करेवि जयद्दहहो   थिउ सज्जउ महु जीवग्गहहो
दुक्कम्महं दुच्चरियहं भरिउ   माराविउ मइं दोणायरिउ

घत्ता

गुणु छिंदावेवि समर-मुहे   विद्दविउ सुहद्दहे तोउ।
तेण णएण जुहिट्ठिलहो   महि रुच्चइ होउ म होउ॥

[१२]

ताम विओयरु अमरिस-कुद्धउ   णं पंचाणणु आमिस-लुद्धउ
गज्जइ जुयंत-मयरहरु जिह   हउं वइरिहिं भंजमि माण-सिह
मा जाहि अजाय-सत्तु-वणहो   वसुमइ म होउ दुज्जोहणहो
वारवइ म पइसउ महुमहणु   कलि-केलिउ पेक्खउ अमर-गणु
किं णरेण काइं णर-णंदणेण   हउं जुज्झमि सहुं गुरु-णंदणेण
वासर-पंचमए पंडु-अवहि   भुंजावमि णीसावण्ण-महि
तो दिण्ण तूर किय-कलयलइं   पडिलग्गइं पंडव-कुरु-वलइं
रउ उट्ठिउ कहि-मि ण माइयउ   रण-रक्खसु णं उद्धाइयउ
रुहिर-णइ जाय पहरण-वसेण   णं जीह ललाविय वइवसेण

घत्ता

पंडव-कउरव-साहणइं   असि-कणय-कुंत-कोयंडेहिं।
णहे पेक्खंतहं सुरवरहं   पहरंति सयं भुव-दंडेहिं॥

इय रिट्ठणेमिचरिए धवलइयासिय-सयंभुएव-कए
तेहत्तरिमो सग्गो॥

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

चउहत्तरिमो संधि

रण-रहसुद्दामें आसत्थामें ताव कयत्थिउ पंडु-वलु।
मंदर-तड-ताडिउ दिसहिं भमाडिउ दीसइ णं खीरोय-जलु॥ १

[१]

[दुवई]

हय-गय-पाय-घाय-धुअ-धवल-धूलि-धूसर-सरीरइं।
पहु-सम्माण-दाण-रिण-रण-भर-धुर-धरणेक्क-धीरइं॥
भिडियइं वलइं वे-वि तुरमाणइं अहिणवब्भ-डंवर-संथाणइं
अलमल-मय-मयगल-गल-वोलइं जलहि-जलइं व लोल-कल्लोलइं
रहवर-भड-भारिय-भुवणिंदइं परिओसाविय-सुरवर-विंदइं ४
तुरिय-तुरंगम-रंगणसीलइं पेसिय-पवर-पहरणुप्पीलइं
किय-कलयलइं समाहय-तूरइं सूर-कंत-कंती-जिय-सूरइं
खग्ग-लयालिंगिय-भड-रुक्खइं गरुय-घाय-उप्पाइय-दुक्खइं
मंस-रासि-मेलाविय-गिद्धइं रत्त-तरंगिणि-लंघिय-चिंधइं ८
पहरण-जलण-झुलुक्किय-गत्तइं चामर-पवणुड्डाविय-छत्तइं

घत्ता

जूरविय सुरंगणे तहिं समरंगणे रइय महा-सर-मंडवहं।
णारायणु णामें आसत्थामें पेसिउ पहरणु पंडवहं॥ १०

[२]

[दुवई]

पलय-पयंग-पवण-पज्जालिय-जलण-जलंत भीसणं।
खुहिय-महासमुद्द-सुरदुंदुहि-णव-घण-घोस-णीसणं॥
छेउ ण लब्भइ जालामालहं पावरणुत्तमंग-महिपालहं
सव्वावय-रहहं कणयंगहं गुरु दलवट्टिउ पवर-तुरंगहं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कवयइं भिण्णइं णरवर-विंदहं   पक्खर-भिसिया वे-वि गइंदहं
आहरणइं आउहइं विचित्तइं   छत्त-धय-चामरइं पलित्तइं
जलु थलु णहयलु जलइ जलंतें   डामरु णं आढत्तु कयंतें
जिह जिह हणइ व साहणु पंडउ   तिह तिह जलइ सव्वु णं खंडउ
तं णिएवि दोणायणि-पहरणु   अवरु अजुज्झमाणु कइकेयणु
भणइ अजायसत्तु किं अच्छहो   सोमय-सिंजय-कइकय-मच्छहो
पाण लएविणु कहि-मि पणासहो   मइं पइसेवउ मज्झे हुवासहो

घत्ता

पवणंगय-जमलेहिं   अवसर-धवलेहिं   तिहिं वुड्डेवउ वइरि-वले।
अज्जुण-णारायण-रहिएहिं   परि परिगहिएहिं   णं दुव्वाएहिं उवहि-जले ॥११

[३]

[दुवई]

तो णारायणेण वोल्लाविय तवसुय-जमल-विओयरा।
छंडहु पहरणाइं परिहरहु महारह-तुरय-कुंजरा॥

आयहो कोवि जियंतु ण चुक्कइ   पंडव-जायव-वलइं झुलुक्कइ
किं णारायणत्थु णउ वुज्झहो   तक्खिवि कुल-परिवाडि म झुज्झहो
भीमज्जुणहो घिवेवि असमत्थइं   विण्णि-वि वे गय गंडीव-हत्थइं
जमलहो कोंत-किवाणइं घित्तहो   जय-जयकारु करहु सामंतहो
उवसम-भावहो जे ण पयट्टइ   णं तो पसमइ उहय विहट्टइं
ताम पलित्तु सुहड-चूडामणि   मं भज्जहो मंभीसइ पावणि
जीविउ जाम ताम लइ जुज्झहो   छंडेवि पहरणाइं कहिं सुज्झहो
करि किरिडी जहिं स-सरु सरासणु   मंभीसहो किं करइ हुवासणु

घत्ता

धणु घिवेवि पहत्थें   वुच्चइ पत्थें   हउं समत्थु सव्वहो जणहो।
पर एक्कहो संकमि   भिडेवि ण सक्कमि   समरंगणे णारायणहो॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[४]

[दुवई]

ससण-तणुब्भवेण वोल्लिज्जइ जो असमत्थु अच्छइ ।
सो छंडउ ण एक्कु हउं छंडमि जइ-वि सयइं अणत्थइं ।।

णर णारायणेण किं एक्कें भिडमि अज्जु धुउ सहु तइलोक्कें
पियमि समुद्दु मेरु संचालमि फुरिय-फणामणि-मणि उद्दालमि
धरमि सुरिंदु धणउ विब्भाडमि चंदाइच्च तलप्पए पाडमि
दइउ अदइउ करमि महि दारमि कालु कयंतु मित्तु जसु मारमि
कर-चरणेहिं दरमलमि हुआसणु तइयए दिवसे हणमि दूसासणु
मरइ चउत्थए रइ-आओहणु महु गय-घाय-दलिउ दुज्जोहणु
पंचव(?) संसय-भाव-वलग्गी महि तव-सुयहो देमि आवग्गी
अहव य तेण काइं जे होसइ दुक्करु पहरणग्गि मइं सोसइ

घत्ता

तावंवुहि वड्डउ सुरगिरि जड्डउ णहु विसालु दुव्विसहु रवि ।
महु भुव-दंडेहिं सुरकरि-कर-चंडेहिं आयामिज्जइ जाम ण-वि ।।

[५]

[दुवई]

किं सच्चइ-सिहंडि-धट्ठज्जुण-जमल-णरिंद-पत्थहिं ।
हउं णारायणत्थु विणिवारमि पहरण-पउर-हत्थहिं ।।

जीविउ जाम ताम रणु मंडमि णउ गोविंद गयासणि छंडमि
छंडमि जइ जर-मरणु ण ढुक्कमि छंडमि जइ जम-लेखउ चुक्कमि
छंडमि जइ ण वाहि पवियंभइ छंडमि जइ देवत्तणु लब्भइ
छंडमि जइ तिहुअण-सिरिरम्मइ छंडमि जइ दुग्गइहे ण गम्मइ
छंडमि जीव-लोउ जइ णिच्चलु छंडमि सयल काल जइ मंगलु
छंडमि जइ ण विओउ पहावइ छंडमि जइ दालिद्दु ण आवइ
छंडमि जइ ण रज्जु पल्लट्टइ छंडमि जइ ण सरीरु वियट्टइ
अच्छेवि जइ पुणु पुणु वि मरिज्जइ तो वरि वइरि-पुंजे पहरिज्जइ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जीवंतहं जय-लच्छि विढप्पइ मुयहं सुरंगण कज्जु समप्पइ

घत्ता

एत्तिउ उग्गाहेवि रहवरु वाहेवि पेक्खंतहो गरुडासणहो।
पइसरिउ विओयरु लउडि-भयंकरु रवि जिह मज्झे हुवासणहो॥ ११

[६]

[दुवई]

सव्वेहिं पहरणाइं परिचत्तइं पहरइं पवण-णंदणो।
छाइउ गुरु-सुएण सत्तच्चि-मुहेहिं सरेहिं संदणो॥

लइउ विओयरु सिहिमुह-वाणेहिं जोइंगणेहिं गिरि व फुरमाणेहिं
रवि-किरणेहिं व विद्धु महा-घणु दुणिरिक्खु रिक्खाहिवु गह-गणु
उट्ठिउ एक्कु जालु पंडव-वले हा हे सद्दु पवट्टिउ णहयले ४
वारुण-सर णिरत्थ गय पत्थहो स-वलु पणट्ठु जुहिट्ठिलु तेत्तहो
एक्कु भीमु थिउ गुरु-सुय-पहरणे णं दाहुत्तरु सोणु हुवासणे
कालकंज-महु-सुर-विणिवायण धाइय विण्णि-वि णर-णारायण
मुक्कासण मुक्काउह ढुक्किय तेण महाणलेण ण झुलुक्किय ८
कड्ढिउ हरि-सुउ हरियइं अत्थइं रिउ-सर-जालइं कियइं णिरत्थइं

घत्ता

महुमह-विण्णाणें एण विहाणें उवसम-भावहो जलणु गउ।
परिचत्ताओहणु थिउ दुज्जोहणु पंडव-लोयहो जाउ जउ॥ १०

[७]

[दुवई]

वलियइं साहणाइं सेणावइ वलिउ समत्थु पत्थिवो।
पडिवउ मेल्लि मेल्लि दोणायणि पभणइ कुरु-णराहिवो॥

तो विरइय-कर-मउलि-पणामें वुच्चइ कुरुवइ आसत्थामें
णारायणु णारायण-वारिउ जइ पडिवारउ रणे संचारिउ
तो मइं मारइ तेण ण मेल्लमि अवरहिं पहरणेहिं पडिपेल्लमि ४
कहिं महु जाइ भीमु जीवंतउ कुरुव-णरिंद होहि णिच्चिंतउ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दिवसे चउत्थए रिउ-अक्खोहणि हणमि जइ-वि परिरक्खइ दिणमणि
एम भणेवि भिडिउ पडिवारउ णं वियरणहं लग्गु अंगारउ
पंडु-पुत्तु णाराएहिं छाइउ तो सरहसु धट्ठज्जुणु धाइउ
विद्धु वीस वाणेहिं गुरु-णंदणु तेण-वि कह-वि ण पाडिउ संदणु

घत्ता

हउ दोमइ-भायएं सर-संघाएं गुरु-सुउ गयण-वलग्गएण।
तेण-वि तहु ताडिउ रणे धणु पाडिउ णाइं ति-वाएं लग्गएण॥

[८]

[दुवई]

तो धट्ठज्जुणेण धणु अवरु लएप्पिणु कणय-मंडिया।
मुक्क वराह-कण्ण तेहत्तरि कंवुय-लट्ठि खंडिया॥

अवरु सरासणु आसत्थामें लयउ णाइं रामायणे रामें
दुमय-सुयहो धणु पाडिउ वीयउ णं णिय-गिंभे कंठ-ठिउ जीयउ
लइय सत्ति सहस त्ति विसज्जिय खंडइं सत्त करेवि विहंजिय
णाम-पगइ जिह सत्त-विहत्तिहिं चउहिं तुरंगम धय धणुरत्तिहिं
सच्चइ ताम परिट्ठिउ अंतरे छाइउ सरेहिं परोप्परु संगरे
सरहस वावरंति सम-कंधय सीह-सीह-लंगूल-महाधय
विण्णि-वि कणयालंकिय-संदण विण्णि-वि दोण-धणंजय-णंदण
गुरु-सुउ सिणि-सुएण पच्चारिउ कहिं महु जाहि रणेणोसारिउ

घत्ता

हउं वुच्चमि खत्तिउ पग्गए सोत्तिउ वंभणु आसत्थामु तुहुं।
पर-भोयणे जेहउ दुक्करु तेहउ एवहिं रण-मुहे होहि महु॥

[९]

[दुवई]

तो गुरु-णंदणेण वोल्लिज्जइ हउं सच्चउ जे सोत्तिउ।
उप्पहो वंभहत्त-कत्तारहो तुहु किर केवं खत्तिउ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णिंदिउ पत्थु जेण गुरु-घायउ सो पाविट्ठु केम सम्माइउ
जइ तं तुहुं रक्खणहं समच्छहिं तो सर-वर-रिंछोलि पयच्छहि
एम भणेवि वंभत्थु विसज्जिउ जायवेण विहिं हणेवि परज्जिउ
अट्ठवीस गुरु-पुत्तें पेसिय कह-वि तुरय चउसट्ठि णीसेसिय
वाण-सएण छिण्ण जुजुहाणें धणु णिट्ठविउ दोणि-अहिहाणें
कप्पिउ कवउ उरंतरे दारिउ णिय-सूएण कहि-मि ओसारिउ
दुमय-सुओ वि पहर-विहलंघलु धय-णिसण्णु थिउ पत्तु ण महीयलु
ताम भीमु वेढिउ सामंतेहिं हण हण सद्दु रउद्दु करंतेहिं

घत्ता

रह-तुरय-गइंदेहिं णरवर-विंदेहिं साहारणेहिं स-पहरणेहिं ।
वेढिज्जइ पावणि णं णहे दिणमणि विज्जुज्जलिहिं महा-घणेहिं ॥

[१०]

[दुवई]

ताव सुवण्ण-सीह-लंगूल-धयालंकरिय-संदणो ।
सच्चइ-दुम्मय-पुत्त ओसारेवि धाइउ दोण-णंदणो ॥

चंद-विंव-फलहंकिय-णामहं जाउ जुज्झु भीमासत्थामहं
विण्णि-वि वावरंति सम-घाएहिं छाइउ एक्कमेक्कु णाराएहिं
वाईसर-सएण छहिं दोणें णिय-रहवर-भर-भारिय-दोणें
पंडवेण धणु छिण्णु खुरुप्पें अवर लेवि विणिवारिउ विप्पें
दसहिं भीम-णामंकिय-वाणेहिं गुरु-सुउ कह व ण मुक्कउ पाणेहिं
चेयण लहेवि सएण विओयरु भिण्णु थणंतरे पाडिउ रहवरु
अवरु लेवि अवरासु गवेसिय तिहिं तिहिं पर पिसक्क णीसेसिय
एम भयंकरु जाउ रणंगणु सुरेहिं णियंतेहिं णमइ णहंगणु

घत्ता

पसरिय-धणु-विज्जहं कोंति-किविज्जहं पंडु-दोण-णंदणहं जिह ।
भीमासत्थामहं रामण-रामहं दुक्करु रणु पडिलग्गु तिह ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[११]

[दुवई]

ताव णरिंद पंच पेक्खंतहो भीमहो भिडिय दोणिहे।
पंच महा-सुरिंद णं णिवडिय सग्गहो मणुय-जोणिहे ॥

इंदकेउ-जुयराउ सुअरिसणु पउरउ विद्धखत्तु स-सरासणु
पंच-वि रण-रस-रहसुद्दामहो भिडिय गंपि रणे आसत्थामहो
तेण-वि तिहिं तिहिं सरेहिं विहंजिय सीसइं वाहु-दंड परिपुंजिय
विद्धु भीमु सारहि मुच्छाइउ पुण-वि तुरंग कहि-मि रहु पाविउ
पूरिउ संखु जिणेवि आओहणु गुरु-सुएण तोसविउ सुजोहणु
सहु साहणेण णट्ठु धट्ठज्जुणु मं भज्जहु मंभीसइ अज्जुणु

घत्ता

रहवरेण वहंतें पासे अणंतें करे गंडीवें होंतएण।
भूअहमि ण लज्जहो किह रणे भज्जहो पत्थें मइं जीवंतएण ॥

[१२]

[दुवई]

गुरु-सुय थाहि थाहि जिह सिर भुय खंडिय काल-पत्तहं।
पउरव-इंदकेउ-जुयराय-सुयरिसण-विद्धखत्तहं ॥

हउं तुहुं विण्णि-वि विज्जा-भायर हउं तुहुं विण्णि-वि खत्तिय-दियवर
हउं तुहुं विण्णि-वि समर-समत्था हउं तुहुं विण्णि-वि चाव-विहत्था
हउं तुहुं विण्णि-वि अणिहय-संदण हउं तुहुं विण्णि-वि दोणहो णंदण
हउं तुहुं विण्णि-वि वड्ढिय-विक्कम हउं तुहुं विण्णि-वि सक्क-परक्कम
हउं तुहुं विण्णि-वि कीत्ति-किवी-सुय हउं तुहुं विण्णि-वि जय-सिरि-कंखुय
हउं तुहुं विण्णि-वि अत्थइं वुज्झहुं हउं तुहुं विण्णि-वि रणउहि जुज्झहुं
हउं तुहुं विण्णि-वि तोसिय-सुरवर धम्मपुत्त-दुज्जोहण-किंकर
हउं तुहुं विण्णि-वि पवल-वलुद्धुय कइ-केसरि-लंगूल-महाधय

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घत्ता

तहो एम चवंतहो दोवइ-कंतहो सर सय सहस लक्ख सिजिरु।
आसत्थामें सव्वायामें अत्थु विसज्जिउ वंभु सरु॥ १०

[१३]

[दुवई]

तेण महाउहेण सिजियासुग सय दस सहस गण्णहिं।
अण्णहिं सव्वसाइ महि अण्णहिं छाइउ गयणु अण्णहिं॥

घोरु तमंधयारु अण्णेत्तहे फेक्कारंतु सिवउ अण्णेत्तहे
अण्णेत्तहे वुक्कण-गणु वुक्कइ अण्णेत्तहे जोइणि-गणु ढुक्कइ
अण्णेत्तहे अण्णइं लल्लक्कइं अण्णेत्तहे जलंति दिसि-चक्कइं
अण्णेत्तहे जलु जलइ सजलयरु अण्णेत्तहे झामलउ दिवायरु
अण्णेत्तहे थिमिथिमिउ पहंजणु अण्णेत्तहे जुज्झइ सयलु-वि जणु
वट्टइ पलय-कालु पडिवण्णउ पंडव-लोउ सयलु आदण्णउ
किर मुउ अज्जुणु जलण-महाउहे दिण्णइं तूरइं कुरु-सेण्णाउहे
तो करे धणु विप्फारिवि पत्थें वंभ-सराउहु वंभ-सरत्थें
किउ णिरत्थु दुम्मिउ गुरु-णंदणु कज्जु ण सारइ एक्कु-वि पहरणु

घत्ता

पेक्खेवि असरालइं णर सर-जालइं णं कुल-गिरि कुलिसाहिहउ।
णिंदंतु सरासणु घिवेवि हुवासणु णासेवि गुरु-सुउ कहि-मि गउ॥ ११

[१४]

[दुवई]

कुरुव-णराहिवो-वि णिय-हियए विसूरइ तित्थु अंतरे।
खुहिय समुद्द घोस गइ वाणि समुट्ठिय दिव्व अंवरे॥

अहो गुरु-णंदणु काइं ण वुज्झहि णर-णारायणेण सहुं जुज्झहि
जेहिं आसि अण्णहिं जम्मंतरे घोरु वीरु मयणाय-महीहरे
सट्ठि सहास सट्ठि सय वरिसहं दूसहं विसम-परीसह-दरिसहं
करेवि णियाण-वंधु तउ विण्णउं सव्व-सह रणु होउ अतिण्णउं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तेण तवेण वे-वि रणे दुज्जय को जोहइ गोविंद धणंजय
जाहं वज्ज-संथाण-सरीरइं दुब्भेयइं दुद्दमइं दुरीरइं
दइउ सहेज्जउ जाहं परिट्ठिउ भुय-वलु पवलु ण केण-वि णिट्ठिउ
दइउ जे जिणइ जाहं पर-चक्कइं जउहर-जूव-फलइं परिपक्कइं

घत्ता

पंडवहं अणिट्ठइं तुम्हहं मिट्ठइं तउ सेविज्जंताइं।
एवहिं दुवियड्ढहं कउरव-संढहं विसिभूयइं पच्चंताइं॥

[१५]

[दुवई]

एम भणेवि णिहुय दिव्वक्खर वाणि परिट्ठियंवरे।
अमर-करें वियाइं सुर-कुसुमइं पडियइं पत्थ-रहवरे॥

तो पण्णारहमउ गंउ वासरु अत्थ-महागिरि ढुक्कु दिवायरु
धाइउ तिमिर-णियरु आगासहो गयइं वलइं णिय-णिय-आवासहो
कुरुव-णराहिवेण सह मंडिय दोणायरिय-मरण-कह छंडिय
रवि-सुउ वोल्लाविउ अणुराएं महि महु पइं होंतेण सहाएं
गुरु-गंगेयहिं देवि ण सक्किय ण जिउ धणंजउ इयर ण वंकिय
सारहि-पंडु-पुत्तु लइ खंडउ कउरव-लोयहुं होहि तरंडउ
भारु भारु जं दिण्णु सुवण्णहो थिउ अद्धासणे महु सुपसण्णहो
जं किउ चंपापुर-परमेसरु तहो सव्वहो इहु वट्टइ अवसरु

घत्ता

परिहविय पुरंदरु होहि धुरंधरु खंधु समोड्डहि रण-भरहो।
पडिवक्ख-दुलंघउ हउं अवठंघउ तुज्झु सइं भुअ-पंजरहो॥

इय रिट्ठणेमिचरिए धवलइयासिय-सयंभुएव-कए
चउहत्तरिमो सग्गो॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पंचहत्तरिमो संधि

रण-धुर धवलु मुएवि   भरु ण चडाविउ अण्णहो।
तुहुं सेणावइ होहि   वद्धु पट्टु रणे कण्णहो ॥

[१]

परिरक्खिय पंडव महुमहेण   वासर वीसद्ध पियामहेण
पंचाह कणय-कलसद्धएण   एवहिं पइं अमरिस-कुद्धएण
णिब्भिच्चें सामिय-वच्छलेण   अवसरे अ-णियच्छिय-पच्छलेण
कउ जीविउ सोमय-सिंजयाहं   जय(कउ?) तवसुव-भीम-धणंजयाहं
चंपाहिउ पभणइ देव देव   हउं सयल-काल वोल्लंतु एवं
जिह मारमि पंच-मि पंडु-पुत्त   हरिहर-वंभाणेहिं जइ वि गुत्त
तो सयल-वसुंधर-रोहणेण   परितुट्ठें तें दुज्जोहणेण
कउसेएं उंवर-वीढु छण्णु   वइसारेवि तहिं अहिसित्तु कण्णु
दहि-दुव्व-महोसहि-दप्पणेहिं   चामीयर-सिंगामज्जणेहिं

घत्ता

सव्वेहि-मि किउ अहिसेउ   जय-सिरि-वहु परिणेज्जहि।
विसय महारिसि जेवं   तिह तुहुं वइरि जिणेज्जहि ॥

[२]

कइ-कहय-वंदि-वर-चारणाहं   णड-णच्चण-गायण-वायणाहं
धण-हीणहं दीणहं दुक्खियाहं   पह-भमियहं णिसियहं भूक्खियाहं
अ-पमाणइं दाणइं तुरिउ देवि   कह कह व किलेसहिं रयणि णेवि
सण्णज्झइ सरहसु अंगराउ   समरुज्जमु सव्वहो वलहो जाउ
वाइत्तइं हयइं भयंकराइं   वहु डमरुय-डिंडिम-डंवराइं
पणवेक्क-पाणि-णंदीमुहाइं   दडि-दद्दुर-दुंदुहि-गोमुहाइं
ढड्डिय-ढक्कारव-ढक्किराइं   वर-झल्लरि-सल्लरि-झिक्किराइं
कल-काहल-कंवुय-खंखुणाइं   णद्धसुर-सुसर-तंती-घणाइं

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

घत्ता

चउविह-तूरइं देवि थिउ रहे अमरिस-कुद्धउ।
दीसइ णाइं कयंतु छुड्डु जे छुड्डु सुएवि वुद्धउ॥ ९

[३]

अण्णेत्तहे णिग्गय वर-तुरंग णं खय-मयरहर महा-तरंग
अण्णेत्तहे मयगल सवल-वण्ण णं सजल जलय णहयले णिसण्ण
अण्णेत्तहे कंचण-रह-णिहाय णं वहु मिलेवि कणयइरि आय
अण्णेत्तहे भड पहरण-विहत्थ णं कूर महागह उडुगणत्थ ४
मेलावेवि चउविह-वल-समूहु गिरि-गरुयउ विरइउ मयर-वूहु
सइं वयणे परिट्ठिउ अंगराउ अब्भंतरे सरहसु कुरुव-राउ
विहिं पासेहिं किव किववम्म वे-वि सिरे सिहरे समच्छरु दोणि दो-वि
थिउ सउणि ससंदणु लोयणेहिं परिगरिय गीव कुरु-साहणेहिं ८

घत्ता

मयर-वूहु रएवि चंपाहिवइ पयट्टइ।
णं खय-काले समुद्दु णिम्मज्जायउ वट्टइ॥ ९

[४]

तं णिएवि जुहिट्ठिलु भणइ एम करि वूहु धणंजय जिणहि जेम
आएसु दिण्णु तो अज्जुणेण किउ अद्धयंदु धट्ठज्जुणेण
दाहिणए सिंगे सयमेव थाइ वामउ पवणंगउ वलउ णाइं
सहएव-णउल पुट्ठिहिं ठवेवि वासव-सुय-तव-सुय मज्झे वे-वि ४
कुरुखेत्तु गयइं किय कलयलाइं भिडियइं पंडव-कउरव-वलाइं
णं मिलियइं वेण्णि णहंगणाइं फुरियाउह-गय-तारायणाइं
गज्जिय-गयण व घण-डंवराइं असि-विज्जुज्जलिय-दियंतराइं
धणु-सुरधणु-मंडलि-मंडियाइं रह-रवि-रहवर-परिचड्ढियाइं ८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घत्ता

णहयल-समइं वलाइं मणिगण-कर-किरणायर ।
तवसुय-रूवइं वे-वि णं थिय चंद-दिवायर ॥

[५]

तो समालग्गमुग्गं महा-भंडणं हत्थ-पायंग-गीवा-सिर-क्खंडणं
णीसरंतंत-अंतावली-चप्पणं मत्त-मायंग-कुंभत्थलुक्कप्पणं
ढुक्क-पाइक्क-संजाय-संघट्टणं लग्ग-माणिक्क-सण्णाह-णिव्वट्टणं
मंति-सेणाणि-सामंत-दुक्खावणं हड्ड-विच्छड्ड-रुंडट्ठि-दक्खावणं
भंभ-भंभीस-भेरी-णिणायाउलं चक्क-कुंतासि-वाणासणी-संकुलं
जोइणी-डाइणी-भूय-भेसावणं कंक-भल्लुक्क-जंवुक्क-पुक्कावणं
हत्थि-मत्थिक्क-थंभोह-छिप्पावणं कित्ति-चिक्खिल्ल-दिक्खुज्जलिय-पावणं
तं खणद्धेण जायं मही-मंडलं हार-केऊर-कंठी-कलावुज्जलं

घत्ता

तहिं तेहए संगामे भीमु भमंतु ण थक्कइ ।
णाइं खीर-समुद्दहो मज्झे मंदरु णं परिसक्कइ ॥

[६]

तो अज्जुणु वलिउ धणुद्धराहं संसत्तग-गण-जालंधराहं
णारायण-पत्थहं मेहलाहं मुरलासय-केरल-कोहलाहं
पंचालहं सोमय-सिंजयाहं एत्तहे-वि कण्णु रणे दुज्जयाहं
एत्तहे-वि जुहिट्ठिल-कुरुवराय पहरंत परोप्परु विरह जाय
सच्चइ वियंध-किंकर-सहाउ धाइउ जहिं कइकेउ दिण्ण-घाउ
एत्तहे वि पहाण-णराहिवेहिं गय-लक्खेहिं केहि-मि पत्थिवेहिं
पइसरइ भीमु कउरव-समुद्दे वाहण-पहरण-जलयर-रउद्दे
दरिसंति परोप्परु समर-जुत्ति पडिलग्ग विओयर-खेमधुत्ति

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घत्ता

मत्त गइंदारूढ तवसुय-कुरुवइ-किंकर।
थिय विहिं गिरि-सिहरेहिं विण्णि-वि णावइ जलहर॥ ९

[७]

तहिं भीमु थणंतरे तोमरेहिं विणिभिण्णु भुवंगम-भीयरेहिं
एक्केण समीरण-सुएण विद्धु कुरुवाहिवेण सद्दिहिं णिसिद्धु
सर-लक्खें रोस-वसंगएण णासाविउ करि व वणंगएण
कह कह-वि वलेप्पिणु अंकुसेण आभिट्टु विओयरु अमरिसेण ४
णं थिय विहिं सइलहिं विण्णि रुक्ख सम-दिण्ण-घाय सम-जणिय-दुक्ख
तोसाविय-जम-वइसमण-इंद वइसारिय विसम महागइंद
थिय पायहिं भीमें लउडि लइय कालायस-घडिय सुवण्ण-खइय
इयरेण वि स-फर किवाण-लट्ठि पवि-पुत्तहो वाहिय घाय-सट्ठि ८

घत्ता

गयए गयंत-अंतकरिए हणेवि हिडिंवा-णाहें।
स-फरु स-खग्गु णरिंदु चूरिउ सहु सण्णाहें॥ ९

[८]

जं णिहउ रणंगणे खेमधुत्ति सण्णाहु करेप्पिणु परम-गुत्ति
गुरु-सुउ धाइउ ता वद्ध-कोहु विणिवद्ध-तोणु पेसिय-सरोहु
हउ एक्कावणवइहिं पंडु-पुत्तु दिणमणि व स-किरणु थिउ मुहुत्तु
पुणु विहि-मि सहासु सहासु मुक्कु घण-डंवरु णाइं णवल्लु ढुक्कु ४
मायरिसहो णंदणु तेत्थु काले तोमरेण भिण्णु समुहंतराले
भालालिणिडाल-णिडालणामे गुरु-सुउ तिहिं ताडिउ तिहिं जि थामे
थिय विण्णि-वि गिरि व तिएक्कसिंग हय पडह-संख-काहल-मुयंग
दुज्जणेहिं वि साहुक्कारु दिण्णु अवरोप्परु वाणेहिं पुणु विभिण्णु ८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घत्ता

वि-क्कवय वि-धणु वि-चिंधा रह-सिहरेहिं वइसारिय।
सूएहिं णिय-णिय-सेण्ण पहर-विहुर पइसारिय॥ ९

[९]

एत्तहे वि वे वि थिय लद्ध-सण्ण एत्तहे वि भिडिय रणे णउल-कण्ण
सर-जालेहिं जाउ तमंधयारु एक्कहे वि ण फिट्टइ पुरिसयारु
एक्केण वि एक्कहो सुहु ण दिण्णु ++++++++++++++
एक्केण वि एक्कहो ण किउ भंगु जोइज्जइ रणु जिह पुव्व-रंगु
सच्चेहिं पधाइय तिण्णि ताव विंदाणुविंद-कइकय स-चाव
णं तिहिं कुंजरेहिं मइंदु रुद्धु णाराएहिं संसय-भावे छुद्धु
एक्कल्लउ खिवइ खुरुप्प-पंति दस वीस तीस णं वावरंति
तिहिं तिण्णि-वि चावइं ताडियाइं भुय खंडिय सीसइं पाडियाइं ८

घत्ता

कवल गिलेप्पिणु तिण्णि णं मुहु करयले धोवइ।
भुक्खिउ णाइं कयंतु पडिवउ पासइं जोयइ॥ ९

[१०]

तहिं अवसरे गुरु-सुउ रहे वलग्गु जिह पलय-मेहु गज्जणहं लग्गु
कहिं भीमु स मइं मग्गंतु जुज्झु णरु कहइ भडारा कहमि तुज्झु
संसत्तग-वलु किय खयहो णेमि किय गुरु-णंदणहो झडक्क देमि
तं णिसुणेवि महसूयणेण वुत्तु लइ जाहुं तेत्थु जहिं दोण-पुत्तु ४
तो आसत्थामें ण किउ खेउ वोल्लाविउ पत्थु स-वासुएउ
वे तुम्हेहिं हउं एक्कल्लउ ज्जे लइ तिण्णि-वि भुंजहुं समरहो ज्जे
कइकेयणु पभणइ एउ वुज्झु सो धण्णउ जो तउ देइ जुज्झु
जइ दोणायरियहो तणउ पुत्तु तो सरवर-धोरणि धरि णिरुत्तु ८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घत्ता

भणइ जणद्दणु ताव खंडव-डामरगारा ।
वज्जाउह-सम-सार को सर धरइ तुहारा ॥

[११]

जं पभणिउं एव जणद्दणेण तं सट्ठिहिं हउ गुरु-णंदणेण
तिहिं णरु णरेण पहरंतएण किउ धणु ति-खंड भल्ल-त्तएण
स-सरासणु वामउ करेवि हत्थु तिहिं हरि हउ दसहिं सरेहिं पत्थु
पुणु लक्खें लक्ख-सएण विद्धु रहु रहिउ रहंगु तुरंग चिंधु
सीसक्कु भीम-सण्णाहु गत्तु सिय-चामर-जुयलु सियायवत्तु
कर-चरणु धणु गुणु जाणु छिण्णु तं विहि-मि आसि तव-चरणु चिण्णु
दरिसावइ णरु णारायणासु उच्चरिउ पेक्खु दोणायणासु
किह पहरइ अम्हहं समउं दुट्ठु तो एम भणेवि विभत्थु रुट्ठु

घत्ता

तिहिं तिहिं सर एक्केक्कु हणेवि तिगत्तह धावइ ।
भज्जेवि रवि-किरणाहं घणहं महाघणु णावइ ॥

[१२]

एक्कल्लउ पर-वलु वावरंतु णं विज्जु-पुंजु दीसइ फुरंतु
गंडीउ भमंतउ करे अथक्कु लक्खिज्जइ णाइं अलाय-चक्कु
पसरंति पिसक्कइं पारियंग वंमीयहो णाइं महा-भुयंग
हय-गय-रहवर-णरवर दु-खंड सहुं सरेहिं समाउहु वाहु-दंड
विद्धंसइ रिउ-साहणइं जाम सरवरेहिं पिहिउ गुरु-सुएण ताम
तहो वलिउ समच्छरु सव्वसाइ वक्कणेण सणिच्छरु ठियउ णाइं
समुहंतरे आसत्थामु विद्धु दप्पुब्भडु तो-वि ण पडिणिसिद्धु
परिपेसिउ पहरणु सव्वधारु तं णरेण णिवारिउ दुण्णिवारु

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घत्ता

ताम महाघण-घोसइं   दिव्व-वाणि णहे घोसइ।
जेत्तहे पंकय-णाहु   तेत्तहे वसुमइ होसइ ।। ९

[१३]

तं दोणिहिं करेवि णिरत्थु अत्थु   संसत्तग-साहणे भिडिउ पत्थु
सर-जालइं दिसहिं पउंजिआइं   सीसक्कइं कवयइं पुंजियाइं
धय-छत्तइं चिंधइं चामराइं   कुस-कंचुय-पावरण-वराइं
पल्लाणइं चउरि-सिआसणाइं   गुरु-पक्खर-भिसिय-कूसणाइं ४
आहरणइं वाहण-पहरणाइं   परिहरेवि पणट्ठइ साहणाइं
तहिं अवसरे पंचहिं सायएहिं   किवि-सुएण विद्धु अइ आइएहिं
ते खंडिय खंडव-डामरेहिं   पंचिदिय जिह तित्थंकरेहिं
णारायणु पभणइ विंधि विंधि   ओसहेहिं वाहि जिह तिह ण सिद्धि ८

घत्ता

हरि-आएसु लहेवि   गुरु-सुउ भणेवि ण मारिउ।
पत्थें आसत्थामु   पुट्ठि दिंतु ओसारिउ ।। ९

[१४]

णर-सर वंचंतु दलंतु खोणि   वले कण्णहो गंपि पइट्ठु दोणि
कइकेयणो-वि रणे वावरंतु   संसत्तग-साहणे पइसरंतु
वोल्लाविउ वलेवि जणद्दणेण   कंसासुर-णरसुर-मद्दणेण
अहो अज्जुण पच्छए दुद्धरेहिं   जुज्झेसहुं सहुं जालंधरेहिं ४
विणिवायहि ओए-वि तिण्णि ताव   जरसंधहो वंधव खुद्द-भाव
तियसह-मि रणंगणे दुण्णिवार   उग्गाउह दंडय दंड-धार
तो तालुयवम्म-पुरंजएण   रहु वाहिउ तुरिउ धणंजएण
सो पंचहि पंचहिं सरेहिं विद्धु   तेण-वि एक्केक्कउ तिहिं णिसिद्धु ८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घत्ता

छिण्णइं सिर-कमलइं वाहु-दंड रणे खंडिय।
वसुमइ तामरसेहिं णाइं स-णालेहिं मंडिय॥ ९

[१५]

तो सहुं साहणेण पइट्ठु पंडि चंपाहिव वलि पयडंतु खंडि
चूण्णंतु दुरय-टंकण-कुणिंद जउहेय-खुद्द-मालव णरिंद
गंधार-मद्द-मागह-कुणीर सग-सूरसेण-खस-टक्क-कीर
तो मेरु समप्पह-संदणेण वोल्लाविउ दोणहो णंदणेण ४
गंगा-सुय-गुरु-गोविंद-सरिस किव-कण्ण-किरिडी पयाव-दरिस
णिरवज्ज-वज्ज-संघणण-देह सुलंब-बाहु पर-वल-णिसेह
मइं मेल्लेवि मल्लु ण को-वि तुज्झु रहु वाहि वाहि लहु देहि जुज्झु
तो दाहिण-महुरा-पत्थिवेण धउ पाडिउ मलय-णराहिवेण ८

घत्ता

तेण वि तहो धउ छिण्णु णवहिं थणंतरे ताडिउ।
चउहिं चयारि तुरंग रहु अवरेक्कें पाडिउ॥ ९

[१६]

चउसट्ठि धुरंधर जे वहंति ते अट्ठ महारह समउं जंति
णारायहं तीरिय-तोमराहं कण्णिय-खुरुप्प-मुहहं सराहं
दिवसद्धहो अद्धद्धेण मुक्क गुरु-सुय-भर-पंजरे खयहो ढुक्क
पंडिएण विसज्जिउ वायवत्थु तं वि-रहु करेवि तमि किउ णिरत्थु ४
आरूढु महागए णरवरिंदु अइरावइ णं थिउ सुरवरिंदु
लहु महुरापुर-परमेसरेण गुरु-तणउ समाहउ तोमरेण
तेण-वि तहो सोलह दिण्ण घाय करु एक्कें चउहिं करिंद-पाय
तिहिं भड-सिरु विहिं वे भुय विहत्त छहिं छज्जण किंकर धरणि पत्त ८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घत्ता

कुंडल-मंडिय-गंडु पहु-मुहु महिहे सुहावइ।
विहिं णक्खत्तहं मज्झे चंद-विंवु थिउ णावइ ॥ ९

[१७]

जं णिहउ पंडि गुरु-णंदणेण तं वंकिउ मुहु सक्कंदणेण
थिउ भग्ग-मडप्फरु अमर-सत्थु णारायणु वि-मणु वि-वण्णु पत्थु
विद्दाणउ पंडव-लोउ जाउ सो ण-वि भडु जेण ण किउ विसाउ
एत्तहे वि रणंगणे णिक्किवेण भुव जोइय कुरुव-णराहिवेण ४
हउं धण्णउ जसु णिब्भिच्चु एहु जं णिहउ वज्ज-संघणण-देहु
अक्खोहणि-साहणु समर-कुंडु गंगेय-दोण-सम-वल-पयंडु
वाइत्तइं वले देवावियाइं किउ कलयलु चेलइं भामियाइं
पोमाइउ दोणायरिय-पुत्तु तुहुं भुवणे एक्कु भुय-वल-पहुत्तु ८

घत्ता

विविहेहिं आहरणेहिं मणि-चामीयर-खंडेहिं।
पुज्जिउ आसत्थामु तेण सयं भुव-दंडेहिं ॥ ९

इय रिट्ठणेमिचरिए धवलइयासिय-सयंभुएव-कए।
पंडिवहो णामेणं पंचहतरिमो इमो सग्गो ॥

•

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

छहत्तरिमो संधि

फुरियाउह-विज्जु गय-घड-घण-मालावरिउ।
कुरु-गिरि-सिहरेहिं पंडव-पाउसु उत्थरिउ॥ १

[१]

भिडियइं विण्णि-वि वलइं महा-रणे भीसण-वण्ण वसुंधरि-कारणे
वेण्णि-वि अवसइं अमरिस-कुद्धइं अमर-वरंगण-जयसिरि-लुद्धइं
वेण्णि-वि रय-णिहाय-धूसरियइं पहु-सम्माण-दाण-वहु-भरियइं
वेण्णि-वि वावरंति विविहत्थेहिं साहुक्कारियाइं सुर-सत्थेहिं ४
णिग्गय णइ सोणिय-पब्भारें किंपि ण सुम्मइ हणहणकारें
तूर-णिणाएं गज्जइ अंवरु णं पडिवण्णउ महाघण-डंवरु
पेल्लावेल्लि जाय मायंगहं गुड-फुड-फिडि-फेडिविय तुरंगहं
धुर-मुह मुरिय रहहं पडिलग्गहं खण-खण सद्दु समुट्ठिउ खग्गहं ८

घत्ता

जुज्झंति वलाइं उहय मडप्फर-सारइं।
णं वर-मिहुणाइं अंध-दविड-कण्णाडइं॥ ९

[२]

ताम कण्णु रणे रहवर-वाहणे णिवडिउ सोमय-सिंजय-साहणे
णिहयइं पंच-सयइं पंचालहं पण्णारह रहियहं रह-पालहं
णिय-वलु पडिवडंतु पेक्खेविणु धाइय पंडव तूरइं देविणु
वेढिउ अंगराउ चउ-पासेहिं रहवर-गयवर-तुरय-सहासेहिं ४
एक्कु अणंतेहिं जिणेवि ण तीरइ भुव-भुवंग-सण्णिह-सर सीरइ
सीसइं तामरसाइं व तोडइ गयवर गिरि-संघाइं व फोडइ
रह गंधव्व-पुराइं व पाडइ भड कुडुंग-झाडाइं व झाडइ
णरवइ णिरवसेस संताविय णिय-णिय-वाहणेहिं ल्हिक्काविय ८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घत्ता

रवि -किरण-करालइं सहेवि ण सक्किय कण्ण-सर।
सहुं मद्दि-सुएहिं भीमु पधाइउ एक्कु पर।।

[३]

पेल्लिउ तिहि-मि तेहिं चंपाहिउ मणे आरोसिउ कुरुव-णराहिउ
लहु-आएसु दिण्णु सामंतहं गय-साहणियहं विक्कमवंतहं
विरसिय-काहल-संख-मुयंगहं अंग-वंग-कंवोय-कलिंगहं
मेहल-तामलित्त-जोहेयहं सग-पमुहहं अवरह-मि अणेयहं
धट्ठज्जुणेण सव्व ते धरिया एक्केक्कहो णव-दह सर भरिया
सच्चइ भिडिउ ताम रणे वंगहो पाडिय पाय मत्त-मायंगहो
विद्धु सरेण सो-वि वच्छत्थले णिवडिउ थरहरंतु महि-मंडले
अट्ठहिं णउलु विद्धु तो अंगें तेण वि छिण्ण तिउण-सर-भंगें

घत्ता

सगइंदु णरिंदु तिहिं तोमरेहिं समाहयउ।
सगिरिंदु मइंदु दीसइ णं महियलु गयउ।।

[४]

जीविउ लेवि विहि-मि गंगहं धाइय जमल मत्त-मायंगहं
णं जमदूव पिहिवि-परिपालहं णं वे पवण महाघण-जालहं
हणइ णउलु धायहिं भंकुडियहं असणि-कियंत-कोंत-अंकुडियहं
सो तहिं वंधवेहिं करि गणिएहिं अवरेहि-मि पुव्वागम-भणिएहिं
करि विहणंति पुच्छ-कर-चरणेहिं वंध-विसाण-जुवल-वावरणेहिं
सहएवु वि आहणइ किवाणें विज्जु-पुंजु णं फुरण-पमाणें
विहि-मि महा-गय-चक्किय खंडिय तेण पंडतेहिं वसुमइ मंडिय
णं जलहर पाडिय उप्पाएहिं णं पायव पुंजिय दुव्वाएहिं

घत्ता

गय-घड-अवसेस जमलहं पहर-भयंकरहं।
गय णव-वहु णाइं णासइ दुप्पइ-देवरहं ॥ ९

[५]

अट्ठ हत्थि सहएवहो धाइय अट्ठ वि अट्ठेहिं वाणेहिं घाइय
एम महागय-साहणु मारेवि कण्णहो थिय धण-गुणु विप्फारेवि
वामए करयले करेवि सरासणु णउलाणुवहो भिडिउ दूसासणु
तिहिं तोमरेहिं थणंतरे ताडिउ तेण-वि तहो सरेण धणु पाडिउ ४
भिडिय परोप्परु पुणु करवालेहिं णं वे घणावहिं विज्जुल-मालेहिं
छिण्णइं खग्गइं लइयइं चावइं जिह कुकलत्तइं वंक-सहावइं
सर चउसट्ठि मुक्क जुयराएं भिण्ण खणंतरे णउलहो भाएं
दूसासणेण सरोहु विसज्जिउ तमि तिहिं तिहिं एक्केकु परज्जिउ ८

घत्ता

दूसासणु भिण्णु भीमहो कए वि ण मारियउ।
रह-सिहरे णिवण्णु णिय-सूएं ओसारियउ ॥ ९

[६]

जं जुवराउ रणंगणे मुच्छिउ तं रवि-तणएं णउलु पडिच्छिउ
वुच्चइ पंडवेण कुरु-पत्थहं सव्वहं तुहुं कत्तारु अणत्थहं
थाहि थाहि कहिं जाहि रणंगणे पेक्खउ देवलोउ गयणंगणे
पभणइ कण्ण तुज्झु ण वियट्टमि अंतरत्थु देहें असिट्टमि(?) ४
भीमु-वि गज्जिउ भुय-वल-दप्पिउ णवर सरासण-कोडिउ चप्पिउ
एम भणेवि तेहत्तरि मग्गण पेल्लिय रह उवगरणोलग्गण
वीस चउक्क मुक्क मद्देएं छिण्ण दिवायर-सुएण सवेएं
चिंधउ आयवत्तु विहिं ताडिउ अट्ठावीसहिं धणुवरु पाडिउ ८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घत्ता

तहिं तेहए काले   णउलु सउण्णउं एक्कु जणु।
करे लग्गइ जासु   णिट्ठिउ णिट्ठिउ अवरु धणु॥ ९

[७]

धणुवरेण अवरेण महारहि   वीसहिं भिण्णु कण्णु तिहिं सारहि
तिक्ख-खुरुप्पेहिं हणेवि सरासणु   तिहिं सरेहिं पुणु पिहिउ णहंगणु
अवरु लेवि धणु सीरिउ पंचहिं   पंडवेण पडिवारउ सत्तहिं
कम्मुय-कोडि-वि णासिय अण्णें   अवरु लेवि धणु छाइउ कण्णें ४
मद्दिय-णंदणेण ते खंडिय   रण-महि णाइं भुवंगेहिं मंडिय
पुणु गयणयलु पिसक्केहिं छाइउ   दइवें अहि-भवणु व उप्पाइउ
पुणु रहि वरइं(?) करेवि पइट्ठा   एक्कु खणद्धुण केण वि दिट्ठा
जलु थलु णहयलु वलइ दियंतरु   सयलु वि दीसइ वाण-णिरंतरु ८

घत्ता

छंडिउ णिय जुज्झु   खंडिउ रहु ओसारि किय।
कुरु-पंडव-सव्व   णिहुय-णिहाला होवि थिय॥ ९

[८]

छाइय विहि-मि परोप्परु वाणेहिं   विसहर-रवियर-परिहरमाणेहिं
चंदाइच्च घणेहिं जिह झंपिय   एक्केक्कमहो तो-वि णउ कंपिय
चावलट्ठि रवि-तणएं ताडिय   सारहि णिहय तुरंगम पाडिय
मद्दि-सुएण लयउ सयचंदउ   वामयरेण महा-वसुणंदउ ४
दाहिण-करेण किवाणु भयंकरु   किउ चंपाहिवेण सय-सक्करु
घित्त सत्ति सहसत्ति परज्जिय   असइ व गय सम्माण-विवज्जिय
णउलें गरुय-गयासणि मुक्की   गिरिहे णाइं सउदामणि ढुक्की
छिण्णु खुरुप्पें कोंतु समंडिउ   ताम तिहिं थूणाकण्णेहिं खंडिउ ८

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

घत्ता

पुणु पंडु-सुएण कण्णहो परिहु विसज्जियउ।
णं अहिणव-मेहु विंझहो उवरि पगज्जियउ॥

[९]

खंडिउ परिहु खुरेण णहंगणे आउलु णउलु जाउ समरंगणे
कोद्दह लेवि सरासण-कोडिउ कड्ढिउ रवि-सुएण उम्मोडिउ
धणु-मंडलिहे मज्झे मुहु भावइ चंद-विंवु इंदाउहे णावइ
एवंहिं पंडु-पुत्तु लइ गज्जहि जाहि ण मारमि रणु पडिवज्जहि
वड्डें समउं विरोहु ण किज्जइ जिव-वहु जिव-परिहउ पाविज्जइ
कुंति-वयणु संभरेवि ण घाइउ गउ तव-तणयहो पासु पराइउ
कण्णु वि भिडिउ महाभड-विंदहं चेडय-कइकय-कासि-णरिंदहं
केरल-चोल-पंडि-पंचालहं सोमय-सिंजयाइ-महिपालहं

घत्ता

एक्क-रहु सरेहिं हणइ अणंतइं पर-वलइं।
णं पियइ णिदाहे रवि-किरणेहिं सव्वइं जलइं॥

[१०]

ताव जुजुच्छु हरीरिय-संदणु धायरट्ठमुवरुद्धी णंदणु(?)
सउणि-सुयहो उत्थरिउ उलूयहो समर-सएहिं कयत्थीहूयहो
सरवर-सयइं कियइं अ-पयावइं +++++++++++++
हय तुरंग जत्तारु वियारिउ कवउ पुट्ठि देंतु ओसारिउ
भिडिय ताव विप्फारिय-धम्महो सउवलु णउल-पुत्तु सुयधम्महो
विहि-मि सरासणाइं णिट्ठवियइं विहि-मि वराउहाइं पट्ठवियइं
विण्णि-वि वि-रह हूव समरंगणे वे-वि पसंसिय सुरेहिं णहंगणे

घत्ता

छिण्णाउह वे-वि कड्ढिय णिय-णिय-वारएहिं।
णं मत्त-गइंद ओसारिय णाराएहिं॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[११]

तहिं अवसरे वियसिय-मुह-पोमहं   धाइउ सउणि-मामु सुय-सोमहं
छाइउ एक्कमेक्कु णाराएहिं   खंडिय सउवलेण खुर-घाएहिं
छिण्णु सरासणु रहु विद्धंसिउ   कउरव-लोएं णामु पसंसिउ
ताम धणंजय-सुएण पयंडें   भीम-भुवंग-भोग-भुय-दंडें   ४
विज्जु-सम-प्पहु णिय-णामंकिउ   दंतवालु कलहोयासंकिउ
अहिणव-वग्घ-चम्म-परिवारउ   कड्ढिउ मंडलग्गु सिय-धारउ
चउवीसेहिं वर-मंडल-मग्गेहिं   गुरु -सिक्खिहिं अवरेहि-मि अणग्गेहिं
छिण्ण सिलीमुह तेण वि खंडिउ   अद्धु लग्गु करे णाइं तरंडउ   ८

घत्ता

असि-खंड-सणाहु   गउ उप्पएवि पंच पयइं।
सारहि स-तुरंगु   धणु गुणु छत्तु चिंधु हयइं॥   ९

[१२]

पुणु पल्लट्टु पडीवउ तेत्तहे   रहु सुयवित्तिहे केरउ जेत्तहे
सउणि वि गउ पर-वलहो समच्छरु   किव-धट्ठज्जुण भिडिय परोप्परु
सरेहिं विद्धु तव-सुय-सेणावइ   पउ-वि ण चलइ सिलामउ णावइ
सुरवर-णियरु णहंगणे घोसइ   णउ जाणहुं किह एवंहिं होसइ   ४
दोणायरिय-दुक्खु सुमरंतउ   दियवइ धरिउ केण पहरंतउ
जलु थलु णहयलु सरेहिं भरेसइ   दुक्करु जण्णसेणि जीवेसइ
ताम किवेण पिसक्केहिं चूरिउ   को उवाउ णर-सालु विसूरिउ
सारहि भणइ ण रणे पइसारमि   जइ णासहि तो रहु ओसारमि   ८

घत्ता

तो दूमय-सुएण   वुच्चइ हउं आसंकियउ।
लइ णिय-वलु जाहुं   एहु मइं ण जिणेवि सक्कियउ॥   ९

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

[१३]

रहु ओसारिउ तो जत्तारें   गउ धट्ठज्जुणु एण पयारें
पेक्खेवि भज्जमाणु तं संदणु   पच्छइ धाइउ गउतम-णंदणु
तहिं अवसरे जिह गुरुसुय-पंडिहिं   जाउ जुज्झु कियवम्म-सिंहडिहिं
पिहिउ परोप्परु सरवर-जालेहिं   अमर तिडिक्किय जाला-मालेहिं   ४
वीस चउक्क मुक्क पुणु भाएं   णव-वि सिलीमुह दुमयहो तोएं
जायवेण धणु-दंडु स-जीयउ   छिण्णु भिण्णु गंडयले पडीवउ
मुच्छा-विहलु समाउलिहूएं   कहि-मि समोसारिउ णिय-सूएं
पइसइ भद्दिओ वि पंडव-वले   करि-मयरु व मयरहर-महाजले   ८

घत्ता

जालंधर-सेण्णु   ताम णिरुद्धु कइद्धएण।
णं वणे गय-जूहु   सीहें वेहाविद्धएण॥   ९

[१४]

एक्क-रहहो गंडीव-विहत्थहो   णव सामंत पधाइय पत्थहो
सउसुइ-सत्तुसेण्णु सत्तुंजउ   मित्तदेउ देवाह-मि दुज्जउ
मित्तधम्मु धम्मालंकरियउ   मित्तसेणु सेणु व ओयरियउ
चंदसेणु चंदुज्जल-वयणउ   सत्तुकामु कायउ जलणयणउ   ४
णवमउ तहिं णामेण सुसम्मउ   धाइय सव्व करेप्पिणु सम्मउ
सव्वेहिं सव्वसाइ सम-कंडिउ   णं चंदण-तरु सप्पेहिं मंडिउ
तेण-वि पंचहिं सउसुइ घाइउ   अट्ठहिं चंदसेणु विणिवाइउ
वीसहिं सत्तुंजउ परिपूरिउ   सत्तहिं सत्तुकामु मुसुमूरिउ   ८

घत्ता

अवसेसा पंच   पंच-सरेहिं पंचेडिय।
गय कर विहुणंत   करि जिह सीह-चवेडिय॥   ९

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

[१५]

सच्चसेणु तहिं वलिउ समच्छरु थरहरंत-परिपेसिय-तोमरु
भिंदेवि वाम वाह गोविंदहो सरु सिरे कह-व ण लग्गु फणिंदहो
भणइ धणंजउ पेक्खु जणद्दण छिज्जमाण मइं पंच वि संदण
एम भणेवि इंदत्थु विसज्जिउ तेण-वि एंतें सेण्णु परज्जिउ ४
तक्खणे सव्वसेणु दोहाइउ मित्तधम्म-सारहि विणिवाइउ
मित्तधम्म-सिरु खुडिउ खणंतरे णं चिउ अवरु धारु इत्थंतरे(?)
कद्दम-खुप्पमाणु समुट्ठिउ कडि-पमाणु रुहिरोहु परिट्ठिउ

घत्ता

जलु थलु वलु सव्वु अज्जुण-वाणेहिं पीडियउ।
लक्खिज्जइ घोरु णाइं कयंतें कीडियउ॥ ७

[१६]

तहिं अवसरे पारद्धाओहण धाइय धम्म-पुत्त-दुज्जोहण
वे-वि परोप्परु अमरिस-कुद्धा णाइं मइंद महामिस-लुद्धा
वेण्णि-वि सरहस भिडिय महारणे खेरि वहंति वसुंधर-कारणे
वेण्णि-वि सूय करेरिय-संदण वे-वि पंडु-धयरट्ठहुं णंदण ४
वे-वि कुंति-गंधारि-थणंधय वेण्णि-वि चंद-फणिंद-महाधय
वे-वि सियायवत्त सिय-चामर वेण्णि-वि परिओसिय-सव्वामर
भणइ अजायसत्तु कुरु-राणा पंच-वि गाम ण देहि अयाणा
वंधव सयण सव्व माराविय दूसासण-किव-कण्णेहिं गाविय ८

घत्ता

दुज्जोहण थाहि सरु विस-जउहर-जूवाइं।
महु संति कराइं तुज्झु कयंते हूआइं॥ ९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[१७]

दुव्वयणावसाणे सकसाएं णवहिं सरेहिं विद्धु कुरु-राएं
तेरह तव-सुएण परिपेसिय चउहिं चयारि वाह परिसेसिय
पंचमेण सारहि-सिरु पाडिउ ताल-तरुवरहो णाइं फलु साडिउ
छट्ठेणासुगेण वर-चिंधउं खंडिउ कणय-भुयंग-समिद्धउं ४
सत्तमेण धणुवरु विद्धंसिउ आयवत्तु अट्ठमेण विणासिउ
अवरेहिं सरेहिं विद्धु वच्छत्थले करणु करेवि परिट्ठिउ महियले
कुरुव-णराहिव कह-व ण मारिउ कण्ण-कलिंग-किवेहिं परिवारिउ
रवि अत्थमिउ जाउ जउ तिमिरहो कुरु-पंडव गय णिय-णिय सिमिरहो ८

घत्ता

अत्थाणे णिविट्ठ तवसुय-दुज्जोहणेहिं किय।
णं इंद-पडिंद चवणे सइं भूमियले थिय॥ ९

इय रिट्ठणेमिचरिए धवलइयासिय-सयंभुएव-कए
छहत्तरिमो सग्गो॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सत्तहत्तरिमो संधि

राहेयहो पट्टे णिवद्धए महि-कारणे रणे पारद्धए।
धुर-धरण-कियंकिय-खंधइं कुरु-पंडु-वलाइं सण्णद्धइं ।। १

[१]

पोमाइउ दुज्जोहणेण णरु एक्क-रहु जे पर-वल-पलयकरु
एक्कएण जे खंडउ चारियउ सुर-सेण्णु सव्वु ओसारियउ
एक्केण जे तीस कोडि अवय विणिवाइय रणे णिवाय-कवय
एक्केण जे तालुयवम्म जिय एक्केण जे कालकंज वहिय ४
एक्केण जे हउं मेल्लावियउ गंधव्व-लोउ भेल्लावियउ
एक्केण जे धणु परियत्तियउं कुरु-साहणु सरेहिं विहत्तियउं
एक्केण जे जालंधर-सयइं णारायण-गण-पमुहइं हयइं ८
एक्केण जे भंजिय कुरुव-वलु सइं खुडिउ जयद्दह-सिर-कमलु

घत्ता

समरंगणे णीसामण्णेण दुज्जोहणु पभणिउ कण्णेण।
णारायणु जासु सहेज्जउ पर-वलइं स जिणइ धणंजउ ।। ९

[२]

तो जामिणि जाम-विणिग्गमणे दिवसाणणे दिवसयरुग्गमणे
रण-रसियइं पसरिय-कलयलइं सण्णद्धइं कुरु-पंडव-वलइं
सरहसइं समुब्भिय-धयवडइं वहु-मंडण-मंडिय-गय-घडइं
सोवण्णावयव-महारहइं गय-मय-चिक्खिल्ल-पवट्ट-हयइं ४
हय-फेण-तरंगिणि-दुत्तरइं तूरारव-भरिय-दियंतरइं
जयसिरि-कर-गहणुत्तावलइं कुरुखेत्तु गयइं विण्णि-वि वलइं
तव-तणएं वूहइं विरइयइं णं णव-जलहर-जालइं थियइं
वोल्लाविउ कुरुवें रवि-तणउ तुहुं एक्कु मित्तु महु अप्पणउं ८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घत्ता

वेयारिउ गुरु-गंगेएहिं भिच्चेहिं अवरेहि-मि अणेएहिं ।
णासइ व धरणि परिसक्किय महि केण-वि देवि ण सक्किय ।।

[३]

तो अक्खइ कुरु परमेसरहो भाणुब्भउ भाणुमईसरहो
जं वीसकम्म-उप्पाइयउ सक्कहो करे कह-व पराइयउ
पुणु परसुराम-घरे अच्छियउ पुणु महु घरे पइसि णियच्छियउ
तं कालवट्टु अविणट्ठु रणे चंपाहिउ हउं दुव्विसहु रणे
रहु दिव्वु तुरंगम णिप्पसर तोणीरे अणिट्ठय सप्प-सर
जइ सारहि सल्लु समावडइ तो पंडव-साहणु पडिवडइ
परिओसिउ कुरुव-णराहिवइ वोल्लाविउ तो मद्दाहिवइ
अहो धीर वीर सुंडीर-तणु धयरट्ठ-सरिसु तुहुं एक्कु जणु

घत्ता

जइ वसुमइ देण समिच्छहि तो रण-भरु अज्जु पडिच्छहि ।
तावणिहे तव-तणु-तेयहो सारत्थु करहि राहेयहो ।।

[४]

जिह सारहि अरुणु दिवायरहो जिह मायलि सुर-परमेसरहो
जिह दारुइ देवइ-णंदणहो तिह तुहुं रवि-सुयहो स-संदणहो
तो करेवि साहत(?) भिउडि वलिउ णं घिएण हुवासणु पज्जलिउ
दुज्जोहण वोल्लहि णवर तुहुं महि-मंडले अण्णहो कासु मुहु
को कण्णु कवण किर चारहडि वलु कवणु वित्ति का आरहडि
अहिमाणु कवणु किर कवणु कुलु महु पासिउ किं सो रणे अतुलु
महु पासिउ किं छलु रवि-सुयहो सारत्थु करमि हउं जेण तहो
गउ एम भणेवि णिय-आसवहु थिउ चरण धरेप्पिणु कुरुव-पहु

घत्ता

तुहुं महुसूयणहो-वि वड्डउ हउं तेण परिट्ठिउ अड्डउ ।
धुउ कण्णहो पत्थु ण पुज्जइ पइं सूए महि धुउ भुज्जइ ।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[५]

अकुलीणउ जइ चंपाहिवइ तो अत्थइं रामु ण अल्लियइ
जइ अंग-राउ णउ वड्डिमउ तो महु अद्धासणे चडइ कउ
पहु-अवसरे तिण-समु गणइ सिरु गंगेएं दिण्णु कुमंति चिरु
तुहुं पंडु-पुत्तु लइ सयल महि कुरु-पंडव-पेसणु कारवहि ४
ता तेण-वि उत्तरु दिण्णु तहो हउं किंकरु कुरुव-णराहिवहो
ण समिच्छमि वसुमइ-वइसणउं णउ छत्तइं चामर वासणउं
धणु-कोडिए भीमु णिवारियउ जम-जेट्ठु जिणेवि ण मारियउ
एवड्डु महाणुभाउ कवणु जइं घइं तुहुं वीयउ धुर-धरणु ८

घत्ता

तं णिसुणेवि अणिहय-मल्लेण दुज्जोहणु पभणिउ सल्लेण।
जइ करहि महारउं वुत्तउं तो सारहि होमि णिरुत्तउं॥ ९

[६]

पणवंतहो कुरुव-णराहिवहो कह कह-व वयणु पडिवण्णु तहो
परिओसु पवड्ढिउ कुरु-णिवहे हय हंस-सम-प्पह जुत्त रहे
करि-कक्ख-महद्धउ उब्भियउ मद्दाहिउ धुरहे परिट्ठियउ
रवि-णंदणु रहिउ वलावरिउ रहु चलिउ सव्व-पहरण-भरिउ ४
तो पभणइ कुरुव-णराहिवइ जय णंद वद्ध चंपाहिवइ
हणु पंडव महसूयणेण सहुं तिह करि जिह वसुमइ होइ महु
गउ रवि-सुउ उप्परि अज्जुणहो णं दुसहु माहु णव-फग्गुणहो
रहु सारहि सारहि पइं भणमि कुंती-सुव जाम सव्व हणमि ८

घत्ता

अहो तावणि अमरिस-कुद्धउ णं केसरि आमिस-लुद्धउ।
गज्जहि अणाय-परमत्थउ को पंडव जिणेवि समत्थउ॥ ९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[७]

गज्जिज्जइ ताम-मेत्त वियणे   ण णिहालहि पंडव जाम रणे
जइयहुं धण-कंचण-जण-पउरे   पिडु मंडिउ दुमयहो तणए पुरे
तइयहुं तुहुं णरेण णिवारियउ   हउं भीमें कहव ण मारियउ
जइयहुं गंधव्वेहिं णाहु णिउ   तइयहुं पइं को ववसाउ किउ
जइयहुं विराडपुरे लयउ धणु   कुढे लग्गु धणंजउ एक्कु जणु
तइयहुं कुरु-वलइं कियाउलइं   सीहेण व भग्गइं गयउलइं
जइयहुं गंगेउ दोणु पहउ   तइयहुं तुहुं कण्ण कत्थ गयउ
असि-पह-परिहविय-सयद्दहहो   जइयहुं सिरु खुडिउ जयद्दहहो

घत्ता

तइयहुं तहिं रणे एक्कल्लउ   णरु णाइं कयंतु णवल्लउ।
कुरु-वलइं खंतु परिसक्किउ   पइं धरणहं तो-वि ण सक्कियउ ॥

[८]

आरुट्ठु कण्णु मद्देसरहो   वलु णिंदहि कुरु-परमेसरहो
ण णिएवउ जाहं कयावि मुहु   उव्वहहि पक्खु तहो तणउ तुहुं
जइयहुं दोमइ-केस-ग्गहणु   तइयहुं किउ कवणु परिग्गहणु
पंडव चयारि दूसल-धवहो   गय भज्जेवि एक्कहो सिंधवहो
धणु-कोडिए पेल्लिय वेण्णि मइं   तहिं काले काइं णउ दिट्ठ पइं
जइयहुं विणिवाइउ रयणियरु   तइयहुं कहिं गउ गंडीव-धरु
एवहिं धुउ जममुहे पइसरइ   परिरक्खु तियक्खु जइ वि करइ
जिम महि भुंजाविउ कुरुव-पहु   जिम गसिउ हुवासणु दुव्विसहु

घत्ता

जिम महु पयाउ ओहट्टियउ   जिम अज्जुण-दुमु दलवट्टियउ।
जिम जस-कुसुमइं विखिण्णाइं   जिम अंगइं धरणिहे दिण्णाइं ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[९]

उप्पाय जाय तहिं ताम तहो हड्डइं पडंति गयणंगणहो
धूमंति रएण दिसा-मुहइं कुरु-वले वलंति पवलाउहइं
वालहिं फुल्लंति तुरंगमहं अ-सिवइं सुम्मंति विहंगमहं
महि कंपइ दिणमणि थरहरइ चंपाहिउ पर-वले पइसरइ
गंगेय-दोण तो दिट्ठ रणे सीहाहय णं मायंग वणे
णं चंदाइच्च राहु-झडिय णं इंद-पडिंद वे-वि पडिय
रवि-सुएण ण जोइय णविय थुय किय सामिय-दोहा होवि मुय
अण्णु वि जो को-वि दोहु करइ सो सव्वु महाहवे महु मरइ

घत्ता

जं दिंतउ दीणाणाहहं दियवर-मागह-भुय-भूसणहं ।
तं तेत्तिउ तहो धणु पावइ जो णर-णारायण दावइ ।।

[१०]

जो णर-णारायण दक्खवइ तहो देमि अज्जु मद्दाहिवइ
सउ दासिहिं सउ वर-कामिणिहिं चउ चउ सय गोवइ-णंदिणिहिं
उत्तमहं तुरंगहं पंच सय अट्ठ रह दासहं अट्ठ सय
दस हत्थि चउद्दह पत्तणइं अवरइ-मि रयण-मणि-कंचणइं
तो भणइ सल्लु अहो आहिरहि किं दविणु अपत्तेहिं विक्खिरहि
जइ अत्थि को वि तउ वंधु-जणु तो किं ण णिवारइ दिंतु धणु
पाहाण णिवंधेवि णियय-गले उत्तरेवि समिच्छहि उवहि-जले
दीसेसइ सइं जे धणंजयहो कइ विप्फुरंतु उप्परि धयहो

घत्ता

महसूयणु जासु सहेज्जउ सहुं सुरेहिं पुरंदरु विज्जउ ।
तुहुं कण्ण जइ वि अइ भल्लउ ण पहुच्चहि तहो एक्कल्लउ ।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[११]

भाणुब्भउ पभणइ सल्ल सुणे   तुहुं फग्गुण-माहव-मघव थुणे
महु घइं पुणु तिण्णि-वि गण्णु णवि   जइ एक्कीहोंति सुरासुर-वि
हउं तो-वि समत्थु सव्व-जयहो   पुणु किं एक्कहो धणंजयहो
संजमिण भणइ गंभीर-सरु   आरोडहि तुहु गंडीव-धरु   ४
विसु गिलहिं भुवंगम दरमलहि   आलिंगहि जलणु वज्जु दलहि
जं अंतरु मसय-महाकरिहिं   जं अंतरु जंवुय-केसरिहिं
जं अंतरु खगवइ-वुक्कणहं   जं अंतरु रवि-जोइंगणहं
जं अतंरु जगे अवगुण-गुणहं   तं अंतरु रणे कण्णज्जुणहं   ८

घत्ता

जा जाहि सल्ल जइ भीयउ   हउं अच्छमि पहरण-वीयउ।
सो मणुसु गणिज्जइ भल्लउ   जो वहुय हणइ एक्कल्लउ॥   ९

[१२]

रे रे कुदेस-संभव विसल्ल   संगाम-हरिण णासण-कुसल्ल
उप्पण्णु पाव जहिं वसइ तुहुं   तहो जाणमि दिट्ठु ण कहमि मुहु
महिलउ हरंति अणियच्छियउ   सरु वीरु ण लब्भइ पत्थियउ
असउच्चय-संगउ जेत्थु जणु   मच्छइउ अकारणे कुविय-मणु   ४
णीलज्जुण-अज्जु पीय-सरउ   गोमंस-भक्खि गोधम्म-रउ
वहु-विसम-सहाउ अणप्पणउ   जहिं तुहुं तहिं वंधु कहो त्तणउ
गंधारहं मद्दहं सिंधवहं   दय-भूरे(?)-सोरट्ठुब्भवहं
खल खुद्द पिसुण एत्तिउ भणमि   णर-सउरि हणेप्पिणु पइं हणमि   ८

घत्ता

सिरु महियले रुंडु महारहे   लाएप्पिणु जीविउ जम-पहे।
रुहिरामिस-कद्दम-लेवउ   तुहुं भूयहं वलि घत्तेवउ॥   ९

[१३]

मद्दाहिउ पभणइ दोसु कउ   करि णिंद ण तूसमि मित्त तउ
जइं तूसमि तो णारायणहो   वंभाणहो अहव तिलोयणहो

दुज्जोहण-केरउ कज्जु महु	को वोल्लइ तुम्हारिसेहिं सहुं
तुहुं कहि-मि कण्णु आयासे हुउ	कुल-धम्मु ण देसाचारु सुउ ४
कत्थइ महिलउ जुप्पंति हले	कत्थइ अणिअच्छिय ण्हंति जले
कत्थइ माउल वंधुव्वरिय	परिणिज्जइ भइणि सहोयरिय
कत्थइ जेट्ठाणिहे पइ-पलए	घिप्पइ देवरेण पोत्ति गलए
कत्थइ विसिरहो पुज्ज चडइ	कत्थइ देवउले कविल पडइ ८
कत्थइ पाहुणहं घराइयहं	चंडील भरंति तलाइयहं
कत्थइ गोमंसु भक्खु णरहं	कम्मइं करंति घरे दियवरहं

घत्ता

कुलधम्मेहिं देसाचारेहिं	अण्णेहि-मि विविह-पयारेहिं ।
जगु जीवउ को-वि ण समप्पइ	वरि एवंहिं रणु आढप्पइ ॥ ११

[१४]

तो पंडव-वूहइं वहु-विहइं	पेक्खेप्पिणु गिरिवर-संणिहइं
पेक्खेप्पिणु मयगल-जलय-पह	गंधव्व-णयर-सम-सार-रह
पेक्खेप्पिणु तुरय तरंग-सम	सामंत सव्व संगाम-खम
णिसुणेप्पिणु तूरइं भीसणइं	सुर-दुंदुहि दारुण भीसणइं ४
रवि-णंदणेण सुर-गिरि-अचलु	किउ वारुह-पत्तु वूहु पवलु
दाहिणए पक्खे थिय तिण्णि णिव	मागह-णरिंद-कियवम्म-किव
संसत्तग वामए पक्खे थिय	वे सउवल वूह-पक्खे थिय
पच्छए दूसासणु दुव्विसहु	थिउ तासु-वि पच्छए कुरुव-पहु ८

घत्ता

पुणु आसत्थामु महावलु	मुहे कण्णु पवड्ढिय-कलयलु ।
तहो वूहहो छेउ ण णावइ	पंडवेहिं दिट्ठु गिरि णावइ ॥ ९

[१५]

तो अज्जुणु तव-सुएण भणिउ	जइ पंडु-णराहिवेण जणिउ
हरि-सालउ जइ हउं जेट्ठु तउ	तो तिह करि लब्भइ जेण जउ
लज्जावहि जिह णवि अप्पणउं	लक्खिज्जइ वूहु वइरि-त्तणउ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तं वयणु सुणेवि गंडीव-धरु मं भीहि जुहिट्ठिल भणइ णरु ४
किं करइ कण्णु किं कुरुव-वलु वंदि-ग्गहे गो-ग्गहे दिट्ठु वलु
एहु भग्गु वि कण्णहो खुडिउ सिरु महु एक्कु-वि एक्कहो ण थिउ थिरु
जइयहुं ओवडिउ जयद्दहहो तइयहु-मि ल्हसिउ एक्कहो णरहो
एवहि-मि णराहिव सो ज्जे हउं किं एक्कें फोडमि वूह-सउ ८

घत्ता

कइकेयणु पहु जयकारेवि रहे चडिउ चाउ विप्फारेवि ।
गिरि-सिहरे पवड्ढिय-मलहरु थिरु स-धणु णाइं णव-जलहरु ॥ ९

[१६]

जयसिरि-वहु-गहणुक्कंठुलहो वयणुग्गय वाय जुहिट्ठिलहो
तुहुं अज्जुण कण्णहो हउं किवहो पवणंगउ कुरुव-णराहिवहो
धट्ठज्जुणु कियवम्महो भिडिउ अवरहो अवरो-वि समावडिउ
तो कहइ सल्लु रवि-णंदणहो एहु दीसइ चिंधु जणद्दणहो ४
कइकेयणु एउ धणंजयहो लइ देहि दाणु सव्वहो जयहो
रहु पेक्खु पेक्खु कह चक्कमइ णं मंदरु सायरे परिभमइ
जइ णिहउ किरीडि कण्ह-सहिउ तो तुहुं जे राउ मइं परिगहिउ
दुणिमित्तइं णवर ण रहु चलइ णित्तेय तुरय मुत्ता(?) वलइ ८

घत्ता

संगामु भयंकरु होसइ सोणिय-समुद्दु उद्धेसइ ।
धय वायसु चंचु भरेसइ सहुं सुरेसहिं सइंभु णिएसइ ॥ ९

इय रिट्ठणेमिचरिए धवलइयासिय-सयंभुएव-कए
सत्तहत्तरिमो सग्गो ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अट्ठहत्तरिमो संधि

कण्णज्जुण अग्गए देवि रणे णरवर-पेसिय-वाहणइं।
अभिट्टइं दिणमणि-उग्गमणे कुरुवइ-तवसुय-साहणइं॥ १

[१]

भिडियइं वलइं वे-वि वल-सारइं उट्ठिय दारुण हणहणकारइं
वहल-धूलि-धूसरिय-सरीरइं दर-विद्दविय-धराधर-धीरइं
काहल-कुल-कोलाहल-करणइं पहु-सम्माण-दाण-संभरणइं
अवहत्थिय-णिय-पुत्त-कलत्तइं णिब्भर-रणसिरि-रामासत्तइं ४
दंति-दंत-णिहसुट्ठिय-जालइं हरि-खर-खुर-खोणिय-पायालइं
रह-रहंग-चिक्कार-रउद्दइं चामर-मारुय-सुसिय-समुद्दइं
पहरण-पहर-वियारिय गत्तइं रत्त-तरंगिणि-रेल्लिय-छत्तइं
असिवर-विज्जुज्जोइय-गत्तइं विरइय-सर-मंडव-सर-सयणइं ८
संताविय-वसंग-पडिचक्कइं दुद्दम-दुव्विसहइं दुल्लखइं

घत्ता

धयरट्ठ-पंडुसुय-साहणइं एम परोप्परु भिडियाइं।
णं विहि-वसेण णह-महियलइं विण्णि-वि एक्कहिं घडियाइं॥ १०

[२]

ताम तुरय-तंवेरम-वाहणे भिडिउ पत्थु संसत्तग-साहणे
हणइ हणेरु भीरु मंभीसइ सव्वसाइ सव्वत्तहे दीसइ
सव्व-दिसेहिं सव्व-मायंगेहिं सव्व-रहेहिं सव्वहि-मि तुरंगेहिं
रिउ पेक्खंति महासर-जालइं णं उर-जंगम-कुलइं करालइं ४
पभणइ कण्णु पेक्खु मद्दाहिव जालंधर-णारायण-पत्थिव
रुद्धु धणंजउ एक्कु अणंतेहिं णं दिणमणि घणेहिं वरिसंतेहिं
तो तावणि वि वुत्तु जत्तारें णरु ण धरिज्जइ खंधावारें
पवणु ण केण-वि पोट्टले वज्झइ चित्तभाणु इंधणेहिं ण डज्झइ ८

घत्ता

ण मरइ मयरहरु तिसाइउ णइव पयावइ भुक्खियउ।
अप्पहु ण सक्कु णिद्धणु धणउ णउ परमप्पउ दुक्खियउ।।

[३]

तो कसाउ वट्टिउ रवि-णंदणे जोत्तिय हंस-वण्ण-हय संदणे
सच्चसेणु रहचक्कहो रक्खणु थिउ णहसेणु अण्णत्तहे रक्खणु
पुट्ठिपालु विससेणु थवेप्पिणु सल्लु महारह-धुरहे धरेप्पिणु
धाइउ अंगराउ पंचालहं कइकय-करुस-कासि-महिपालहं
वेइव-सोमय-सिंजय-मच्छहं एवावरह-मि कर-परिहच्छहं
पंचवीस पंचाल वियारिय सत्तरि सत्त भद्द-करि मारिय
जाइं जाइं णिय-णाम-पगासइं णिहयइं चेइहिं सयइं सहासइं
भाणु स-चित्तभाणु विणिवाइउ वीरु स-वीरसेणु-वि णिवाइउ
सेणाविंदु णरिंदु पिसक्केहिं पंच-वि एम पहय एक्केक्केहिं

घत्ता

तहिं अवसरे धाइउ पवण-सुउ वाहिय-रहु धुवंत-धउ।
उज्झिय-करु पेल्लिय-पवर-तरु णाइं गइंदहो मत्त-गउ।।

[४]

ताम सुसेणें समरे सुधीमहो छिण्णु सरेण सरासणु भीमहो
अवरु लेवि तेण-वि तहो पाडिउ पडिवउ दसहिं थणंतरे ताडिउ
तेहत्तरिहिं कण्णु विणिवारिउ दसहिं सुभाणुवंतु ओसारिउ
तिहिं तिहिं किव-कियवम्म परज्जिय छहिं छहिं सउवल ओए विणिज्जिय
दूसासण तिहिं भल्लिहिं भेसिउ अवरु सुसेणहो उप्परि पेसिउ
चंपाहिवेण छिण्णु असिधारउ तेहत्तरिहिं कण्णु पडिवारउ
णउलु सुसेणें पंचहिं तच्छिउ वीसहिं मद्दि-सुएण पडिच्छिउ
विहि-मि परोप्परु छिण्णइं चावइं विण्णि-वि थिय सरीर-अपयावइं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घत्ता

विससेणु ताम सिणि-णंदणेण   छिण्ण-महाउहु वि-रहु किउ ।
वच्छत्थले चम्म-रयणु भरेवि   खग्ग-हत्थु जमु जेम थिउ ।। ९

[५]

सिणि-णंदणेण घिवेप्पिणु कंडइं   असिवर-फरइं कियइं वे-खंडइं
दूसासणेण लेवि ओसारिउ   सव्वेहिं अंगराउ परिवारिउ
जायवेण विणिवारिउ संदणु   हउ णिडाले तिहिं दिणयर-णंदणु
अण्णहे रहे आरुहेवि पधाइउ   धट्ठज्जुणेण दसहिं पच्छाइउ ४
दुमय-दुहिय-दोमइ-दायाएं   पहउ पंचहत्तरि णाराएं
पवण-सुएण लइउ सउ सट्ठिहिं   णउलेण तीसहिं सरवर-लट्ठिहिं
सत्तहिं माहवेण पडिवारउ   अट्ठहिं पहरइ पंडव-धारउ
कण्णें मग्गण तिउण विसज्जिय   दसहिं दसहिं ते सव्व परज्जिय ८

घत्ता

छिण्णइं सिरइं सकुंडलइं   लुयइं सरीरइं स-कवयइं ।
जत्तारिहिं रहु रहवरेहिं   रहियइं तिण्णि सयइं हयइं ।। ९

[६]

कोंतिहिं वाल-भावे उप्पण्णहो   धाइउ धम्म-पुत्तु तहो कण्णहो
वेण्णि-वि रण-पंकय-फुल्लंधुय   वेण्णि-वि पंडु-पुत्त-जेट्ठाणुय
विण्णि-वि समर-सएहिं विणिवारिय   विण्णि-वि विहिं वलेहिं परिवारिय
विण्णि-वि रहवरेहिं सोवण्णेहिं   विण्णि-वि हएहिं हंस-छवि-वण्णेहिं ४
विण्णि-वि कणय-किणंकिय-चावेहिं   विण्णि-वि सरेहिं समुज्जल-भावेहिं
विण्णि-वि चिंधेहिं वण्ण-विचित्तेहिं   विण्णि-वि वज्जंतेहिं वाइत्तेहिं
तो तव-णंदणेण पच्चारिउ   लद्धु मित्त कहिं जाहि अमारिउ
फेडमि समर-सद्ध इह थक्कहि   पहरु पहरु तिह जिह रणे सक्कहि ८

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

घत्ता

पच्चारेवि एम जुहिट्ठिलेण णहु सर-जालें छाइयउ।
णाय-उलु णवल्लउ लोहमउ दइवें णं उप्पाइयउ॥ ९

[७]

तं सर-जालु हणेवि सर-जालें दसहिं विद्धु चंपापुरि-पालें
तव-सुएण णाराउ विसज्जिउ तेण थणंतरे कण्णु विहज्जिउ
घुम्ममाणु ओणल्लु स-वेयणु कह-वि कह-वि पच्चागय-चेयणु
करयले कालवट्टु विप्फारेवि धाइउ धम्म-पुत्तु हक्कारेवि ४
पहिलउं चंदकेउ दोहाइउ वीयउ दंडधारु विणिवाइउ
वेण्णि-वि चक्क-रक्ख तव-तोयहो णिहया णियंतहो पंडव-लोयहो
तीसहिं तव-सुएण चंपाहिउ तेणवइहिं सरेहिं मद्दाहिउ
तिहिं तिहिं चक्ख-रक्ख विणिवारिय तेण-वि सट्ठि वाण संचारिय ८

घत्ता

धणु छिण्णु छिण्णु देहावरणु विप्फुरंतु वहु-मणि-गणेण।
णं णहु इंदाउह-मंडियउ णिवडिउ सहु तारायणेण॥ ९

[८]

पाडिए कवय-चावे स-कसाएं आयामेप्पिणु पंडव-राएं
सत्ति विमुक्क झत्ति राहेयहो णं अडयण विड-भड-संकेयहो
तेल्ल-धोय-घंटावलि-मंडिय सत्तहिं सायएहिं स विखंडिय
तो सर मुक्क चयारि णरिंदें वाहु पसारिय णं गोविंदें ४
रवि-तणएं तुरमाण तुरंगम छिण्ण-पक्ख किय णाइं विहंगम
णट्ठु जुहिट्ठिलु सहु णिय-सेण्णें पच्छए रहवरु वाहिउ कण्णें
जइ सच्चमउ राउ तो जुज्झहि थाहि थाहि कहिं जायवि सुज्झहि
भीमु णउलु तुहुं तिण्णि-वि भग्गा संढ होवि सुहडत्तणे लग्गा ८
अच्छइ एक्कु पत्थु मारेवउ हरिणु जेवं सहएवु धरेवउ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घत्ता

तो मारुइ अमरिस-कुइय-मणु   उग्गय-गरुय-गयाउहउ ।
पंचाणणु जेवं पंच-णहहो   धाइउ कण्णहो संमुहउ ॥ ९

[९]

ताम सल्लु वोल्लाविउ कण्णें   वाहि वाहि रहु दाहिण-कण्णें
जहिं गज्जइ गंडीव-धणुग्गुणु   जहिं संसत्तग-साहणे अज्जुणु
मद्दाहिवइ कहइ किह वाहमि   अग्गए पत्तु विओयरु चाहमि
सीह-महाधउ वाहिय-संदणु   किय-गय-घड-भड-थड-कडवंदणु ४
पहु-परिहव-पड-पक्खालण-मणु   णिय-सुय-वह-कसाय-फुरियाणणु
कोवें अंतगु हुयवहु तेएं   सूरु पयावें खगवइ वेएं
भणमि सउरि जाणमि वलवंतउ   णिसियर-णियरु जासु अत्थंतउ
कीय-कुल-कयंतु कुरु-केसरि   वाहि वाहि रहु भीमहो उप्परि ८

घत्ता

जुज्झेवउ एण समाणु तुह   सल्ल णिरारिउ आवडइ ।
किए पाराउद्धए पवण-सुए   णरु अप्पणु जे समावडइ ॥ ९

[१०]

तो जत्तारें वाहिय-रहवरु   तावणि पावणि भिडिय परोप्परु
एक्कंतरिय वे-वि कोंती-सुय   वेण्णि-वि परिह-पलंव-महाभुय
वेण्णि-वि स-सर-सरासण-पहरण   वेण्णि-वि दुद्दम-दणु-दप्प-हरण
वेण्णि-वि पर-वल-पवल-वलुद्धय   वेण्णि-वि करिवर-कर कहरिद्धय ४
वेण्णि-वि कंचण-कवयालंकिय   वेण्णि-वि घण-घण-घाय-किणंकिय
वेण्णि-वि सल्ल-विसोय-पुरीसर   वेण्णि-वि चंपापुर-परमेसर
वेण्णि-वि कुरुवइ-तवसुय-किंकर   वेण्णि-वि सरहस सउरि-विओयर
वेण्णि-वि समर-सएहिं अभग्गा   वेण्णि-वि विज्जु-पुंज सम-भग्गा ८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घत्ता

णिय-णिय-पहरेवउं परिहरेवि पेक्खा थिय कुरु-पंडव।
सर-णियरंतर-जूरंतएहिं पर सुर वहुएहिं दिट्ठ णिव ॥ ९

[११]

विहि-मि परोप्परु ताडिउ वाणेहिं णवहिं णवहिं वाणेहिं अप्पमाणेहिं
पवण-पुत्तु हउ थूणाकण्णें पडिवउ छिण्णु सरासणु कण्णें
अवरु लेवि धणु रक्खस-काएं उरयडे भिण्णु कण्णु णाराएं
मुच्छाविउ ओसारिउ सूएं दुज्जोहणेण विलक्खीहूएं ४
पेसिय दस कुमार एक्कोयर थाहि थाहि कहिं जाहि विओयर
वेढिउ सव्वेहिं णीसावण्णेहिं पंचासहिं रहेहिं सोवण्णेहिं
तेण-वि पंचहिं पंच वियारिय पंच भग्ग कह कह-वि ण मारिय
धाइउ चंपाहिउ पडिवारउ राइहिं थियउ णाइं अंगारउ ८

घत्ता

रणे रहवर-सिहरे परिट्ठियहो वग-हिडिंव-जमगोयरहो।
तंवेरमु जिह तंवेरमहो रवि-सुउ भिडिउ विओयरहो ॥ ९

[१२]

तो समरंगणे णीसावण्णें पवण-पुत्तु वोल्लाविउ कण्णें
मरु मरु पहरु कयंतें चोइय तिह जिह पंच कुमार विओइय
वियडु विभच्छु सुवच्छु सुभव्वउ अवरु सुमुक्कहु कुरु-कुल-पव्वउ
एम भणेवि सिलासिय भासर णव राहेएं मुक्क महासर ४
भीमें सत्त दसारुण-तोएं थरहरंत गय गयणाहोएं
पडिय णिरत्थ णिहालिय सल्लें छिण्णु सरासणु अवरें सल्लें
भीमें परिहु भमाडेवि घत्तिउ णिउ सय-सक्करु करेवि णिहंतिउ(?)
अवरु भर-क्खमु धणु विप्फारेवि छाइउ सरेहिं कण्णु पच्चारेवि ८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घत्ता

तुहुं मूलु अणत्थहं सव्वह-मि जउहर-जूय-कयग्गहहं।
वर-वसण-विराड-घरासम दाहिण-उत्तर-गोग्गहहं ॥ ९

[१३]

जिह गुणु छिण्णु सुहद्दा-तोयहो जिम महु णंदणु णिउ जम-लोयहो
थाहि थाहि तिह एम भणेप्पिणु विद्धु थणंतरे थाणु रएप्पिणु
भिण्णु देहु सहुं देहावरणें कह-व ण जीविउ णिउ जमकरणें
पंचवीस सर पेसिय कण्णें खंडिउ रहवरु थूणाकण्णें ४
पवण-पुत्तु उप्पएवि गयाउहु धाइउ रणे राहेयहो संमुहु
लउडि-पहारें किउ कडवंदणु चुक्कउ तुरउ ण धुरउ स-संदणु
णासवारु णारोहु ण किंकरु णायवत्तु ण धयग्गु ण चामरु
सव्वइं धूलिकरेइ रणे तूवरु चूरिउ सउरि-महारह-कूवरु ८

घत्ता

गय-घाएहिं भीमें चूरियइं तीस सयाइं तुरंगमहं।
सोवण्णमयहं सउ संदणहं सत्त सयइं तंवेरमहं ॥ ९

[१४]

कह-मि ण पइसइ रह-गय-वाहणु वम्मु व अग्गि-तत्तु कुरु-साहणु
सुवल-सुएण ताम असिहत्थहं पेसिय तिण्णि सहासइं अत्थहं
पंच सयइं रहवरहं स-रहियहं सव्वाओग-सव्व-वल-सहियहं
एक्कें भीमें कोवाऊरिय सव्व गयासणि-घाएहिं चूरिय ४
तावं परोप्परु सर-संछण्णहं जाउ महाहउ तवसुय-कण्णहं
सरहस वावरंति णाराएहिं णं वे दिणयर-कर-संघाएहिं
सारहि जम-पुरवरे पइसारिउ स-रहिउ जाणवत्तु ओसारिउ
कड्ढिउ कह-मि तुरंगेहिं रहवरु धाइउ ताम तुरंतु विओयरु ८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घत्ता

दुक्कंतहं तावणि-पावणिहिं सच्चइ सच्चाहिट्ठियउ।
णं विहि-मि राहु-अंगराहं अंतरे धूमकेउ ठियउ॥ ९

[१५]

जाउ महंतु महाहउ ताह-मि जो ण हूउ णउ होसइ काह-मि
किंपि ण दीसइ सरवर-जालें जगु कंपाविउ णं दुक्कालें
जलु थलु णहु पेल्लंतु पधाइउ सलह-विंदु जिह कहि-मि ण माइउ
ताम पयंगु ढुक्कु मज्झण्णहो तिण्णि सुसम्मे उरयडि कण्णहो ४
लाइय थरहरंत णव पत्थहो एक्कु भल्लु वाणरहो धयत्थहो
तूरइं देवि करेप्पिणु कलयलु धाइउ सव्वु अखत्तें पर-वलु
केसउ केसहिं धरेवि णिरुद्धउ रहे वलग्गु णरु संसए छुद्धउ

घत्ता

तो कह व कह व वइहत्थिएहिं तालुयवम्म-खयंकरेण।
ओसारेवि वलु मेहउलु जिह करेहिं कढोर-दिवायरेण॥ ८

[१६]

दुद्दम-दाणविंद-विणिवायणु वोल्लाविउ णरेण णारायणु
जो णायणेहिं वंधु दरिसाविउ सो मइं रह-णिवंधु विहडाविउ
पूरिउ पंचयण्णु तो देवें तट्ठ पणट्ठ वइरि विणु खेवें
पाय-णिवंधु करेविणु वद्धा णाग-पास-पासेहिं ओवद्धा ४
एक्कु-वि पउ ण देवि णारायणु सुक्कें खीलिय जेवं महाघणु
ताव तिगत्ताहिवेणोसासिय गारुडेण अत्थेण विणासिय
णं घण-वंधहो घण णीसारिय भीम भुअंग सव्व ओसारिय
अवरे णरु णरेण घुम्माविउ कह व कह व रह-सिहरु ण पाविउ ८

घत्ता

तो चेयण लहेवि धणंजएण पउरंदरिहिं महाउहेहिं।
भिज्जंतु असेसु वि वइरि-वलु असरणु णट्ठु दिसामुहेहिं॥ ९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[१७]

के-वि पणट्ठ के-वि विणिवाइय दस सहास तहिं अवरे घाइय
हंस-समप्पह पाडिय हयवर सुरवर-पुर-पासाय व रहवर
कुलगिरि-सिंग-तुंग तंवेरम णर-णरिंद णक्खत्त-गहोवम
कुंडल-मंडिएहिं गंडयलेहिं घोलिर-हारि-हार-वच्छयलेहिं ४
भुय-दंडेहि केउरालिद्धेहिं चामर-पुंडरीय-धय-चिंधेहिं
सिविया-जाण-जाण-जंपाणेहिं कवियंकुस-माणिक-पल्लाणेहिं
दढ-पाउडय-विविक्ख-सवंघेहिं पक्खर-गेज्जा-पुरजणि-वंधेहिं
भिसिया-घंटा-किंकिणि-जालेहिं मुहवड-वइजयंति-उड्डु-मालेहिं ८

घत्ता

उवगरणेहिं ओएहिं अवरहि-मि पेक्खंतहो आहंडलहो।
किउ णाइं णवल्लउ पावरणु णरेण सयं भू-मंडलहो॥ ९

इय रिट्ठणेमिचरिए धवलइयासिय-सयंभुएव-कए
अट्ठहत्तरिमो सग्गो॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ऊणासीइमो संधि

णर-णाराय-कडंतरिउ णिएवि सुसम्म-महारह-वाहणु ।
तूरइं देवि स-कलयलइं धाइउ पत्थहो कउरव-साहणु ॥ १

[१]

जं रह-गय-तुरय-महावरेण्णु विद्दविउ तिगत्तहो तणउ सेण्णु
तं रण-रस-रहस-समुब्भडाहं खर-पवणुप्पेल्लिय-धयवडाहं
सोवण्ण-रहंग-मणोरमाहं गंधव्व-महापुर-विब्भमाहं
दस सहस पधाइय रहवराहं सय तीस पसत्थहं किंकराहं ४
कियवम्मु कण्णु किउ सउणि-मामु दुज्जोहणु भुवणुच्छलिय-णामु
गुरु-णंदणु सहुं दूसासणेण णं पवणु समाणु हुवासणेण
एक्कल्लउ अज्जुणु रिउ अणेय भग्गा-वि समागय अप्पमेय
लंघिज्जइ तो-वि ण कुरु-णरेहिं परिचिंतिउ केहि-मि कायरेहिं ८

घत्ता

णरु णारायणु तुरय रहु सरु गंडीउ कइंद-महद्धउ ।
आइय सव्वइं जम-मुहइं दुक्करु चुक्कइ को-वि अखद्धउ ॥ ९

[२]

एत्तहे-वि रइय-सर-मंडवेहिं परिवारिउ पंडउ पंडवेहिं
पंचालेहिं मच्छेहिं कइकएहिं जायव-सिणि-सोमय-सिंजएहिं
सिवकासिहिं करुसिहिं चेइवेहिं ओएहिं अवरेहि-मि पत्थिवेहिं
णर-णियर-करेरिय-वाहणाइं पडिलग्गइं विण्णि-वि साहणाइं ४
ओवाहिय-रहवर-रहवराइं उद्धाइय-गयवर-गयवराइं
भड भडहं तुरंग तुरंगमाहं महि भरिय मंस-वस-कद्दमाहं
सोणियइं वहंति अणिट्ठियाइं सिर-मेत्तइं जाम परिट्ठियाइं
पहरण-डरेण रणे दुण्णिरिक्खें णं णासेवि थिउ रवि अंतरिक्खे ८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घत्ता

रुहिर-महा-णइ अंतरिउ   पर-वलु णिएवि समुक्खय-कंडउ।
को-वि तरंतु तरंतु गउ   धम्म-रयणु करे करेवि तरंडउ ॥ ९

[३]

तहिं पंडव-कउरव-रणे रउद्दे   महि लंघेवि थिए सोणिय-समुद्दे
मुहु वंधेवि भीम-धणंजयाहं   किउ धाइउ सोमय-सिंजयाहं
छिंदंतु रहंगइं रहवराहं   पज्जत्तइं गत्तइं गयवराहं
सावरणइं हयइं उर-त्थलाइं   सामंतहं सिरइं स-कुंडलाइं ४
धाइउ सिहंडि मंभीस दिंतु   पर-वलहे पिसक्केहिं पाण लेंतु
णिक्किवेण किवेण णव सरेहिं विद्धु   तेण-वि सो सत्तहिं पडिणिसिद्धु
आरुट्ठें गउतम-णंदणेण   धय-दंडु छिण्णु सहुं संदणेण
स-तुरंगु स-सारहि धणु-वि भग्गु   तो स-फरु सिहंडें लइउ खग्गु ८

घत्ता

किवेण किवाणु विच्छिण्णु   दुज्जोहण-णयणाणंदें।
णं उप्पाय-काले णहहो   णिवडिउ विज्जु-पुंजु सहुं चंदें ॥ ९

[४]

तो गउतम-णंदण-गहण-हेउ   णामेण णराहिउ चित्तकेउ
थिउ पुरउ सिहंडिहे विहुर-काले   किउ ताडिउ णवहिं थणंतराले
तो आसत्थामहो माउलेण   वाणासणु छिण्णु अणाउलेण
विणिवाइउ सारहि भिउडि-भीसु   अवरेण खुरुप्पें खुडिउ सीसु ४
हक्कारिउ तो धट्ठज्जुणेण   कियवम्में सो-वि वलत्तणेण
तो भिडिय परोप्परु सव्व-संध   पंचाणण पंच व वसह स-खंध
विप्फारिय-धणुह णिवद्ध-तोण   णिम्मह पच्चाहणिच्चोणवोण(?)
एक्कु वि एक्कहो जीविउ ण लेइ   एक्कु-वि एक्कहो जिणणहं ण देइ ८

घत्ता

जायउ दुमयहो णंदणेण   कह व कह व रणे किउ विवरेरउ।
सारहि घायउ भग्गु रहु   णाइं मणोरहु कुरुवइ-केरउ ॥ ९

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

[५]

अण्णेत्तहे मुक्क-महासुयाहं रणु वट्टइ गुरुसुय-तवसुयाहं
हउ तेहत्तरिहिं जुहिट्ठिलेण सत्तरिहिं पिसक्केहिं सयवलेण
सिरि-तणएं वत्तीसहिं सरेहिं पडिवेसें सत्तहिं तोमरेहिं
सुयवम्में तिहिं कुलिसोवमेहिं सुयकित्ती पंचहिं अहि-समेहिं ४
गुरु-सुएण-वि सत्तहिं पहु णिसिद्धु सच्चइ पंचहिं पंचेहिं विद्धु
विहिं विहिं अवसेस किय वि-चाव णीसंदण णिद्धय णिप्पयाव
तहिं अंतरे पभणइ धम्म-पुत्तु वंभणहो खत्तियत्तणु अजुत्तु
एक्कु-वि उवयारु-वि पइं ण णाउ लइ विहिं तिहिं दिवसहिं हउं जे राउ ८

घत्ता

मइं तव-सुएण विरुद्धएण तुहुं किउ विण्णि-वि किवं जीवेसहो।
अज्जु व कल्ले व दिवहडए णिक्खउ रवि पिहिवि पेक्खेसहो॥ ९

[६]

तो एम भणेवि ओसरिउ राउ णिहुवउ जे परिट्ठिउ दोण-जाउ
आभिट्टु भीमु तो कुरु-णराहं एत्तहे-वि पत्थु जालंधराहं
एत्तहे-वि महंताओहणेण हउ णवहिं णउलु दुज्जोहणेण
चउ-भल्लेहिं तुरय-चउक्कु भिण्णु सहएव-महद्धउ खुरेण छिण्णु ४
णउलेण एक्कवीसहिं णिसिद्धु सहएवें पंचहिं सरेहिं विद्धु
धयरट्ठ-सुएण वरासणाइं जमलहं पाडियइं सरासणाइं
पडिवाराहय तिहिं तिहिं सरेहिं पुणु पंचहिं पंचहिं तोमरेहिं
अवरइं जम-मुह व भयंकराइं उद्धाइय धरेहिं धणुद्धराइं ८

घत्ता

भिडिय जमल दुज्जोहणहो छाइउ सरेहिं पराणिउ आवइ।
धारा-णियर-णिरंतरेहिं विहिं जलहरेहिं गिरि णावइ॥ ९

[७]

तो विण्णि-वि कुरु-परमेसरेण ओसारिय सरवर-पंजरेण
तहिं अवसरे वाहिय-संदणेण हक्कारिउ दुम्मयहो णंदणेण
सिल-धोय-धार-कलहोय-भीस णारायण विसज्जिय पंचवीस
कुरुवेण-वि पेसिय पंचसट्ठि पंचालहो पाडिय चाव-लट्ठि ४
पण्णारह अवरें धणुवरेण पेसिय मायंदें पुरेसरेण
तणु-ताणु स-तणु ताडेवि पिसक्कें कह कह-वि ण कुम्म-कडाहे थक्कें
मुच्छाविउ कुरुवइ लद्ध-सण्णु दोहाइय-धणु लय पुणु-वि अण्णु
पडिवारउ दसहिं णिडाले विद्धु मुह-कमलु णाइं थिउ अलि-समिद्धु ८

घत्ता

अवरु सरासणु करे करेवि सारहि चिंधु तुरंग महाधणु ।
सव्वइं पीडेवि वि-रहु किउ कड्ढेवि कुरुवेहिं णिउ दुज्जोहणु ॥ ९

[८]

जं कुरुव-णराहिउ वि-रहु जाउ तं समुहु समुट्ठिउ अंगराउ
सामंत-विहंगम रुलुघुलंत थिय कण्ण-महादुमे वीसमंत
पंचालेहिं वेढिउ मुएवि खत्तु णं जगु जे गिलंतु कयंतु पत्तु
अट्ठाहिय अट्ठहिं तोमरेहिं णं खद्धासीविस-विसहरेहिं ४
चित्ताउहु सुवण्णु मइंदकेउ जउ सुक्कु सक्कु सद्दूलकेउ
अट्ठमउ णराहिउ रोयमाणु वेइय-वह कें वुज्झिउ पमाणु
देवावि विचित्तु विचित्तकेउ भद्दाउहु रोयणु सीहकेउ
ओए-वि अवर-वि चंपाहिवेण विणिवाइय रणउहे णिक्किवेण ८

घत्ता

हय-गय-रहंग चूरंतु रणे धरेवि ण सक्किउ पंडव-लोएं ।
कण्णु वियंभिउ कवणु जिह विसम-महासणि सर-संजोएं ॥ ९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[९]

जिह रवि-सुउ सोमय-सिंजयाहं तिह भीमु वियब्भ-महागयाहं
णिय सुय-वह-वड्ढिय-वेयणेण वोल्लाविउ हरि कइ-केयणेण
लइ जाहु देव जहिं अंग-राउ मारेवउ मइं णंदण-सहाउ
गय विण्णि-वि तहिं ढुक्कंति जाम संसत्तग पच्छले लग्ग ताम ४
तिहिं सएहिं मत्त-तंवेरमाहं सहसहिं चउदहहं तुरंगमाहं
विहिं लक्खेहिं पवर-धणुद्धराहं णरु वलिउ तहि-मि जालंधराहं
सरवरेहिं विणासिय दस सहास णिय-वलहो करेवि जय जीवियास
कंवोय-णराहिय-णामधेउ णं णहे उद्धाइउ धूमकेउ ८

घत्ता

सो धावंतु धणंजएण तिहिं तिक्खेहिं सरेहिं समाहयउ।
एक्कें पाडिउ सिर-कमलु अवरेहिं छिण्ण वे वाहउ ॥ ९

[१०]

णिय पय-पेक्खण-पक्खुहिय-खोणि पडिलग्गु कीरिडिहे ताम दोणि
णाराएहिं णर-णारायणाहं धय विद्ध णियंतहं सुरवराहं
सम्मोहहो गउ गंडीवधारि दोणायणि जमरूवाणुकारि
विणिवारिउ किं अम्हारिसेण महुसूयणु पभणइ अमरिसेण ४
कहिं तुहुं ण धणंजउ किण्ण पाण किं करे गंडीउ ण किण्ण वाण
किण्ण-वि भुव ण-वि रहु णवि य वाह किं अण्णें केण-वि विद्ध राह
किं अण्णें खंडवे जलणु दिण्णु किं अण्णें सुर-वलु सरेहिं भिण्णु

घत्ता

अण्णें तालुयवम्म जिय गो-ग्गहे धणु परियत्तिउ अण्णें।
ल्हसिउ जेण गुरु-णंदणहो मंछुडु तुहुं मारेवउ कण्णें ॥ ८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[११]

णारायण-वयणेहिं चित्तु देवि सिल-धोय चउद्दहं वाण लेवि
धणु एक्कें एक्कें गुणु विहत्तु अवरेक्कें पाडिउ आयवत्तु
अवरेण सरेण रहंगु भग्गु अवरेण लउडि अवरेण खग्गु
अवरेण सत्ति अवरेण कुंतु अवरेण तिसूलु ति-भाय होंतु ४
पंचहिं मुच्छाविउ दोण-पुत्तु ओसारिउ सूएं मग्गें हुंतु
संसत्तग-वले पडिलग्गु पत्थु कुरु-सेण्णे विओयरु लउडि-हत्थु
दुज्जोहणु वियसिय-कमल-णेत्तु ओसारेवि परिट्ठिउ कोस-मेत्तु
वोल्लाविय रविसुय-पमुह राय परिरक्खहु कुल-परिवाडि आय ८

घत्ता

जिम मित्तहो जिम सामियहो सरणाइयहो कज्जे दिव दिज्जइ।
सीसें एत्तिउ कज्जु पर खंधारूढु अण्णु किं किज्जइ॥ ९

[१२]

तो चेयण लहेवि स-संदणेण वोल्लिज्जइ दोणहो णंदणेण
जं करमि पेक्खु तं कुरुव-राय मारेवा मइं दोमइहे भाय
दक्खवमि जाम जम-णयर-वारु परिहरमि ताम णउ संपहारु
एक्कु-वि गुरु वइरु महंतु अज्जु अण्णु-वि गरुयारउ सामि-कज्जु ४
संपज्जइ जुहिट्ठिलु वलहो ढुक्कु णं मंदरु सायरे सुरेहिं मुक्कु
णं गरुडु भुवंगम-कुलइं खाइ गय-जूहइं जोहइ सीहु णाइ
पेक्खेप्पिणु णिय-वलु भीयमाणु किवि-णंदणु वाणेहिं खीयमाणु
जिय-परेण विणासिय-खंडवेण वोल्लाविउ माहउ पंडवेण ८

घत्ता

भाइहे एक्कु-वि पासे ण-वि दिवसु ति-भाय-सेसु लइ वट्टइ।
एवंहिं तिह करि महुमहण जिम महु रवि-सुउ रणे आवट्टइ॥ ९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[१३]

रण-रामा-रमणुक्कंठुलासु गय विण्णि-वि पासु जुहिट्ठिलासु
णारायणु पभणइ सव्वसाइ कमे कण्णहो एक्कु-वि भड्डु ण थाइ
पर दीसइ पावणि गयइं देंतु गय-घाएहिं गयवर खयहो णेंतु
अण्णेत्तहे चूरइ वलइं दोणि अण्णेत्तहे धाइउ जण्णसेणि ४
राहेएं एंतउ पडिणिसिद्धु सो दुमय-सुएण सएण विद्धु
रवि-तणएं धणु तणु तासु छिण्णु पडिवारउ णवहिं सरेहिं भिण्णु
अवरेण भर-क्खम कम्मुएण सत्तरिहिं जण्णसेणहो सुएण
भाणवेण णिहम्मइ किर सरेण णिउ सत्त-खंड हरि-भायरेण ८

घत्ता

सच्चइ कण्णहो विहि-मि रणु जाउ णिंयंतहो सुरवर-विंदहो ।
ताम दोणि धट्ठज्जुणहो धाइउ जेम गइंदु गइंदहो ।। ९

[१४]

पासाय-समप्पह-संदणेण वोल्लाविउ दोणहो णंदणेण
अरे गुरुवह-कारा थाहि थाहि कहिं मइं जीवंते जीवंतु जाहि
तो मणे आसंकिउ जण्णसेणि णिय-वइरु हणेसइ णवर दोणि
चिंतंतु परोप्परु भिडिय केवं गज्जंत मत्त मायंग जेवं ४
पंचालें ताडिउ तोमरेण गुरु-सुएण महासर-पंजरेण
धणु परिहु सत्ति तिह ताडियाइं अ-कियत्थइं हत्थहो पाडियाइं
रहु सारहि तुरय-चउक्कु छत्तु धणु असिवरु फरु अवरेहिं विहत्तु
पुणु भिण्णु णिरंतर-तोमरेहिं णं सरय-महाघणु रवियरेहिं ८

घत्ता

चिंतिउ दोणहो णंदणेण ण मरइ इह पहरणेहिं रणंगणे ।
करमि णवल्ली धूलडिय सुर-वि जेम णियंति णहंगणे ।। ९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[१५]

गुरु-पुत्तु वहंतु महंतु सल्लु पडिलग्गु णिजुज्झें जेम मल्लु
उच्चाइउ वाहेहिं रणे अराइ दसकंधरेण कइलासु णाइं
सिरि-रामालिंगिय-विग्गहेण णं महिहरु सुरवर-महिहरेण
अच्छोडइ वसुहावलए जाम दरिसावइ णरहो मुरारि ताम ४
सक्कंदण-णंदण धाहि धाहि धट्ठज्जुणु हउ हय वाहि वाहि
तो अज्जुण-वाणेहिं भिण्णु साउ आरूढु महारहे लइउ चाउ
तहो धाइउ तो गंडीव-धारि सर थरहरंत लाइय चयारि

घत्ता

पत्थें अमरिस-कुद्धएण चामर चावइं छत्त धयग्गइं ।
गुरु-सुउ सारहि रहु तुरय सव्वइं कियइं मडप्फर-भग्गइं ॥ ८

[१६]

तहिं काले पणच्चिय-तंडवेहिं जय-तूरइं दिण्णइं पंडवेहिं
पप्फुल्लिय-जंपण-कंजएण वोल्लाविउ सउरि धणंजएण
लइ जाहुं जणद्दण तं पएसु संसत्तग-वलु जहिं किंपि सेसु
दासारुहु दावइ पेक्खु पत्थ दुज्जोहण-पमुह महा-रहत्थ ४
णर-णाहहो धाइय वद्ध-कोह णं गिरि-वेयड्ढहो घण-घणोह
परिवेढिउ सव्वेहिं धम्म-पुत्तु सच्चइ सिहंडि जमलेहिं गुत्तु
पेक्खंतहं सोमय-सिंजयाहं सिवकासि-करूसहं कइकयाहं
घुसलेप्पिणु तवसुय-सेण्ण-सिंधु राहेएं रोहिउ राय-चिंधु ८

घत्ता

सउणि-दोणि-दूसासणेहिं किव-किववम्म-कण्ण-कुरुणाहेहिं ।
पीडिज्जंतउ पेक्खु वलु जेम वालु वालग्गह-गाहेहिं ॥ ९

[१७]

दरिसावइ जायउ पेक्खु पत्थ का वट्टइ पंडु-वलहो अवत्थ
परिहरु तव-तणयहो तणिय आस जसु भिडिय णरिंदहं दस सहास

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परिसंख ण जाणमि किंकराहं सय पंच सुवण्णहं रहवराहं
पंचास सहस तंबेरमाहं पण्णारह सहस तुरंगमाहं ४
धणु-वाण-भयंकरु रणे सुधीमु तिहिं अक्खोहणिहिं विरुद्धु भीमु
धङ्खज्जुणु दूसासणेण भग्गु रवि-सुउ सिहंडि-अणुपहेण लग्गु
विससेणें णउलहो मलिउ माणु वलु सयलु-वि दीसइ भज्जमाणु
हय-चिंधु णिराउहु गलिय-गत्तु कह कह व ण मरणावत्थ पत्तु ८

घत्ता

पेक्खु अवत्थ जुहिट्ठिलहो लयउ णिरंतरु कण्णहो कंडेहिं ।
गउ सिमिरहो सवडम्मुहउ सर कड्ढंतु सइं भुव-दंडेहिं ॥ ९

इय रिट्ठणेमिचरिए धवलइयासिय-सयंभुएव-कए
ऊणासीइमो सग्गो ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

असीइमो संधि

मलिय-मरट्टहो रिउ-घाय-जाय-विच्छायहो ।
णर-णारायण गय पास जुहिट्ठिल-रायहो ॥ १

[१]

हरि दरिसावइ पेक्खु धणंजय सुरवइ-वइरि-पुराण-पुरंजय
पेक्खु भीमु गय-घाएहिं घाइउ रह-रहंग रहि एक्कहिं लाइउ
पेक्खु महागय महिहिं पउंजिय णं उप्पाए महाघण पुंजिय
पेक्खु जेम उड्डंत विहंगम रंगाविय रण-रंगे तुरंगम ४
पेक्खु केम वड्डिय-अवलेवहो णासइ सउवल-सुउ सहएवहो
किव-कियवम्म पेक्खु पडिलग्गा उत्तमोज्ज-जुहमण्णहिं भग्गा
छत्तें पंडुरेण चंपावइ उययसेल्लु छण-चंदें णावइ
वड्ड-वार पइं पत्थ णिहालइ णं कियंतु भोयणु पडिवालइ ८

घत्ता

सउणि वारेवि सच्छंदु भमइ रणे सच्चइ ।
जिय-दुज्जोहणु उवविजय भीमु किह णच्चइ ॥ ९

[२]

पेक्खु कण्णु किह कहि-मि ण माइउ धम्म-सुआणुपहेण पधाइउ
मद्दाहिवेण ण वाहिउ रहवरु जाउ जाउ एहु जीवइ दुक्करु
जाउ जाउ सव्वंगिउ विद्धउ जाउ जाउ दोहाइउ पिद्धउ
जाउ जाउ समरंगणे संकिउ तउ वाणासणि सहेवि ण सक्किउ ४
वाहि वाहि रहु जेत्तहि अज्जुणु जहिं हरि हर-गल-गवालणज्जुणु
जहिं कलहोय-कइद्धउ धुव्वइ जहिं गंडीव-धणुह-गुणु सुव्वइ
वरिसइ रवि-सुउ किर सर-जालेहिं तावणि-रूवु पंडु-पंचालेहिं
कासि-करुस-कइकय-सामंतेहिं सोमय-सिंजय-वलेहिं अणंतेहिं ८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घत्ता

अमरिस-कुद्धएण भग्गु वत्थु भावेण विसज्जिउ ।
पंडव-साहणु जुज्झंतउ तेण परज्जिउ ॥

[३]

पेक्खु पेक्खु किह किय-विवरेरा सत्तारह रह कइकय-केरा
अंगराय-णाराय णिघिट्ठा गंपिणु भीमहो सरणु पइट्ठा
एत्तहे पावणि घणु जिह गज्जइ एत्तहे पंडव-साहणु भज्जइ
एत्तहे कुरुव-वरूहिणी धावइ एत्तहे तव-सुय-वत्त ण णावइ
एत्तहे संसत्तग रणे दुज्जय जं जाणहि तं करहि धणंजय
चिंताभारु एम जं घित्तउ तं णरु सोय-समाउल-चित्तउ
गउ तेत्तहे जेत्तहे एक्कोयरु हत्थि-हडउ विद्दवइ विओयरु
अहो विस-विसम-मोय-पसमावण जउहर-जलण-जाल-विहडावण
अहो किम्मीर-कुरुव-करि-घायण वग-हिडिंव-कीया-विणिवायण

घत्ता

पंडव-णाहहो लइ एक्क-वि वत्त ण वुज्झमि ।
जाहि गवेसहि हउं भीम रणंगणे जुज्झमि ॥

[४]

पभणइ पवण-पुत्तु स-विसेसउ जाहि धणंजय तुहुं जे गवेसउ
मइं चूरेवि गय-घडउ सइच्छए मरइ णरिंदु रूवेसहुं पच्छए
महु संगामहो अवसरु वट्टइ जुज्झमाणु को सिमिरु पयट्टइ
कुरुवहं संति समुट्ठइ कलयलु अण्णु-वि अणुपहे लग्गइ कुरु-वलु
तो सरोसु पभणइ दामोयरु जाहुं पत्थ वावरउ विओयरु
को वीहइ दुज्जण-जंपणयहो पेक्खहुं वयण-कम्मलु तव-तणयहो
पच्छए चंपाहिउ आरोडहि सिरु स-किरीडु स-कुंडलु तोडहि
एवं चवंत पत्त पहु-मंदिरु सज्जण-जण-मण-णयणाणंदिरु

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घत्ता

दिट्ठु जुहिट्ठिलु हरि-विजएहिं सामल-देहेहिं ।
कंचण-गिरिवरु मेहागमे णं विहिं मेहेहिं ।। ९

[५]

णर-णारायण णिएवि जुहिट्ठिलु तुट्ठ सुट्ठु णिय-रट्ठुक्कंठुलु
मंछुडु णिहउ दिवायर-णंदणु आइउ पत्थु तेण स-जणद्दणु
साहु साहु तोसिय-पवरामर पंडव-संड-खंडववण-डामर
साहु साहु हरि गिरि-सिर-धारा कह-वि जियंतें दिट्ठु भडारा ४
कहि कहि कण्णु केम विणिवाइउ जेण महारउ रहु दोहाइउ
जेण तुरंग भग्ग रहु खंडिउ सूउ स-चक्करक्खु मुउ छंडिउ
जो सुसेण-विससेणहिं रक्खिउ पंडव-कलह-केलि कुरु-पक्खिउ
जो अणुदिणु अप्पाणु पसंसइ अज्जुणु हणमि पइज्ज पगासइ ८

घत्ता

तेरह वरिसइं जसु भइयए णिद्द ण आविय ।
तहो राहेयहो किह थरहरंत सर लाइय ।। ९

[६]

जसु भएण वणंतरे मुत्ता पंडव जेण संढ-तिल वुत्ता
जेण कवड-दुंदुहि पाडाविय दोमइ दासि भणेवि कड्ढाविय
जेण पुत्तु कुरु-जंगल-मच्छहो धणु लेवाविउ पट्टणे मच्छहो
जसु देव-वि अदेव रणे रुट्ठहो तहो सिरु पाडिउ किह पइं दुट्ठहो ४
भणइ धणंजउ रह-गय-वाहणे अच्छिउ हउं रमंतु रिउ-वाहणे
जहिं तिगत्त-संसत्तग-लक्खइं जहिं जालंधर-वलइं असंखइं
जहिं णारायण-गण आपमाणा जाहिं हिरण्णपुर-वासिय राणा
कुंकुण-तामलित्त जहिं पच्छल कीर कुणिंद णीर सम्मेहल ८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घत्ता

वलइं अणंतइं   महु एकहो रणे आभिट्टइं।
कियइं मइंदेण   करि-कुल इव भग्ग-मरट्टइं॥

[७]

मइं सर-सीरिय पवर तुरंगम   भग्ग रसंत मत्त तंवेरम
छिण्णइं चिंधइं चामर-छत्तइं   पंच सयइं रहवरहं विहत्तइं
ताम दिवायर-रह-सम-संदणु   स-सर-सरासणु कुरु-गुरु-णंदणु
रह पंचास तुहारा चूरेवि   दुज्जोहणहो मणोरह पूरेवि
सरहसु महु सवडम्मुहु धाइउ   णं गयवरु गयवरहं पराइउ
अट्ठ महारह पहरण-भरिया   णं गिरिवर-तरु-णियर वावरिया
जे जुज्झंति पउहर णं देंतिहिं   अट्ठहिं अट्ठेहिं पर-वल देंतिहिं
ते उड्डाइय सव्व रणंगणे   णं दुव्वाएं घण गयणंगणे

घत्ता

सरेहिं भरेप्पिणु   संदेह-भावे पइसारिउ।
उवहि व रामेण   कह कह व दोणि ओसारिउ॥

[८]

ताम विओयरेण मय-भेंभल   भग्ग गयासणि-घाएहिं मयगल
पच्छए ओसारिउ दुज्जोहणु   सिणि-णंदणेण सउणि कलि-रोहणु
सत्त सयइं चूरेवि चंपावइ   महु थाणंतरु जाम ण पावइ
तो उच्छलिय वत्त चउ-पासहो   भज्जेवि गउ णरिंदु आवासहो
किउ रणे रवि-सुएण तणु-सेसउ   तेण णाह हउं आउ गवेसउ
भणइ अजायसत्तु किह धीरेहिं   णर-गंडीव-वाण-तोणीरेहिं
अज्जुणु किण्ण णाउ किउ अण्णहो   भज्जइ जेण मडप्फरु कण्णहो
किं णक्खत्तणेमि सेयासहो   जुज्झइ भीमु वे-वि किह णासहो
कवण तउ ण सामग्गि धणंजय   किं धणु किं ण वाण रणे दुज्जय

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घत्ता

किं ण महारहु कं ण विहय किं ण महद्धउ।
किं ण जणद्दणु जं रवि-सुएण उद्धद्धउ॥

[९]

किं ण वाहु किं तुहुं ण धणंजउ किमु वा संग-संगु सयरज्जउ
किं ण कणिट्ठु हिडिंवा-कंतहो किं ण-वि भइणिवइउ अणंतहो
किं ण पंडु-कुंतिहे उप्पण्णउ किं ण पुरंदरु तउ सुउ पसण्णउ
किं ण दोणु गुरु सीसु ण सच्चइ जेम कण्णु जम-णयरु ण वच्चइ
राह ण विद्ध भमंति णहंगणे दोमइ लइय ण मंड रणंगणे
सुरह णियंतहं दड्ढु ण खंडउ मेह ण भग्ग ण किउ सर-मंडउ
णिहय णिवाय-कवय ण महाहवे लग्गु ण कुरुव-णरिंद-पराहवे
धणु ण णियत्तिउ जिउ ण पियामहु णउ भयवत्तु ण वहिउ जयद्दहु

घत्ता

जइ आसंकिउ तहो तोसिय-कुरुव-णरिंदहो ।
तो सइं जुज्झइ गंडीउ देहि गोविंदहो ॥

[१०]

कड्ढिउ मंडलग्गु तो पत्थें पुच्छिउ महुमहेण परमत्थें
कहे कहो-वि कोसु किं खंडउ कहो जलणिहि-जले तुट्ठु तरंडउ
किं महु किं णिययहो किं रायहो णरेण वुत्तु सिरु पाडमि आयहो
जो पइं मइं गंडीउ विकत्थइ सो विणासु अप्पाणहो पत्थइ
मं धरि सधर-धराधर-धारा पुज्जउ अज्ज पइज्ज भडारा
भणइ जणद्दणु गुरु ण वि हम्मइ एण कसाएं णरयहो गम्मइ
कवणु धम्मु किर आमिस-भक्खणे कवणु असच्चु पाणि-परिरक्खणे
कवण पइज्ज वंधु-विद्धंसणे कवण भडत्तणु णियय-पसंसणे

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घत्ता

गउ रिसि णरयहो चोरि णिहि सत्थु दावंतउ।
मउ परिरक्खणे पहिउ-वि देवत्तणु पत्तउ॥ ९

[११]

खंडव-डह-डामरु आहासइ तिह करि जिह पइज्ज णउ णासइ
जो गंडीउ परहो देवावइ सो विणासु महु पासहो पावइ
अच्छउ एण कसाएं लइयउ मोह-महा-तम-जालें छइयउ
पइं वुज्झाविउ देवइ-णंदण जं पभणहि तं करमि जणद्दण ४
तुहुं गुरु माय-वप्पु तुहुं सामिउ तुहुं सुहि विहुर-तरंगिणि-गामिउ
भणइ मुरारि पइज्ज ण जुज्जइ जइ जेट्ठहो जेट्ठत्तणु भज्जइ
वरि मरियउं ण वुत्तु अहिखित्तउ तं भणु जेण होइ अवचित्तउ
पंकयणाह-णाह-उवएसें धम्म-पुत्तु रोसविउ विसेसें ८

घत्ता

अम्हेहिं सव्वेहिं एक्केक्कउ रणे विणिवाइउ।
अक्खु जुहिट्ठिल पइं कवणु णराहिउ घाइउ॥ ९

[१२]

कोंतेण वोल्लइ महु परमत्थें लालिउ पालिउ जेण सहत्थें
सउरि ण वोल्लइ पाण-सहेज्जउ जासु पसाएं हउ रणे दुज्जउ
भीमु ण वोल्लइ विक्कमवंतउ अच्छइ अज्जु-वि जो पहरंतउ
रक्खिउ जेण जलंतए जउहरे णिहउ हिडिंवु हिडिंव-वणंतरे ४
भग्गु किमीरु जडासुरु कीयउ जेण कयंत-णिहेलणु णीयउ
पइं पत्थिवेण कवणु किउ सुंदरु मंडिउ कवड-जूउ दउरोयरु
पइं पत्थिवेण वसुंधरि हारिय दोमइ जणहे मज्झे वित्थारिय
पइं पत्थिवेण किलेस-णिरंतरे तेरह वरिसइं वसिय वणंतरे ८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घत्ता

एम भणेप्पिणु थिउ पुणु-वि किवाण-भयंकरु ।
दिट्ठु अणंतेण णं विज्जु-लग्गु णव-जलहरु ॥ ९

[१३]

पुच्छइ गिरि-गोवद्धण-धारउ कहो किउ असि वि-कोसु पडिवारउ
गग्गर-गिरेण कहिज्जइ पत्थें छिंदमि णियय-सीसु सइं हत्थें
धरिउ धणंजउ जायव-णाहें थोरासण-थेरासण-हत्थें
अज्जुणु माण-गइंदारूढा अप्पावह करंति जे मूढा ४
ते णर होंति णिगोयण-भायण किज्जइ तेण पाणि अप्पायण
आउ हणंतहं आउ णिहम्मइ वड्ढारंतहं मोक्खहो गम्मइ
करि पणिवाउ जुहिट्ठिल-रायहो मुच्चहि जेण णिवद्ध-कसायहो
तो पयंवुरुहइं तव-तोयहो णमियइं णरेण णियंतहो लोयहो ८

घत्ता

मउडु मणोहरु पयवरणहं चंदण-धवलहं ।
मज्झे परिट्ठिउ णं कणय-कलसु विहिं कमलहं ॥ ९

[१४]

ण खमइ धम्म-पुत्तु अहिखित्तउ वच्छ वच्छ लइ अत्थु सइत्तउ
तुहु जुयराउ विओयरु राणउ होउ सव्व-साहणहं पहाणउ
हउं पुणु मुयहं मज्झे ण जियंतहं मुहइं णिहालमि किह सामंतहं
जमल णिएज्जहि जामि तवोवणु करमि काय-वाया-मण-गोवणु ४
इंदिय दममि महव्वय पालमि सिद्धि-वरंगण-घण-थण लालमि
एम भणेवि किर जाइ तवोवणु करयले लग्गु ताम महुसूयणु
कह व कह व णर-णाहु खमाविउ अज्जुणु चरणंवुरुह धराविउ
पगुण-गुणग्गिम-गणणा-गोयरु रुण्ण परोप्परु धरेवि सहोयरु ८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घत्ता

तेरह वरिसइं जो करुणु महारसु धरियउ।
णयण-पवाहें एवंहिं सो णीसरियउ॥ ९

[१५]

रुण्ण वे-वि कइ-केयण-राणा आहव-कणएं दुज्झर-माणा
रुण्ण वे-वि स-जउहर-जूयइं दुक्खइं जाइं आसि अणुहूयइं
रुण्ण विचित्तइं विहियाहम्मइं कियइं जाइं घरे मच्छहो कम्मइं
रुण्ण मइंतावतुत्तर-दुक्खें(?) रुण्णइं हएण पियामह-रुक्खें ४
रुण्ण सुहद्दाणंदण-सोएं रुण्ण हिडिंवा-सुयहो विओएं
रुण्ण विराड-दुमय-सिर-छेएं रुण्णायरिय-पंडि-उव्वेएं
रुण्णा ताव जाव अविसायहो णिग्गय कह-वि वाय मुहे रायहो
णंद वद्ध जय जीव धणंजय महु महि देहि सुरारि-पुरंजय ८

घत्ता

एम विसज्जिउ गउ देवयत्त-रहे चडियउ।
दीसइ कण्णहो णं विज्जु-पुंजु सिरे पडियउ॥ ९

[१६]

वोल्लाविउ अज्जुणेण जणद्दणु तिह करि जिह हम्मइ रवि-णंदणु
जंपइ जायव-णाहु तुहारी एह जे महु वि चिंत वड्डारी
दुज्जउ कण्णु होइ समरंगणे तुज्झु मल्लु पुणु को-वि ण तिहुअणे
एम पसंस करेवि सेयासहो पुणु वोल्लाविउ गुरु कुरु-वंसहो ४
णरेण णरिंद जइ-वि अहिक्खित्तउ तो-वि तिह करे जिह जाइ सइत्तउ
तो हक्कारिउ पंडव-णाहें परिवड्ढिय-महंत-उच्छाहें
अवरुंडिउ परिचुंविउ मत्थए हणु रवि-णंदणु तवणे अणत्थए
होहि किरीडि-मालि अजरामरु णामु पसज्झिउ खंडव-डामरु ८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घत्ता

जाहि जणद्दण पत्थहो परिरक्ख करेवी ।
पइं सु-पसण्णएण मइं पिहिवि सइं भुंजेवी ।। ९

इय रिट्ठणेमिचरिए धवलइयासिय-सयंभुएव-कए
असीइमो सग्गो ।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इक्कासीइमो संधि

खंडव-डामरेण वुच्चइ णरेण परिहविउ जेण परमेसरु।
महुमह मरइ महु सो सुएण सहुं परिरक्खइ जइ वि पुरंदरु॥ १

[१]

गुणु छिण्णु जेण महु णंदणहो धउ पाडिउ पत्थिव-संदणहो
पेक्खंतहो कियवम्महो किवहो सिर-कमलु खुडमि चंपाहिवहो
अह जइ ण णेमि जम-सासणहो तो उप्परि चडमि हुवासणहो
कल्लए समक्खु सव्वहुं जणहुं णर-णरवइ-संति-पुरोयणहुं ४
तवसुयहो समप्पमि वइसणउं भुंजउ कुरु-जंगलु अप्पणउं
गउ एम भणेवि आरुहिउ रहे परिओसिय सुरवर सयल णहे
तो उट्ठिउ वाउ पदक्खिणउ णं कण्णज्जुण रण-सक्खिणउ
पासेइउ तो गंडीव-धरु ण उ जाणहुं होसइ कवणु डरु ८

घत्ता

वुत्तु जणद्दणेण रिउमद्दणेण को मल्लु पत्थ तउ तिहुयणे।
वीयराउ तहो तावहिं जिवहो करि तो वि पयत्तु रणंगणे॥ ९

[२]

पहरंतइं ताव स-वाहणाइं दिट्ठइं कुरु-पंडव-साहणाइं
घाइय वाइत्त-वि तलपयइं धुर-धवल-धूरि-धूसर-धयइं
धय-माला-किय-घण-डंवरइं असि-जलण-जाल-जलियंवरइं
तरवारि-वारि-वारिय-हयइं सरथो रथंभ-थंभिय-गयइं ४
संदण-संदाणिय-संदणइं एक्केक्कइं किय-कडवंदणइं
संचूरिय-चामर-चिंधाइं सोणिय-वाहिणि-वहंत-पहाइं
खुप्पंत-पत्ति-हय-गय-रहइं कललंत-भूय-डाइणि-सयइं
णं दिण्णइं जमेण वे-वि पयइं +++++++++++++ ८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घत्ता

पंडव-कुरुव-वलइं किय-कलयलइं दिट्ठइ णरेण पहरंतइं।
सुट्ठु छुहाइयए णिव्वाइए णं जममुहे कवलु घिवंतइं ॥ ९

[३]

तहो मज्झे दिट्ठु आओहणहो सच्चइ भिडंतु दुज्जोहणहो
कियवम्में णउलु पडिफुल्लिउ विससेणु सयाणीयहो वलिउ
सहएवहो सउणि समावडिउ धट्ठज्जुणु कण्णहो अब्भिडिउ
किउ अकिउ सिहंडिहे उत्थरिउ सुअसवेण दोण-णंदणु धरिउ ४
जुहमण्णुहो चित्तसेण्णु भिडिउ दूसासणु भीमहो कमे पडिउ
सव्वुत्तम उत्तमोज्जु उइउ णं कालु सुसेणहो वि कुइउ
तो दक्खवंतु दामोयरहो गउ अज्जुणु पासु विओयरहो
पाहुणउ कियंतहो मित्तु जिह भंजंतु णरिंदहं माण-सिह ८

घत्ता

कणय-कइद्धएण घडियद्धएण णिहयइं दस-सयइं तुरंगहं।
चउ सय रहवरहं सहुं हयवरहं सय सत्त मत्त-मायंगहं ॥ ९

[४]

तो णिहय-णिसायर-गोयरेण णिय-सारहि वुत्तु विओयरेण
तवतणयावास-पयत्ति-हरु कहि काइं चिरावइ भाइ णरु
सु विसूरइ हियउ महु-त्तणउ परियाणमि ण परु ण अप्पणउ
घरे जाउ जुहिट्ठिलु वणिय-तणु वीसमउ किरिडि स-महुमहणु ४
हउं एक्कु पहुच्चमि पर-वलहो गिरि मंदरु जिह जलणिहि-जलहो
संचूरमि सेण्णइं जेत्तियइं रहु जोयहि अत्थइं कित्तियइं
अक्खइ विसोउ वर-लद्धाइं सद्दूल-चम्म-ओणद्धाइं
वर-कम्मकार-परिमज्जियाइं कलहोय-महारस-रंजियाइं ८

घत्ता

णिसियर-मारणइं भय-कारणइं हरिहर-कमलासण-दत्तइं।
अत्थि महाउहइं जिह गहमहइं सोणिय-वस-मासासत्तइं ॥ ९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[५]

सिल-सियहं सुवण्ण-पुंखधरहं रहे सट्ठि सहास महा-सरहं
णारायहं दुइ दस कण्णियहं परिसंख ण अवरहं वण्णियहं
परिपुच्छिउ पुणु-वि विओयरेण रणु वहिरिउ कहि कहो मलहरेण
णासंति कासु कुरु-साहणाइं ओहत्थइं चूरिय-वाहणाइं
सव्वुप्परि काइं परिप्फुरइ णं सुर-विंवु किरणइं करइ
धुरि कहइ णिसायर-डामरहो एहु सद्दु सुणिज्जइ जलहरहो
महुमह-मुह-कुहराऊरियहो अण्णु-वि सेण्णहो संचूरियहो

घत्ता

कणय-कइद्धउ मणि-मउड-गउ विप्फुरइ जासु दिहि देंतउ ।
सिहि-सिह-ससकरु गंडीवधरु एहु दीसइ अज्जुणु एंतउ ॥

[६]

तं णिसुणेवि रहसुच्छलियउ आणंदु पणच्चिउ पवण-सुउ
णर णंद वद्ध जिउ जाव धर गिरि-चंद-दिवायर-मयरहर
णक्खत्तइं वसुह-वि दिसि विदिसि जायइ गयणंगणु दिवसु णिसि
पइं होंतें णंदइ पंडु-कुलु पइं होंतें आहवे हउं अतुलु
पइं होंतें होसइ भू-भयहो आवग्गी वसुमइ तव-सुयहो
पइं होंतें सउरि सणेहमउ पंचाल सुहद्दउ अइयवउ
पइं होंतें कोंतिहे परम दिहि पइं होंतें जमलहं जमल-णिहि
पइं होंते उण्णइ सुहियणहो पइं होंते खउ रवि-णंदणहो

घत्ता

तुहुं जस-महुयरउ अयरामरउ णिय-पगइए पंडुर-गत्तउ ।
अच्छउ जग-कमले दिस-वलय-दले सुर-गिरि-मयरहं(?) दासत्तउ ॥

[७]

तो भणइ भीमु परितुट्ठु हउं लइ गाम चउद्दह दासि सउ
रह तीस वीस साओग गय चालीस महाजाणेय हय

तहिं काले किरीडि परावरिउ अवरोप्परु दिट्ठु वणावरिउ
पोमाइउ पवण-सुएण णरु वलु सयलु पधाइउ ताव परु ४
परिवेढिउ गय-गंडीवधर णं मेहें हिमयर-अहिमयर
अज्जुणेण णिवारिउ सप्फुरेहिं वइहत्थिय-वच्छदंत-खुरेहिं
णाराएहिं तीरिय-तोमरेहिं णालिय-वाराह-कण्ण-सरेहिं
थिर-थूणाकण्णहिं कण्णिएहिं अवरेहिं सिलीमुह वण्णिएहिं ८

घत्ता

कंपिउ कुरु-वलु जिह उवहि-जलु केत्थु वि साहारु ण वंधइ।
दुग्घर-वासु जिह कुरु-णाहु तिह रणु तुट्टु तुट्टु पडिसंधइ ॥ ९

[८]

भीमेण-वि भीम-परक्कमेण दस णाय-सहस वल-विक्कमेण
किउ स-सर-सरासणु भुय-जुयलु कप्परिउ खुरुप्पेहिं कुरुव-वलु
हय पंच सहास तुरंगमाहं तद्दुगुण-मत्त-तंवेरमाहं
दुइ लक्ख पयत्थहं किंकराहं सउ कणयालंकिय-रहवराहं ४
परिसक्कइ मारुइ जहिं जे जहिं रुहिर-णइ पयट्टइ तहिं जे तहिं
तो पडियारुद्धाओहणेण पट्ठविउ सउणि दुज्जोहणेण
सउ भाइहिं धाइउ संमुहउ णं मत्त-गइंदहो मत्त-गउ
पावणिहे थणंतरे भरिय सर भिंदेवि तणु-ताणु पइट्ठ धर ८

घत्ता

भीमें पाणहरु पट्ठविउ सरु किउ सत्त-खंडु गंधारें।
कोंति-सुयहो तणउं वाणासणउं पाडिउ अवरेण कुमारें ॥ ९

[९]

धणु अवरु लएवि धणुद्धरेण सर सोलह मुक्क विओयरेण
वाणासणु एक्कें दुइहिं धउ पंचहिं सउवलु वच्छयले हउ
जत्तारु चउहिं हय चउहिं हय एवं तहो सोलह वाण गय
सहस त्ति सत्ति मणे अट्ठविय स हिडिंवा-कंतहो पट्ठविय ४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उज्जल लेवि दाहिण-करेण परिपेसिय तहो जे विओयरेण
वम्मीभुय भिंदेवि भूमि गय सउवलेण लइज्जइ चाव-लय
रहु भीमें चूरिउ सउणि हउ कंपंतु महीयले मुच्छ-गउ
विस-जउहर-जूवइं सरेवि मणे णउ खुडिउ सीसु तं चोज्जु जणे ८

घत्ता

दुम्मण-दुम्मणेण दुज्जोहणेण तहिं अवसरे रहु संचारिउ।
तुच्छे दुराउलहो जणे आउलहो णिय गंथु णाइं ओसारिउ॥ ९

[१०]

जं सउणि मामु भीमेण जिउ तं कुरु-जणु कण्णहो मूले थिउ
तारायणु लंछण-ससहरहो णं सुरवर-णियरु पुरंदरहो
धीरवेवि वहूहिं णिरहिवडिउ पंचालहं अंगराउ भिडिउ
सिणि-सुएण विद्धु पंचहिं सरेहिं सहएवें सत्तिहिं तोमरेहिं ४
धङ्ज्जुणेण सत्तहिं णिहउ अणुवेण पंचवीसहिं विहिउ
णउलेण सएण समावडिउ पवणंगएण पंचहिं धरिउ
पंचालि-सुएहिं पंचहिं जणेहिं उरे ताडिउ पंचहिं मग्गणेहिं
तेण-वि तें सहुं ए सव्व जिय वि-तुरंग वि-सारहि वि-रह किय ८

घत्ता

देवेहिं दिण्णु तउ रवि-सुयहो जउ थिउ पंडु-सेण्णु विच्छायउ।
तुट्ठइं कुरु-वलइं किय-कलयलइं कण्णमउ सव्वु जगु जायउ॥ ९

[११]

तो दुद्दम-दाणव-विंद-दमणु गोविंदु महा-खगिंद-दमणु
दक्खवइ भुवंगम-भीम-भुउ अहो अज्जुणु एहु सो सूर-सुउ
सेयायवत्तु करि-कक्ख-धउ हर-हास-हंस-संकास-हउ
अंवुज्जल-विज्जुल-पुंज-पहु वर-वग्घ-चम्म-ओणद्ध-रहु ४
विस-जउहर-जूय-कय-ग्गहहं वण-वसण-णिरिक्खण-गो-ग्गहहं
अवराहहं सव्वहं मूल-दलु लहु आयहो पाडहि सिर-कमलु

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

करि पंडव-जायव-जणहो दिहि   कउरवहं पवड्ढउ सोय-विहि
संतण-विचित्तवीरिय-वमहिं (?)   तव-णंदणु भुंजउ णियय महि   ८

घत्ता

एण जियंतेण   दीसंतएण   अ-सुहच्छी महु वड्ढारी ।
हणु हणु आहयणे   जं महु-वि मणे   जं फिट्टइ चिंत तुहारी ।।   ९

[१२]

दुट्ठेण एण वहु णिट्ठविय   जम-णयरु णराहिव पट्ठविय
वहु सोमय-सिंजय वहुय-जण   वहु कासि-करुस-सयमच्छ-गण
पंचाल-भद्द-चेइवइ-पहु   सिवि-जायव-कइकय-पमुह वहु
चूरियइं स-धयहं स-चामरहं   वीसद्धइं वारह रहवरहं   ४
पइं मइ-मि ण मारइ जाम रणे   लहु ताम धणंजय वइरि हणे
एत्तहे वि पत्थु पडिवक्खवइ   दुज्जोहण-कण्णहुं दक्खवइ
तुहुं सयल कालु गज्जंतु तिह   स-जणद्दणु अज्जुणु हणमि जिह
दीसंति वि ओए ते वीर-वर   गंडीव-धारि-सारंग-धर   ८

घत्ता

वाणर-गरुडद्धय   कंचण-कवय   वाहिय-रह पूरिय-जलयर ।
हणु हणु वे-वि   जण णर-महुमहण   महु देहि पिहिवि सयरायर ।।   ९

[१३]

तं णिसुणेवि अंगराउ चवइ   कहो संकहि कुरुव णराहिवइ
भुव जाम जाम धणु जाम सर   पावंति ताम कउ कण्ह णर
एक्कल्लउ हउं विण्णि-वि धरमि   जिम्व मारमि जिम्व अज्जु मरमि
तो महु जे भडत्तणु णिव्वडइ   ण किरीडि कुलीणहं आवडइ   ४
तो भणइ सल्लु कहिं तणउ जउ   पर पेक्खमि मरणावत्थ तउ
किवं धरिउ धणंजउ एक्कु जणु   अण्णु-वि पुणु जमलउ महुमहणु
एक्कु-वि वहिरइ गंडीव-धणु   अण्णु-वि गज्जइ सारंगु पुणु
एक्कु-वि रणे संख-सद्दु अहिउ   अण्णु-वि पुणु पंचयण्ण-सहिउ   ८

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

घत्ता

एक्कु सुघोस-रहे गिरि-मेरु-पहे अवरेक्कु अवरे रहे चडियउ।
एक्कु कयंत-समु अवरेक्कु जमु को जियइ विहि-मि कमे पडियउ॥ ९

[१४]

तो तावणि-तवण-तणउ हसिउ मद्दाहिव मंछुडु उल्हसिउ
किं वण्णहि तेण स-सउरि णरु किं मइं ण दिट्ठु गंडीव-धरु
मायंदहे दोमइ-पाणि-गहे खंडव-खए तालुयवम्म-वहे
दुज्जोहण-वंधणे धण-हरणे भयवत्त-जयद्दह-वावरणे ४
जाणमि जिह जायविंदु वलिउ जें णिट्ठुरु रिट्ठ-कंठु वलिउ
जमलज्जुण पाडिय गिरि धरिउ अहि दमिउ कंसु उवसंघरिउ
जइ ओए वे-वि मइं णिट्ठविय तो वसुमइ णिप्पंडविय किय
अहवइ समत्तु जइ अणिय-वहे तो णामु चडावमि ससि-फलिहे ८

घत्ता

किव-दुज्जोहणहो वेढहो हणहो रहु धरहो तुरंगम खेयहो।
हउं पच्छए भिडमि जें सिरु खुडमि सउं केसवेण कोंतेयहो॥ ९

[१५]

कुरुवइ-कियवम्म-किवायरिय गुरुणंदण-सउणि समुत्थरिय
एक्कल्लउ अज्जुणु रिउ वहुय गह मिलेवि णाइं एकत्थु हुय
णं सीहहो धाइय मत्त गय ते तिहिं तिहिं वाणेहिं णरेण हय
आयरिय-सुएण सएण धउ तिहिं णरु णारायणु दसहिं हउ ४
पंडवेहिं पिसक्केहिं परिपिहिउ दोसायणि जण्णसेणि णिहिउ
वाणासणु वाणेहिं किउ दु-दलु जत्तारहो तोडिउ सिर-कमलु
किउ खेल्लिउ कुरुवइ वि-रहु किउ सउवलु किय-वंधु कलिंगु जिउ
वलु सयलु-वि सरेहिं कडंतरिउ णीसीहहो करि-कुलु ओसरिउ ८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घत्ता

भंजेवि अलमलइं सव्वइं वलइं पुणु अज्जुणु भिडिउ तिगत्तहं ।
रयणिए जिणेवि गह अवहरेवि पह मयलंछणु जिह णक्खत्तहं ॥ ९

[१६]

संसत्तग-सत्तु-वलइं खणेवि सत्तारह सयइं गयहं हणेवि
रह णउवि खुरुप्पें कप्परेवि अ पमाण तुरंगम जज्जरेवि
गउ अज्जुणु पासु सहोयरहो सो वइअरु कहिउ विओयरहो
जिह धम्म-पुत्तु रवि-सुएण जिउ जिह छिण्णु महद्धउ वि-रहु किउ ४
जिह रणु णल्लियइ णराहिवइ वहु-मच्छरु पवण-पुत्तु चवइ
एक्केक्कें एक्केक्कहो जणहो पइं कण्णहो मइं दूसासणहो
अब्भिडेवि करेवउ चूरणउं फेडेवउ णाह-विसूरणउं

घत्ता

कड्ढिउ जेण चिरु तहो खुडमि सिरु पंचालि-वाल वंधावमि ।
पेक्खंतहो जणहो महसूयणहो पहु पिहिवि सयं भुंजावमि ॥ ७

इय रिट्ठणेमिचरिए धवलइयासिय-सयंभुएव-कए
इक्कासीइमो सग्गो ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बयासीइमो संधि

कण्णहो वीभच्छु पेक्खंतहो गरुडासणहो ।
जिह गयहो गइंदु भिडिउ भीमु दूसासणहो ॥

[१]

वारुणे आसासण्णए केसरे एक्क-पहर-सेसिथिए वासरे
भणइ विओयरु देव जणद्दण णर-मुर-कंस-केसि-महु-मद्दण
पेक्खु महामइ दुम्मइ कुद्धउ कुरुव-कुरंग-कुलामिस-लुद्धउ
जउहरे जलणु जेण देवाविउ जेण दुरोयर-राउ रमाविउ
किउ दोमइहे जेण केस-ग्गहु अद्धु ण दिण्णु समत्थिउ विग्गहु
सो पइसरइ जइ-वि रवि-मंडलु जइ-वि अज्जु रक्खइ आखंडलु
जमु वइसणु पवणु जोण्हायरु मरइ तो-वि दुज्जोहण-भायरु
जइ पडिवण्णउं णउ पडिपालमि तो ण णियत्तमि पहु ण णिहालमि

घत्ता

जइ दिवसु भमंतु ण खुडिउ सिरु दूसासणहो
तो पंकयणाह उप्परि चडमि हुआसणहो ॥

[२]

तुहु मि सहोयरु समरे भिडिज्जहो तावणि-सिर-तामरसु खुडिज्जहो
जेण कुमारहो धणु-गुणु छिण्णउ जेण घुडुक्कउ सत्तिए भिण्णउ
तुहुं हउं जेण-वि रोवाविय जेण सुहद्द हिडिंव रुवाविय(?)
सो जइ जीविउ अज्जु रणुज्जय तो पइं काइ-मि ण किउ धणंजय
राह ण विद्ध ण खंडउ चारिउ तालुयवम्म-विंदु ण वियारिउ
कुरुउ ण रक्खिउ धणु ण णियत्तिउ सिरु भयवत्तहो खुडेवि ण घत्तिउ
ण सुआउहु ण सुदक्खिणु घाइउ णउ अणुविंदु विंदु विणिवाइउ
विद्धखत्तु विद्दविउ ण वासवि कण्णे जियंते जियंत असेस-वि

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घत्ता

किय णरेण पइज्ज जइ ण णिहउ चंपाहिवइ।
तो होसइ भीम महु-वि अज्जु तउ तणिय गइ॥ ९

[३]

एवं भणेवि णरु धाइउ कण्णहो वलिउ भीमु दूसासण-सेण्णहो
जहिं तूरइं समुद्द-घण-घोसइं जहिं कुरु-किंकर-सयइं सरोसइं
जहिं पहरणइं सिला-सिय-धारइं सिह-फुलिंग-रवि-किरणागारइं
जहिं णरवइ कड्ढिएहिं किवाणेहिं जहिं हय मणि-खइयहिं पल्लाणेहिं ४
संदणेहिं सोवण्णेहिं चक्केहिं जहिं गइंद वज्जंतेहिं ढक्केहिं
जहिं अविरलइं महा-धय-छत्तइं जहिं णवंति चामरइं चलंतइं
तहिं रहु वाहिउ पावणि-सूएं वलु अवलोइउ णं जम-दूएं
अहो किव-कण्ण-कलिंग-सुसेणहो आसत्थाम-सउणि-विससेणहो ८

घत्ता

पच्चारिय सव्व जो सक्कइ सो उत्थरउ।
महु कोव-हुवासें लहु दूसासणु पइसरउ॥ ९

[४]

लेहु लेहु आहणहु भणंतेहिं वेढिउ कुरु-साहणेहिं अणंतेहिं
छाइउ पहरणेहिं अपमाणेहिं विज्जुल-माला-फुरण-समाणेहिं
छिंदइ ताइं भीमु विहिं हत्थेहिं णं जेमइ कयंतु विहिं हत्थेहिं
के-वि पाइक्क पिसक्केहिं वारिय के-वि गयासणि-घाएहिं चूरिय ४
झंप देवि गयणंगणे होंती काह-मि कह-मि करइ समसुत्ती
वीस-तीस-पंचास-विहत्तेहिं पडिवउ रहे आरुहइ णियत्तेहिं
पडिवउ करणु देवि कु-वि मारइ खगवइ जिह भुवंग संघारइ
चूरिय दस सहास मायंगहं दस जे महाजाणेय-तुरंगहं ८

घत्ता

थिय कुरुव णिरास को-वि ण भीमहो अब्भिडइ।
वलु दिण्णउं तुज्झु करि कयंत जं आवडइ॥ ९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[५]

कउरव चिंतावंति ण विओयरु जिम जमु जिम कु-वि जमहो सहोयरु
एउ अमाणुस-कम्मु ण अण्णहो णासेवि सरणु सव्व गय कण्णहो
जं अवसेसु सेण्णु उव्वरियउं णर-णाराएहिं तमि-जज्जरियउं
पावणि पत्थ-पुट्ठि परिपूरइ जो जो ढुक्कइ तं तं चूरइ
ता रवि-सुयहो सल्लु दरिसावइ एहु णरु एहु णारायणु आवइ
जिह खय-कालु कालु ण पडिच्छइ किय पइज्ज पइं हणेवि समिच्छइ
एहु सो मोट्टियारु कलियारउ वग-हिडिंव-किम्मीर-वियारउ
णरवइ णिरवसेस परिसेसइ अवुहु व दूसासणु जे गवेसइ

घत्ता

जिह सक्कहु तेवं णिय-सरीर-रक्खा करहु।
छह-घडियहं मज्झे णं तो विहि-मि वे-वि मरहु॥

[६]

पभणइ अंगराउ मद्दाहिव पंडवेहिं परज्जिय पत्थिव
तिह हउं हणमि असेसइं वूहइं हय-गय-रह-वर-रहिय-समूहइं
लइय छत्तु ताम भीमज्जुण जहिं सच्चइ-सिहंडि-धट्ठज्जुण
तहिं रहु वाहि वाहि सुरसुंदर रणु णियंतु जम-धणय-पुरंदर
तो जत्तारें चोइउ संदणु किउ रवि-सुएण घोरु कडमद्दणु
जं ण-वि हुवउ ण होइ ण होसइ रवि व महण्णव-सलिलइं सोसइ
डहइ दवग्गि व तरु-गिव-कक्खइं गरुडु व गसइ भुवंगम-लक्खइं
सीह-किसोरु व करि संतावइ वइवस-महिसु व हय विहडावइ

घत्ता

जणमेजउ भग्गु सच्चइ रण-मुहे वि-रहु किउ।
सिरु खुडेवि स-वाहु इंदधम्मु जम-णयरु णिउ॥

[७]

खुडिउ सीसु जं मालव-णाहहो तं फलु दक्खवंतु अवराहहो
सच्चइ स-धणु स-संदणु धाइउ विससेणहो लहु भायरु घाइउ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कण्णें कण्णएण किर भिज्जइ   सो-वि ति-खंडु सिहंडें किज्जइ
अवरेहिं तिहिं तावणि रणे ताडिय   तेण-वि चाव-लट्ठि तहो पाडिय
धट्ठज्जुण-णंदणु विणिवाइउ   सरु सुअसोम-थणंतरे लाइउ
पंडव-जणु असेसु डोल्लाविउ   णरु णारायणेण वोल्लाविउ
धाउ धाउ धव देहि धणंजय   णं तो मारिय सोमय-सिंजय
णावेवि सुर-वर-धणु सिय-सेवहो   धाइउ सव्वसाइ राहेयहो

घत्ता

जिह मत्त-गइंद   कहि-मि लवंत(?)-समावडिय।
कण्णज्जुण वे-वि   सुरहं णियंतहं अब्भिडिय॥

[८]

गय दिवसहो सवाए हरंतए   सुट्ठु रउद्दे मुहुत्ते वहंतए
भिडिय लिहंत परोप्परु वाणेहिं   छाइउ णहु गिव्वाण-विमाणेहिं
जाउ महंतु महाहउ पत्थहुं   कालवट्ट-गंडीव-विहत्थहुं
लद्धवरहं णिवद्ध-तोणीरहं   कंचण-कवयावरिय-सरीरहं
कुरुव-णरिंद-जुहिट्ठिल-सत्तहं   सेयासहं सिय-चामर-छत्तहं
दिण्ण-धणहं विहलब्भुद्धरणहं   मित्त-हियहं परिरक्खिय-सरणहं
पूरिउ अंतरिक्खु णाराएहिं   णावइ णाय-णिहेलणु णाएहिं
तेहिं भिडंतेहिं भिण्ण भुवंगम   धर थरहरिय स-थावर-जंगम

घत्ता

रवि-पंडु-सुयाहं   णिएवि णिरंतरु वावरणु।
इंदहो आभिट्टु   रावण-रामहं तणउं रणु॥

[९]

तहिं अवसरे आयामिय-भा   मज्झे परिट्ठिय पंच महारह
धट्ठज्जुणु सिहंडि जणमेजउ   उत्तमोज्जु जुहमण्णु रणुज्जउ
पंच-वि भिडिय दिवायर-पुत्तहो   विसय-मणहो णं अत्त-णियत्तहो
पंच-वि पंचहिं सरेहिं परज्जिय   तिहिं तिहिं किय रहचक्क-विवज्जिय

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

सविस-विसम-विसहर-लल्लक्केहिं   हउ सिहंडि वारहेहिं पिसक्केहिं
तिहिं जुहमण्णु थणंतरे ताडिउ   उत्तमोज्जु छहिं कह-वि ण पाडिउ
जाय णिरत्थ णिरुज्जम-चित्ता   भग्ग-रहित्त णाइं णाइत्ता
सिणि-णंदणेण धरिय साओहण   किव-किववम्म-कण्ण-दुज्जोहण

घत्ता

वल-विक्कमवंत   वड्डिय कोह-हुवासणहो।
गउ तेत्तहे भीमु   जेत्तहे रहु दूसासणहो॥

[१०]

दिट्ठु विओयरेण दूसासणु   णं णहणंघण-घणेहिं हुआसणु
णं विणया-णंदणेण भुअंगमु   +++++++++++++
णं छण-गहवइ गहकल्लोलें   णं महि-वलउ जुयक्खय-कालें
णं तंवेरमु सीह-किसोरें   रहवरु वाहि वाहि लइ ओरें
जं विसु दिण्णु चिण्णु तं भंडणु   जं जउहरु तं गोत्तहो खंडणु
कवड दुरोयर जे संचारिय   ते गंगेय-दोण वइसारिय
दोवइ-केस सिलीमुह हूआ   वसण-किलेस जाय जम-दूआ
पंच गाम जे कक्खहं छुद्धा   पंच-वि लोयपाल जिवं कुद्धा

घत्ता

दूसासण थाहि   हउं सो भीमु समावडिउ।
कुलगिरि-सिहराहं   उप्परि वज्ज-दंडु पडिउ॥

[११]

तो कुरु-णंदणेण वोल्लाविउ   तुहुं जे भीमु भणु काइं ण पाविउ
तुहुं जे भीमु विस-घाणिए घारिउ   तुहुं जे भीमु गंगहे पइसारिउ
तुहुं जे भीमु णासेवि गउ जउहरे   तुहुं जे भीमु णिम्मुहु दउरोयरे
तुहुं जे भीमु पंचालि-पराहवे   तुहुं जे भीमु हउं मारमि आहवे
हउं दूसासणु मूलु अणत्थहं   कालु कयंत-मित्तु तउ पत्थहं
दोमइ दासि संढ-तिल पंडव   सीहहो भग्ग सोंड वेयंड व

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कहिं णासहु महु कमवहे पाडिय सयल-वि करमि सिलीमुह-झाडिय
को सहएउ णउलु को अज्जुणु को तुहुं कवणु राउ को तहो गुणु ८

घत्ता

रणंगणहो मज्झे तं वोल्लिज्जइ जं सरइ ।
कुरु-केसरि-विंदे पंडव-हरिणु किं पइसरइ ॥ ९

[१२]

धाइउ तो स-कसाउ विओयरु णच्चइ थियउ दूरु दामोयरु
अज्जु महा पइज्ज परिपुज्जउ धम्म-पुत्तु कुरु-जंगलु भुंजउ
सिद्धु कज्जु लइ अच्छइ थोडउं वद्धउ जण्णसेणि आमोडउं
वाण-पंति वच्छत्थलु भिंदउ असिवरु णिसिय-धारु सिरु छिंदउ ४
आमिसु णेंतु विहंगम उप्परि सेणिउ पियउ हिडिंवा-सुंदरि
डहउ हड्ड-विछड्डु हुवासणु किर चिंतवइ एम गरुडासणु
तो पंडवेण पिसक्केहिं छाइउ कहिं दूसासणु जाहि अघाइउ
किव-कियवम्म-कलिंगहं अक्खहि जिवं दुज्जोहणु जिवं तुहुं रक्खहि ८

घत्ता

दरिसावमि अज्जु सव्वहं दुण्णय-दुमय-फलु ।
रण-देवय-मूले थवमि तुहारउ सिर-कमलु ॥ ९

[१३]

कहि कहि धायरट्ठ परमत्थें कड्ढिय जण्णसेणि कें हत्थें
तो जुयराउ वुत्तु जुयराएं दोवइ करेणायड्ढिय आएं
एहु जे पंडव-परिहवगारउ एहु जे विहल-जणब्भुद्धारउ
एहु जे मयगय-गलगल-थक्कणु एहु जे अलमल-पर-वल-पेल्लणु ४
एहु जे कामिणि-घण-थण-चड्डणु एहु जे दुम्मुह-मुह-ओमड्डणु
एहु जे कंचण-वलयालंकिउ एहु जे णरवर-घाय-किणंकिउ
एहु जे दिण्ण-दाणु सुह-लक्खणु एहु जे सरणाइगय-परिरक्खणु
एहु जे सुरवर-करि-कर-दीहरु एहु जे पंच-फणामणि विसहरु ८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घत्ता

विसु दिण्णउं जेण जेण दुरोयरु घिविय चिरु।
सो इहु करु भीम जेण खुडेव्वउं तुज्झ सिरु॥ ९

[१४]

एम चवंत भिडिय समरंगणे अमर णिहाला थिय गयणंगणे
थरहरंति रहवेण रहंगहं फुडुहुरंति णासउड तुरंगहं
तूरइं हयइं विहि-मि ढुक्कंतहं चावइं करयरंति कड्ढंतहं
सर-सहसइं वियंति संधंतहं गुणु छणछणछणंति विंधंतहं ४
छत्तइं कडयडंति छिज्जंतहं कवयइं खयहो जंति भिज्जंतहं
चिंधइं फरहरंति दुव्वाएं छाइउ णहु णाराय-णिहाएं
अवरेहिं रण महि-मंडलु मंडिउ सेस भडेहिं पहरेवउं छंडिउ

घत्ता

पर एत्तिउ दोसु रणु पेक्खंतहं पत्थिवहं।
जं अणिमिस-दिट्ठि देवें ण किय णराहिवहं॥ ८

[१५]

ताम विओयरेण सर-ताडिउ खंडइं विण्णि करेवि धणु पाडिउ
दु-गुणु ति-गुणु चउ-गुणु गुणु ताडिउ दिण्णउ मग्गणाहं दुइ कोडिउ
एवंहिं णिट्ठियत्थु रणे भग्गउ किह जीवमि दूसासणे लग्गउ
तो वरि करमि एत्थु सण्णासणु एम भणेवि जं पडिउ सरासणु ४
खुडिउ खुरेण सीसु जत्तारहो णं फलु तल-तरुवरहो असारहो
छिण्णु महद्धउ खंडिउ संदणु उरे वारहहिं विद्धु कुरु-णंदणु
तेण वि अवर पवरु धणु लेप्पिणु अवरु महारहु अहिमुहु देप्पिणु
भिण्णु विओयरु णवहिं पिसक्केहिं पुणु तीसहिं भुवंग-लल्लक्केहिं ८

घत्ता

छहिं सारहि विद्धु सत्तहिं विद्धु हिडिंव-वरु।
सइं पावइ दुक्खु जो दूसासणे लग्गु णरु॥ ९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[१६]

तो सहसत्ति सत्ति उप्पाडेवि   भीम-भुयंग-भुएहिं भमाडेवि
मेल्लिय लउडि हिडिंवा-कंतें   जीह ललाविय णाइं कयंतें
णं सउदामिणि मेहहो होंती   धाइय महिहर-सिहरु दलंती
तिह स-तुरंगु स-चिंधु स-चामरु   भीम-गयए संचूरिउ रहवरु
धायरट्ठु घुम्माविउ घाएं   कड्ढिउ मंडलग्गु स-कसाएं
पंडु-सुएण-वि तहो करवालें   सिरु स-वाहु कमलु व सहुं णालें
पाडिउ कउरव-जणहो णियंतहो   पंडव-लोयहो तूरइं दिंतहो
तो भुव वे-वि भीम-उप्पाडिय   पंचवीस जोयण ओरालिय
रेहहिं णह-सुमणस णहे लग्गा   णं तरु-साह दुवाएहिं भग्गा
अवरु को-वि जो पर-तिय गंजइ   सो दूसासणु जिम फलु भुंजइ
कुरु-वलु णट्ठु मुएवि आओहणु   पहउ करेण सक्खि दुज्जोहणु

घत्ता

रक्खसु जिह भीमु   सीसु लेवि दूसासणहो।
संइ भुय-जुयलेण   दरिसावइ गरुडासणहो॥

इय रिट्ठणेमिचरिए धवलइयासिय-सयंभुएव-कए
बयासीइमो सग्गो॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तेयासीइमो संधि

दूसासणे णिहए भीमहो विजए जगे दिण्ण जसोह-पहेणहो।
तिणसमु गणेवि रिउ तं कण्ण-किउ आभिट्टु पत्थु विससेणहो॥ १

[१]

पर-वलइं पणच्चिय तंडवेहिं जय-तूरइं दिण्णइं पंडवेहिं
पंचालिहे चिहुर-णिवंधु जाउ गउ परम-विसायहो कुरुव-राउ
हा भायरु महु सिरे पडिउ वज्जु वद्धाविय किं गंधारि अज्जु
धयरट्ठहो जोइउ वयणु केम थिय णिहुय णराहिव संढ जेम ४
आसंकिउ णियय-मणेण कण्णु मुह-कमलु परिट्ठिउ मसि-सवण्णु
अम्हारिसाह-मि एहिय अवत्थ भीमज्जुण जगु जगडण समत्थ
वोल्लाविउ सल्लें तहिं जि काले दुज्जोहणु णिवडिउ मोह-जाले
तिह करि जिह पंडव खयहो जंति णिय-वंधव-सयणहं होइ संति ८

घत्ता

परिचिंतिउ मणेण रवि-णंदणेण कहिं तणिय संति कुरु-सत्थहो।
भीमहो भीमत्थाणु गय(?) गंडीवु जाम करे पत्थहो॥ ९

[२]

तहिं तेहए अवसरे ण किउ खेउ वोल्लाविउ भीमें वासुएउ
रिणु फिट्टु भडारा एक्कु पवरु अच्छइ दुज्जोहणु पासे अवरु
फेडेवउ तमि तहो तणए अंगे कल्लए दरिसाविए मउड-भंगे
वड्ढंतए तहिं तेहए पमाणे पाइक्कए सयले पलायमाणे ४
जुहमण्णु पधाइउ मग्ग-लग्गु सामरिसु स-पहरणु रह-वलग्गु
पर-कुंजर-जूहहो जिह करेणु जहिं कण्णहो भायरु चित्तसेण्णु
ते ढुक्क परोप्परु घाय देंत णिय-णिय-पहु-णामग्गहणु लेंत
जुहमण्णें सत्त सरेहिं विद्धु रवि-सुएण-वि सो विहिं परिणिसिद्धु ८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घत्ता

पंडव-किंकरेण छिंदेवि सरेण सिरु पाडिउ फलु जिह णीमहो।
ताम समावडियरणे अब्भिडिय धयरट्ठ-पुत्त दस भीमहो ॥

[३]

दुज्जोहण-भायर दस कुमार जलसंधण-गहणं-दंडधार
णीसंगिय-लोलुय-सव्वसंध छ-वि केसरि-विक्कम वसह-खंध
छ-वि सव्वाहरण-विहूसियंग छ-वि सेय-महारह सिय-तुरंग
दुइ सुरवर-करि-कर-वाहु-दंड पासाउह-कवय-महापयंड
दुइ अवर सुवच्चस-व्वाउवेय दस भायर गंधारेय एय
णं सग्गहो णिवडिय सुर-कुमार स-सरासण सरेहिं कियंधयार
दस लोयवाल णं कहो-वि कुद्ध णं सीहें दस-वि गयंद रुद्ध
भीमेण भुअंगम-भीयरेहिं दस दसहिं वियारिय सरवरेहिं

घत्ता

तोडेवि दक्खवइ पडिवउ खिवइ रह-सिहरे पवड्ढिय-दुक्खहो।
लइ सीसुप्पलइं आयइं फलइं दुज्जोहण-दुण्णय-रुक्खहो ॥

[४]

पेक्खेप्पिणु भीसणु पवण-जाउ आसंकिउ णिय-मणि अंगराउ
लक्खिज्जइ भीमहो चरिउ घोरु पवियंभिउ णं केसरि-किसोरु
पोच्छाहिउ(?) सल्लें सूर-पुत्तु चंपाहिउ तउ संकेवि ण जुत्तु
भायर-वह-भय-भग्गाणुराउ पइं संथविएवउ कुरुव-राउ
हउं णिरिणु णराहिव-गउरवाहं तुहुं एक्कु धुरंधरु कउरवाहं
भिडु पत्थहो पंडव खयहो णेहि कुरु-णाहहो वसुमइ जेण देहि
जइ जीवहि तो जय-लच्छि होइ अह मरहि णं सुर-वहु धरइ कोइ
दुज्जोहण दोण-सुयहो समक्खु णिय-पुत्तु भिडंतउ पेक्खु पेक्खु

घत्ता

तहिं अवसरे समरु तोसिय अमरु किउ भीमसेण-विससेणेहिं।
पाएहिं पयरुहेहिं पक्खाउहेहिं णं पहउ परोप्परु सेण्णेहिं ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[५]

वट्टंतए तेहए समर-काले   विससेण-भीमसेणंतराले
रहु वाहिउ णउलें कुद्धएण   रण-रामालिंगण-लुद्धएण
कण्णियहिं पडिच्छिउ कण्ण-पुत्तु   धउ छिण्णु खुरुप्पें थरहरंतु
अवरेण सरासणु किउ दु-खंडु   अवरेण विहंजिउ छत्त-दंडु   ४
तो दिणयर-णंदण-णंदणेण   धणु अवरु लेवि रिउ-मद्दणेण
सर-सप्पेहिं खाविय वर-तुंरग   कलहोय-जाल-मालालि-अंग
रहु मुएवि स-चम्मु स-मंडलग्गु   सहएव-जेट्ठु पहरणहं लग्गु
पर-पक्खिय-गय-पयरक्खण्णु   हय ताम जाम दुइ सहस पुण्णु   ८

घत्ता

असिवर-पहरणहो   एक्कहो जणहो   वहु रह करि जोह तुरंगम।
के-वि मुय के-वि पणय   के-वि कहि-मि गय   णं गरुडहो भएण भुवंगम ॥९

[६]

संचूरिउ किंकर-णर-णिहाउ   तं रविसुय-सुयहो कसाउ जाउ
मद्दी-सुउ अट्ठारहहिं विद्धु   पडिवारउ वहु-वाणेहिं णिसिद्धु
परिपिहिउ जेण सर-मंडवेण   सो छिण्णु किवाणें पंडवेण
विससेणें खंडिउ चम्म-रयणु   णं पाडिउ रण-रक्खसहो वयणु   ४
छहिं असिवरु तिहिं वच्छयलु भिण्णु   विहलंघलु स-कवय-वलय-खिण्णु
गउ भज्जेवि भीमहो रहे वलग्गु   उद्धाणणु पुक्कारणहं लग्गु
अहो अज्जुणु खंडव-डहण वीर   सुरवर-सर-सय-सीरिय-सरीर
ओहु वइरिउ अच्छइ कण्ण-पुत्तु   जिह सक्कहि तिह मारहि णिरुत्तु   ८

घत्ता

वप्पें जसु तणेण   पिसुणत्तणेण   गुणु छिण्णु आसि तव तोयहो।
हउ-मि हयासु किउ   हणु जेण जिउ   पेक्खंतहो कउरव-लोयहो ॥ ९

[७]

तं णिसुणेवि परम-परोवयारि   धीरंतु पत्तु गंडीव-धारि
सुर-कुंडल-मंडिय-गंडवासु   चूडामणि-किरण-करालियासु

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मुहमारुय-पूरिय-देवयत्तु   छण-चंद-रुंद-धवलायवत्तु
वाहिय-रहु जमलीकिय-अणंतु   सेयासु कइद्धउ कुरुव-कंतु   ४
पेक्खेप्पिणु णउलु सभाहयासु   गउ कोवहो तालुयवम्म-णासु
विससेणहो धाइउ सव्वसाइ   मुक्कंकुसु गयहो गइंदु णाइं
परिवारिउ दोमइ-णंदणेहिं   सिणि-दुमयंगरुह-जणद्दणेहिं
जउ-जमल-भीम-जणमेजएहिं   मच्छाहिव-सोमय-सिंजएहिं   ८

घत्ता

जाउ महंतु रणु   परिकुविय-मणु   जिह केसरि मत्त-गइंदहं।
सउणिय-किंकरेहिं   पहरण-करेहिं   दुज्जोहणु भीडिउ कुणिंदहं ॥   ९

[८]

पहिलारउ तहिं घाइउ किवेण   वीयउ कियवम्म-णराहिवेण
तइयउ गुरु-सुएण धणुद्धरेण   सयमेव चउत्थउ कुरुवरेण
पंचमउ वियारिउ सउवलेण   अवरेहिं अवरु जिउ वलु वलेण
विणिवाइय सव्व कुणिंद तेहिं   कुरुवाहिव-पमुहेहिं कउरवेहिं   ४
अण्णेत्तहे किय-कडमद्दणेण   सउहत्थेहिं णउलहो णंदणेण
वइसारिउ महियले मग्गणेहिं   णं घणउलु पवणालग्गणेहिं
अण्णेत्तहे सच्चइ सच्चवंतु   परिसक्खइ पर-वले जह कयंतु
अण्णेत्तहे कुरुहुं-वि खुद्द तोय   णं भिडिय गइंदहं सीह-पोय   ८

घत्ता

तेण भयावहेहिं   वाहिय-रहेहिं   जय-विजय-विवड्ढिय-कोहेहिं।
किव-कियवम्म जिय   रणे वि-रह किय   अवमाण-वाण-संदोहेहिं ॥   ९

[९]

जें मुक्का सुअवइ-खंडिएहिं   ते गउतम-णंदण-भद्दिएहिं
विणिहय कालायस-सरवरेहिं   दिवसयर-किरण णं जलहरेहिं
विजयेण वि हय हय जायवासु   जायवेण वि पाडिउ सीसु तासु
मणि-कुंडल-मंडिय-मउड-धारि   सुर-गिरि-वर-सिहर-महाणुकारि   ४

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

दियवरेण-वि छिज्जइ जयहो सीसु दट्ठोट्ठ-समुब्भडु भिउडि-भीसु
तहिं काले रणंगणे दुज्जएण वोल्लाविउ कण्णु धणंजएण
खल खुद्द पिसुण हय दुट्ठ-भाव अहिमण्णहो जिह गुणु छिण्णु पाव
परिरक्खहि तिह अप्पणउ पुत्तु विससेणु हणेवउ मइं णिरुत्तु ८

घत्ता

जं केस-गहणु किउ गो-ग्गहणु सत्तिए विणिभिण्णु घुडुक्कउ।
णं फलु दक्खवइ सोणिउ घिवइ जमकाउ करोडिहि ढुक्कउ ॥ ९

[१०]

तो पढम-पत्थु पत्थहो पलित्तु णं चित्तभाणु घिय-घडए सित्तु
णिहुयारउ अच्छहि दुव्वियड्ढ वोल्लंतु पलज्जहि किं ण संढ
कड्ढिज्जइ दोमइ दासि जेम पिय-परिहउ सुपुरिसु सहइ केम
उत्थरेवि ण सक्किउ तहिं जे काले एवंहिं गज्जिएण कियंत-काले ४
किय णउल-विओयर सावलेव धणु-कोडिए रल्लिय रोड जेवं
सहएउ समुक्खय-मंडलग्गु समरंगणे मइं सह एउ भग्गु
दुल्लेउ अलेउ अजायसत्तु कह कह व ण णिहणावत्थ पत्तु
रहु खंडिउ साउहु सायवत्तु गउ णिय घरु ल्हसिविय दीण-सत्तु ८

घत्ता

तुम्हेहिं संढ-तिल महुमहु-महिल अवरेहि-मि हासउ दिज्जइ।
महु पेक्खंतहो रिउ खंतहो विससेणु केण जोहिज्जइ ॥ ९

[११]

दुद्धरिसहुं धुणिय-धणु-गुणाहं आलाव जाय कण्णुज्जलाहं
विससेणु ताम सहुं रहवरेण उच्छेहोहामिय-महिहरेण
चल-चक्कवाल-चालिय-धरेण पहरण-गण-भरियब्भंतरेण
तोरविय-तुरंगम-पडिच्छडेण दुप्पवण-पणोल्लिय-धयवडेण ४
धय-मालालिंगिय-णहयलेण वित्थाराऊरिय-महियलेण
पारसव-पुंज-परिपिंजरेण धवलायवत्त-जिय-ससहरेण

रहवरेण तेण थिउ अंतराले कहिं गम्मइ दुम्मय समर-काले
तुहुं अज्जुणु हउं सो कण्ण-पुत्तु आरोडिउ पइं केसरि पसत्तु

घत्ता

थाहि थाहि समरे गंडीव-धरे जालंधरेहिं हेवाइउ ।
एम चवंतएण वंधंतएण(?) सर-सएण धणंजउ छाइउ ॥

[१२]

पडिवारउ दसहिं महासरेहिं भूय-मूले खद्धु णं विसहरेहिं
चामीयर-वाणर-रूव-विद्धु धउ तिहिं वारह कण्णेहिं विद्धु
धणु एक्कें विहिं वे रहवरंग छहिं सारहि चउहिं चउ तुरंग
तिहिं भीमु णउलु सत्तहिं सरेहिं धट्ठज्जुणु अट्ठहिं तोमरेहिं
वारहहिं जणद्दणु तिहिं सिहंडि पंचहिं पंचहिं पंचालि दंडि
पेक्खंतहो कण्णहो पंडवेण विससेणु पिहिउ सर-मंडवेण
धउ धणुवरु सरवर-वरिसु छिण्णु जत्तारु तुरंग-चउक्कु भिण्णु
सण्णाहु वियारिउ वणिउ अंगु स-किरीडि स-कुंडलु उत्तमंगु

घत्ता

खुडिउ धणंजएण रणे दुज्जएण परिओसु देंतु आखंडले ।
णाइं महारहहो णिवडिउ णहहो रवि-विंवु सयं भू-मंडले ॥

इय रिट्ठणेमिचरिए धवलइयासिय-सयंभुएव-कए
तेयासीइमो सग्गो ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चउरासीइमो संधि

विससेणे समत्तए करिवर-कर कइंद-धय।
कण्णज्जुण भिडिय परोप्परु णाइं णिरंकुस मत्त गय॥

[१]

मंदर-सिहर-समप्पह-संदण भिडिय पयंग-पुरंदर-णंदण
कालवट्ट-गंडीव-धणुधर पढम-चउत्थ-पत्थ रणे दुद्धर
पंडुर-पंडरीय सिय-चामर पक्खवाय-वे-भाय-कियायर
विज्जु-पुंज-घण-पुंज-समप्पहं सुरवर-सुंदर अजय महप्पहं
कास-कुसुम-संकास तुरंगम +++++++++++++
रहवर-चक्क-घोर-चूरिय-फणि मउड-मउहोहामिय-दियमणि
तोसिय दससयंसु-सक्कंदण धीरिय-धायरट्ठ-तवणंदण
तूरइं अप्फालियइं पगामइं दुंदुहि-गोमुह-डंवर-णामइं

घत्ता

ओयइं अवरइ-मि रणंगणे देवावियइं पभूयाइं।
जल-थल-णहयल वंभंड णइं णं सयखंडीहूयाइं॥

[२]

गोवद्ध-गोहंगुली-ताण-हत्थेहिं आभिट्टमाणेहिं राहेय-पत्थेहिं
पच्छाइयं अंवरं वाण-लक्खेहिं साणा-सिअग्गेहिं सोवण्ण-पुंखेहिं
णाराय-णालीय-वाराह-कण्णेहिं अण्णण्णवेहिं अण्णण्ण-वण्णेहिं
वे-भाय जायं जयं पक्ख-वाणेहिं ++++++++++++++++
सव्वेहिं वेयड्ढ-सेणी-णिवासेहिं सव्वंसहा-सिंधु-सेलंवरासेहिं
कण्णाविदंगोहिं उब्भिट्ट तक्खेहिं वेयाल-भूयग्गही-जक्ख-रक्खेहिं
दुद्दाणवाइच्च-आइच्च-भिच्चेहिं कालि-महकालि-दुग्गा-दइच्चेहिं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घत्ता

तिहुयणहो मज्झे सिद्धारेण जे जे उत्तम वेस किय।
णिय-णिय-वाहणेहिं चडेप्पिणु ते ते पत्थहो पासे थिय ॥ ८

[३]

अहम-वण्ण चामीयर-वण्णहो सयल-वि पासे परिट्ठिय कण्णहो
विजउ पत्थु पंडव परिओसिय कण्णहो कुरुवेहिं संति पघोसिय
भिडिय वे-वि रणु जाउ भयंकरु णं गह-घट्टणे गहहं परोप्परु
णं विस-गब्भिणि-भीम-भुवंगहं णं गज्जंतहं मत्त-मायंगहं ४
णं गोवइहिं विसम-मय-सिंगहं णं केसरिहिं णहर-पडिलग्गहं
णं णव-घणहं घोर-णिघोसहं णं सरहहं सरहस-सरोसहं
सारहि संचरंति मग्गग्गें रह समंति रह-मंडल-मग्गें
तोसिय पंडव कुरुव-विमद्दें किंपि ण सुव्वइ छण-छण-सद्दें ८
रह-णरवर-गय फोडेवि घाएहिं विण्णि-वि पोमाइय विहिं राएहिं

घत्ता

कण्णजुण्ण-वाण-णिवाएहिं भिण्णइं विण्णि-वि साहणइं।
ओसरियइं सुरवर सयल णहे वण-वियणाउर-वाणाइं ॥ ९

[४]

भिण्णइं वाणेहिं सुरवर-सेण्णइं णट्ठइं णहयले मणे आदण्णइं
वार वार दिण्णइं वाइत्तइं मंदिर-सयइं ससायरे धित्तइं
वार वार परिवड्ढिय-कलयलु वार वार छाइज्जइ णहयलु
वार वार सर-जज्जरियावणि वार वार भिज्जंति महाफणि ४
वार वार कुरु-पंडव-सेण्णइं पुलउ वहंति होंति मसिवण्णइं
वार वार रवि रहवरु खंचइ वार वार देवरिसि पणच्चइ
वार वार उट्ठइ कडमद्दणु वार वार किलिकिलइ जणद्दणु
वार वार णाराय-सहोसेहिं रुहिरइं उच्छलंति चउ-पासेहिं ८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वार वार भिण्णइं धय-छत्तइं पज्झरंति कण्णज्जुण गज्जइं

घत्ता

रणे कालवट्ट-गंडीवहं मंडलि दिंतहं सर-सयइं ।
णं चंद-सूर परिपेसहं किरणइं वाहिरे णिग्गयइं ॥

[५]

कुंडल-जुवलालंकिय-कण्णें णिय-सारहि वोल्लाविउ कण्णें
जइ हउं मरमि किरीडीहे हत्थें तो तुहुं काइं करहि परमत्थें
वुच्चइ अंगराउ जत्तारें जइ मुउ कह-वि खुरुप्प-पहारें
तो सिणि-णयणाणंदुप्पायण मारमि विण्णि-वि णर-णारायण
वसुह समप्पमि कुरुव-णरिंदहो पंडव जंतु णयरु गोविंदहो
कालिय-कंस-केसि-वल-मद्दणु वोल्लाविउ अज्जुणेण जणद्दणु
जइ हउं णिहउ वियत्तण-चावें तो तुहुं काइं करहि सब्भावें
परमासीस दिण्ण सुर-मद्दें णंद वद्ध जय जय जय सद्दें

घत्ता

अजरामरु होहि धणंजय महु जीविएण-वि जियहि फुडु ।
कहु कण्णु जाइ सहुं सल्लेण मइं पहरंतउ पेक्खु छुडु ॥

[६]

एम चवंत कुंति-कुल-दीवा कण्णज्जुण अब्भिट्ट पडीवा
अंतरु कहि-मि ण दीसइ वाणहं जाउ विवाउ गयणे गिव्वाणहं
कउरव-पक्खिएहिं आइट्ठउ जोइसु जोइस-चक्कें गविट्ठउ
चंद-सूर-तारा-वलु जेत्तहे वद्धावणउं रणंगणे तेत्तहे
पंडव-पक्खिएहिं किउ कलयलु तुम्हहं कह उप्पण्णउं केवलु
तारा-चंद वलइं जइ वासरे कहिं गय तो पहरहए अवसरे
जइ आइच्चहो वलु अत्थंतहो तो णंदणहो समरे पहरंतहो
काइं अकारणे करहो पसंसउ जेत्थु कण्हु जउ तेत्थु ण संसउ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घत्ता

एत्थंतरे आसत्थमेण लहेवि सारु आओहणहो।
करि अज्जु-वि संधि पयत्तेण दिण्ण वुद्धि दुज्जोहणहो ॥ ९

[७]

पुणु पुणु दोण-पुत्तु आहासइ अज्जु-वि कुरुवइ कज्जु ण णासइ
अज्जु-वि ते तुरंग ते गयवर अज्जु-वि आण-पडिच्छा णरवर
अज्जु-वि णउ मुच्चहि पाइक्केहिं अज्जु-वि सयल णराहिव-चक्केहिं
अज्जु-वि कामिणि-सत्थु स-णेउरु अज्जु-वि अच्छर-सम अंतेउरु ४
अज्जु-वि सायवत्तु सीहासणु अज्जु-वि णिरुवमु चामर-वासणु
अज्जु-वि रसमसंति वाइत्तइं अज्जु-वि वीरहं धीरइं चित्तइं
अज्जु-वि तुहुं जे राउ कुरु-लोयहो देहि धरित्ति-अद्धु तव-तोयहो
सिरि ताडिउ णरिंदु णं वज्जें वंधव-विरहिएण किं रज्जें ८

घत्ता

पहरंतु वे-वि समरंगणे जिणउ पत्थु जिह आहिरहि।
आवग्गीहोउ विहाणए जिवं महु जिवं तव-सुयहो महि ॥ ९

[८]

तो कण्णज्जुण्णेहिं फुरमाणेहिं विद्धु परोप्परु तिहिं तिहिं वाणेहिं
पुणु सत्तहिं सत्तहिं णाराएहिं छंडिउ रणु कुरु-पंडव-राएहिं
पेक्खा सव्व जाय तहिं अवसरे सुर आसण्ण परिट्ठिय अंतरे
खंडव-डामरेण धणु-हत्थें सरु अग्गेउ विसज्जिउ पत्थें ४
धाइउ जाला-माल-भयंकरु रह-धय-चामर-छत्त-खयंकरु
वारुणत्थु रवि-सुएण विसज्जिउ वायवेण तं सरेण परज्जिउ
पुणु पडिवारउ लइउ णवल्लेहिं तीरिय-तोमर-कण्णिय-भल्लेहिं
वच्छदंत-वइहत्थिय-खुंदेहिं अवरेहि-मि अच्चंत-रउद्देहिं ८

घत्ता

वाणासणि कहि-मि ण माइय छाइउ सहुं णहयलेण रवि।
जिह दुम्मइ कुल-वहु कण्णहो वाणासणि रण-मुहे लग्ग ण-वि ॥ ९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[९]

तहिं अवसरे परिवड्डिय-गउरव तूरइं हयइं पणच्चिय कउरव
ल्हसिउ वइरि पइं जिउ आओहणु पहरु पहरु पभणइ दुज्जोहणु
तो रवि-णंदणेण सर पेसिय णरेण-वि णिरवसेस णीसेसिय
करु करेण अप्फालइ पावणि अज्ज-वि जियइ धणंजय तावणि ४
पहरु पहरु केत्तिउ पडिवालहि हरि विद्दाणउ किण्ण णिहालहि
विस-जउ-जलण-जूय-केस-ग्गह वण-विहि-दाहिण-उत्तर-गो-ग्गह
दिण्ण ण पंचगाम तं संभरु णं तो आयहो थामहो ओसरु
हउं पंडवहं मणोरह पूरमि कण्ण-गयासणि घाएं चूरमि ८

घत्ता

एवहि-मि करमि एक्कंतरु पेक्खंतहो सव्वहो जणहो ।
दुज्जोहण-मउडु मलेप्पिणु देमि रज्जु तव-णंदणहो ॥ ९

[१०]

जिह हय राह सयंवर-मंडवे चारिउ चित्तभाणु जिह खंडवे
जिह जिय तालुयवम्म धणुद्धर जिह विद्दविय सयल जालंधर
जिह सियवत्त-जयद्दह-अंतरे चूरिय भूमिपाल वहु संगरे
तिह वावरु एवंहिं जे धणंजय मं उपेक्खहि सोमय-सिंजय ४
कइकय-कासिराय-मच्छाहिव अवर-वि कण्ण सराहय पत्थिव
हणु हणु महुमाहवेण-वि वुच्चइ अज्जुणु वइरि जियंतु ण मुच्चइ
देहावरणु स-देहउ भिंदहि जाम ण हणइ ताम सिरु छिंदहि
हरि उद्देसिएण लहु-हत्थें आसुग-सहसु विसज्जिउ पत्थें ८

घत्ता

रणे चंपापुर-परमेसरु दीसइ सव्व-सरावरिउ ।
णं असुर-मंति अत्थंतउ दिणयर-किरणेहिं पइसरिउ ॥ ९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[११]

भगवत्थु रवि-सुएण विसज्जिउ तेण सिलीमुह-जालु परज्जिउ
सत्त सरइं संतावइ तावणि तिण्णि-वि णर-णारायण-पावणि
विलिहिय तिहिं तिहिं सरेहिं थणंतरे कुविउ किरीडि मालि तहिं अवसरे
दसहिं पिसक्केहिं णिहउ सहावइ खुडिउ सीसु तालहो फलु णावइ ४
सल्लु चउहिं कण्णु तिहिं ताडिउ धउ अवरेण कह-वि णउ पाडिउ
छाइउ अंगराउ पडिवारउ णं दुक्कमेहिं दुक्कियगारउ
णर-कर-पेसिएण वंभत्थें स-उरगु जगु जगडणहं समत्थें
दस-गुण-सहसुप्पाइउ वाणहं विप्फुरंत-णक्खत्त-समाणहं ८

घत्ता

चउ-सयइं मत्त-मायंगहं दस सहस पवर-तुरंगमहं ।
रह अट्ठसट्ठि सय जोहहं किय आहार विहंगमहं ।। ९

[१२]

जिह णरेण सामंत महिंजय तिह रवि-सुएण णिहय वहु सिंजय
वहु पंचाल मच्छ वहु सोमय कासि-करुस-चेइव वहु कइकय
कालवट्ठ-वल्लरिय वियंभिय णरवर-मुक्क सरासण थंभिय
गुणु गज्जंतु छिण्णु गंडीवहो पच्छइं कासु जाइ धणु जीवहो ४
वइहत्थिय-सएण हउ अज्जुणु सट्ठिहिं सिल-धोएहिं अणज्जुणु
जावरु लेवि सरासणु सज्जिउ जिणेवि समत्थु महत्थु विसज्जिउ
तेण-वि एंतें णहयलु छाइउ कण्णहो हत्थ-ताणु दोहाइउ
पहर-विदुक्खिय कुरुव रणंगणे पक्खि-वि संचरंति ण णहंगणे ८

घत्ता

वारहहिं दसहिं पुणु सत्तहिं संसय-भावि चडावियउ ।
वहु मग्गण धणु ण पहुच्चइ तेण णाइं चिंतावियउ ।। ९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[१३]

तिहिं कण्णेण धणंजउ ताडिउ पंचहिं हरि-सण्णाहु विहाडिउ
तो णरेण अवरेहिं पिसक्केहिं जलण-जाल-माला-लल्लक्केहिं
मोहिउ सयलु सेण्णु गय कउरव सर-मोक्खेण थक्क-णिय-गउरव
पेक्खंतहं सुर-किण्णर-जक्खहं घाइय विण्णि सहस पयरक्खहं ४
पर उव्वीरिउ दिवायर-णंदणु स-धणु स-वाणु स-तोणु स-संदणु
चेयण लहेवि अणेय-पमाणेहिं विद्धु किरीडि थणंतरे वाणेहिं
एम परोप्परु समरु पढुक्कउ सर-जालोलिहिं सव्वु झुलुक्किउ
दिसउ वलंति णहंगणु तप्पइ गिरि कणंति महि-मंडलु कंपइ ८

घत्ता

पर सव्वहो जणहो णियंतहो णयणइं थियइं परिट्ठियइं।
सय वार वार मेल्लंतयहं देवहं कुसुमइं णिट्ठियइं॥ ९

[१४]

ताम फणिंद-फुरंत-फणावलि आइय चंडवेय-अद्दावलि
वेण्णि-वि वाणमएहिं सरीरेहिं थिप्पइ सरेवि कण्ण-तोणीरेहिं
तेण-वि लइय अणेय भुवंगम जाणिय महुमहेण उरजंगम
णिय-सब्भाउ कहिज्जइ मंडवे जे पणट्ठ डज्झंतए खंडवे ४
तो पच्छण्ण होवि अणुवंधें आइय पुव्व-वइर-संवंधें
हणु हणु करि दु-खंड अण्णण्णेहिं अद्धयंद-खुर-थूणाकण्णेहिं
जाम ण पइसरंति पइसरणेहिं रह-गुड-पक्खर-देहावरणेहिं
जाव जणद्दणु अक्खइ पत्थहो ताम पधाइय रवि-सुय-हत्थहो ८

घत्ता

महि कंपिय गयणु पलित्तउ धूमावलिय दिसामुहइं।
किय विण्णि-वि वे-खंडइं णउ भुयंग पर-आउहइं॥ ९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[१५]

गय पडिवारा समरे अणिड्डिय चंपापालहो पुरउ परिड्डिय
अम्हइं चंडवेय-अद्दावलि णं तो पेक्खु फुरंत फणावलि
दुद्धर दुण्णिवार अपरज्जिय पइं अप्पाणमाणेण विसज्जिय
पभणइ सल्लु णवल्लइं अत्थइं मेल्लि मेल्लि रिउ जिणेवि समत्थइं ४
राहा-णंदणेण तो वुच्चइ गयउ केम पडिवारउ मुच्चइ
जं होसइ तं होउ हणंतहो सविसइं पहरणाइं ण मुयंतहो
मणु जूराविउ कउरव-रायहो मंछुडु मुहे अलच्छि विय आयहो
तेण ण मेल्लइ उरगमणत्थइं पंडव-जायव जिणेवि समत्थइं ८

घत्ता

रणे अभउ दिण्णु गंगेएण दोणें अत्थइं छंडियइं ।
ण विमुक्कइ चंपा-णाहेण तिहि-मि कुलइं उवखंडियइं ।। ९

[१६]

तक्खय-तणउ ताव तहिं अवसरे पभणइ मेल्लि मेल्लि तहिं संगरे
हउं सुर-समर-सएहिं असिद्धउ आससेण-णामेण पसिद्धउ
खंडवे दड्ढएण महु मायरि घत्तिय सिहि-जालोलिहिं उप्परि
आइउ तेण वइर-संवंधें मरइ धणंजउ महु विस-गंधें ४
जंपइ चंपापुर-परमेसरु जइ फणिंदु तो एत्थहो ओसरु
मं वोल्लेसइ को-वि विणाणें जुज्झिउ कण्णु भुवंगहं पाणें
विसहरिंदु सयमेव पधाइउ पत्थें छहिं सरेहिं विणिवाइउ
ताम तुरंगम मुहरंगेहिं कह-वि कह-वि साहेवि सव्वंगेहिं ८
धरिय धणंजएण स-कसाएं भिण्णु वियत्तणु सर-संघाएं

घत्ता

मुच्छिज्जइ उम्मुच्छिज्जइ वलइ विरुज्झइ अरि-गणहो ।
किं केसरि सुट्ठु असूरउ गज्जिउ सहइ महाघणहो ।। ९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[१७]

धाइउ तवण-तोउ सेयासहो णाइं इंदु गय इंदब्भासहो
रणु रउद्दु किउ असुर-सुरेहि व रहवरेहिं गंधव्वपुरेहिं व
हयवरेहिं कलहंस-सवण्णेहिं चामर-छत्त-धएहिं सोवण्णेहिं
समर-सएहिं सरीरावरणहिं संचरंति अब्भतंर-करणहिं ४
जिह ण दिवायरु दिसि संभालइ जिह ण को-वि केत्तह- वि णिहालइ
तिह महुसूयणेण स-कसाएं वइरि वरूहु समाहउ वाएं
जिह पाविट्ठु पाव-भर-भारिउ हत्थ-पमाणु धरहे पइसारिउ
वाहणु आउ सरीरु महाउहु दइवे परम्मुहे सव्वु परम्मुहु ८

घत्ता

रवि-सुयहो धरंत-धरंताहो चक्कइं थक्कइं धरणियले।
णिसि-आगमे णाइं णिव्वुड्डइं रवि-ससि-विंवइं उवहि-जले॥ ९

[१८]

तो सविलक्खें चंपाराएं पाडिउ णर-किरीडु णाराएं
हरि पभणइ किं सेरउ अच्छहि वइरि-परक्कम किं ण णियच्छहि
हणु हणु अज्जुणु वहु-वहु-वाणेहिं सत्तुत्तर-सय-धम्मत्थाणेहिं
हणु हणु खंडव-डामर करणेहिं हणु हणु कालकंज-कप्परणेहिं ४
हुणु हणु जालंधर-विद्दवणेहिं हणु हणु विद्धरखत्त-णिव्वहणेहिं
तो कइकेयणेण लल्लक्केहिं विद्धु वियत्तणु दसहिं पिसक्केहिं
पुणु छहिं पुणु पडिवारउ एक्कें देहावरणु भिण्णु अवरेक्कें
रुहिरु पियंतु पत्तु महि-मंडलु रवि-सुउ तेण जाउ विहलंघलु ८

घत्ता

घुम्मंतु णरेण ण विद्दविउ धुणिउ अणंतें कर-जुयलु।
किं गुणु ण छिण्णु तउ णंदणहो जेण ण पाडहि सिर-कमलु॥ ९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[१९]

तो तेण तरुणि-तरणुववण्णें   हरि वारहहिं विद्धु कण्णें
णउइहिं णरु णरेण अपमाणेहिं   पुणु सएहिं पुणु अट्ठाणउइहिं
वण-वियणाउरु रुहिर-जलोल्लिउ   णं अकाले कंकेल्लि पफुल्लिउ
कड्डइ चक्कु ण सुमरइ पहरणु   णिंदइ धम्मु ण धम्में कारणु ४
भारु भारु जो दिण्णु सुवण्णहो   सो गउ कासु वि पच्छए अण्णहो
जइ णिक्खत्तउ धम्मु सहेज्जउ   तो किं मइं रणे जिणइ धणंजउ

घत्ता

रुहु कड्ढि कण्ण जइ सक्कहि   वोल्लावइ गंडीव-धरु।
उप्पज्जइ णेहु सहावेण   जइ-वि ण जाणइ भाइ णरु ॥ ७

[२०]

णिएवि अजुज्झमाणु पिह-णंदणु   तो पभणइ सामरिसु जणद्दणु
हणु हणु कवणु खत्तु सहुं आएं   जसु उप्परि अक्खत्ति किय राएं
जेण कुमारहो गुणु दोहाइउ   जेण घुडुक्कउ सत्तिए घाइउ
तहो अवराह-दुमहो फलु दावहि   छिंदि छिंदि सिरु काइं चिरावहि ४
तो छव्वाण-पमाणें वाणें   विद्धु धणंजएण तुरमाणें
जइ तुहुं सरु गंडीवु सरासणु   जइ हउं अज्जुणु हरि गरुडासणु
धम्म-पुत्तु जइ धम्म-वियाणउ   तो सिरु लेज्जहि पत्त-पमाणउ
एम भणेवि विसज्जिउ पत्थें   पाडिउ उत्तमंगु दिव्वत्थें ८

घत्ता

तहिं काले कवंधु सइत्तउं   रुहिर-पवाहें चच्चियउं।
सिरु सामिहे महि णिव-भाइहे   देप्पिणु णाइं पणच्चियउं ॥ ९

[२१]

णिवडिउ अंगराउ महि-मंडले   दिण्णइं जय-तूरइं पंडव-वले
वहिरिउ भुवणु संख-णिग्घोसें   णच्चिउ भीमसेणु परिओसें

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कहइ जणद्दणु पंडव-सेण्णहो तिहिं भयवत्त-जयद्दह-कण्णहं
जं उव्वरिउ रणंगणे दुज्जउ तं अजरामरु होउ धणंजउ ४
कउरव तट्ठ तणट्ठउ-हत्थ णं कुलगिरि कुलिसाहय-मत्थ
भग्ग महा-विसाण णं वारण णं उक्खणिय-णक्ख पंचाणण
णं उप्पाडिय-दाढ भुअंगम छिण्ण-पक्ख णं पवर विहंगम
सूडिय-साह-णिवह णं पायव णं दिणमणि वहु-घण-भग्गायव ८

घत्ता

भज्जंतए कउरव-साहणे आयामिय-आओहणेण।
धणु लेवि सयं भुव-दंडेण आयासणीउ(?) दुज्जोहणेण ॥ ९

इय रिट्ठणेमिचरिए धवलइयासिय-सयंभुएव-कए
कण्णवहम्मि(?) चउरासीइमो सग्गो ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पंचासीइमो संधि

पाराउट्टए कुरुव-वले   अहिमाण-गइंदारोहणु।
तिण-समु मण्णेवि पंडु-वलु   पर थक्कु एक्कु दुज्जोहणु॥   १

[१]

तं वद्धावणउं विओयरहो   जउ पत्थहो दिहि दामोयरहो
वसुहंतराल-गय-संदणहो   सिर-छेउ दिवायर-णंदणहो
णर-सर-परिचुंविय वाहणहो   पेक्खेवि अवत्थ णिय-साहणहो
मं भज्जहो पभणइ कुरुव-पहु   मरणेण विढप्पइ अमर-पहु   ४
जीवंतहं जय-सिरि संभवइ   को मइं थिए तुम्हहं अहिहवइ
तं णिसुणेवि रोस-वसंगयइं   दस-गुणियइं पंचवीस सयइं
पायालहं पुरउ परिट्ठियइं   गय-घाएहिं भीमहो णिट्ठियइं
धट्ठज्जुण-सरेहिं समाहयइं   तट्ठइं णट्ठइं पिट्ठइं मयइं   ८

घत्ता

वुच्चइ कुरुव-णराहिवेण   सिहि-गल-गवलालि अणज्जुणु।
रहु जत्तार महु-त्तणउं   तहिं वाहि वाहि जहिं अज्जुणु॥   ९

[२]

रहु सणिउ सणिउ सूएण णिउ   णाराएहिं णरवर-णियरु जिउ
वलु सीरिउ सोमय-सिंजयहं   सामीरणि-सउरि-धणंजयहं
ताडिय तिहिं तिहिं तोमरेहिं धय   पंचाल-मच्छ ओसरेवि गय
जो ढुक्कइ तहो तहो देइ झड   रह दलइ विहंजइ हत्थि-हड   ४
अण्णेत्तहे सउणि समावडिउ   सिणि-णंदणु जमलहं अब्भिडिउ
सो तेहि-मि जिणेवि ण सक्कियउ   जगडंतु वलइं परिसक्कियउ
तहिं अवसरे सल्लु झुलुक्कियउ   परिगलिय-पयाउ एवारियउ
जज्जरिय-महारहु वणिय-हयउ   वि-सरासणु णर-सर-छिण्ण-धउ
परमेसर दइउ ताहं वलिउ   वलु तेण तुहारउ णिद्दलिउ   ८

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

घत्ता

मरइ दोणु धट्ठज्जुणहो गंगेउ सिहंडिहे हत्थें।
जइ ण दइउ तो समर-मुहे किं कण्णु णिहम्मइ पत्थें॥ ९

[३]

दुज्जोहण पेक्खु पेक्खु वलइं वण-वियणाउर विहलंघलइं
दुज्जोहण पेक्खु पेक्खु तुरय णं धाउ-धराधर धरणि-गय
दुज्जोहण पेक्खु हत्थि पडिय णं जलहर पलय-पवण-झडिय
दुज्जोहण पेक्खु णिरुद्ध-पह गंधव्व-पुरोवम छिण्ण रह ४
दुज्जोहण पेक्खु सभुय विसह महियले लोलंत भुवंग जिह
दुज्जोहण पेक्खु पलोट्ट धय णं रण-सिरि वेणि णिवद्ध सय
दुज्जोहण पेक्खु सुहड-सिरइं दट्ठोट्ठइं भिउडि-पगासिरइं
दुज्जोहण पेक्खु पडंतु रवि लइ एवंहिं जुज्झावसरु ण-वि ८

घत्ता

तो सिमिरहो पल्लट्टु पहु दिण-मणि अत्थंतु सुहावइ।
ण्हाएवि पच्छिम-मयरहरे जलु पुत्तहो देंतउ णावइ॥ ९

[४]

गउ कुरुव-णराहिउ णिय-घरहो पंचाणणु णं गिरि-कंदरहो
दिट्ठइं सुर-कुसुमालंकियइं कण्णज्जुण-रह परिसक्कियइं
लक्खिज्जइ अंगराउ पडिउ णं वीयउ दिणमणि आवडिउ
णं दिवहो पाकसासणु चडिउ णं केण-वि कणय-पुंजु ठविउ ४
गुण संभरंतु कुरुवइ रुवइ पहु वाह-सणाह धाह मुवइ
अहो परम मित्त परमाहिरहि पइं विणु सुण्णीथिय सयल महि
पइं विणु को पहरइ णरेण सहुं पइं विणु विच्छायउ वयणु महु
पइं विणु वट्टइ टल्लट्टलउं पइं विणु दलु जल-लव-चंचलउं ८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घत्ता

तो पभणइ मद्दाहिवइ दिवि दिवि जुज्झंतु ण थक्कहि।
परए समप्पइ कुरुव-वलु पुणु रुवहि राय जिम सक्कहि ॥ ९

[५]

गरहंतु एम तं कुरुव-पहु संचल्लु सल्लु संजमिय-रहु
जे पडिय मज्झे आओहणहो ते दक्खवंतु दुज्जोहणहो
णइ-णंदण-पमुह धरित्ति-सिय हय-गय-रह कूडायार किय
भययत्त-विहव्वल-वरुण-सुय णीयच्चुय-दीह-सयाउ मुय ४
अड्डड्ड सुदक्खिण अ-सिर किय विंदाणुविंद रण-महिहे थिय
सल-आरिससिंगि अहिद्दविय जलसंध-सुदरिसण विद्दविय
भूरीसव-दूसल-दइय हय गुरु-दूसासण-विससेण मय
ओए-वि अवर-वि सामंत-सय दुज्जोहण-सल्ल णियंति मय ८

घत्ता

थोव-तुरंगमु थोव-गउ थोव-रहु थोव-सामंतउ।
थिउ कुरुवइ-कुलु सयलु जिह मिग सिव विहंग तरु चत्तउ(?) ॥ ९

[६]

एत्तहे-वि कइद्धय-गरुडधय हय-तूर स-कलयल लद्ध-जय
उवसोह देंत थिय पंडु-वले णं चंद-दिवायर गयण-यले
हरि पभणइ जमल-विओयरहं कोंतासि-गयासणि-गोयरहं
सरसड्ढ णिड्ढ णिय-धणु-गुणहं सच्चइ-सिहंडि-धट्ठज्जुणहं ४
स-करुसय-सोमय-सिंजयहं पंचालहं मच्छहं कइकयहं
परिरक्खहु तुम्हइं वावरणु हउं अज्जुणु जाम जाहुं भवणु
संतोसु करेवउ तव-सुयहो सिर-छेउ णिहालउ रवि-सुयहो
गय विण्णि-वि पासु जुहिट्ठिलहो वसुमुइ-समागमुक्कंठुलहो ८

घत्ता

भणइ जणद्दणु पणय-सिरु किं णरवइ गलिय-पयावउ।
घाइउ कण्णु धणंजएण तउ आयउ हउं वद्धावउ॥ ९

[७]

पणवेप्पिणु जय-जय-भायणेहिं वोल्लिज्जइ णर-णारायणेहिं
जय णंद वद्ध वद्धावणउं कुरु-जंगलु भुंजहि अप्पणउं
लइ जाहुं जुहिट्ठिलु पेक्खु रणु जहिं तावणि तोमर-तत्त-तणु
तव-णंदणु पभणइ पणय-सिरु मयरहर-गहिर-रव-गहिर-गिरु ४
महसूयण जाहं पसण्णु तुहुं ते अवसें णर पेक्खंति सुहु
जहिं तुहुं तहिं सव्वइं मंगलइं जहिं तुहुं तहिं वसुमइ-मंडलइं
जहिं तुहुं तहिं दिहि कल्लाणु जउ जहिं तुहुं तहिं अवसें कुरुहुं खउ
मंतोसहि-पगुणीकिय-भुएण संणाहु लइज्जइ तव-सुएण ८

घत्ता

जुत्त तुरंगम चडिउ रहे गउ णरवइ थोवाणियउ।
चालिउ णर-णारायणेहिं णं मेरु महीहरु वीयउ॥ ९

[८]

जय कारिउ णरवइ णरवइहिं सिवि-सोमय-सिंजय-सच्चइहिं
पंचालेहिं मच्छेहिं जायवेहिं अवरेहिं अण्णणय-अवयवेहिं
दक्खविउ कण्णु तव-णंदणहो णं सूरेहिं वित्तु सक्कंदणहो
पाडिय-कवंधु उच्छलिय-सिरु णीसारिउ णाइं तूसेवि रुहिरु ४
जोइज्जइ कांइ वियत्तणहो जो गउ अवसाणु भडत्तणहो
जसु सिरि ण सरीरहो ओसरइ मुह-कमलु कमल-कमला धरइ
धणु जेण दिण्णु ओलग्गणहं ण धरिय णिय-पाण-वि मग्गणहं
सिरु सामिहे देहु वसुंधरहो पूरंतु मणोरह हय हरिहो ८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घत्ता

एम भणेवि णं रुहिरु थिउ गय पंडव णिय-णिय-वासहो ।
हियए विसूरइ कुरुव-पहु महु एक्कु-वि ण हुउ णिरासहो ॥

[९]

ण धरद्धु समप्पिउ पंडवहं आणिउ विणासु पर वंधवहं
सउ पुत्तहं सउ जे सहोयरहं ण पमाणु तुरंगम-किंकरहं
चूराविय सयल-वि मइं जे रणे ण परिट्ठिय सुंदर वुद्धि मणे
गंगेउ सिहंडिहे मरइ जहिं जीवेवए अम्हहं कवणु तहिं
तो पगुण-गुण-गणलंकरिउ सब्भावें भणइ किवायरिउ
णउ अज्जु-वि मइयवट्टु भमइ तउ अज्जु-वि धम्म-पुत्तु खमइ
अज्जु-वि महि-अद्धु समल्लवइ अज्जु-वि सो तुहुं जि णराहिवइ
अज्जु-वि मद्दाहिउ तुह तणउ कियवम्मु सउणि हउं गुरु-तणउ

घत्ता

अज्जु-वि तुज्झु जे वइसणउं सामंत-वि ते-वि तुहारा ।
अद्धोवद्धिए रज्जु करे जो मुवउ सो मुवउ भडारा ॥

[१०]

तो पभणइ कुरुव-णराहिवइ जं माय-वप्प-गुरु सिक्खवइ
तं पइं सिक्खविउ कज्जे थियए किव णवर ण लग्गइ महु हियए
विसु दिण्णु रइय जउ-मंडविय कवडक्खेहिं वसुमइ छंडविय
पंचालिहे किउ केस-ग्गहणु वण-वसणु कराविउ गो-ग्गहणु
खेत्तु-वि ण दिण्णु मग्गंताहं लज्जिज्जइ संधि करंताहं
अज्जु-वि दोमइ थंडिले सुवइ अज्जु-वि सुहद्द धाहेहिं रुवइ
धट्ठज्जुण-वासुएव-ससउ अच्छंति कसाय-सोय-वसउ
ते विण्णि-वि संधि करंति किह महु भीमु पलिप्पइ जलणु जिह

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दिवे दिवे चिंतवइ विणासु मणे   लइ जं होसइ तं होउ रणे

घत्ता

देंतु आसि जो पेसणइं   गंगेय-दोण-किव-कण्णहं ।
सो दुज्जोहणु अज्जु हउं   उवसेव करमि किह अण्णहं ।।   ९

[११]

संतणु विचित्तवीरिय-अवहि   परिपालिय जेण-वि सयल महि
सो केम सेव अण्णहो करमि   भुव जाम ताम करि वावरमि
गुरु-पियर-पियामह खयहो गय   सामंत सहोयर पुत्त-सय
अंगइं ढिल्लारीहुआइं   संसार-सुहइं अणुभूयाइं   ४
अ-पमाणइं दाणइं दिण्णाइं   जस-कुसुमइं जगे विक्खिण्णाइं
वर-वइरि-कुलइं संतावियइं   वहु-सयणइं उण्णइ पावियइं
गुरु वंदिय देवय-पुज्ज किय   महि पंडुसुयहं ण समल्लविय
वे वाहउ हियवउं होउ छुडु   महु एवंहिं मरणु जे रज्जु फुडु   ८

घत्ता

तो पोमाइउ णरवइहिं   सच्चउ धयरट्ठहो पुत्तु ।
पोत्तउ गंगा-णंदणहो   दुज्जोहणु होहि णिरुत्तु ।।   ९

[१२]

दुरुज्झिय-संपय-धणिय-धणु   जं कुरुव-राउ थिउ मरण-मणु
तं सव्वेहिं समरारंभु किउ   जोयणइं विण्णि सण्णहेवि णिउ
वइरिहिं हक्कारा पट्ठवेवि   पुट्ठिहिं हिमवंतु परिट्ठवेवि
सरसइय डेर(?)रइयाओहणहो   किवि विण्णवंति दुज्जोहणहो   ४
सेणावइ कुरुवइ को-वि करे   जो खंधु समोड्डइ समर-भरे
जो कंवुव-कंठु वग्घ-वयणु   जो वसह-खंधु दीहर-णयणु
जो गरुड-परक्कमु पवणजउ   जो दुंदुहि-सायर-मेह-रउ
जो दस-सय-कुंतल-विहुर-धरु   जो सधर-धराधर-धीर-धरु   ८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घत्ता

केसरि-विक्कमु विज्जु-वलु   सुर-करि-कक्ख-सहत्थु ।
तं सेणावइ करहि तुहुं   जो पंडव जिणेवि समत्थु ॥ ९

[१३]

तो पर-वल-सलिलुड्डोहणेण   गुरु-पुत्तु वुत्तु दुज्जोहणेण
तुहुं अम्हहं दोणायरिय-समु   वड्डारउ वुड्ढिए कज्ज-खमु
संगामुव्वरियए णर-णिवहे   सेणावइ किज्जइ कवणु कहे
दोणायणि अक्खइ पत्थिवहो   करि पट्ट-वंधु मद्दाहिवहो ४
सो पंडव जिणेवि समत्थु रणे   परिओसिउ कुरुव-णरिंदु मणे
गउ सल्लहो पासु गइंद-गइ   वसु-हत्थु कयंजलि विण्णवइ
देहि खंधु चहुट्टए समर-भरे   सेणावइ होहि पसाउ करे
तो मद्दाहिवेण समच्छियउ   रण-भरु णिय-सिरि णं पडिच्छियउ ८

घत्ता

कल्लए पंच-वि पंडु-सुय   णिट्ठवमि करेप्पिणु जुज्झु ।
वसुमइ छत्तइं वइसणउं   दुज्जोहण अप्पमि तुज्झु ॥ ९

[१४]

महि परए पेक्खु णिप्पंडविय   वारमइ दसारुह-छंडविय
ण णरिंदु ण भीमु ण महुमहणु   ण धणंजउ जमलहो णेक्कु जणु
ण धरित्ति ण छत्तु ण वइसणउं   पर होसइ सायरे पइसणउं
परिओसु पवड्ढिउ पत्थिवहो   विणिविद्धु पट्टु मद्दाहिवहो ४
जिह दोणहो जिह णइ-णंदणहो   जिह कण्णहो किय-कडमद्दणहो
तिह णंद वद्ध जिय-पंडु-वलु   उज्जालि महारउ मुह-कमलु
तो कहिउ चरेहिं दामोयरहो   रणे पट्टु वद्धु मद्देसरहो
णारायणु समरुक्कंठुलहो   गउ सरहसु पासु जुहिट्ठिलहो ८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घत्ता

कल्लए कुरुव-णराहिवहो तव-णंदण भीमु हणेसइ।
भंजेवि विओयरु गयासणिए णिय-पाएहिं मउडु मलेसइ॥ ९

[१५]

गय-दिणे दूसासणु णिट्ठविउ जम-णयरु स-भायरु पट्ठविउ
भययत्त-जयद्दह सूर-सुय ते तिण्णि-वि पत्थहो हत्थि मुय
गंगेउ सिहंडें जज्जरिउ धट्ठज्जुणेण दोणायरिउ
सव्वहं सर-सीरिय-खत्तियहं परिसंख करेसहो केत्तियहं ४
जमलेहि-मि जमलीहूयएहिं असि-कुंत-वराउह करे किएहिं
जरसिंधु हणेवउ समरे मइं मारेवउ तव-सुय सल्लु पइं
जं वोल्लिउ तेत्थु जणद्दणेण तं इच्छिउ पंडुहे णंदणेण
गउ णियय-णिहेलणु महुमहणु पडिवालउ दिणमणि-उग्गमणु ८

घत्ता

तूरइं देवि भयंकरइं कलयल-रउ करेवि महंतउ।
वलु णीसरिउ जुहिट्ठिलहो णं जगु जे सइं भुंजंतउ॥ ९

इय रिट्ठणेमिचरिए धवलइयासिय-सयंभुएव-कए
संधि पंचासीइहे कण्णवहो समत्तो॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

छायासीइमो संधि

सल्लहो वद्धए पट्टए   सल्लइं हियए ण फिट्टइ ।
पंडव-कुरुव-वलाइं   विण्णि-वि रणे आभिट्टइं ॥ १

[१]

रण-रस-रोमंचिय-पसाहणु   तिगुहु(?) पधाइउ पंडव-साहणु
दिण्ण-तूरु परिवड्ढिय-कलयलु   णर-सामंतहं पहरण-कलयलु
रहवर-गयवर-पहर-भयंकरु   विविहासियायवत्तु सिय-चामरु
देहावरणावरिय-सरीरउ   सायर-गहिरु महीहर-धीरउ ४
तो मद्दाहिव-सउणि-सुसम्मेहिं   कुरुव-णराहिव-किव-कियवम्मेहिं
भय-संताव-दुक्ख-उप्पायणु   सव्व-भद्दु विरइउ आरायणु
वामे पासे णिम्मियउ तिगत्तउ   दाहिणेण हद्दिउ(?)वलवंतउ
पुट्ठिहिं दोणि मज्झे दुज्जोहणु   करेवि वूहु मंडिउ आओहणु ८

घत्ता

सल्ल जुहिट्ठिल वे-वि   सेयायव सेय-महाधय ।
भिडिय परोप्परु णाइं   जूहाहिव मत्त-महागय ॥ ९

[२]

अट्ठारहमए दिवसे विउद्धए   वे-वि वलइं रणे अमरिस-कुद्धए
कह व कह व पडिवालिय-सूरइं   रण-रसियइं देवाविय-तूरइं
किय-कलयलइं समुब्भिय-चिंधइं   भिडियइं उहय-वलग्गिम-खंधइं
धाइय मत्त-गयंद गयंदहं   णं णव-जलहर जलहर-विंदहं ४
धाइय रहवर रह-संघायहं   णं स-पायगिरि गिरिहिं स-पायहं
धाइय पवर तुरंग तुरंगहं   णं मयरहर-तरंग तरंगहं
सामंतहं सामंत पधाइय   सरवर-णियर परोप्परु लाइय
एम रउद्दें णिम्मज्जायहं   विसम-जुज्झु वीहि-मि संजायहं ८

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

घत्ता

एक्क-दु-वहु-वयणइं धाउ-णिरायण-करणइं।
संधिय-सर-णियरइं वलइं णाइं वायरणइं ॥ ९

[३]

तहिं अवसरे पंडवहं स-वूहहं कोडि-भडाहं सहास-वरूहहं
तिण्णि सहास मत्त-मायंगहं दस सहस उव्वरिय-तुरंगहं
कुरु-वले कोडिउ तिण्णि मणूसहं विण्णि लक्ख हयवरहं स-भूसहं
सहसेयारह रहहं रउद्दहं दस सहास मय-मत्त-गइंदह ४
एम चउव्विह किय परिमाणहं पंडव-कुरुव-वलहं भिडमाणहं
किं पि ण सुम्मइ धण-गुण-सद्दें काहल-संख-मउंद-णिणद्दें
मयगल-गल-गल्लरि-उग्गारेहिं रहवर-पवर-चक्क-चिक्कारेहिं
हय-हिंसण णर-णरवइ-हक्केहिं ओएहिं अवरेहि-मि लल्लकेहिं ८

घत्ता

कलयलु पूरइ कण्ण रण-रए दिट्ठि ण पसरइ।
रुहिरे ण जाणहं जाइ तो-वि को-वि भडु पहरइ ॥ ९

[४]

कहि-मि कहि-मि उच्छलिय-महारउ विहि-मि वलहं णं ढुक्कु णिवारउ
ण किउ वयणु णं उप्परि धावइ पत्त-विहुरु गउ भज्जेवि णावइ
भडहं परोप्परु पडिलग्गंतहं असि-वरोह-हम्मंत-हणंतहं
जाय-घाय-संघाय गइंदहं णं उप्पण्ण खयाल गिरिंदहं ४
रुहिरुइं णिग्गयाइं उग्गालेहिं णं सलिलइं पासाय-पणालेहिं
रेल्लउ महि-रेल्लंतु पधावइ दइवें रण-रसु पीलिउ णावइ
तहिं तेहए संगामे भयंकरे हड्ड-रुंड-विछड्ड-णिरंतरे
स-धणु धणंजउ भिडिउ तिगत्तहं णं केसरि करिवरहं पमत्तहं ८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घत्ता

धाइउ पंडव-णाहु मद्दाहिव-विक्कम-सारह।
किवहो विओयरु ढुक्कु जमल वे-वि गंधारह॥

[५]

धट्ठज्जुण-सिहंडि रहसुट्ठिय धम्म-पुत्त परिगरेवि परिट्ठिय
भीमज्जुणेहिं संख आऊरिय मद्दि-सुएहिं गंधार पचूरिय
ताम तिण्णि सुय कण्णहो केरा धाइय जेट्ठ मज्झ लहुयारा
चित्तसेणु सेणामुहु सारउ सच्चसेणु सच्च-वय-धारउ
अवरु सुसेणु सुसेण-समप्पह तेय स-वाह वाह-वाहिय-रह
तिण्णि-वि भिडिय रणंगणे णउलहो आसीविस-विसहर णं णउलहो
मुट्ठि-देसे धणु खंडिउ एक्कें भल्लें भिण्णु भाले अण्णेक्कें

घत्ता

तिहिं धउ तिहिं जत्तारु हय चउहिं लोट्टाविय।
णउलें असिवर-लट्ठि जमेण जीह णं दाविय॥

[६]

विंधइ चित्तसेणु सर-जालें छिंदइ पंडु-पुत्तु करवालें
करणु देवि रिउ रहवरे चडियउ महिहरे विज्ज-पुंजु णं पडियउ
धम्म-रयणु वाम-करे भमाडिउ सिरु असिवरेण हणेप्पिणु पाडिउ
इयर-वि अट्ठ हणेविणु घाइय तिण्णि-वि कण्ण-पुत्त विणिवाइय
कुरु-वाहिणि णासेवए लग्गी दुव्वल गाइ व वाएं भग्गी
रक्खिय कह-वि सल्ल-गोवालें उक्खय-खग्ग-दंड-भुव-डालें
सारहि वाहि वाहि तहिं रहवरु जहिं सोवण्ण-महद्धए ससहरु
जहिं चामीयर-चामर-वासणु जहिं ससि-पंडुरु आयव-वारणु

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घत्ता

जेण जुहिट्ठिलु अज्जु तिक्ख-खुरुप्पेहिं कप्पमि ।
वसुमइ णीसावण्ण दुज्जोहणहो समप्पमि ॥ ९

[७]

तो कोवग्गि-वसारुणिभूएं वाहिउ संदणु सल्लहो सूएं
ताव राउ परिवारिउ पत्थें भीमें भीम-गयासणि-हत्थें
धट्ठज्जुण-सिहंडि-जुजुहाणेहिं अवरेहि-मि एक्केक्क-पहाणेहिं
विहि-मि परोप्परु भारह-मल्लहं रणु पडिलग्गु जुहिट्ठिल-सल्लहं ४
खय-रवि-विंव-समप्पह-वयणहं जलण-जाल-मालारुण-णयणहं
दुव्विस-विसहर-विस-मालावहं दिढ-भुयदंडायड्ढिय-चावहं
सरवर-लिहिय-पिहिय-गयणयलहं भूय-णिणाय-भरिय-गयणयलहं
तूर-णिणाय-भरिय-गयणयलहं ++++++++++++++ ८
धयदंडुब्भिय-सीयाइंदहं सुरवहु-णयण-भमर-मयरंदहं

घत्ता

जाउ महाहउ घोरु हण-हण-सद्दु ण थक्कइ ।
अच्छइ सुरवर-लोउ जमु-वि ण जोएवि सक्कइ ॥ ११

[८]

सल्ल-जुहिट्ठिल किव-धट्ठज्जुणु वे-वि तिगत्त महाहवे अज्जुण
भिडिय परोप्परु जाइय जुज्झइं भग्गाउह-पडिलग्ग-णिजुज्झइं
मद्दाहिवउ हउ सहएवें अवरहो अवर ढुक्कु विणु खेवें
अवरें अवरु पिसक्केहिं पूरिउ अवरें अवरहो रहु संचूरिउ ४
अवरें अवरहो छिण्णु महद्धउ अवरें अवरु समरे ओट्ठद्धउ
जुज्झइं एम अणेयइं जायइं जले जलयर-हिय-णिम्मज्जायइं
ताम विओयरु धाइउ सल्लहो णं एक्केक्कु कोलु एक्कल्लहो
लउडि-महाहउ जाउ भयंकरु सिहि-जालोलि-झुलुक्किय-सुरवरु ८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घत्ता

विण्णि-वि जुज्झिय ताम णिवडिय जाम धरत्तिहिं ।
दइवें मोडिय पाय णं कुरु-पंडव-कित्तिहिं ।। ९

[९]

मद्दाहिवु किवेण अपवाहिउ धम्में जीउ जेम पडिगाहिउ
जम-रूवाणुरूव-भू-भीमें चेयण लहेवि दुव्वोल्लिउ भीमें
वलु वलु सल्ल सल्ल कहिं गम्मइ सीसइं देवि समर-पिडु रम्मइ
जिम तुम्हहं पाडिय समसुत्ती जिम महि दुज्जोहणेण जे भुत्ती
तहिं अवसरे धणु-कवय-सणाहें चूरिउ चेइयाणु कुरु-णाहें
तव-तणएण वहुय णीसेसिय सल्लहो भल्ल चउद्दह पेसिय
चंदसेणु सत्तरिहिं णिसिज्झइ रुद्दसेणु चउसट्ठिहिं भिज्जइ
तिहिं किउ चउहिं भोउ छहिं सउवलु आसत्थामु दसहिं विहिं वयजलु

घत्ता

णट्ठु असेसु वि सेण्णु मग्गण-पवणुद्धूयउ ।
जलु थलु विवरु दियंतु सव्वु जुहिट्ठिलिहूयउ ।। ८

[१०]

तो आरइय-महासर-मंडव सल्लहो सल्लेहिं सल्लिय पंडव
जमल सएण सएण तव-णंदणु सट्ठिहिं णरु सत्तरिहिं जणद्दणु
भीमहो पंचवीस सर लाइय कइकय पंचहिं कह-वि ण घाइय
धट्ठज्जुण-सिहंडि विहिं विहिं दुमय-सुया-सुय पंच-वि तिहिं तिहिं
सयल-वि दसहिं दसहिं पडिवारा पीडिए धम्म-पुत्ते धणु-धारा
सच्चइ-जमल-भीम थिय अंतरे अट्ठहिं पवण-सुएण थणंतरे
णउलें पंचहिं सरेहिं णिसिज्झइ छहिं छहिं तिहिं सहएवें विज्झइ
सिणि-णंदणेण तिसट्ठिहिं वाणेहिं खंडव-डामरेण अपमाणेहिं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घत्ता

एक्कु अणंतेहिं भिण्णु सेल्ल-भल्ल-णाराएहिं ।
तो-वि ण जिज्जइ सल्लु तवसिय जिह स-कसाएहिं ॥ ९

[११]

तो मद्दाहिवेण मद्देयहो सत्तरि सरहं मुक्क अग्गेयहो
पुणरवि परिवड्ढिय-अवलेवहो णउलहो अट्ठ सत्त सहएवहो
पंचवीस सइणेयहो उप्परि णव रायहो भीमहो तेहत्तरि
पत्थहो तीस सट्ठि गोविंदहो सय सहास पुणु णरवर-विंदहो ४
+++++++++++++ पंडु-सुयहं तणु ताणइं भिण्णइं
पंचहिं पंच-वि धय दोहाइय पंचहं पंच महासर लाइय
सयहणि तव-तणएण पउंजिय गय सहएवें समरि विसज्जिय
णउलें सत्ति चक्कु सिणि-जाएं विद्धु विओयरेण णाराएं ८

घत्ता

मद्दाहिवेण सयाइं पंच-वि एक्कए वारए ।
णं इंदियइं गयाइं मोक्खहो जंते भडारए ॥ ९

[१२]

अग्गए वाणहं को-वि ण थक्कइ णीसावण्णु सल्लु परिसक्कइ
जिह जिह वलइं असेसइं चूरइ तिह तिह तव-सुउ हियए विसूरइ
चिंतिउ वड्डु वार स-कसाएं एहु फेडेवउ केण उवाएं
तं तेहउ णिएवि आओहणु मणे परिओसहो गउ दुज्जोहणु ४
पंच-वि पंडु-पुत्त धुउ मारइ मइं वइसणए अज्जु वइसारइ
ताम जुहिट्ठिलेण मद्देसहो चक्क-रक्ख णिय वइवस-देसहो
तो स-वाण-वाणासण-हत्थहो दोण-पुत्तु रणे धाइउ पत्थहो
तो धट्ठज्जुणु भाणुवइ-कंतहो अवरहो अवर समरे पहरंतहो ८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घत्ता

पंडव-कुरुवेहिं एव जुज्झइं कियइं पभूयइं।
हय-गय-सुहड-सिराइं महियले पुंजीहूयाइं ॥ ९

[१३]

ताम धणंजएण गुरु-णंदणु किउ अ-तुरंगु अ-सूउ अ-संदणु
दोण-सुएण मुसलु परिपेसिउ जायरूवमय-पट्ट-विहूसिउ
तमि कइओयणेण उद्धुक्कंतउ(?) खंडइं सत्त करेवि पमुक्कउ
आसत्थामें परिहु विसज्जिउ पंचहिं वाणहिं सो-वि परज्जिउ ४
एवं तिसत्ति-चक्क-गय-मग्गइं चउहिं सरेहिं चयारि-वि भग्गइं
सरहसु धम्मु ताव थिउ अंतरे गुरु-सुउ ताडिउ तिहि-मि थणंतरे
तेण-वि रणे सुवम्मु ओसारिउ सरहु कयंत-णयरु पइसारिउ
रहे आरुहेवि थक्कु गुरु-णंदणु ताम णरिंदहो कुविउ जणद्दणु ८

घत्ता

अ-णिहम्मंतए कण्णे णरु णारायणु णिंदइ।
एवंहिं तव-सुय काइं सल्लहो सीसु ण छिंदइ ॥ ९

[१४]

ताव दिवायरु गउ मज्झण्णहो भणइ जुहिट्ठिलु अग्गए कण्हहो
पइं समाणु वाणासण-धारउ णरु पहरंतु दिट्ठु सय-वारउ
दुमइहे तणए सयंवर-मंडवे सुरहं मंडु डज्झंतए खंडवे
भड-भययत्त-जयद्दह-मारणे विससेणाहवे कण्ण-महारणे ४
भीमु-वि दिट्ठु णिसायर-मारउ कीया-कुरुव-कुल-क्खयगारउ
एवंहिं मइं पहरंतउ जोयहि जमलीहोहि मज्झु रहु ढोयहि
जिवं मद्दियउ मंडु मद्देसरु जिम महु सरणु अज्जु वइसाणरु
लहु रहु वहु-पहरणहं भरावहि करि कलयलु तूरइं देवावहि ८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घत्ता

सच्चइ दाहिण-चक्कें   वामए दोण-खयंकरु ।
पालउ पच्छलु पत्थु   अग्गए थाउ विओयरु ॥ ९

[१५]

जो जेत्तहे आइट्ठु णरिंदें   सो तेत्तहे णियमिउ गोविंदें
वाहिउ रहु पारद्धु रणंगणु   पिहिउ पिसक्क-गणेहिं गयणंगणु
वहिरिउ तिहुयणु तूर-णिणाएं   किं पि ण दीसइ रय-संघाएं
एत्तहे सल्लराय साओहण   एत्तहे भिडिय भीम-दुज्जोहण ४
एत्तहे सच्चइ वलइं णिसिद्धइं   एत्तहे स-धणु धणंजउ विंधइ
एत्तहे सिहंडि रणु पारंभइ   एत्तहे आसत्थामु वियंभइ
एत्तहे धट्ठज्जुणु परिसक्कइ   एत्तहे स-कियवम्मु किउ थक्कइ
एत्तहे णउलु स-भायरु कुज्झइ   एत्तहे सउणि स-संदणु जुज्झइ ८

घत्ता

चामर-छत्त-सयाइं   पेक्खंतहं अमरोहहं ।
जस-खंड इव पडंति   कउरव-पंडव-जोहहं ॥ ९

[१६]

तो धयरट्ठेण सुधीमहो   छिण्णु सरेण सरासणु भीमहो
पाडिउ कंचण-सीहु धयग्गहो   णाइं महामणि णह-सिरि-अंगहो
सत्ति विओयरेण मेल्लिज्जइ   कुरुव-णरिंदु ताम उरे भिज्जइ
सारहि णिहउ ताम कियवम्में   रक्खिउ जीउ णाइं णिय-वम्में ४
मुच्छ-पराणिए कुरु-परमेसरे   धाइय सल्ल-दोणि तहिं अवसरे
णिय-णिय-जुज्झइं मुएवि स-गव्वेहिं   कुरुव-राउ परिवेढिउ सव्वेहिं
तव-तोएण ताम मद्देसहो   ढोइय सर वच्छयलुद्देसहो
तेण-वि तासु एवं अवरोप्परु   जाउ जुज्झु तियसह-मि भयंकरु ८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घत्ता

जमल-विओयर-पत्थ ताम परिट्ठिय अंतरे ।
सव्वेहिं सल्लिउ सल्लु वाहेहिं करि व वणंतरे ॥ ९

[१७]

तो मद्दाहिवेण धणु खंडिउ तव-सुएण कुकलत्तु व छंडिउ
अवरु लेवि तिहिं विद्धु थणंतरे स-सरु सरासणु छिण्णु खणंतरे
विहिं सारहि चउ रहु चउ घोडा लाइय थरहरंत सर थोडा
कुरु-णंदण-पमुहेहिं ओसारिउ पुणु-वि जुहिट्ठिलेण हक्कारिउ ४
थाहि थाहि कहिं जाहि अजंगम दुम्मुह दुच्चारित्त णराहम
पडिणियत्तु अण्णहिं रहे थाएवि वाणासणि वाणासणि लाएवि
विद्धु अजायसत्तु वत्तीसहिं सच्चइ दसहिं विओयरु तीसहिं
अवरेहिं अवर णराहिव भग्गा भीम-महल्ल-सल्ल पडिलग्गा ८

घत्ता

सव्वहं पीड करंतहं दुद्दम-देह-वियारा ।
एक्कहिं मिलिया णाइं विण्णि-वि वुह-अंगारा ॥ ९

[१८]

तो तव-तणुरुहेण तिहिं ताडिउ कह व कह व ण महारहि पाडिउ
अवरें खय-सूरग्गि-समाणें किउ मुच्छा-विहलंघलु वाणें
चेयण लहेवि समुट्ठिउ जय-मणु सीरिउ सर-सएण तव-णंदणु
तेण-वि णवहिं विद्धु णाराएहिं देहावरणु भिण्णु छहिं घाएहिं ४
कुरुवइ-किंकरेण धणु खंडिउ अवरु चाउ चामीयर-मंडिउ
लेवि जुहिट्ठिलेण रहु चूरिउ मद्दाहिवइ णिरंतरु पूरिउ
तेण-वि सहुं भुएहिं विणिभिण्णइं भीम-णरिंदहं कवयइं छिण्णइं
अवरेहिं सरेहिं विहि-मि वे चावइं धरणि-णिवइं सुरधणु-तणु-भावइं ८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घत्ता

सारहि किवेण विहत्तु   सल्लेहिं हय तुरंगम।
पंडव थिय विच्छाया   जिह फड-भग्ग भुअंगम॥ ९

[१९]

पीडिए धम्म-पुत्ते अणुजेट्ठें   सउणिहे धणु पाडिउ आरुट्ठें
सूयहो छिण्णु सीसु हय हयवर   पुणु सय-संख विसज्जिय सरवर
जलु थलु गयणु दियंतरु झंपिउ   सल्लहो कवउ खुरुप्पें कप्पिउ
तेण-वि सहस-धारु सय-चंदउ   लइउ स-मंडलग्गु वसुणंदउ ४
धाइउ घाय दिंतु णित्तिंसउ   णउलहो खंडियाउ रह-ईसउ
दुम्मय-सुएहिं ताम फरु छिज्जइ   भीमें असिवरु दोहाइज्जइ
खग्ग-खंडु फेरंतु मुहुम्मुहु   धाइउ धम्म-सुयहो सवडम्मुहु
विसम दिट्ठि किय णवर णरिंदें   आसीविसेण णाइं भुयइंदें ८

घत्ता

जणु पभणइ पहु को-वि   जगु जे जंतु संधारहो।
सल्लु ण जाणहुं केम   ण हुउ पुंजु रणे छारहो॥ ९

[२०]

विक्कम-सारें णिरुवम-विट्ठें   लइय सत्ति भीमज्जुण-जेट्ठें
स-कुसुम-गंध-धूव-अहिवासिय   हेमदुम-माणिक्क-विहूसिय
घंटा-मुहल पडायालंकिय   तेल्ल-धोय-धारा णिय-वंकिय
मुक्क ढुक्क वोक्कंति ण दिट्ठिय   उरे वम्मइं भिंदंति परिट्ठिय ४
लक्खणु जिह सल्लिउ वच्छ-त्थले   मुउ ओणल्लु सल्लु महि-मंडले
पंडव-वले दिण्णइं वाइत्तइं   कउरव-जोहहं पडियइं चित्तइं
दुज्जोहणु मणेण आदण्णउ   जणु पभणइ तव-णंदणु धण्णउ
सइं पेक्खंतहो आसत्थामहो   जो उव्वरिउ सल्लु संगामहो ८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घत्ता

जइ रिसि-वयणु पमाणु पंडु पयवि तो पावइ।
रज्जु सइं भुज्जंतु धम्मु जे कासु ण भावइ॥ ९

इय रिट्ठणेमिचरिए धवलइयासिय-सयंभुएव-कए
छायासीइमो सग्गो ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सत्तासीइमो संधि

विणिवाइए सल्ले ओहट्टइं गय-वाहणइं ।
दिसि विदिसि गयाइं सव्वइं कउरव-साहणइं ॥ १

[१]

मद्दाहिवे मद्दिए रणे रउद्दे ओहट्टए कउरव-वल-समुद्दे
णिय-धणु-विण्णाण-कियायरेण हक्कारिउ सल्लहो भायरेण
वलु वलु रण-भोयणु देमि धवए कहिं जाहि जियंतें विचित्तकवए
णाराएहिं दसहिं णरिंदु विद्धु पडिवारउ चउवीसहिं णिसिद्धु ४
चामीयर-चंद-महद्धएण सरु पेसिउ वेहाविद्धएण
धणु पाडिउ सारहि हउ णिडाले छहिं वाणेहिं विद्धु थणंतराले
अवरेण सिला-सिय-धारएण भल्लेण भल्ल-भल्लारएण
सिरु छिण्णु णियंतहं कउरवाहं वले दिण्णइं तूरइं पंडवाहं ८

घत्ता

तहिं काले मयंधु गयवइ जिह पर-गयवइहे ।
कियवम्मु स-धम्मु भिडिउ रणंगणे सच्चइहे ॥ ९

[२]

पहाणभूय जायवा तणुप्पहा-जियायवा
सिणिंद-भोय-वंसिया सुरासुर-प्पसंसिया
धरा-धरिंद-धीरया महीयलेक्क-वीरया
गह व्व कूर-भावया गिरि व्व धीर-दावया ४
भमंत-धंत-वंतया हणंत एक्कमेक्कया
महा-रणंगयं गया वियारिया गयंगया
सरोह-विद्धया धया ससूयया हया हया
विमुक्क-वाण-जालया पूरियंतरालया ८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पलंव-वाहु-दंडया गय व्व उद्ध-सुंडया
अ-थोव-कोव-दित्तया सिहि व्व सप्पि-सित्तिया
घण व्व घोर-घोसया फणि व्व वद्ध-रोसया ११

घत्ता

कियवम्मु किवेण पच्छाउहु ओसारियउ।
रहु अग्गए देवि अप्पुणु पुणु हक्कारियउ।। १२

[३]

सिणि-णंदणु छहिं तोमरेहिं विद्धु पुणु सत्तहिं पुणु अट्ठहिं णिसिद्धु
अट्ठहिं आढत्तु अजायसत्तु हय हयवर ताडिउ आयवत्तु
तो राएं रोस-वसंगएण कियवम्मु दसहिं किउ सर-सएण
ओसारिय विण्णि-वि भग्गसोह ते सल्ल-पयाणुव वद्ध-कोह ४
सण्णहेवि पधाइय पंडवाहं णिविडावयत्त-किय-मंडवाहं
सयसत्तु सुवण्ण-महारहाहं गिव्वाण-महागिरि-सच्छहाहं
दुज्जोहणु मत्त-गएण पत्तु सिय-चामर-वासणु धवल-छत्तु
सो भणइ म धावहु तुरिउ धाम अवरइ-मि वलइं पावंति जाम ८

घत्ता

णिय पहुण गणेवि हय-मुइंग-दडि-काहलइं।
धाइय पाइक्क जहिं सव्वइं पंडव-वलइं।। ९

[४]

जायवं महारणाइं भूमि-वेर-कारणाइं
एक्कमेक्क-मारणाइं कुंभि-कुंभ-दारणाइं
पत्त-रत्त-पाउसाइं कड्ढियंत-फेप्फसाइं
घोर-घाय-घोलिराइं छिण्ण-टंक-लोलिराइं ४
हड्ड-रुंड-दाविराइं +++++++++++
सोणिओह-रप्पिराइं अंत-माल-गुप्पिराइं
चप्पिया मया मएहिं भग्गया गया गएहिं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आहया हया हएहिं विद्धया धया धयेहिं ८
पीडिया भडा भडेहिं फेडिया थडा थडेहिं
एवं ताइं जुज्झियाइं जाम जीव-उज्झियाइं

घत्ता

एक्कइं दीसंति भीम-गयासणि-चूरियइं।
अवरइं णासंति सेण्णइं णर-सर-पूरियइं॥ ११

[५]

तहिं भीमें दप्पुप्पेहडाहं सहसेक्कवीस चूरिय भडाहं
तो मयगल-भुवणे कल्ल-मल्लु ओराइउ अवरु किराय-सल्लु
स-सरासणु स-सरु असेय-देहु णं स-धणु स-धारा-वरिसु मेहु
भद्देण मत्त-तंवेरमेण अइरावय-करव-मणोहरेण ४
सव्वाहरणालंकरियएण परिभमिर-भमर-झंकारिएण
मय-जल-कद्दमिय-महीयलेण पंडव-वलु विलुलिहिं मयगलेण
धठ्ठज्जुणेण तिहिं सरेहिं विद्धु पंचहिं सरेहिं पडीवउ णिसिद्धु
विवरेवउ करे पहरेहिं पयट्टु किउ कलयलु भिल्लाहिउ वियट्टु ८

घत्ता

कह कह-वि गइंदु मद्दंकुसेण णियत्तियउ।
वल-सायर-मज्झे णं गिरि-मंदरु घत्तिउ॥ ९

[६]

ताम राय-राएण वंदिरो मंद-भद्द-गय-चिंध-संधिरो
चंड-चंड-प्ररदंड-डामरो संचलंत-चल-कण्ण-चामरो
काय-कंति-कसणीकयंवरो दंति-दंत-धवलिय-दियंतरो
पाय-घाय-घाइय-रसायलो अग्गहत्थ-धुणिय-कमंडलो ४
पाउसु व्व अणवरय-सीयरो धाइउ कियंतु व्व भीयरो
चूरिया रहा मोडिया धया तासिया हया णासिया गया
वोल्लिया भडा विहडिया घडा तहिं स-संदणो धाइओ दुमय-णंदणो(?)
कुंजरेण उच्चाइओ रहो परिभमाडिओ गिरि-समप्पहो ८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घत्ता

उप्पएवि वलेण   णह-लंघण-करणहो गुणेण।
किउ मंसहो पुंजु   गय-घाएहिं धट्ठज्जुणेण ॥ ९

[७]

सिणि-सुएण-वि सल्लहो खुडिउ सीसु   दट्ठोट्ठु तिसाहिउ भिउडि-भीसु
कियवम्मु पधाइउ तेत्थु काले   थिउ खेमकित्ति विहिं अंतराले
हक्कारिउ जायउ थाहि थाहि   कहिं कुरुवइ-किंकरु हणेवि जाहि
सर-जालें घाइउ भणेवि एम   णव-जलहर-विंदें चंदु जेम ४
तो सर-संधाण-कियायरेण   भीमाहवे भद्दिय-भायरेण
छहिं भल्लेहिं देहावरणु भिण्णु   अवरेण वइरि-सिर-कमलु छिण्णु
कुरुवइ-किंकरेण-वि मद्दिएण   सिणिवइ हक्कारिउ भद्दिएण
तिहिं चिंधु चउत्थें धणु विहत्तु   धउ पंचमेण छट्ठेण छत्तु ८

घत्ता

सच्चइ स-कसाउ   अवरु सरासणु करे लयउ।
कियवम्मु सरेहिं   वि-धणु वि-सारहि वि-रहु किउ ॥ ९

[८]

कुविउ कियवम्मओ   चुण्ण-किय-वम्मओ
वइरि-सर-विद्धओ   विउरयउ विद्धओ
वि-धणु णीसंदणो   घुसिण-पहरण-करो
दिट्ठिविस-अहि-मुहो   धाइओ संमुहो ४
कण्ह-वल-भाइणा   पुण्ण-वल-हाइणा
पाडियं विसरणं   रुद्द-गो-विसरणं
उरुवए सो हओ   भग्ग-मुह-सोहओ
किविण ओसारिओ   णिप्पओसारिओ ८
कुरु-वलं तासियं   कायरं णासियं

घत्ता

पहरणइं हयाइं वर-वाहणइ-मि णिट्ठियइं।
कुरु-णाहहो पासे धाएवि कइ-वि सेण्णइं ठियइं॥

[९]

थिउ किउ कियवम्मु सुसम्मु सउणि सुहदरिसणु दुम्मरिसणु-वि दउणि
अवरो-वि को-वि सोमित्तु सत्तु सो णासेवि णासेवि पडिणियत्तु
तहिं अवसरे जोइय-भुय-वलेण पभणिउ दुज्जोहणु माउलेण
भुंजाविउ पइं अणवज्जु रज्जु एवंहिं जीविएण-वि कवणु कज्जु
जिवं मुउ जिवं मारिय पंडु-जाय सब्भाउ कहिउ इहु कुरुव-राय
गउ एम भणेवि संगाम-कामु तिहिं तुरय-सहासेहिं सउणि मामु
एत्तहे-वि जयासुक्कंठुलेण पेसिउ सहएउ जुहिट्ठिलेण
एत्तहे-वि ण कालें किण्ण णाउ उव्वरिउ वइरि एत्तडउ भाउ

घत्ता

जयकारेवि राउ उक्खय-खग्गहं णिक्किवहं।
धाइउ सहएउ तिहि-मि सएहिं णराहिवहं॥

[१०]

कयं विहि-मि भीसणं रणं सिर-चरण-पाणि-दो-खंडणं
महावहल-गोंदलुद्दामयं सुरंगण-जयंगणं कामयं
महा-हलहलारवुल्लोलयं समुट्ठियं हल्लहल-वोलयं
समुच्छलिय-धूलि-पब्भारयं णिवारिय-चक्खु-वावारयं
खणखणिय-तिक्ख-खग्गोहयं छणछणिय-सिंघ-संदोहयं
हणाहणि-मरंत-पाइक्कयं धुणाधुणि-पडंत-सीसक्कयं
लुणालुणि-त्तुलंत-अंतावलि णिसायर-पियंत-रत्तंजलि
वसावसण-भुत्त-वेयालयं सिवासिव-सियाल-सद्दालयं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घत्ता

तहिं तेहए संगामे भिडिय सउणि-सहएव किह।
सइं दूसेवि सच्चु थिय रउद्द गुरु-सउरि जिह॥

[११]

अण्णेत्तहे कुरुव-णराहिवेण पट्ठविय रहहं सय-सत्त तेण
वेढाविउ रण-मुहे धम्म-पुत्तु सच्चइं सिहंडि-पमुहेहिं गुत्तु
संदाणिय संदण णिरवसेस किय मारुइ-पमुहेहिं धूलि-सेस
अण्णेत्तहे सउणिहे किंकरेहिं विहिं लक्खेहिं खग्ग-भयंकरेहिं
पायालेहिं पंडव-सेण्णु भग्गु सहएवें कड्ढेवि मंडलग्गु
ओसारिय रोसवसारुणक्ख सउवल-पाइक्कहं वे-वि लक्ख
दस सहस तुरंगहं ताम पत्त किय ते-वि रणंगणे वणिय-गत्त
अण्णेत्तहे भीमें दुण्णिवार दुज्जोहण-भायर हय कुमार
अण्णेत्तहे छंडेवि खत्त-धम्मु विणिवाइउ पत्थें रणे सुसम्मु

घत्ता

अण्णेत्तहे सूउ सूय-चउक्कें परियरिउ।
सिणिसुयहो सुएण संजउ जीव-गाहि धरिउ॥

[१२]

तओ गलिय-माणं वलं कउरवाणं
परं पहर-तट्ठं दिसोदिसि पणट्ठं
णिवारिय-णरिंदं वियारिय-गइंदं
विभासिय-रहोहं कडंतरिय-जोहं
वणाउर-तुरंगं जुहिट्ठिल-तुरंगं
विओयर-णिसिद्धं धणंजय-पसिद्धं
जमाउह-विहत्तं अ-दक्खविय-छत्तं
धणुब्भिय-धयग्गं अणुग्गिरिय-खग्गं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सुसामिय-विहीणं मुहंवुरुह-दीणं
खरायव-वितत्तं वसा-रुहिर-मत्तं
तिसा-सुसिय-गत्तं छुहा-छमछमंतं
गयं कहि-मि सेण्णं मुहं तहि-मि अण्णं

घत्ता

किव-गुरुसुय-भोय तिण्णि-वि णासेवि कहि-मि गय।
णं मत्त-गइंद केसरि-णहर-पहर-पहय ॥

[१३]

तहिं अवसरे सउणिहे णंदणेण सुर-णयर-समप्पह-संदणेण
सत्तरिहिं सरेहिं सहएउ विद्धु तेण-वि तेणवइहिं पडिणिसिद्धु
अवरेक्कें पाडिउ छत्त-दंडु अवरेक्कें धणुवरु किउ दु-खंडु
किर कुरुव-णराहिव रणु ण भग्गु +++++++++++++
णिय-सुय-विओय-विहलंघलेण सहएउ विद्धु तिहिं सउवलेण
धट्ठज्जुणु पंचहिं छहिं सिहंडि णण(?) थरहरंत लाइय तिकंडि
पवणंगए दह वारह णरिंदे सिणि-तणए सट्ठि सत्तरि उविंदे

घत्ता

सहएवें छिण्णु सउणिहे समरे विअक्खणहो।
उद्दालिउ णाइं दइवें धणु णिल्लक्खणहो ॥

[१४]

तो सउणि-मामेण संगाम-कामेण
णिय-सामि-सत्तेण सेयायवत्तेण
सिय-चामरोहेण रह-मत्थयत्थेण
फर-रयण-हत्थेण कड्ढिय-किवाणेण
आभिट्टमाणेण +++++++++++
छिण्णाइं सयलाइं रिउ-वाण-जालाइं
तो भीम-पमुहेहिं उत्थरेवि समुहेहिं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पर-मंडलग्गाइं तहो दो-वि भग्गाइं ८
गंधार-राएण वड्ढिय-कसाएण
पडिहयउ पासेण मुच्छाविओ तेण

घत्ता

तो पंडु-सुएण चेयण लहेवि समच्छरेण ।
गंधारहो दिट्ठि घत्तिय णाइं सणिच्छरेण ।। ११

[१५]

तो सउणिय-मामें लउडि घित्त कुलदेवय णं चंदण-विलित्त
स विमद्दिय मद्दिहे णंदणेण णं पूयण पुव्वे जणद्दणेण
सहसत्ति सत्ति सउवलेण मुक्क तडि तडयडंति णं गिरिहे ढुक्क
सा किय ति-खंड णउलोयरेण णं पिहिवि अद्ध-चक्केसरेण ४
तो सउणिय-मामें घित्तु सल्लु दुब्भेल्लु भल्लु भल्लेरु भल्लु
विणिवारिउ तमि-सर-मंडवेण विहिं वाहउ छिण्णउ पंडवेण
अवरेण भुअंगम-विब्भमेण खय-काल-कयंत-जमोवमेण
कालायस-खुरेण सिला-सिएण वलि-गंध-धूय-अहिवासिएण ८

घत्ता

सिरु सउणिहे छिण्णु तेण रणंगणु अंचियउ ।
सिरु सामिहे देवि णाइं कवंधु पणच्चियउ ।। ९

[१६]

हए मद्दिपुत्तेण गंधार-राएण णरिंदाण भंगे असेसाण जाएण
वले पंडु-पुत्ताण तुट्ठा-पहुट्ठाण थिए भंगमग्गुज्जए धायरट्ठाण
जुजुच्छू पिहा-पुत्त-जेट्ठस्स सिट्ठं जया तुम्ह सव्वाण वीराण इट्ठं
तया णेमि अंतेउरं ताय-पासं सयं जाउ महिवट्ठु दुज्जोहणासं ४
पुरं जत्थ तं हत्थिणामंतिमल्लं महाराय-रायाहिवाणं पहिल्लं
पमोक्कल्लिउ तेण तं तत्थ णीयं रुवंतं कणंतं महासोय-लीयं
ठियं गंपि गंधारि-पायाण मूले भुवंगी-समूहं व हुयामराले(?)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जुजुच्छू जणेरेण एवं पवुत्तो तुवं जाहि मा कुप्पिही धम्म-पुत्तो ८
ण दुज्जोहणे जीवमाणे अजुज्झं वरं पंडवा वंधवा होंतु तुज्झं

घत्ता

तं वयणु सुणेवि गउ रहवरेण तुरंतु तहिं ।
णच्चइ विहुणंतु भीमु सयं भुव-जुयलु जहिं ।। १०

इय रिट्ठणेमिचरिए धवलइयासिय-सयंभुएव-कए
सत्तासीइमो सग्गो ।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अट्ठासीइमो संधि

णिय-सेण्णु असेसु-वि खयहो गउ   णिद्दंधइयउ संवरइ ।
एक्कल्लउ कुरुव-णराहिवइ   वास-महासरे पइसरइ ॥ १

[१]

[दुवई]

वंधव-सयण-सोय-परिपूरेण ण-किय-दिसावलोयणो ।
अट्ठारह णिसाहय णिद्दालस-वस-घुम्मंत-लोयणो ॥

कह-वि कह-वि थोवंतरे जाएवि   सरवर-तीरे तेण तहिं थाएवि
रइयंजलि-करेण उल्लाविय   पंच-वि लोयवाल वोल्लाविय
उप्परि जाम सीसु णिय-खंधहो   तावं ण सरणु जामि जरसंधहो ४
जाम सहेज्जियाउ वे वाहउ   तावं धरित्तिहे हउं जे सणाहउ
तइयउ दियहु जाम थिरु तिट्ठइ   कउरव-सेण्णु ताम णउ णिट्ठइ
जाम चउत्थी हत्थि महागय   ताम जंति कउ वइरि अहम्मय
मइं मारेवा पंच-वि पंडव   वणे पंचाणणेण वेयंड व ८
मं वोल्लेसइ कुरुवइ णट्ठउ   अच्छमि सलिलहो मज्झे पइट्ठउ

घत्ता

अक्खिज्जहो वत्त महु-त्तणिय   रायहो णरहो विओयरहो ।
सुहु सुत्तउ कुरुव-णराहिवइ   अच्छइ मज्झे महा-सरहो ॥ १०

[२]

[दुवई]

जइ कइयहु-मि भामि पिहि-पुत्तहं तो तुम्हइं जे सक्खिणा ।
मंत पियामहेण जे दिण्णा होंति मते सदक्खिणा ॥

एम भणेवि पइट्ठु महा-सरे   परिमुक्क-मल-कमल-कमलायरे
तहिं विहुरे-वि ण मेल्लिउ माणें   जले णिवण्णु णिय-मंतह पाणें

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

तावं पराइय तिण्णि स-संदण   किव-कियवम्म-महागुरु-णंदण
तिहि-मि तेहिं वोल्लाविउ राणउ   वंधव-सयण-सोय-विद्दाणउ
णाह विउज्झहि केत्तिउ सुप्पइ   जो भावइ सो रणमुहे जुप्पइ
अम्हइं तिण्णि तुहारा किंकर   जिह पर-परहो पयावइ-हरि-हर
पुणु पुणु आयामिय-संगामें   पहु वोल्लाविउ आसत्थामें
जइ पंडव ण छुद्ध जम-सासणे   तो हउं चडमि वलंते हुवासणे

घत्ता

पहु पभणइ तुम्हिहिं सव्विहि-मि   वार-वार वेयारियउ।
अच्छंतु ताम ते पंच जण   एक्कु-वि समरे ण मारियउ॥

[३]

[दुवई]

भिच्च-णराहिवाण अवरोप्परु ए आलाव जावहिं।
भीम-किराय-राय-रायहो अणु-रायावसरे तावहिं॥

ढुक्क पास ओणाविय-मत्था   विरइय कर-कमलंजलि-हत्था
देव देव जले जलयर-क्खोहणु   मंत-जलेण सुत्तु दुज्जोहणु
सो वोल्लाविउ तिहि-मि सहाएहिं   किव-कियवम्म-दोणदायाएहिं
णीसरि णाह चयारि-वि जुज्झहुं   पंडव-भडहं भडत्तणु वुज्झहुं
जइ जम-सासणु ण णिय णिसागमे   तो पइसरहुं जलणे जालुग्गमे
कुरुव-णराहिउ णिद्दए भुत्तउ   मणु(रणु?) अवहेरि करेप्पिणु सुत्तउ
गय ते तिण्णि-वि कहि-मि स-रहवर   अम्हेहिं पत्त वत्त वत्तावर
ते परिपुज्जिय वसुमइ-णाहें   धायउ वलु रण-रहसुच्छाहें

घत्ता

सरु वेढिउ तूरइं ताडियइं   किउ कलयलु हक्कारियउ
दुज्जोहणु णीसरंतु मरहि   संखेहिं णाइं णिवारियउ॥

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

[४]

[दुवई]

सयल-महारहेहिं ढुक्कुल्लिउ(ढुंढुल्लिउ?) कुरु केत्तहे ण दिट्ठउ ।
पुणु उप्पण्ण भंति मणे सव्वहं ढुक्करु जले पइट्ठउ ॥

सयं जुहिट्ठिलेण जोइयं सरं भमंत-छप्पयं धयारियंवरं
कुलीर-कुम्म-मच्छ -डिंडुहाउलं स-सुंसुमार-णक्क-गाह-संकुलं
अरण्ण-मत्त-हत्थि-जूह-डोहियं वलाय-चक्क-हंस-कोंच-सोहियं
पफुल्ल-पुंडरीय-संड-पंडुरं समीरणाहयं तरंग-भंगुरं
पयंग-पाय-वोहियारविंदयं दिवा-पयाव-सुत्त-सप्प-विंदयं
मुणाल-काय-कंति-लद्ध-गारवं खलक्खलंति-लच्छि-णेउरारवं
तुसार-हार-सार-तीर-फेणयं महा-वलार-वोसरंत-घोणयं
अगाह-कद्दमोह-भग्ग-मग्गयं सहाव-भीयरं सहाव-दुग्गयं

घत्ता

हक्कारिउ कुरुवइ तव-सुएण एवमि एवमि धुउ मरणु ।
वरि पहरिउ जणहो णियंताहो ढुक्कउ पंडव-जमकरणु ॥

[५]

[दुवई]

णिव णिवसंति णवर जले जलयर मणुयहं एउ ण जुज्जइ ।
तुहुं अहिमाणें सुहड-चूडामणि अण्णु-वि पुहवि भुञ्जइ ॥

उत्तमे सोमवंसे उप्पण्णउ तहो तेत्तियहो छेय आदण्णउ
संभरु विसु जउहरु कवडक्खउ केस-गाहु वण-वसणावेक्खउ
गो-ग्गहु पंचगावं-अवगण्णणु जण्णसेणि-दासत्तण-मद्दणु
णिरवसेस मारावेवि राणा अच्छिउ जले पइसिरेवि अयाणा
णीसरु णीसरु आयहो थामहो करि आरंभु पुणु-वि संगामहो
जइ पंचह-मि एक्कु पइं मारिउ तो महि तुहुं जि भुंजि कें वारिउ
सरहसु कुरवराउ आहासइ किं हरिणहं हरिणाहिउ णासइ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णवर णराहिव णिद्दए भुत्तउ   तेण महासरे पइसेवि सुत्तउ

घत्ता

जा जाहि जुहिट्ठिल ताम तुहुं   हउं णिविण्णु को णीसरउ।
जइ तुम्हहं कारणु जुज्झिएण   तो एक्केक्कउ पइसरउ॥

[६]

[दूवई]

तव-सुय मंदवुद्धि दूसासण सरवरे कवण सुत्तहं।
देहावरण-वूह-जल-दुग्गइं अग्गए रायउत्तहं॥

अप्पुणु पुणु कायरहं पहाणउ   लक्खाहर-विवरेण पलाणउ
थरहरंतु परियट्ठिउ सीमहो   दाहिणे वाहु-दंडे थिउ भीमहो
समर-काले कुप्पुरिसहं भज्जहि   एवंहिं गलगज्जंतु ण लज्जहि
हउं पुणु जइया संकमि पाणहं   णर-णारायण-पेसिय-वाणहं
जिवं तुम्हहं जिवं तुह सामंतहं   तो किं महि देमि मग्गंतहं
सयण-विवज्जिएण सावज्जें   होउ होउ महो करणें रज्जें
तुहुं भुंजहि हउं जामि तवोवणु   अथिरु सरीरु धण्णु धणु जोव्वणु
जर उत्थरइ कयंतु वियंभइ   लग्गमि धम्मे जेण सुहु लब्भइ

घत्ता

विहसेप्पिणु वुत्तु जुहिट्ठिलेण   मं करि अवरु वियप्पणउं।
जो धम्मु सो जि हउं धम्म-सुउ   महु जे समप्पहि अप्पणउं॥

[७]

[दुवई]

जइ तुहुं असरणेण अथिरेण किलामिउ मणुय-जम्मणे।
णीसरु कुरुव-राय तो जुज्झहो विण्णि-वि खत्त-धम्मणे॥

अच्छउ भीमु पत्थु सहुं जमलेहिं   रणपिडु रमहुं णियय-सिर-कमलेहिं
पभणइ कुरु-णरिंदु वहु-जाणउ   तुहुं अम्हहं धयरट्ठ-समाणउ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अज्जुणु जमल वाल ते तिण्णि-वि जुज्झहुं पवण-पुत्तु हउं विण्णि-वि
जइ रहु छंडेवि ढुक्कइ पाएहिं चूरहु एक्कमेक्कु गय-घाएहिं
ताम विओयरेण हक्कारिउ तुहुं मइं पुव्वे जे थुत्थुक्कारिउ
अच्छमि अज्जु कल्ले किर चूरमि णिय-वंधवहं मणोरह पूरमि
ताम णरिंद पइजेणामेल्लिउ लइ जुज्झहुं रहु एहु आमेल्लिउ
मेल्लिउ सीहणाउ अप्फोडिउ तेण रवेण णाइं णहु फोडिउ

घत्ता

तं भीमहो वाहु-सद्दु सुणेवि अमरिसु अंगे ण माइउ ।
दुज्जोहणु मत्त-गइंदु जिह पडिगय-गंधें धाइयउ ॥

[८]

[दुवई]

चंचल-चरण-चालणुच्चालिय सयल धरित्ति-मंडलो ।
चल-चिक्कार-फार-विहडाविय-सेस-भुवंग-चुंभलो ॥

णह-मुह-सिहि-सिह-ताविय-सरवरु पडिरव-खुहिय-सयल-जल-जलयरु
करयल-कमल-तुलिय-गय-पहरणु गिरि व स-सिहरु स-पहरणु स-विहरणु
हरि व स-णहर-पहर-पसरिय-जसु करि व स-तरुवरु सुमरिय-रणरसु
मणे परिहरिय-मरण-भय-अवसरु अमरिस-रस-वस-किय-दिढ-परियरु
वयण-कुहर-खर-पसरिय-मलहरु रसइ व णहयले जुय-खय-जलहरु
णयण-जुअल-वणदव-हय-गिरिगणु सिय-कुरुकुल-मल-भय-कय-रण-मणु
तणु-पह-तडि-णिण्हविय-णर-सुरवर ति-सिहर-कुरुड-भिउडि-भड-भयकरु
मउड-घडिय-मणि-कर-सवलिय-जलु जल-चलवलण-पहरिसिय-पर-वलु

घत्ता

उम्मिल्लु मउडु मणि-वेयडिउ मज्झे असेसहं अलि-गणहं ।
लक्खिज्जइ ससि परिप्फुरियउ विज्जु-पुंजु जिह णव-घणहं ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[९]

[दुवई]

अद्धुम्मिल्ले मउडे पंडव-वले दिण्णइं तूर-लक्खइं ।
पडह-मुइंग-संख-दडि-काहल-गोमुह-डंवरक्खइं ॥

जिह गयउरे वसुमइ भुंजंतहो   तिह एवंहि-मि लील-णिग्गंतहो
तूरइं ताइं ते जि सुहि पंडव   धवल-धयायवत्त-किय-मंडव
ते करि-मयर-मत्त तंवेरम   ते धयरट्ट-जाय सु-मणोरम
ते तरंग-तुरंगग्ग-तुरंगम   ते ओहार महारह उत्तम
ताइं सेय-सयवत्तइं छत्तइं   धवल-वलाया-चामर-छत्तइं
ते परिभमिर-भमर सरे गायर   ते जलयर किंकर वस भायर
तं सु-मणोरहु सरवर-राउलु   सगुण-सयण-जण-जणिय-रमाउलु
एम तरंतु तरंतु विणिग्गउ   माणस-सरहो णाइं सुर-वर-गउ

घत्ता

सहुं कमलेहिं कुरुवइ मुह-कमलु   रय-सियालि-परिचुंवियउं ।
णं पुण्णिम-इंदु-विंवु थियउं   तारा-रिक्ख-करंवियउं ॥

[१०]

[दुवई]

णिग्गउ कुरु-णरिंदु वंचंतु असेसइं वइरि-सेण्णइं ।
कइकय-करुस-कासि-सिवि-सोमय-सिंजय-गण-वरेण्णइं ॥

जिह गउ गय-जूहइं अइसंधेवि   धाइउ पवण-पुत्ते लउ वंधेवि
परिवड्ढिय-रण-रहसुच्छाहें   तो वोल्लाविउ पंडव-णाहें
अम्हइं वहुयइं तुहुं एक्कलउ   खत्तिय-धम्मु कहि-मि णउ भल्लउ
अज्जु-वि तुहुं जे राउ महि भुंजहि   अज्जु-वि णिरवसेसु जसु पुंजहि
अज्जु-वि ते तुरंग ते गयवर   अज्जु-वि ते णरिंद ते रहवर
अज्जु-वि ते-वि भिच्च हियइच्छा   अज्जु-वि अम्हइं आणपडिच्छा
अज्जु-वि तं गयउरु सुहगारउ   अज्जु-वि तं वइसणउ तुहारउ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अज्जु-वि विविह ताइं वाइत्तइं   अज्जु-वि ताइं जे चामर-छत्तइं
पहु-वयणावसाणे मणे दुट्ठउ   पभणइ धायरट्ठु आरुट्ठउ

घत्ता

एक्कल्लउ तुहुं अम्हइं वहुय   कवण कीड एह भडयणहो ।
करि-कुंभ-त्थलइं दलंताहो   कइ सहाय पंचाणणहो ॥

[११]

[दुवई]

कइ जलणहो सहाय वण-डहणे [कइ] पयंगहो तम[ह] णिवारणे ।
एक्कु-वि हणइ वहुय वहुएहि-मि एक्कु ण हम्मइ रणे ॥

मुहियए जे पंडव-परमेसर   महु जे देहि महु तणिय वसुंधर
तुम्हइं तहिं जि काले परिछिण्णी   जिणेवि दुरोयरेहिं तहिं दिण्णी
तेरह वरिसइं अम्हहुं खंती   एवंहिं किंकर सिरेहि विढत्ती
णउ भुंजमि णउ देमि कुल-क्खए   जो भावइ सो लेउ परोक्खए
जइयहुं जयमेयहि विण्णि-वि सग्गिय(?) पंचहिं पंच गाम पुणु मग्गिय
तइयहुं स-विणय वाय णिग्गिण्णी   अच्छउ अद्धु ण थत्ति वि दिण्णी
एवंहिं को सब्भाउ जुहिट्ठिल   विण्णि-वि जयसिरि-गहणुक्कंठुल
विण्णि-वि एक्क-दव्व-अहिलासिय   विण्णि-वि गयउर-रण्ण-णिवासिय

घत्ता

जिवं तुम्हहुं मइं मुसुमूरिएण   जिवं मइं तुम्हहिं घाइएहिं ।
महि भुत्ती सोहइ तुम्ह पर   कवणु सोक्खु सहुं दाइएहिं ॥

[१२]

[दुवई]

तो तव-णंदणेण सण्णाहु समप्पिउ कउरव-णाहहो ।
सो-वि पइट्ठु ताम अब्भंतरे रवि व णवंवुवाहहो ॥

रक्खिउ जो ण दोण-गंगेयहिं   कण्ण-सल्ल-पमुहेहिं अणेयहिं
सो रक्खिज्जइ किं मइं लोहें   रज्जहो तणए काइं किर मोहें

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

घग्घर-माला-सद्द-सणाहें   णं पहु एवं वुत्तु सण्णाहें
पुणु सीसक्कु लयउ महिपालें   णं गिरि-सिहरु छण्णु घण-जालें
तुलिय गयासणि रोसाऊरिउ   कहिं मह एवंहिं जाहि अ-चूरिउ
पंडव-पत्थिवेण तो वुच्चइ   पंचहं धरहि एक्कु जं रुच्चइ
अंतरे ताव परिट्ठिउ माहउ   तुज्झ समुहु ण समिच्छइ आहउ
आयहो भीमसेणु रणे मुच्चइ   जसु वज्जमउ वि णरु ण पहुच्चइ
भणइ विओयर पीडिय-पूयण   मं धरि मेल्लि मेल्लि महसूयण

घत्ता

लइ एउ एउ महु संमुहउ   दावमि फलु आओहणहो।
जम-काउ करोडिहिं रुहिर-जलु   पियउ अज्जु दुज्जोहणहो॥

[१३]

[दुवई]

पभणइ पउमणाहु कुरुवेह-परक्कम किण्ण वुज्झहो।
णिहउ वलेण जेण दूसासणु तेण वलेण जुज्झहो॥

जेण वलेण हिडिंवु वियारिउ   जेण वलेण वगासुरु मारिउ
जेण वलेण मंड किम्मीरहो   कड्ढिय पाण-दाण स-सरीरहो
जेण वलेण जडासुरु फेडिउ   जेण जयद्दहु रणे पच्चेडिउ
जेण वलेण विणासिउ कीयउ   भाणवंतु जम-सासणु णीयउ
तेण वलेण विओयर जुज्झहि   किं जेट्ठहो आचरणु ण वुज्झहि
जुत्ताजुत्तु ण किंचि वियप्पइ   को वइरिहे सण्णाहु समप्पइ
विस-जउहर-जूयइं वीसरियइं   पइं मारावइ दुण्णय-भरियइं
दप्पुब्भडु पभणइ पवणंगउ   एहु किर कासु ण मज्झें चंगउ

घत्ता

पहु देउ देउ देहावरणु   लेउ लेउ कुरु-विट्टलउ।
पेक्खेसहि एत्तिउ महुमहण   मइं किउ मासहो पोट्टलउं॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[१४]

[दुवई]

कोमल-कमल-वाहु कमलाणणु कमल-विसाल-लोयणो।
कमलालिंगियंगु कमलुक्कमु कमलालि-भारि-पहरणो॥

परिमुक्कमल-कमलदल-करयलु   पभणइ णर-सुर-मुरिय-उरत्थलु
लइ सण्णाहु तुहु-मि तं पावणि   जं आएवि वि गुणहि गयासणि
वियणे वणंतराले पइसेप्पिणु   भीमसेणु लोहमउ थवेप्पिणु
जो सुरवर-णियरेहिं ण जिज्जइ   दंति-दंत-मुसलेहिं ण भिज्जइ
पर-पहरणइं जंति जहिं भज्जेवि   महिहरे मेह-कुलइं जिह गज्जेवि
एम वुत्तु जं पंकयणाहें   भणइ भीमु महु काइं सण्णाहें
देहावरणु सरीरु जे मेरउ   आयहो पासिउ को ण वरेरउ
मारुइ एण काइं अवलेवें   मंड मंड परिहाविउ देवें

घत्ता

जो लोहहो भार-सएण किउ   सव्व-पयारें वज्जमउ।
सो भीमहो वड्डिय-रण-रसहो   फुट्टेवि उरे सण्णाहु गउ॥

[१५]

[दुवई]

तो सण्णद्ध-कुद्ध उद्धाइय विण्णि-वि एक्कमेक्कहो।
आयउ कामपालु तहिं काले गवेसउ जायवक्कहो॥

अंधय-विट्ठि-दसारुह-भोएहिं   संकरिसण-गरुडासण-तोएहिं
णंद-कुंत-पिहु-सिणि-अंकूरेहिं   ओएहिं अवरेहि-मि णर-सूरेहिं
कामपालु पट्ठविउ गवेसउ   सव्वेहिं मिलेवि दिण्णु संदेसउ
सच्चइ-वासुएव पेक्खेज्जहिं   जइ जियंति तो एम भणेज्जहि
जरसंधहो साहणइं अणेयहिं   जिह सायरहो जलइं अ-पमेयइं
जिह मेहउल-सयइं उत्थरियइं   एत्तिय वासर अम्हेहिं धरियइं
एवंहिं धरेवि ण सक्कइ माहव   तुम्हहं जइ-वि पियारा पंडव

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

जावय-लोउ तो-वि अवलोयहि जो जसु मल्लु तासु तं ढोयहि

घत्ता

णिय विज्जा-पाणें सयलु वलु रुप्पिणि-पुत्तें रक्खियउ ।
जइ एत्तिउ पत्तु ण महुमहणु तो जरसंधें भक्खियउ ॥

[१६]

[दुवई]

मागह-सूय-वंदि-वेयालिय-वहलुच्छल्लिय-मलहरो ।
जुत्त-महातुरंग-रहु ढोइउ चडिउ तुरंतु हलहरो ॥

गउ कुरुखेत्तहो एक्कें पासें रहवरेण सुरगिरि-संकासें
जसु पुंजोवमेण णिय-गत्तें सररुह-पंडुरेण वर-छत्तें
लंगल-पहरणेण वलवंतें ताल-महाधएण धुव्वंतें
तुरय-चउक्कें हंस-वियारें दारु-महत्तरेण जत्तारें
गउ तउ जउ सच्चइ जउ माहउ जउ कुरुवाहिव-भीम-महाहउ
णं जले विरहिउ सायरु जलहरु णं णिल्लंछणु छण-दिण-ससहरु
खीर-महोवहि णं उच्छल्लिउ णं हिमवंतु कहि-मि संचल्लिउ

घत्ता

जो पंडव-वल परिवेढियहो गयउ आसि जम-सासणहो ।
सो णाइं णियत्तेवि अण्णमउ आउ जीउ दूसासणहो ॥

[१७]

[दुवई]

आइउ कामपालु रहु छंडेवि पंच पयाइं पाएहिं ।
देवइ-णंदणु-वि सवडम्मुहु सहुं कुरु-पंडु-जाएहिं ॥

हरि अवरुंडिउ रेवइ-कंतें अंजण-पायउ णं हिमवंतें
णं लवणोवहि खीर-समुद्दें कालकूड-विस-पुंजु व रुद्दें
णावइ असिय-पक्खु सिय-पक्खें णावइ अलि-गणु पंकय-लक्खें
जउण-वाहु णं गंगा-वाहें णं वम्महु चंदप्पह-णाहें

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णं णव-काल-मेहु छण-चंदें तिह अवरुंडिउ हरि वलहद्दें
परमासीस-पुव्वु संभासिउ पच्छए धम्म-पुत्तु आसासिउ
तेण-वि दूरवरुज्झिय-संदणु जयजयकारिउ रोहिणी-णंदणु ८
तिण्णि-वि एक्कहिं मिलिय सणेहा तिण्णि-वि काल-हुवासण जेहा

घत्ता

हरि कालउ हलहरु पंडुरउ राउ सुवण्ण-वण्ण-णिलउ।
णं वहु-जल-णिज्जल-जलहरहं तइयउ विज्जु-पुंजु मिलिउ॥ १०

[१८]

[दुवई]

सव्वहं दिण्णु खेमु संमाणिय सव्वासीस-वयणहिं।
पुणु पुणु कुरुव-राउ अवलोइउ वाह-भरंत-णयणहिं॥

एत्तहे कुरुव-राउ मणे रुच्चइ एत्तहे णिय-भाइहे ण पहुच्चइ
एत्तहे कुरुव-राउ एक्कल्लउ एत्तहे णरु णारायण-भल्लउ
एत्तहे कुरुव-राउ जइ ईहइ एत्तहे पंकयणाहहो वीहइ ४
थिउ मज्झत्थीभावें हलहरु कहिउ असेसु स-वइर-वइयरु
को जाणइ जउ केत्तहे होसइ तं णिसुणेवि महुसूयणु घोसइ
तावं समप्पइ पिहिवि सुधीमहं लउडि-जुज्झु दुज्जोहण-भीमहं
एत्तहे तेत्तहे जाहुं णिरुत्तउं तं पडिवण्णु जणद्दण-वुत्तउं ८

घत्ता

कुरु-णाहु विओयरु वे-वि जण स-कवय गरुय-गयाउह।
वलएवें धरेवि सयं भुएहिं णिय कुरुखेत्तहो संमुह॥ ९

इय रिट्ठणेमिचरिए धवलइयासिय-सयंभुएव-कए
णामेण मउडभंगो अट्ठासीमो इमो सग्गो॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णवासीइमो संधि

परिहिय-सण्णाहहो लउडि-सणाहहो परिपारद्धाओहणहो।
जिह गयहो महागउ रोस-वसंगउ भिडिउ भीमु दुज्जोहणहो॥ १

[१]

सरहस दप्पुब्भड भिडिय भीस वलएवें चालिय वे-वि सीस
जिह जम-वइसवण पुरंदरेण जिह उहय-पक्ख छण-वासरेण
जिह मंदर-मेरु जुअ-क्खएण जिह जइ-आलाण महागएण
जिह चंद-दिवायर उग्गमेण जिह गंग-जउण दह-संगमेण ४
तिह कुरुव-विओयर हलहरेण रण-रंगहो मज्झे स-मलहरेण
पइसारिय दुइ-वि स-लउडि-दंड णं मत्त-महागय उद्ध-सुंड
णं जमल-जलय विज्जुल-णिसण्ण णं भीम भुवंगम णाग-कण्ण
णं तरु स-साह णं गिरि स-सिंग हय गोमुह डंवर दडि मुइंग ८

घत्ता

भुवणंतर-पूरइं दिण्णइं तूरइं वहिरिय-सयल-दियंतरइं।
अमुणिय-परिमाणइं अमर-विमाणइं णहयले थियइं निरंतरइं॥ ९

[२]

अइरावए सुरवइ सुरए भाणु अय-पिट्ठि-परिट्ठिउ चित्तभाणु
जमु महिसे णिसायरु अच्छहले मयरहरु मयरे मयरेक्क-मल्ले
मारुउ सारंगे विमाणे जक्खु वंभाणु हंसे गोविसे तियक्खु
गोहए रुद्दाणि मऊरे खंदु मंडुक्के सुक्कु पंचमुहे चंदु ४
अवरेहिं अवर आरूढ देव थिय अंवरे लंवंवुरुह जेवं
णाणाहरणाभा-भूसियंग णाणा-परिहाण-वरुत्तमंग
णाणाउह णाण-णेयपत्त णाणा-धय-चामर-सोह-पत्त
णाणाविह-वर-वाहण-विलग्ग रण-रंगंगणु जोयणहं लग्ग ८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घत्ता

कुरु-पंडव-वीरेहिं छइय-सरीरेहिं वयणाहोय ण ल्हिक्कविय ।
णावइ विहिं मेहेहिं सामल-देहेहिं रुंद-चंद दुइ दक्खविय ॥ ९

[३]

वोल्लंति तावं णहे अच्छराउ एहु भीमुसेणु एहु कुरुव-राउ
णउ जाणहुं कवणु अजेउ मल्लु पेक्खहुं अणिरुवमु कोउहल्लु
गय-घाएहिं आएहिं एक्कमेक्कु चूरेवउ तोसिउ जाम सक्कु
अवरेक्क पवुच्चइ जुवइ-विंदु मइं थुत्थुक्कारिउ कुरु-णरिंदु ४
अवरेक्कए वड्डिय-मच्छराए णिब्भच्छिय अच्छर अच्छराए
किं पइं जे सुपत्तहं दाणु दिण्णु किं पइं जे मत्ते तव-चरणु चिण्णु
किं तुज्झु जे जोव्वणु वहु-वियारु किं तुज्झु जे सिरे धम्मिल्ल-भारु
किं तुज्झु जे णयणइं दीहराइं किं तुज्झु जे अंगइं मणहराइं ८

घत्ता

किं तुहुं जे भुज्जइ एक्कहिं जुज्झइ सग्गें सहुं सग्गाहिवइ ।
जं अवरहिं वारहि थुत्थुकारहि अप्पुणु कुरुव-णराहिवइ ॥ ९

[४]

तो णवर हक्कारिउ पंडु-पुत्तेण तव-तणय-जमलज्जुणाणंत-गुत्तेण
अणवरय-वज्जंत-वाइत्त-संडेण उद्दंड-जमदंड-सम-लउडि-दंडेण
अप्फोडणोरालि-वहिरिय-दियंतेण भू-भंग-भिउडी-पभेसिय-कयंतेण
कोवग्गि-जालोलि-पज्जालियंगेण वल-चरण-संचार-चूरिय-भुवंगेण ४
विस-दाण-जउ-जलण-जूयावराहेण णव-रयसला-दोमइ-केस-गाहेण
णिव्वास-वणवास-दूसह-किलेसेण मच्छोवसेवा-कयणण्ण-वेसेण
भूभंग-वंधेण संधी-णिसंतेण उच्छण्ण-णीसेस-सामंत-रोहेण
आएण पावेण पाविट्ठ खद्धोसि कहिं जाहि वहुवेण कालेण लद्धोसि ८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घत्ता

वुच्चइ स-कसाएं कउरव-राएं संढहो खलहो अ-लज्जियहो।
आढवियाओहणु हउं दुज्जोहणु किं वीहमि गल-गज्जियहो॥ ९

[५]

लइ लउडि विओयर देहि घाउ तुहुं पंडु-पुत्तु हउं कुरुव-राउ
जाणिज्जइ एवंहिं एत्थु काले गय-गरुय-घाय-घट्टण-वमाले
एक्कल्लउ हउं तुम्हइं अणेय पइं सहुं संचूरमि सयल एय
धट्ठज्जुणु अज्जुणु धम्म-पुत्तु सच्चइ सिहंडि गोविंद-गुत्तु ४
पवणंजउ पभणइ वासुएव गय-घाएहिं चूरिउ पेक्खु केवं
तव-तणय सइत्तउ होहि अज्जु महु कित्ति-माल तुहुं भुंजि रज्जु
आयहो दुणिमित्तइं मउड-भंगु धूमंतु दिसउ कंपउ पयंगु
थरहरउ वसुह गह-दुत्थु होउ मइं कुद्धए कुरुहुं ण जीव-लोउ ८

घत्ता

कोवग्गि-पलित्तें मारण-चित्तें भीमें मणि-किरणुज्जलिय।
उग्गिण्ण गयासणि जम-मण-तासणि फुरिय झत्ति णं विज्जुलिय॥ ९

[६]

गय भामिय भीमें धूधुवंति णं भूक्खिय देवय भूभुवंति
णं जलण-जाल जलजलजलंति णं णाग-कण्ण चलचलचलंति
णं वइवस-संखल खलखलंति णं काल-जीह ललललललंति
णं अब्भ-माल दडदडदडंति णं जम-रुंचणि गडगडगडंति ४
कुरुवेण-वि भामिउ लउडि-दंडु उड्डाविउ अमर-विमाण-संडु
कंपाविउ महिअलु चालिय गिरिंद आलाणमुवाविय दिस-गइंद
ओसरेवि परिट्ठिय दूरे रंगु सो णत्थि ण जसु किउ दिट्ठि-भंगु
दुज्जोहण-भीम महागएहिं उवसग्गु णाइं किउ देवएहिं ८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घत्ता

खणे पवणु भयंकरु खणे वइसाणरु खणे पडिसद्दु समुच्छलइ।
तुट्टंतु वलंतउ वाहिरि जंतउ तिहि-मि णएहिं तिहुयणु चलइ ॥९

[७]

भड भिडिय दुइ-वि पिहितणय-मउडि सुर-कुलिस-कढिण-कर-लइय-लउडि
जिह जमवइ वियलिय कुडिल-भडहं जिह सुरवर-करिवर वलिय समुह
जिह मयवइ पसरिय-णहर-पहर किय-णिसिय-भिउडि परिफुरिय-अहर
णिय-णयण-जलण-किय-भुअण-पलय मुह-कुहर-पवण-हय-जलय-वलय ४
जम-करण-करण-अणुकरण-कुसल रण-कमल-मिलिय-सुर-णयण-भसल
दह-दह-णह-पह-जिय-तरुण-तरणि कर-चलण-वलण-विलविय-धरणि
अणवरय-भमिर जस-भरिय-भुवण गय-पहर-मरण-भय-पसर-मुवण
रण-रस-वस समरे ससमिय दुइ-वि तणु-तडि-णिण्हवण-सयण-सम-रुइ-वि८
[जयदेवेन अचलधृतिरिति पिंगले]

घत्ता

ते भीम-सुजोहण वर-गय-पहरण अहिलसंति महि-विजय-सिरि।
दीसंति सुरिंदें णरवर-विंदें णं स-संझ उययत्थ-गिरि॥ ९

[८]

हरि-करि-आयारेहिं पइसरंति वारहहि-मि सुत्तिहिं संचरंति
सर-वारण-कोंत-णिवारणेहिं अवरेहि-मि वइरि-वियारणेहिं
वत्तीसहिं करणेहिं वावरंति चूडामणि-पमुहेहिं परिभमंति
संकोय-विकोयावत्तणेहिं गय-पडियागय-गोमुत्तणेहिं ४
अहि-दावण-परिधावण-वइहिं उवणत्थोणत्थ-महागइहिं
अब्भंतर-दाहिण-मंडलेहिं सव्वावसव्व-हुलि-गोंदलेहिं(?)
चउमुह-उद्धर-पडिउद्धरेहिं गय-घाएहिं आएहिं णिद्धरेहिं
अट्ठहि-मि णिवंधेहिं वाहु-दंड वंधंति परोप्परु रणे पचंड ८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घत्ता

तो पसरिय-पसरें लद्धावसरें भीमें आहय गयए गय।
रक्खिय तिहिं भंगिहिं खर-पवणग्गिहिं तेण ण सा सय-खंड गय॥ ८

[९]

तो गया-घट्टणे उट्ठिओ पावओ धूम-जालावली-दिण्ण-संतावओ
तेण तेलोक्क-चक्कं समुद्दीवियं थावराणं पि उड्डावियं जीवियं
तेण सद्देण भिण्णं असेसं जयं छप्पएणं व गुंजावियं कंजयं
तेण वाएण उड्डाविया मेहया मेहया जिवं मही-मंडलंते हया
ताण संघट्टणे उट्ठिया विज्जुला विज्जुला-हम्ममालागिरी-आउला
भग्ग-सिंगा धरा-मंडलं पाविया पत्त-मत्तेहिं भूमी य कंपाविया
भूमि-कंपेण रोसाविया पण्णया पण्णया जाय-कोवग्गि-संपण्णया
तेण कोवग्गिणा सोसिया सायरा सायराणंत-काले सुरा कायरा

घत्ता

पइसेवि स-कसाएं कउरव-राएं मत्थए भीमु महा-गयए।
हउ अहिणव-मेहें सामल-देहें णं कुल-सेलु व विज्जुलए॥ ९

[१०]

जं पइसेवि सव्वें मंडलेण हउ भीमु भुत्त-भू-मंडलेण
तं एक्कु-वि पउ ण पयट्टु वीरु थिउ वलेवि धराधर-धीरु धीरु
गय भामेवि आहउ कुरुव-राउ दुक्कालु व वंचिउ तेण घाउ
दुज्जोहणु पुज्जिउ सुरवरेहिं जेम धणय-कुमारु पुरंदरेहिं
आसंकिय पंडव तहिं पमाणे णउ जाणहुं होसइ किं णियाणे
तो हत्थिणायपुर-वासिएण पइसेप्पिणु मग्गे कउसिएण
पडिवारउ उरयडे दिण्णु घाउ पवणंगउ मुच्छा-विहलु जाउ
णिक्कलिउ रत्तु सोत्तंतरेहिं गउ मुउ मुउ वुच्चइ भायरेहिं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घत्ता

रयणीयरि-कंतहो कुरु-चक्खंतहो जं वहु-कालें वड्ढियउ।
तं अणयण-जाएं एक्कें घाएं भीमहो लोहिउ कड्ढियउ॥

[११]

जं पडिवउ तेण ण दिण्णु घाउ तं देवें मोहिउ कुरुव-राउ
वोल्लणहं लग्गु लइ लउडि-दंडु जें जें महु फेडमि समर-कंडु
हेवाइउ तुहुं रणणीयरेहिं दूसासण-पमुहेहिं कुरु-णरेहिं
दुज्जोहणु हउं तइलोक्क-मल्लु सुर-णर-उप्पाइय-कोउहल्लु
तिल-संढें एक्कें कवणु गण्णु लइ एवंहिं उद्धउ को-वि अण्णु
जोइज्जइ कुरु-मुर-घायणेहिं अवरोप्परु णर-णारायणेहिं
तहिं काले विवज्जिय-वेयणेण कह कह व समागय-चेयणेण
सीहेण व आमिस-लुद्धएण कालेण व जगहो विरुद्धएण

घत्ता

जमकरणुक्करिसें वद्धामरिसें कुरुवइ-पासु पढुक्कियउ।
णयणग्गि-करालेहिं जाला-मालेहिं भीमें झत्ति झुलुक्कियउ॥

[१२]

तो महावीर वीरा समालग्गया साणुमंत व्व उत्तुंग-सिंगग्गया
कालमेह व्व सोयामणी-दारुणा कालदूय व्व दंडत्थ-कोवारुणा
मत्त-हत्थि व्व आलाण-उम्मूलया केसरिंद व्व उग्गिण्ण-लंगूलया
साउहा धाइया भीम-दुज्जोहणा भीम भीसावणा भीम-दुज्जोहणा
एक्क-दव्वाहिलासी महा-पंडवा दो-वि ते धायरट्ठाहया पंडवा
जेण जे आसिया सारसा सारसा तेण ते सामि सासामि सासारसा
सारसासार साआसिया जेण जे सायसा सारिसा सामिसा तेण ते
वीर भाए गया आगया भारवी वीरहा सीरिया वारि सीहारवी

सावहाणा रसा सारणा हावसा   आइया आसुआ आहया सालसा

घत्ता

णिवडंतुट्टंतेहिं   करणइं देंतेहिं   रंगभूमि णिरु णिद्दलिया।
णं सुरवर-संढेहिं   दोहिं वियड्ढेहिं   एक्क विलासिणि दरमलिया॥ १०

[१३]

करण-तंत-कलसुत्त-घाएहिं   संचरंति मग्गेहिं आएहिं
उप्पयंति धावंति आहवे   घाय दिंति णिय-णिय-पराहवे
घाए घाए उट्ठंति हुयवहा   घाए घाए घुम्मंति दिसिवहा
घाए घाए डोल्लंति महिहरा   घाए घाए कंपइ वसुंधरा ४
घाए घाए ओसरइ सायरो   घाए घाए लंवइ दिवायरो
घाए घाए ओसरइ सुरयणा   घाए घाए उत्थरइ जलयणा
घाए घाए वण-वियण-भेंभलो   घाए घाए घोसंति कलयलो
घाए घाए सय-चंदमंवरं   घाए घाए णं मेह-डंवरं ८

घत्ता

हरि पुच्छिउ पत्थें   कहि परमत्थें   भीमसेण-दुज्जोहणहं।
वल-विक्कम-सारहं   दिण्ण-पहारहं   कवणु जिणेसइ विहिं जणहं॥ ९

[१४]

णारायणु पभणइ कहमि तुज्झु   आढवहि विओयर कवड-जुज्झु
ण पहुच्चइ णाएं पवण-जाउ   विण्णाणें दुज्जउ कुरुव-राउ
लोहमउ करेप्पिणु भीमसेणु   गय गुणिय जेण रण-कामधेणु
तव-तणएं णिय सण्णाहु दिण्णु   तिहिं आएहिं जिणणहं केण तिण्णु ४
जइ कहव तुलग्गेहिं पहय पाय   तो तुम्हेहिं पिहिविहे सव्वराय
अह हणेवि ण सक्किउ कह व सत्तु   तो वणे पइसरउ अजायसत्तु
णिसुणेवि अणंतहो तणिय वाय   सण्णए णरेण दक्खविय पाय
परियच्छिउ तेण-वि तेत्थु काले   अवसरु ण लद्धु पर भड-वमाले ८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घत्ता

आगारेहिं करणेहिं सुत्तावरणेहिं वंधेवि घाएहिं गयहि रणे रणे।
दुज्जोहण पूरउ भीमु अपूरउ तेण विसूरइ पत्थु मणे॥

[१५]

सामरिस स-पहरण सावलेव रुहिरारुण फुल्ल-पलास जेवं
ओसारु दिंति पडिउत्थरंति णं मंदर विण्णि-वि परिभमंति
आगरिहिं दसहि-मि पइसरंति सुत्तइं वारह-मि ण वीसरंति
करणइं वत्तीस-वि दक्खवंति णं सीस परोप्परु सिक्खवंति
अट्ठहि-मि णिवंधेवि वंध लेंति आहुट्ठेहिं घाएहिं घाय दिंति
उड्डंति पडंति वलंति धंति सरहस स-परीसह वीसमंति
तहिं अवसरे कुरु-परमेसरेण आडोहिय-वास-महासरेण
दढ-कढिण-पलंव-भुयग्गलेण पइसेवि अब्भंतर-मंडलेण

घत्ता

रण-रहसुद्दामें सव्वायामें मेल्लिय लउडि लोह-घडिय।
भीमहो भीसावणि मण-संतावणि णं खय-विज्जु जेम पडिय॥

[१६]

जं संख-देसें गय-घाउ दिण्णु णं कुलिस-णिहाएं गिरि व भिण्णु
घुम्माविउ पाविउ परम मुच्छ चेयण-वि समागय तुच्छ तुच्छ
उट्ठिउ रुहिरारुणु दुक्खु दुक्खु णं कुसुमिउ रत्तासोय-रुक्खु
णं दंडाहयउ महा-फणिंदु तिण-समउ गणेप्पिणु कुरु-णरिंदु
उद्धाइउ करि करिवरहो जेवं आसण्ण परिट्ठिय सव्व देव
जा मेल्लिय लउडि विओयरेण सा वंचिय कुरु-परमेसरेण
पडिवारउ उप्परि दिण्णु घाउ उप्पइउ णहंगणे कुरुव-राउ
उल्ललेवि ण सक्किउ णवर दूरु णिवडंतहो आहय वेरिओरु

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घत्ता

भीमहो गय-घाएं विणु ववसाएं कुरुवइ जण्णवडेहिं पडिउ।
वसुमइ वि रसोक्खइं लइ णिय-सोक्खइं णं मरिसावउ आवडिउ॥ ९

[१७]

कह कह व समुट्ठिउ लउडि लेंतु णं करणइं जण्णअडेहिं देंतु
णं अहि दंडाहउ सलवलंतु णं पक्खि अ-पक्खु पडिक्खलंतु
णं णिड्डहंतु णयणाणलेण को संढु णिहम्मइ पक्खलेण
कहिं गयउ आसि विस-जलण-जूवे दोमइ-केसग्गह-समय-भूवे ४
हउ एवंहिं णिय कालेण खद्धु गउ एम भणंतु धरायलद्धु
णिवडंतें णिवडिय रय-णिहाय उप्पाय असेसहो जगहो जाय
महि-कंपु दिवायर-छाय-भंगु आगासहो वरिसइ वहल पंसु
स-रुहिर दह-कूव-तलाय जाय विवरीय वहाविय णइ-णिहाय ८
उप्पाय-कवंधइं भीयराइं णच्चिय वहुय-कम-वहु-कराइं

घत्ता

तहिं काले विओयरु वड्ढिय-मच्छरु जहिं दुज्जोहणु तेत्थु गउ।
पेक्खंतहं देवहं हरि-वलदेवहं वामें पाएं मउडु हउ॥ १०

[१८]

जं मलिउ मउडु मारुय-सुएण भुयइंदाहोय-भीयर-भुएण
तं धिद्धिक्कारिउ सुरवरेहिं णहयले महि-मंडले णरवरेहिं
मच्छाहिव-सोमय-सिंजएहिं अवरेहि-मि लद्ध-महाजएहिं
खत्तिय-कुले होएवि किउ अजुत्तु पाएण ण छिप्पइ रायउत्तु ४
तो विज्जु-पुंजु जिह जलहरेण उग्गिण्णु महाहलु हलहरेण
अमणूसउ मण्णेवि कामपालु किह पाएं छिप्पइ भूमिपालु
सिरु णावेवि णिवारिउ माहवेण अवरोप्परु काइं महाहवेण
पंडवहं म उप्परि करहि रोसु अवराहहं केरउ सव्वु दोसु ८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घत्ता

परिवड्ढिय-मलहरु पभणइ हलहरु मुहु जोएवि दामोयरहो ।
हरि भायरु वुच्चहि तुहुं महु रुच्चहि तेण ण भिडमि विओयरहो ।।

[१९]

गोविंद गयागमे एम वुत्तु ण णिहम्मइ णाणि हेट्ठ जुत्तु(?)
जिह जिह आहासइ सीर-धारि तिह तिह पवणंगउ कम्म-कारि
सय वार करइ सिर-मउड-भंगु णिहुयउ जे णिहालइ सल्लु रंगु
गउ णिय-थाणंतरु कामपालु जहिं जायव-मागह-भड-वमालु
तव-सुएण णिवारिउ सीह-चिंधु एक्कु-वि पहु अण्णु-वि परम-वंधु
ण णिहम्मइ वारंवार-वार *दुज्जोहणेण सहुं गउ णिरार*
जगे वइरइं मरण-णिवारणाइं अवराइं महंतइं कारणाइं
अच्छेवउ अज्जु-वि विग्गहेण जुज्झेवउ सहुं रणे मागहेण
मारेवउ सो पहु मद्दणेण दसकंधरु जिह रहु-णंदणेण

घत्ता

पइं मइं अवरेहि-मि जमल-णरेहि-मि समर-महाभर-उव्वहणु ।
दारावइ-पुरवरु तोसिय-सुरवरु पइसारेवउ महुमहणु ।।

[२०]

तहिं अवसरे पभणइ वासुएउ लइ एवंहिं किज्जइ काइं खेउ
दुज्जोहणु दुम्मइ दुकिय-कम्मु जहिं णिवसइ तहिं देसे-वि अहम्मु
माराविय जेण सहोयरा-वि गुरु-पित्त-पियामह किंकरा-वि
जोइज्जइ मुहु-वि ण तणउ तासु किं अच्छहुं गम्मउ णिय-णिवासु
आरूसेवि पभणइ कुरु-पहाणु को दुक्किय-गारउ पइं समाणु
दुव्वयणहो देंतहो वासुएव सयदलइं जीह मुहे ण गय केवं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

किं महु जे सहोयर तउ ण के-वि मारविय जेण कु-मंतु देवि

घत्ता

सो सुरेहिं अदुट्ठेहिं मण-परितुट्ठेहिं वयणइं साहुक्कारियइं।
सयं भूमिहे सुत्तहो अणयण-पुत्तहो कुसुमइं सिरे संचारियइं॥ ८

इय रिट्ठणेमिचरिए धवलइयासिय-सयंभुएव-कए।
णामेण मउड-भंगो [इमो]णवासीइमो सग्गो॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णवइमो संधि

रण-सिरि-रामालिंगियउ कुरुवइ पडिउ-वि सुहावइ ।
देमि जियंतु ण पंडवहं थिउ पिहिवि धरेविणु णावइ ।। १

[१]

महुमहेण विणिवारिज्जंतु-वि भीमज्जुण जमले-वि णिज्जंतु-वि
रुवइ जुहिट्ठिलु अंसु मुवंतउं अवगुण-गुण-वयणइं सुमरंतउ
वंधउ जइ-वि सुट्ठु कलियारउ मरणे देइ दुक्खु सय-वारउ
जइ-वि कियइं विस-जउहर-जूवइं एवहिं ताइ-मि दूरीहूवइं ४
दुव्वयणाइं कहि-मि णिसुणेसहुं णिय-संपयउ कसु दावेसहुं
कुरुव-णराहिवेण तो वुच्चइ कुसुम-वासु ण कवंधहो मुच्चइ
किं णउ रुण्णएण अहो राणा जाहि जाहि मं मरहि अयाणा
जइ जीवमि तो पंच-वि मारमि तेण हियत्तणेण विणिवारमि ८

घत्ता

मइं दुज्जोहणे जीवियए तुम्हेहि-मि एत्तिउ कज्जु ।
जेण हणाविय ओरु महु तं माहउ मारमि अज्जु ।। ९

[२]

गयइं पंडु-वलइं भंडागारइं तुंगइं गिरिवर-सिहारागारइं
कंचण-मणि-रयणइं अ-पमाणइं हय-गय-रह-वाहण-जंपाणइं
चामर-पुंडरीय-धय-चिंधइं विविहाउहइं विविक्क-णिसिद्धइं
विविहासणइं विविह-वाइत्तइं तंविय-रुप्पिय-कंचण-पत्तइं ४
गुड-पक्खर-सरीर-तणु-ताणइं दूसावास-भिसिय-पल्लाणइं
कंवल-पडिपावरण-सहासइं चेलियाइं णिय-णाम-पगासइं
दासी-दास महिस-गो-वंदइं एमावरइ-मि णयणाणंदइं
लइ लइ पंडवेहिं जा तिण्णइं दुक्खिय-दीणाणाहहं दिण्णइं ८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घत्ता

कमल-णिहेलण कमल-कर   कमलाणण कमल-दलच्छि।
कुरुव-णराहिवु परिहरेवि   संकमिय जुहिट्ठिले लच्छि॥ ९

[३]

कुरुवइ-कोसु असेसु लइज्जइ   तो णारायणेण वोल्लिज्जइ
खंडव-डामर वइरि-पुरंजय   रह-सिहरहो ओयरहि धणंजय
उतिण्णु तुरंतु पुरंदर-णंदणु   दड्ढु हुआसणेण तो संदणु
हरि परिपुच्छिउ सिर-गिरि-धारा   कोउहल्लु इउ काइं भडारा ४
तो सब्भावें अक्खइ महुमहु   जं माराविउ स-गुरु-पियामहु
कण्णु सहोयरु तिण्णि-वि पावइं   थियइं दइव्वइं हुआसण-दावइं
दड्ढु तेहिं तव केरउ संदणु   आसंकिउ मणेण तव-णंदणु
हउं हयासु गइ कवणु लहेसमि   कवणुत्तरु णारइयहं देसमि ८

घत्ता

वंधव लक्खइं घाइयइं   वलु जीविउ रज्जु असारु।
एउ ण जाणमि दुम्मइहे   महु होसइ किह उत्तारु॥ ९

[४]

जइ गंधारि रिसत्तणु दावइ   तो अम्हहं एक्कु-वि ण पहावइ
णिरुवद्दव-परिपालिय-रट्ठहो   जइयहं दिण्ण आसि धयरट्ठहो
तइयहं धाए णिवद्धइं णयणइं   पर-पुरिसहं ण णिहालमि वयणइं
तेण सइत्तणेण महु भावइ   जइ-वि ण डहइ तो-वि फलु दावइ ४
सउ पुत्तहं तहो केरउ मारिउ   णउ जाणहि किह होसइ भारिउ
दुद्दम-दाणव-देह-विमद्दण   हत्थिणायपुरु जाहि जणद्दण
तिह करि जिह उवसमइ महत्तरि   को-वि दोसु पंडवहं ण उप्परि
विणु कारणेण करेवि आओहणु   णिय-चरिएहिं पत्तु दुज्जोहणु ८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घत्ता

तुहु-मि भडारिए जाणहि   जो मग्गंतहं अद्धु ण दिण्णु ।
पुणु पच्छए भीमज्जुणेहिं   कुरुवइ तरु-वल्लरि जिम्व छिण्णु ।। ९

[५]

तं णिसुणेवि पयट्टु जणद्दणु   दारुएण ढोइज्जइ संदणु
स-धउ स-चामरु सायववारुणु   गिरि-गोवद्धण-धारण-धारणु
तहिं आरूढु सुरिंद-विहोएं   अम्मणुअंचिउ पंडव-लोएं
णाहु णियत्तिउ पंकयणाहें   रहु ओवाहिउ वाहा-वाहें ४
गयणु पियंत जंति णं घोडा   कंचण-संखल-पग्गल-तोडा
णं वसुमइ ण छिवंत पधाइय   हत्थिणायपुर-णयरु पराइय
पट्टणु तेण दिट्ठु विच्छाइउ   दुक्खिउ दुम्मणु दीणु अणाहउ
केस-विसंठुलु अविरल-वाहउ   थामे थामे आमेल्लिय-धाहउ ८

घत्ता

जं मणु-पंडव-कउरवहं   सव्वहं पुरवरहं पहाणु ।
गयउरु दिट्ठु जणद्दणेण   णं धूमायंतु मसाणु ।। ९

[६]

रह-सिहरहो उत्तरेवि उविंदें   पुणु धयरट्ठु दिट्ठु गोविंदें
पुणु गंधारि महत्तरि दिट्ठी   हियए जाहे दुह-चडुलि पइट्ठी
गंगा-सायर इव आउण्णइं   विण्णि-वि धरेवि परोप्परु रुण्णइं
केम-वि उवसम-भावहो ढुक्कइ   दुक्खु दुक्खु दुक्खेण विमुक्कइ ४
करेवि महत्तराण अहिवायणु   दिण्णासणे णिविट्ठु णारायणु
भणइ ण थत्ति देमि तुह सोयहो   तुहुं अरक्खण-पाणिउ लोयहो
तुहुं सु-णिमित्तु सु-मंगलु रट्ठहो   सय-वडाय तुहुं धरे धयरट्ठहो
वंधव-सयणहं तुहुं गइ तुहुं मइ   तुहुं पंडवहं कोंति महु देवइ ८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अच्छइ धम्म-पुत्तु रोवंतउ   तुम्हहं मुह-दंसणु मग्गंतउ

घत्ता

ण किय संधि दुज्जोहणेण   तहिं काले तुहु-मि पच्चक्ख।
एवहिं पुत्त-सयहो तणिय   मा भाय करहिं अवक्ख॥

[७]

जे मुय ते मुय सोउ ण किज्जइ   दस-विहु परम-धम्मु णिसुणिज्जइ
पुत्त-कलत्तइं मोहण-जालइं   वंधव वंधु णाइं असरालइं
तडिणि-तरंग-समउ संपत्तिउ   णरय-दुक्ख-दुसह-उप्पत्तिउ
धणइं इंदधणु-अणुहरमाणइं   जोव्वणाइं तरु-छाहि-समाणइं
जीवियाइं जलविंदु-विलासइं   लायण्णइं विज्जुल-संकासइं
पेम्मइं संझा-राय-वियारइं   दविणइं गिरि-णइ-पवहागारइं
रवि-अत्थवण-समइं अवसाणइं   सोहग्गइं णव-कुसुम-समाणइं
चलइं सरीरइं सुविणय-भावइं   विसय-सुहइं विस-विसम-सहावइं

घत्ता

आयइं हलहर-कुलयरहं   चक्कवइहिं तित्थयराहं।
अम्हहं तुम्हहं अवरह-मि   थिर-भावइं हूवइं काहं॥

[८]

जीउ जमोरगेण भक्खिज्जइ   असरणे असरणु केण रक्खिज्जइ
जइ-वि तुरंगमेहिं णिरु रुंभइ   जइ-वि लोह-मंजूसहिं छुब्भइ
जइ-वि कूव-विवरंतरे घिप्पइ   जइ-वि ण रवियर-किरणेहिं छिप्पइ
जइ-वि कह-वि पायाले थविज्जइ   तो-वि कयंतें मंडु लइज्जइ
हरिणु व वाहें करि व मइंदें   णउलें अहि अक्खु व भुयगिंदें
वसहु व वग्घें मच्छु वएण व   ससि व विडप्पें कवलु गएण व
मे सुवण्णु मे धणु मे जोव्वणु   मे कलत्तु मे घरु मे परियणु
मे मे मे भणंतु कड्ढिज्जइ   जइ-वि पुरंदरेण रक्खिज्जइ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घत्ता

जांवहिं मरणु समावडइ तावहिं कहिं तणिय गवेस।
रक्खेवि सक्कइ को-वि ण-वि महि दिज्जइ जइ-वि असेस॥

[९]

को-वि ण जगे जीवहो सयणिज्जउ एक्कु-वि एक्कहो जणु ण सहेज्जउ
तिहुयणु भमइ जीउ एक्कल्लउ अच्छउ एक्कु अणेयहो भल्लउ
अवियण-भावें लइज्जइ काएं वज्झइ मुच्चइ कम्म-विहाएं
एक्कु अणेयइं मरणइं पावइ ++++++++++++++
एक्कु अणेयइं लेइ सरीरइं एक्कु अणेयइं सोसइं णीरइं
एक्कु अणेय वार जं भुज्जइ तहो मेरु-वि वड्डिमए ण पुज्जइ
एक्कु अणेय वार जं रुण्णउ तेण जलेण महण्णउ पुण्णउ
एक्कु अणेय वार जं दड्ढउ तेण रएण होइ वेयड्ढउ

घत्ता

जावहिं वाहि समावडइ तावहिं जइ को-वि होइ सहाउ।
तो किं सव्वहं मिलियाहं एक्कल्लउ कणइ वराउ॥

[१०]

जइ अण्णत्तण्णु तणु ण समंडइ तो किं रणे वणे दहे पहे छंडइ
अण्ण-भाउ जइ सिरु ण पियावइ तो किं सूलारोहणु पावइ
जइ ण थियइं णयणइं अण्णत्तणे तो किं मरइ पयंगु हुवासणे
अण्ण-भाउ जइ सुइहिं विरुद्धउ तो किं हरिणु जाइ जहिं लुद्धउ
अण्ण-भाउ जइ होइ ण घाणउ तो किं भमरु जाइ अवसाणउ
अण्ण-भाउ जइ जीह ण मग्गइ तो किं झसु गल-पासए लग्गइ
अण्ण-भाउ जइ करहो ण भावइ तो किं अंगुलि खंडणु पावइ
अण्ण-भाउ जइ फरिसु ण इच्छइ तो किं वंधणु हत्थि पडिच्छइ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अण्ण-भाउ जइ कमेहिं ण किज्जइ तो किं णेत्तु जेत्थु सिरु छिज्जइ

घत्ता

अण्णइं आयइं अवरइ-मि जगे जीवहो को-वि ण अत्तु।
अण्णहिं कारणे मोहियउ भव-लक्खेहिं काइं ण पत्तु॥ १०

[११]

भमइ जीउ संसारे असारए झसु जिह पारावारे अपारए
लयणि-मज्झे जिह गोंदले झिंदुउ जिह अरहट्ट-जंते घडि-गड्डुउ
जिह णडु रंगे अणेयहे गारिहिं +++++++++++++
जिह मायाविउ मायारूवेहिं जिह जलु णइ-तालाय-दह-कूवेहिं ४
कवणु भक्खु भक्खिएण ण भक्खिउ कवणु देसु जो तेण ण लक्खिउ
आउसु कवणु तेण ण णिवद्धउं कवणु देहु जो तेण ण खद्धउ
भइणि जणेरि दुहिय कुलउत्ती कवणु णारि जा तेण ण भुत्ती
खज्जइ खाइ मरइ मारावइ रम्मइ रमइ रुवइ रोवावइ ८

घत्ता

अद्धुउ असरणु एक्कु जणु परिरक्खणु अण्णु ण कोइ।
भमइ चउव्विह-भव-गहणु जेण धम्मे णं लग्गइ तोइ॥ ९

[१२]

मोक्ख-णयरु जो गंपि ण सक्कइ सो तिहुअणहो मज्झे परिसक्कइ
जिह जर-पूसउ आयस-पंजरे जिह भुवंगु वम्मीयब्भंतरे
तेम तिवाय-वलय-अब्भंतरे णिवडइ भमेवि भमेवि भुवणोयरे
जिह वणट्टउ खप्परे तत्तए जिह चाउलु अद्दहणे कढंतए ४
सुर-णिरएहिं दस सहस णिराउसु तेत्तीसोवहि उवहि-चिराउसु
मज्झिम-गइहिं ति-पल्ल वरिट्ठउ जीवइ खुद्द-भवाइं कण्णिट्ठउ
णिच्च णिगोय तिसट्ठि सहासइं तिह तिण्णि सयाइं छत्तीसइं
मरणहं एक्क-समय-अब्भंतरे खुद्द-भवाइं ताइं भुवणंतरे ८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सत्त वार पण्णारह वासरे   वारह मास सट्ठि संवच्छरे
वारह रासिणवंसय-वत्तइं   सत्तावीस जोय-णक्खत्तइं

घत्ता

आयइं अंतरवत्तियउ   णासइ उप्पज्जइ जीउ।
खणे उल्हाइ खणे पज्जलइ   जिह भवणहो मज्झे पईवउ॥ ११

[१३]

लोयालोय-पमाण-पगासहो   थिउ तइलोक्कु मज्झे आयासहो
तंतिवाय-वलएण णिवद्धउ   पुक्खर-भंडहं कक्कर-वद्धउ
उद्धु चउद्दह रज्जु-पमाणें   दिट्ठु जिणिंदहो केवल-णाणें
सत्त एग पंचेग विसालउ   पुग्गल-जीवरासि-परिपालउ   ४
हेट्ठिम-मज्झिम-उवरिम-भाएहिं   णारय-णर-सुर-सासय-थाएहिं
वेत्तासण-झल्लरि-संकासेहिं   मुरव-मज्झ-छत्त-संकासेहिं
तहो मत्थए थिय सिद्ध भडारा   पुण्ण-पवित्त सुमंगल-गारा

घत्ता

अक्खय अव्वय जीव घण   अगरुग-लहु अव्वावाहें।
जेण पमाणेहिं सिद्धि गय   थिय तेण पमाणें णाहें॥   ८

[१४]

अइ-सुहयहो परिवड्ढिय-णेहो   अत्तागमणु ण गम्मइ देहो
जइ गम्मइ तो असइ अणेयहिं   णिरु णिट्ठीवण-वमण-विरेयहिं
सव्वहं जगे सरीरु अपवित्तउ   तमि असरीरु तेण जं छित्तउ
ताम महीयले अब्भुरुहुल्लइं   जाम ण अब्भिडंति सिरे फुल्लइं   ४
भोयणु ताम महग्घु विसिट्ठउ   जावं ण दंत-पंति परिघिट्ठउ
ताम सुवंधइं आवण-दव्वइं   जाम सरीरे भिडंति ण सव्वइं
ताम मणोहराइं वर-वत्थइं   जाम ण णारि णरेहिं णियच्छइ
पाणिउ ताम पवित्तु विसिट्ठउ   जाम ण णह विहुरेहिं पइट्ठउ   ८

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

घत्ता

दुब्भिम पेक्खु पयावइहे णउ विवरे ण घल्लिउ णीरे ।
जं विरुयउं जं विट्टलउं तं तं संकमिउ सरीरे ॥ ९

[१५]

मिच्छा-संजम-जोय-कसाएहिं कारणभूयहिं चउहि-मि आएहिं
पावइं अल्लियंति जगे जीवहो तम-पडलइं जिह मंद-पईवहो
जलहर-जालइं जिह अहि-मयरहो सरिया-सोत्तइं जिह मयरहरहो
दंसण-णियम-विराम-णिरोहेहिं एवमाइं संवर-संदोहेहिं ४
विण्णि-वि आसव संवरिएवा कालोवाएहिं णिज्जरिएवा
वद्ध-वंध-सिंगब्भा-भावेहिं तडिणि तरंति तारु जिह णावेहिं
कोट्टवालु जिह कोट्टइं देप्पिणु पुरइ पंति चर णीसारेप्पिणु
णियय-तलायइं जिह कत्तारेहिं रक्खिज्जंति वंध-णिरोहेहिं ८

घत्ता

सव्वेहिं जीवें जाइएण अप्पउं रक्खेवउ तेवं ।
आसव-संवर-णिज्जरेहिं पावइं ढुक्कंति ण जेवं ॥ ९

[१६]

एवंहिं धम्मु भडारीए सीसइ परु अप्पाण-समाणउ दीसइ
सो जि धम्मु जहिं हिंस ण किज्जइ सो जि धम्मु जहिं दय जाणिज्जइ
सो जि धम्मु जहिं वउ पालिज्जइ सो जि धम्मु जहिं डंभु ण किज्जइ
सो जि धम्मु जहिं मज्जु ण पिज्जइ सो जि धम्मु जहिं मासु ण खज्जइ ५
सो जि धम्मु जहिं वयउ ण भज्जइ +++++++++++++++
सो जि धम्मु जो णिहसहो ढुक्कइ जिह सुवण्णु णियरेहिं ण चुक्कइ
सो जि धम्मु जहिं परु ण विरुज्झइ सो जि धम्मु जहिं पाणि ण दुज्जइ
सो जि धम्मु जहिं जीउ ण हम्मइ सो जि धम्मु जहिं मोक्खहो गम्मइ
लोइए लोउत्तरि सव्वेव्वहो सो जि धम्मु पर-तत्ति ण जेत्तहो ८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घत्ता

किं वहु-वाय-वित्थरेण   एत्तिउ परमत्थु महंतु ।
खज्जइ माणुसु माणुसेण   जइ जिण-धम्मु ण होंतु ॥ ९

[१७]

जीवें धम्मु एम मंतेवउ   वोहि-समाहि-लाहु चिंतेवउ
जम्मे जम्मे महु मंगलगारउ   होउ सामि अरहंतु भडारउ
जम्मे जम्मे तव-दंसण-णाणइं   संभवंतु सम्मत्त-पहाणइं
जम्मे जम्मे मय-मोह-विणासणे   णिम्मल-वुद्धि होउ जिण-सासणे ४
जम्मे जम्मे जिण-धम्मु लइज्जउ   जम्मे जम्मे सुह-गइ पाविज्जउ
जम्मे जम्मे अजरामर-थत्तिउ   संभवंतु जिण-गुण-संपत्तिउ
जम्मे जम्मे संसारुत्तरणइं   संभवंतु सल्लेहण-मरणइं
जम्मे जम्मे अवहत्थिय-दुक्खइं   संभवंतु कम्म-क्खय-सोक्खइं ८

घत्ता

अवयरणाहिसेय-समए   णिक्खवणे णाणे णिव्वाणे ।
जाइं जिणिंदहं मंगलइं   महु ताइं होंतु अवसाणे ॥ ९

[१८]

कहेवि एव वारह अणुपेहउ   पभणइ णव-घण-सामल-देहउ
लंवइ सूर-विंवु आयासहो   जामि भडारिए णिय-आवासहो
अच्छइ दोण-पुत्तु स-पइज्जउ   माण-वडेंसइ कहि-मि स-तिज्जउ
दुक्ख-पमुक्कए उत्तउ णारिए   ता आसीस दिण्ण गंधारिए ४
णंद वद्ध जय जाहि जणद्दण   पालहि पंच-वि पंडुहे णंदण
गउ गोविंदु पासे तव-तोयहो   पेसणु दिण्णु णराहिव-लोयहो
तुम्हहिं सव्वहिं एउ करेवउ   सिविरु असेसु अज्जु रक्खेवउ
मइं वलएव-सामि अणुणेवउ   खंधावारु सयलु रक्खेवउ ८
चक्कु हरेवउ रज्ज-मयंधहो   परए भिडेवउ तहो जरसंधहो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घत्ता

जमल-जुहिट्ठिल-सिणि-तणय भीमज्जुण सत्तमु विट्ठु।
करेवि सयं भुव भुव-जुयले सव्वेहिं सीराउहु दिट्ठु ॥

इय रिट्ठणेमिचरिए धवलइयासिय-सयंभुएव-कए।
गंधारी-उवसम-करणं णामो णवइमो सग्गो ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इक्काणवइमो संधि

कियवम्म-किवासत्थामेहिं कहिउ ताम चक्केसरहो।
दुज्जोहणु चूरिउ भीमेण जिवं पहरहुं जिवं ओसरहुं ॥ १

[१]

तो अट्ठारहमउ दिवसु गउ जगु गिलेवि णाइं थिउ णिसि-समउ
धयरट्ठें संजउ पेसियउ दुज्जोहणु तेण गवेसियउ
रण-रंगे लुलंतु णिहालियउ णं सुरवइ सग्गहो ढालियउ
णं गहवइ गह-मुह-गाह-हउ णं दिणमणि सीयल-भाव-गउ ४
णं काणणु दहेवि दवग्गि थिउ णं सोसहो पारावारु णिउ
णं भग्ग-सिंगु गिव्वाण-गिरि कमलायरु णं ओसरिय-सिरि
णं पवण-पणोल्लिउ साल-तरु णं सीह-विहट्टिउ करि-पवरु
णं विसहरु तक्ख-पक्ख-झडिउ तिह दीसइ कुरुव-राउ पडिउ ८

घत्ता

जो पंडु-सुयहं मग्गंतहं पंच-वि गाम ण दिण्ण चिरु।
सो पेक्खु कम्म-विहि-छंदेण लुलइ धूलि-धूसरिय-सिरु ॥ ९

[२]

एहिय अवत्थ कुरुवइहे जहिं सामण्णहो किण्ण म होउ तहिं
कर-कमल-कयंजलि विण्णवइ हउं संजउ कुरुव-णराहिवइ
पट्ठविउ आसि जो वारवइ जसु केरी केण-वि ण किय मइ
अट्ठारह वासर जुज्झियइं जहिं अवसरे सउणि-णिरुज्झियइं ४
तहिं अवसरे गयउर-णयरु गउ पडिवउ आइउ वत्तावरउ
धयरट्ठु भडारा धुउ मरइ जच्चंधु अयंगमु किं करइ
गंधारि स-दुक्ख-भारु रुवइ भाणुवइ अगाह धाह मुवइ
अंतेउरु मुच्छागय-विहलु परियणहो ण थक्कइ अंसु-जलु ८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घत्ता

जगे सव्वहो डाहु महंतउ   तुह मुह-दंसण-वज्जियहो ।
पर एक्कहो दिहि दुज्जोहण   पंडव-वलहो अलज्जियहो ।। ९

[३]

दुज्जोहणु पभणइ माण-गिरि   णंदउ म जुहिट्ठिलु लद्ध-सिरि
जसु वणु हिंडंतहो कालु गउ   सिविणे-वि ण जाणिउ सोक्खु कउ
तहो णामु म लेहि अलज्जियहो   पिसुणहो परिवाडि-विवज्जियहो
मइं दीणाणाहहं दिण्णु धणु   परिपालिउ सयलु-वि वंधु-जणु ४
संतणु विचित्तुवीरिउ अवहि   ण जियंतें दाइहिं दिण्ण महि
एवहिं जगे अवर ण का-वि धर   अच्छइ मरिएवउ एक्कु पर
जं तो-वि सरीर-चाउ ण किउ   तं दोण-पुत्तु स-पइज्जु थिउ
सो एवहिं पेक्खहु किं करइ   किय पंडव मारइ किय मरइ ८

घत्ता

जरसंधु अद्ध-भरहाहिवइ   करयले चक्क-रयणु धरइ ।
सहुं वासुएव-वलएवेहिं   पेक्खहुं रण-मुहे किं करइ ।। ९

[४]

तहिं काले कालणग्गोह-वणे   पारोह-साह-फल-पत्त-घणे
कियवम्म-किवासत्थाम थिय   कउसिएण ताम तहिं खयहो णिय
दस-सहस णिवण्णहं वायसहं   णिद्दालस-भाव-परव्वसहं
लद्धोवएस खर-वासरहो   गय तिण्णि-वि घरे चक्केसरहो ४
जाणाविउ कुरुव-राउ पडिउ   स-महारहु भारहु णिव्वडिउ
सम्माणहिं ताम जाम जियइ   सो कासु-वि पासे ण अल्लियइ
विक्खेवु देव महु पंडवेहिं   किय किंकर णर सुर पड्ढवेहिं
तिह करि जिह जणण-वइरु हणमि   रिउ-तरुवर-मूल-जालु खणमि ८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घत्ता

ताव चक्काहिवेण स-हत्थेण पट्टु वद्धु गुरु-णंदणहो ।
सेणावइ होहि महारउ उप्परि जाहि जणद्दणहो ॥

[५]

गुरु-तणयहो दिण्णइं साहणइं रह-माणुस-घोडा-साहणइं
कालायस-कंस-कवय-धरइं पहरण-पब्भार-भयंकरइं
दुग्गंधइं धूम-समप्पहइं रिक्खंकइं रिक्ख-महारहइं
गो-महिय भवइ कुसासिरइं खर-केस-तुरंग-केस-सिरइं
णित्तिंसइं रोमु सप्पु खुसइं लंवोट्ठ(?)-दंतुर-पट्टिसइं
कण्णथियावरिया भणइं ओयइं अवराइ-मि साहणाइं
दस सहस गइंदहं मत्ताहं किंकरहं कोडि पहरंताहं
हयवरहं लक्खु रण-भर-सहहं पंचास सहास महारहहं

घत्ता

तो दीसइ आसत्थामेण कुरुव-णाहु विहलंघलउ ।
पंडवेहिं णिवंधेवि छंडिउ णाइं कसायहो पोट्टलउ ॥

[६]

पभणिउ गुरु-सुएण रुअंतएण वहु-धाह-पवाह-मुवंतएण
तुहुं देव देव तुहुं वंधु-जणु तुहुं गुरु तुहुं सामिउ तुहुं सरणु
पइं होंतें धण-धण्णइं वहलइं मणि-कंचण-रयणइं केवलइं
पइं होंतें धयइं महत्तरइं वाइत्तइं छत्तइं चामरइं
पइं होंतें अम्हहुं एहु किय वंभणहं कहि-मि किं राय-सिय
उवयारहो तहो एत्तिउ करमि जिवं पंडव मारमि जिवं मरमि
जिवं अवसरु सारिउ तुहुं तणउ जिवं गउ णिय-तायहो पाहुणउ
जिवं तुहुं वइसारिउ वइसणए जिवं अप्पउ दड्ढ हुवासणए

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घत्ता

जिवं अद्ध-रत्ते पडिवण्णए वइरिहिं सीसइं आणियइं।
जिवं कल्लए वंधव-लोएहिं दिण्णइं अम्हहं पाणियइं॥ ९

[७]

परमेसर महि-परमेसरेण महु पट्टु वद्धु चक्केसरेण
विक्खेउ दिण्णु वलु अप्पणउ स-रहु स-वाहु सवारणउ(?)
मोत्तिय-पवाल-माला-फुरिउ णिय-जाणु णरेंदें पट्ठविउ
चडु कुरुवइ पेक्खंतहो जणहो घरु गम्मउ पत्थिव पत्थिवहो ४
दुज्जोहणु पभणइ तुट्ठ-मणु छुडु सामि वइरु गुरु-वइरु हणु
हउ गयउ जाहि तुहुं तुरिउ तहिं तव-णंदण-दूसावासु जहिं
जो वद्धु पट्टु मगहाहिवेण सो मइ-मि विवद्धु कुरु-पत्थिवेण
गउ आसत्थामु ण कहि-मि थिउ किव-भोएहिं कउरव-णाहु णिउ ८

घत्ता

सो महि-तिखंड-परिपालेण पिय-पुव्वेहिं सम्माणियउ।
लक्खिज्जइ सुहु जीवंतेण णिय-विणासु णं आणियउ॥ ९

[८]

उत्तम-सल्लेहण-मरण-मइ वोल्लाविउ कुरुव-णराहिवइ
धयरट्ठ-पुत्त एत्तिउ भणमि स-दसारुह णंद-गोव हणमि
तुहुं जेहिं हणाविउ जेहिं हउ रणे ताह-मि तेहि-मि करमि खउ
रक्खंति जइ-वि जम-वइसवण खंदेंद-चंद-हुयवह-पवण ४
ओए-वि अवर-वि रक्खंति जइ दक्खवमि तो-वि अवसाण-गइ
यहु पाविवि(?) किव-कियवम्म गय सोवण्ण-वसह सोवण्ण-धय
जहिं वाहिणि गुरु-तणयहो तणिय सिल-धोय-समुज्जल-पहरणिय
ते तिण्णि-वि तहिं एक्कहिं मिलिय णं काल-कयंत-मित्त मिलिय ८

घत्ता

किउ कलयलु दिण्णइं तूरइं छुडु परिणमिय-महावलहो ।
चउ-पासेहिं मागह-लोएण वेढिउ सिमिरु जुहिट्ठिलहो ॥

[९]

गुरु-कुरुवइ-रवियर-तावियउ दुज्जोहण-परिहव-परिहविउ
स-कसाउ स-कवउ स-पहरणउ साहारु ण वंधइ गुरु-तणउ
किव-कियवम्महं वारंताहं मागहहं णियंत-णियंताहं
पर-वले पइसरइ पलंव-भुउ अरि-सत्थु पयत्थु भयत्थु हुउ
लग्गइ ण हेइ एक्कहो-वि करे सण्णाहु ण पावइ णिद्द-भरे
परिचिंतिउ मणे धट्ठज्जुणेण पहरंतउ दिट्ठु ण अज्जुणेण
तहिं अवसरे दिव्वु समुट्ठियउ गिरि-सिहरागार-परिट्ठियउ
पज्जलिय-जलण-जाला-वयणु खय-चंदाइच्च-हित्त-णयणु

घत्ता

पहरंतहो आसत्थामहो दुद्दम-देह-वियारणइं ।
जिह णइवइ णिय-णइ-णीरइं गिलइ असेसइं पहरणइं ॥

[१०]

दोणायणेण तो संभरिय णामेण विज्ज माहेसरिय
फणि-फड-फुक्कार-भयंकरिय उडुवइ-कड-जूडालंकरिय
डमरुव-रव-भरिय-दियंतरिय फुरियाहर-विसम-विलोयणिय
+++++++++++++++ सूलाउह-गो-विस-वाहणिय
ता पेक्खेवि सहसुप्पण्ण-भउ ओसरेवि दिव्वु केत्तहि-वि गउ
गुरु-णंदणु पर-वले पइसरइ तं मारमि जो पहरणु धरइ
रह चूरइ करि-कुंभइं दलइ हय हणइ णराहिव दरमलइ
धय-चामर-छत्तइं मोडियइं पंचालहं सीसइं तोडियइं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घत्ता

वलु घाएवि हुयवहु लाएवि सिरइं लएप्पिणु णीसरइ।
वाहिय-रहु पुण्ण-मणोरहु घरु जरसंधहो पइसरइ॥ ८

[११]

कुरु-जंगल-परिपालण-मणहो अग्गए खिवियइं दुज्जोहणहो
परमेसरु करि वद्धावणउं णिरवज्जु रज्जु लइ अप्पणउं
सीहासणु छत्तइं-चामरइं उवसमियइं सव्वइं डामरइं
उब्भावहि मणिमय-मंडविय किय सयल पुहवि णिप्पंडविय ४
पंचह-मि सिरइं मइं तोडियइं सुर-गिरि-सिहराइं व मोडियइं
पेक्खेप्पिणु कुरुव-राउ भणइ को गुरुसुव पंडु-पुत्त हणइ
अवरेहि-मि जेण णिरत्थ किय गंगेय-कण्ण-दोणहिं ण जिय
एयइं पुणु कलुण-जणेराइं सीसहं पंचालहं केराइं ८

घत्ता

हउं एक्कें पवणहो पुत्तेण लउडि-पहारेहिं चूरिउ।
को पंच-वि हणइ रणंगणे जाम ण हरि सर-पूरिउ॥ ९

[१२]

दुज्जोहणु एम चवंतु थिउ गुरु-तणयहो धिद्धिक्कारु किउ
वद्धारिय-जय-जय-मंडवहं जाणाविउ केण-वि पंडवहं
तव-तणयहो भीमहो अज्जुणहो अणिरुद्धहो संवहो पज्जुणहो
हलहरहो अणंतहो सच्चइहे गय-घाय णिएविणु कुरुवइहे ४
सेणावइ आसत्थामु थिउ विक्खेउ णरिंदें पट्टविउ
विद्दाविउ तेण सयलु सिमिरु सो ण भडु ण तोडिउ जासु सिरु
धट्ठज्जुणु सवलु सिहंडि मुउ गुरु-सामिय-परिहव-पट्टु धुउ
सोमय-सिंजयह-मि करेवि खउ पंचालहं सीसइं खुडेवि गउ ८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घत्ता

उव्वरिउ ण को-वि जियंतउ   कह-वि कह-वि सोयाउरइं।
कंदंतइं धाह मुवंतइं   पर चुक्कइं अंतेउरइं॥ १०

[१३]

तं वयणु सुणेवि असुहावणउं   गोविंदें किउ वद्धावणउं
जइ अम्हहं सत्त-वि तेत्थु थिय   आमिसहो रासि तो आसि किय
तव-णंदणु पभणइ णिएवि मुहु   लइ णच्चहि अम्हहं कवणु सुहु
तो भायर इयर चयारि जण   उद्धाइय अमरिस-कुइय-मण ४
भीमज्जुण गय-गंडीव-धर   सहएव-णउल असि-कुंत-कर
णारायणेण पडिवंधु किउ   सब्भावें अग्गए गंपि थिउ
जइ जीविउ लेमि ण मागहहो   पइसरमि मज्झे तो हुयवहहो
पत्थेण वुत्तु एत्तिउ करमि   गुरु-सुयहो सिहा-मणि अवहरमि ८

घत्ता

पइज्जावसाणे किउ कलयलु   तूरइं हयइं पयट्टु पहु।
गय रयणि दिवायरु उग्गमिउ   ताम सयं भूसंतु णहु॥ ९

इय रिट्ठणेमिचरिए धवलइयासिय-सयंभुएव-कए।
पंडव-वल-पलयकरो इक्काणवइमो सग्गो॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दो-उत्तर-णवइमो संधि

कुरु-पंडव-वलेहिं सम्मत्तेहिं रण-रस-रहस-पसाहणइं।
आभिट्टइं उत्तर-दाहिणइं मागह-माहव-साहणइं॥ १

[१]

अट्ठारहम्मि दिवसे वोलीणए कुरु-वले णिरवसेसे परिखीणए
पाडिए सव्व-भउमि दुज्जोहणे परिसमत्ते पंचालाओहणे
तुसिउ मइंदु जेम गय-गंधें ताडिय समर-भेरि जरसंधें
हत्थु उत्थल्लिउ णरवर-विंदहं पारय-दरय-कुणीर-कुणिंदहं ४
कोंकण-तामलित्त-तोक्खारहं मागह-सूरसेण-गंधारहं
पत्थल-मेहल-कोहड-जट्टइं वव्वर-टक्क-कीर-खस-भोट्टइं
ओड-पउंड-मुंड-ओवीरहं कइवय++-मरुव-कम्हीरहं
तुंडिएर-कालेरंवट्टहं कण्णावरण-पमुह-वहु-रट्ठहं ८

घत्ता

णव कोडिउ पवर-तुरंगहं सोलह सहस णरेसरहं।
चउरासी लक्खइं रह-गयहं संख ण णावइ किंकरहं॥ ९

[२]

कालजमण-वल-विक्कम-सारहं सय-सहसइं णिग्गयइं कुमारहं
अलमल-वल-भरिया सारंधें वूहइं विरइयाइं जरसंधें
सेणावइ करेवि गुरु-णंदणु सुरेहिं समाणु णाइं सक्कंदणु
रण-रहसुब्भडु कहि-मि ण माइउ णं उत्तर-मयरहरु पधाइउ ४
तं सयडिंव-भएहिं तो वुच्चइ किं ति-खंड वसुमइ ण पहुच्चइ
वासुएव-वलएवहं लग्गहिं गयमणि पंचयण्णु धणु मग्गहिं
किज्जउ संधि काइं संगामें दुल्लह होइ जयंगण णामें
किं वसुएव इड्ढि ण णिहालिय रोहिणि जइय मंड उद्दालिय ८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घत्ता

गोवद्धणु जेण समुद्धरिउ कालिउ दमिउ कंसु वहिउ।
सो केण पराजिउ समर-मुहे केसउ कामपाल -सहिउ ।।

[३]

णवमउ वासुएवु अवइण्णउ पडिकेसव-विणासु उप्पण्णउ
कोडि-सिला सि जेण उच्चाइय जइयहुं सच्चहाम करे लाइय
उद्ध करावहि तुलिय तिविट्ठें उत्तमंगु तणुरंत-दुविट्ठें
कंठावहि सयंभु अहिहाणें पुरिसुत्तमेण उरेत्ति पमाणे
पुरिस-सीह-णामेण हि पत्ती पुंडरीय-पहुणा कडि-मेत्ती
ऊरु-पमाण उच्चाइय दत्तें जाणुच्छेह सुमित्ता-पुत्तें
चउरंगुल-मज्जाय उवेदें किज्जउ संधि समउ गोविंदें
णउ अ-पमाणु होइ रिसि-भासिउ अम्हहं धुउ विणासु तहो पासिउ

घत्ता

जहिं णर-णारायण-साहणइं अतुल-वलइं पत्थिव-साराइं।
अण्णण्णइं तहिं मेलाइयइं किं करंतिं तुम्हाराइं ।।

[४]

जहिं एक्केक्क पहाण महारह गय-दुंदुहि-अंकूर-विओरह
सिणि-अणिरुद्ध-संवु-मयरद्धय विम्हि-सुभाणु-भाणु-भोयंधय
सच्चइ-चारु-जेट्ठु दसारुह पंडव पंच-वि सम-विसमाउह
कउरव खयहो णीय जेहिं आहवे तो को जिणइ जियंत महाहवे
तुहुं वेयारिउ अलइय-णामेहिं तिहिं किव-कियवम्मासत्थामेहिं
गुरु-वहे कवणु कवणु किर जुज्झिउ पइं परमेसर कज्जु ण वुज्झिउ
णउ लग्गणउ को-वि सयणिज्जउ कालजमणु एक्कु पर सहिज्जउ
तं णिसुणेवि णरवइ आरुट्ठउ णं विसहरु विस-दोसें दुट्ठउ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घत्ता

किं भग्गु पयाउ ण कंस-वहे अम्हहिं विहिं णारायणहो ।
अच्छंतेहिं दिवसे दिवायरहो कवणु तेउ तारायणहो ॥ ९

[५]

ण कियाइं वयणाइं एवं चवंताइं तो तेण देवाविया वायणंताइं
जम-घोरणा-घोर-णिग्घोस-तूराइं दस-दिसिवहब्भंतरालाण पूराइं
मयरहर-गिरि-कुम्मओहट्टणाइं व उप्पाय-णिग्घाय-आवेट्टणाइं व
विज्जुलया-पडण-पवियंभणाइं व गज्जंत-घण-पाउसारंभणाइं व ४
भंभंत-भंभोह-भंकार-भीमाइं उं-अं-हुडुक्का-परिछित्ति-धीमाइं
दडडडदडंताइं दड -दगडि-घोसेहिं घुमुघुमुघुमंताइं घुम्मुक्क-कोसेहिं
झिमिझिमिझिमंताइं झिकिरि-विलासेहिं खुमुखुमुखुमंताइं खुंखुण-सहासेहिं
हूहूहुवंताइं सय-संख-सद्देहिं धूधूधुवंताइं काहल-णिणद्देहिं ८
डमडमडमंताइं डमरु-वमालेहिं सलसलसलंताइं कंसाल-तालेहिं
ढढढढढंताइं ढड्ढिय-णिणाएहिं एएहिं अवरेहिं अण्णण्ण-घाएहिं

घत्ता

तं तेहउ तूर-सद्दु सुणेवि रण-रसु कहि-मि ण माइउ ।
णं वण-दउ उप्परि महिहरहो हरि जरसंधहो धाइयउ ॥ ११

[६]

पचलइं हरि-वल-वलइं विरुद्धइं जय-सिरि-तियस-विलासिणि-लुद्धइं
किय-कलयलइं दिण्ण-वाइत्तइं पहु-पसाय-रिण-फेडण-चित्तइं
विरइय-वइरि-वूह-पडिवूहइं चोइय-रह-गय-तुरय-समूहइं
उज्झिय-धयइं लइय-तणु-ताणइं कर-कड्ढिय-वाणासण-वाणइं ४
दूर-वरुज्झिय-रण-भर-पसरइं मरण-मणोरह-लद्धावसरइं
अवहत्थिय-णिय-पुत्त-कलत्तइं वसुह-वरंगण-गहण-पसत्तइं
रणवहु-अंगालिंगण-लोलइं जल-वोलीण-वहल-हलवोलइं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कोव-जलण-जालोलि-पलित्तइं   जय-वडाय-उद्दालण-चित्तइं

घत्ता

पडिकेसव-केसव-साहणइं   रहसें कहि-मि ण माइयइं।
णं उत्तर-दाहिण-सायरहं   जलइं परोप्परु धाइयइं ॥

[७]

भिडियइं उब्भिड-भिउडि-करालइं   वलइं वे-वि वहु-वहल-वमालइं
मुक्क-णिरंतर-सरवर-जालइं   तुलिय-भयंकरेण करवालइं
हरि-धुय-धूली-धूसर-चिहुरइं   पहरण-घण-वण-वेयण-विहुरइं
सोणिय-कद्दम-खुत्त-गइंदइं   कंचण-खंचिय-रहवर-विंदइं
रत्त-तरंगिणि-अमुणिय-थाहइं   सिर-सय-उप्परि-वाहिय-वाहइं
तहिं अवसरे रण-रहसुद्दामहो   धाइउ अज्जुणु आसत्थामहो
णिक्किवि किवहो भीमु किव-जेट्ठहो   सच्चइ भोयहो भोय-वरिट्ठहो
स-कलुसु कालजमणु तालद्धहो   सइं णक्खत्तणेमि जरसंधहो

घत्ता

पज्जुण्णहो सव्वइं साहणइं   संवुहे सच्चुकुमार-वलु।
जम-धणय-पुरंदर-पेक्खएहिं   णं झुल्लाविउ गयणयलु ॥

[८]

ताम धणंजएण गुरु-णंदणु   संदाणिउ संदणेण स-संदणु
आहय हय धणु पाडिउ हत्थहो   लेवि सिहा-मणि घल्लिउ तत्थहो
गुरु-सुउ भणेवि णरेण ण घाइउ   ताम विओयरेण किउ छाइउ
सो-वि पणट्ठु मुएवि णिय-संदणु   तहिं गउ जहिं गउ दोणहो णंदणु
सच्चइ जिणेवि ण सक्किउ भोएं   ल्हसिउ सो-वि जयलच्छि-विओएं
तिण्णि-वि कुल-परिवाडिहे चुक्का   कहि-मि सलज्ज तवोवणु ढुक्का
कालजमणु कालाणल-दूसहु   काल-जलय-अलयालि-समप्पहु
कालकूड-विस-विसम-विलोयणु   मलय-महागिरि-मंदर-चोयणु

घत्ता

स-सरासणु पेसिय-सर-णियरु धाइउ उप्परि जलहरहो।
धाराहरु धाराधारयरु णं हिमवंत-महीहरहो॥

[९]

तओ महा-करेणुणा मयंवु-सित्त-रेणुणा
कयंत-रूव-धारिणा सुगंध-गंधि-धारिणा
पडीभ-कुंभ-मद्दिणा विसाल-णालि-अद्दिणा
मयाणियालि-पंतिणा जियामरिंद-दंतिणा
करग्गच्छत्त-भाणुणा खयायवच्च-थाणुणा
सयामयालसच्छिणा जियारि-राय-लच्छिणा
असंत-कण्ण-वाउणा सहासहाय-णाउणा
मणप्पहंजणासुणा जियारि-साहणासुणा

घत्ता

णहर-दसण-पुच्छाउहेहिं जगडिउ जायव-णाह-वलु।
तं तिण-समु मण्णे-वि सीहु जिह णवर परिट्ठिउ एक्क-वलु॥

[१०]

तो संकरिसणेण किय-थाणें विद्धु महाकरि एक्कें वाणें
विहि णारायणेण णाराएहिं अप्पासंग-भुअंग-णिराएहिं
तिहिं सिणि-णंदणेण उवढुक्कें सव्वें थूणाकण्ण-चउक्कें
पंचहिं तोमरेहिं अणिरुद्धें छहिं तोलिएहिं मजरेण(?) विरुद्धें
सत्तेहिं गुरुहिं विओरह-णामें अट्ठ वराहकण्ण सइकामें
णव कण्णिय तव-सुएण सुधीमें वच्छदंत दस पेसिय भीमें
एयारह वइहत्थि पयत्थें वारह भल्ल गए णर-हत्थें
तेरह तीरिय भाणुकुमारें विद्धु असेसें खंधावारें

घत्ता

वइसारिउ कुंजर समर-मुहे   कह-वि ण कालजमणु पडिउ।
उप्पएवि णहंगणे णं घणेण   करणे कंचण-रहे चडिउ॥ ९

[११]

वाहिउ रहु पर-वलहो रउद्दहो   मंदरु भमइ व मज्झे समुद्दहो
पंचहिं पंचहिं सव्व परज्जिय   तेहि-मि दस दस तासु विसज्जिय
तेण-वि वीस वीस आमेल्लिय   तेहि-मि तीसहिं तीसहिं भेल्लिय
तेण-वि सट्ठि सट्ठि सरलाइय   तेहि-मि तासु तुरंगम घाइय ४
तेण-वि ताहे महद्धय ताडिय   तेहि-मि तासु सूअ-रह पाडिय
स-फरु स-मंडलग्गु उद्धाइउ   णं दइवेण दवाणलु लाइउ
सारणेण सो एंतु पडिक्खिउ   जाउ महाहउ अमरे णिरिक्खिउ
भिडियब्भंतर-वाहिर-मग्गेहिं   विहि-मि परोप्परु तच्छिउ खग्गेहिं ८

घत्ता

तो लद्धावसरे सारणेण   कालजमणु जम-सयणु णिउ।
जय-तूरइं दिण्णइं जायवेहिं   कलयलु देवेहिं गयणे किउ॥ ९

[१२]

कालें कालजमणु जं कड्ढिउ   हरि-वल-वले परिओसु पवड्ढिउ
तो तिखंड-महिमंडल-पालें   सुय-विओय-घुम्मविय-णिडालें
सव्वइं साहणाइं पट्ठवियइं   ताइ-मि पज्जुणेण णिट्ठवियइं
वाणर गिरि-पमाण उप्पाइय   किलिगिलंत खायंत पधाइय ४
अण्णेत्तहे-वि विसम महाफणि   फुप्फुवंत-विप्फुरिय-फणामणि
सरह-वराह-महिस-विस-भीयर   वग्घ-मइंद-रिक्ख-रयणीयर
भमर-रिट्ठ-सलहुंदुरइत्तिउ   मक्कुण-दंस-मसय-घुण-लित्तउ
अण्णेत्तहे सवाहु वइसाणरु   धूलि-तमंधयारु घण-डंवरु ८

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

घत्ता

पण्णत्ति-पहावें पर-वलइं सव्वइं भग्गइं पज्जुणेण।
उवयार-सहासइं णासियइं णावइ एक्कें अवगुणेण॥ ९

[१३]

णिय-वले भज्जमाणे वलसारहं धाइय पवर कुमार कुमारहं
ते जयलच्छि-सुरंगण-लुद्धेहिं दुंदुहि-गय-कुमार-अणिरुद्धेहिं
भाणु-सुभाणु-संव-पज्जुण्णेहिं चारु-जेट्ठ-उद्धएहिं सउण्णेहिं
णिसढ-विओरह-जर-अंकूरेहिं किय-कलयलेहिं समाहय-तूरेहिं ४
कें-वि णिवद्ध के-वि संदाणिय के-वि भग्ग के-वि वसुह-पराणिय
तहिं अवसरे अच्चंत-मयंधें पभणिउ णिय-सारहि जरसंधें
वाहि वाहि रहु जउ तउ तूरइं कण्ण-कंदरोयर-पडिपूरइं
वाहि वाहि तुहुं जउ तउ छत्तइं णंदगोव-पज्जुण्णइं पत्तइं ८

घत्ता

वयणु सुणेवि चक्काहिवहो उहय-कराहय-हय-पवरु।
रहु वाहिउ सूएं णवरु तहिं जहिं हलहरु सारंग-धरु॥ ९

[१४]

भिडिय वे-वि पडिकेसव-केसव आसग्गीव-तिविट्ठ णरेस व
रावण-रामाणूण धणुद्धर सुरवइ गयविलास विसकंधर
दुद्दम देह दुइ-वि दुरइक्कम कारण-वारण-वारण-विक्कम
दुसह-दिणमणि-दित्त-समुज्जल भासुर-भुअ-भुअंग-भुयगल ४
दिण्ण-तूर-परिवड्ढिय-मलहर णं उत्थरिय स-जल णव-जलहर
अरिगण-पहरण-पहर-किणंकिय सायकुंभ-सण्णाह-अलंकिय
रहवर-भर-भारिय-वीसंभर सरवर-णियर-भरिय-वसुहंवर
मउड-पहोहामिय-रवि-मंडल चंद-सूरप्पह-जिय-मणि-कुडंल ८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घत्ता

चक्काहिव-पडिचक्काहिवइ वावरंति लद्धावसर।
णिवडंति झत्ति णिग्घाय जिह णहयल-भरिउव्वरिय सर ॥ ९

[१५]

विहि-मि सरेहिं णहंगणु छाइउ कह-वि कह वि सुर-सेण्णु ण घाइउ
कह-वि कह-वि रवि रहवरु खंचइ वंतु वाउ वाएवउ वंचइ
तेहिं पडंतेहिं वणियइं सेण्णइं रहवर-जोह-तुरंग-वरेण्णइं
तेहिं पंडतेहिं फुडिय वसुंधर तेहिं पंडतेहिं पडिय धराधर ४
तेहि पंडतेहिं भिण्ण भुवंगम आवय पाविय थावर जंगम
तेहिं पंडतेहिं भरिय दियंतर तेहिं पंडतेहिं सोसिय सायर
तेहिं पडंतेहिं जणवउ घोसइ णउ जाणहुं किह एवंहिं होसइ
ता उप्पण्णु कसाउ णरिंदहो मुक्कु भुवंगमत्थु गोविंदहो ८

घत्ता

धणु-गुण-वम्मीय-विणिग्गयइं विसहर-लक्खइं धाइयइं।
उप्फड-फुक्कार-भयंकरइं जले थले गयणे ण माइयइं ॥ ९

[१६]

तो गोविंदें गोविस-कंधहो पेसिउ गारुडत्थु जरसंधहो
जायइं गरुयइं गरुड-सहासइं परिपिहियइं जल-थल-आयासइं
तिल-तुस-मेत्तु-विसुण्ण ण तेत्तहो णाय ण णाय आय गय केत्तहो
खगवइ खज्जमाणु पारक्कउ पाडिय-पडउ पणट्ठु ण थक्कउ ४
पायवत्थु पत्थिवेण विसज्जिउ महुमहेण हुयवहेण परज्जिउ
वारुणु मागहेण परिपेसिउ माहवेण वायवेण विहासिउ
माहिहरत्थु महिहरेण पमेल्लिउ केसवेण कुलिसत्थें भेल्लिउ
तामसत्थु दिणयरेण विणासिउ अवरें अवरु पवरु-विद्धंसिउ ८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घत्ता

णीसेसइं अत्थइं मुक्काइं   एक्कु सरासणु णउ मुअइ।
अवसाणे काले सव्वहो णरहो   धम्महो उप्परि होइ मइ ॥

[१७]

पवलामलवल-वल-वलवंतें   लयउ अणंतेहिं सरेहिं अणंतें
पेक्खंतहो पवरामर-सत्थहो   कह व कह व धणु पाडिउ हत्थहो
छिण्णु महारहु सारहि घाइउ   असिवरु फरु फेरंतु पधाइउ
खंडिय ते-वि वे-वि विहिं वाणेहिं   कुलिस-दंड-जम-दंड-समाणेहिं
लइय सत्ति सहस त्ति विसज्जिय   तिहिं भल्लेहिं भद्दिएण परज्जिय
मुक्क महागय गय गयणद्धें   धरेवि ण सक्किय केण-वि जोद्धें
अरिगण-घण-पहरणेहिं ण भग्गी   कह-वि कह-वि केसवहो ण लग्गी
पज्जुण्णेण पण्णत्तिय-पाणें   किय सय-खंडइं हणेवि किवाणें
मागहेण अगणिय-पडिवक्खें   लइउ महा-रहंगु सविलक्खें

घत्ता

तं चक्क-रयणु चक्काहिवेण   दारुणु दाहिण-करे कियउ।
अत्थइरिहे मत्थए अत्थवणे   दिणयर-विंवु णाइं थियउ ॥

[१८]

तं चक्कवइ-चक्कु चमु-चक्खणु   जक्ख-सहासु जासु परिरक्खणु
दस-सयारु वहु-वारु सिला-सिउ   गंध-धूव-वहु-कुसुमेहिं वासिउ
मुक्कु ति-खंड-पिहिवि-परिपालें   णं खय-काल-चक्कु खय-कालें
धाइउ थरहरंतु आयासें   अमर परिट्ठिय एक्कें पासें
धरिउ ण णर-णारायण-वाणेहिं   णउ मद्दीसुअ-कोंत-किवाणेहिं
णउ पवणंगय-वर-गय-घाएहिं   णउ हलहर-हल-मुसल-णिवाएहिं
णउ मयरद्धय-पमुह-कुमारेहिं   णउ पहरणेहिं सिला-सिय-धारेहिं
सव्वेहिं धरेवि ण सक्किउ एंतउ   हरि-करे लग्गु ति-भामरि देंतउ

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

घत्ता

परिणयणे कुमारी-रयणु जिह ढुक्कु चक्कु केसव-करहो।
जं जेण दिण्णु जं जेण किउ तं तहो सइं जेपइ घरहो(?)॥ ९

[१९]

जं उप्पण्णु चक्कु गोविंदहो तं परिओसु पवड्ढिउ इंदहो
णच्चिउ णारउ दुंदुहि ताडिउ कुसुम-वासु केसव-सिरे पाडिउ
वुच्चइ सरहसेण वलएवें मागह जाहि काइं अवलेवें
अज्जु-वि खमइ वीरु करि वयणइं देहि ति-खंड पिहिवि णिहि-रयणइं ४
दोच्छिउ पत्थिवेण ण-वि थक्कें कवणु गहणु महु एक्कें चक्कें
सीहहो कइ सहाय किर काणणे तो-वि मरंति दंति तहो आणणे
मुए मुए णंदगोव किं अच्छहि णं तो णियय-णिहेलणु गच्छहि
झत्ति पलित्तु णवर गरुडासणु णं घिय-धारए सित्तु हुवासणु ८

घत्ता

केसवेण लेवि पडिकेसवहो चक्क-रयणु रयणग्घविउ।
अत्थइरिहे उयय-महीहरेण सूर-विंवु णं पट्ठविउ॥ ९

[२०]

धाइउ चक्क-रयणु रयणुज्जुलु तेओहामिय-दिणमणि-मंडलु
जाला-मालालिंगिय-सुरवरु णिय-पडिरव-पूरिय-भुअणोयरु
महि-कारणे रणे किय पडिवंधे धरेवि ण सक्किउ तं जरसंधें
णिवडिउ विप्फुरमाणु थणंतरे विज्जुल-वलउ णाइं गिरि-कंदरे ४
पहु ओणल्लु रहंगहो घाएं णं णग्गोहु भग्गु दुव्वाएं
णं आयासहो पडिउ दिवायरु णं परिसोसहो गउ रयणायरु
तो अणेय उप्पाय समुट्ठिय णिप्पह चंदाइच्च परिट्ठिय
कंपिय धरणि धराधर डोल्लिय णरवर माया-रुहिर-जलोल्लिय ८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घत्ता

जलजलइ णहंगणु जगु भमइ धूमायंति दियंतरइं।
केसवेण सइं भूसावियइं णिय जसेण वसुहंवरइं ॥ ९

इय रिट्ठणेमिचरिए धवलइयासिय-सयंभुएव-कए।
जरसंध-वहो णामो दो-उत्तर-णवइमो सग्गो ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[जुज्झ-कंड-उवसंहार-वयणाइं]

तेरह जायव-कंडे, कुरु-कंडे एऊणवीस संधीओ ।
तह सट्ठि जुज्झ-कंडे, एवं वाणवदि संधीओ ॥
सोम-सुयस्स य वारे, तइया-दियहम्मि फग्गुणे रिक्खे ।
सिउ-णामेणं जोए, समाणियं जुज्झ-कंडं य ॥
छव्वरिसाइं ति-मासा, एयारस वासरा सयंभुस्स ।
वाणवदि-संधि-करणे, वोलीणो इत्तिओ कालो ॥

* * * * *

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org